जमीन
मानव के खूनी संघर्ष
की अमर गाथा
ज्ञानदेव पाण्डेय

जमीन

मानव के खूनी संघर्ष की अमर गाथा

ज्ञानदेव पाण्डेय

अध्याय 1.

बहुत समय पहले की बात है, गंगा नदी के किनारे पर एक छोटा सा गांव था, जिसका नाम ब्रह्म पुरा था। यह गांव भारत के उत्तर प्रदेश प्रांत में उपस्थित था, विंध्य पर्वत की श्रृंखला का जो मध्य स्थान है, जहां पर मां जगत जननी विंध्यावासिनी का दिव्य मंदिर है, जिनका दर्शन करने और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लोग दूर - दूरसे दर्शनार्थ रोज आया करते हैं।

इस स्थान का इतिहास महाभारत भी पाया जाता है। इनका संबंध कृष्ण और उनके मामा कंश से संबंधित है, ऐसा कहा जाता है, कि कंश से कृष्ण की जान बचाने के लिए जब वासुदेव अपने मित्र नंद की पुत्री को लाए थे, कंश ने उस लड़की को मारने का प्रयास किया, तो वह कंश के हाथों से छुट कर, वह लड़की बच कर विंध्य पर्वत पर आकर निवास किया था। जिन को अष्ट भुजा देवी के नाम से जानते हैं।

महाभारत से पहले की एक घटना है, जब राजा दक्ष ने यज्ञ किया था, जिसमें उन्होंने अपनी पुत्री गौरी को आमंत्रण नहीं दिया था। और वह अपने पिता से मिलने के लिए यहां आई थी। भगवान शिव की आज्ञा का उल्लंघन करके, राजा दक्ष ने यानी गौरी के पिता ने गौरा का अपमान किया। जिसके कारण गौरी ने यज्ञशाला में योगाग्नि को प्रज्वलित करके उसमें अपने प्राण को नष्ट कर दिया था। जब भगवान शिव को इसका ज्ञान हुआ, तो वह राजा दक्ष की यज्ञशाला में पहुँचे। और अपने क्रोध की अग्नि में सब को जला दिया। और गौरी के मुर्दा शरीर को लेकर घूमने लगे। तब भगवान विष्णु ने, भगवान शिव का गौरी शरीर के प्रती मोह को भंग करने के लिए, अपने चक्र से गौरी की शरीर के कई टुकड़ों में काट दिया। जिसमें से एक शरीर का टुकड़ा, यहां विंध्यपर्वत की घाटी में गंगा किनारे पर गिरा था। जिस को ही लोग, आज भी मां विंध्यावासिनी के नाम से पूजते हैं। यह कहानी रामायण से पहले की है।

इसका मतलब यह है, की भगवान शिव और विष्णु भगवान जिस को हम सब कहते हैं, वह इस पृथ्वी पर हो चुके हैं। वह शरीर धारी थे, यह सब शक्तिशाली लोग थे। जो मुख्य परमेश्वर है, वह इन रूपों में प्रकट हुआ, जिससे यह सिद्ध होता है। की परमेश्वर मनुष्य में ही है, वह किसी ना किसी समय में, किसी के रूप में प्रकट हो जाता है। पहले के कुछ मानव गिने चुने थे, जिन को हम किसी ना किसी रूप से, आज भी याद करते हैं। या जिनके नाम से हम सब परिचित हैं। वह सब इस पृथ्वी पर हो चुके हैं। जिनका हमारे पास इतिहास नहीं है। यद्यपि हमारे समाज में कुछ ऐसी लोकोक्ति प्रसिद्ध हैं। जिन से हमें उनके बारे में प्रमाण आज भी मिलता है। हम सब परमेश्वर ही हैं, यह सत्य है, इसके अतिरिक्त सब कुछ झूठ है। हमें इस पृथ्वी पर परमेश्वर की तरह से जीना होगा। परमेश्वर की सबसे बड़ी खूबी है, कि वह सभी प्राणी के जन्म से पहले ही उनके ज़ीने के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उसको वह पृथ्वी पर उपस्थित कर देते हैं। हमें भी उस

परमेश्वर के समान आने वाली पीढ़ी को लिए, उस आवश्यक वस्तु को, इस पृथ्वी पर बचा के रखना चाहिए। जिससे हमारी आने वाली अगली पीढ़ी को, इसका फायदा मिलता रहें। और वह अपने जीवन को आसानी से इस पृथ्वी पर व्यतीत कर सके। और परमेश्वर के समान जीवन जी सके। और इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता ज्ञान की है। सभी भौतिक वस्तु का हस्तांतरण आसान है, लेकिन ज्ञान का हस्तांतरण आसान नहीं है। क्योंकि ज्ञान को आज तक गलत समझा गया है। ज्ञान का सीधा सा मतलब है, जान का होना, हमें जिंदा होकर जीना होगा। हम सब इस पृथ्वी पर जड़ और मृत वस्तु के साथ रहने के कारण, हम सब इसी प्रकार के हो गये हैं। हम सब निर्जीवों के समान जीते हैं। हम सब कहने मात्र को जीवित हैं। जब मनुष्य के पास ज्ञान होगा, तो वह ज्ञान के साथ जीएगा। जैसा की कहा गया है। जो व्यक्ति जिस वातावरण में रहता है, उसका प्रभाव उसके उपर पड़ता है। वह व्यक्ति उस माहौल के अनुरूप हो जाता है। जब बच्चा मुर्दे के मध्य में रहेगा। तो मुर्दा ही बन कर तैयार होगा। और जब वह सच में किसी जिंदा आदमी के मध्य में रहेगा। तो जिंदा आदमी के रूप में बन कर तैयार होगा।

कादंबरी नामक संस्कृत के उपन्यास में, एक छोटी सी कथा आती है। एक बड़ा जंगल था, उसमें एक बहुत पुराना सेमल का वृक्ष था। उस वृक्ष पर एक बड़ा पक्षी अपने परिवार के साथ रहता था। एक दिन अचानक तेज तूफान के साथ वारिस होने लगी, साथ में बिजली भी कड़क रही थी। उसी बिच सेमल के वृक्ष की वह शाखा, जिस पर पक्षी का घोसला था। तूफान से टूट कर जमीन पर, धड़ाम से आकार गीर गया। जिसके नीचे वह पक्षी दंपति दब कर मर गये। लेकिन उन पक्षीयों के दो छोटे –छोटे बच्चे थे जो घोसले से दूर जा कर गिरे। जिसमें से एक बच्चे को हवा के झोंकें ने पूरब की दिशा में उड़ा कर ले गया। और दूसरे बच्चे को दक्षिण की दिशा में ले गया। जो पक्षी पूरब में उड़ कर गया था, वह एक ऋषि के आश्रम में पहुंच गया। और जो दक्षिण में उड़ कर गया था। वह एक डकैतों के गिरोह में पहुंच गया । और वहां पर वह दोनों उसी संगत में रहने लगे, और धीरे – धीरे बड़े होने लगे। एक दिन राजा शिकार करते – करते जंगल में काफी दूर निकल पड़ा। और शिकार करते – करते थक गया। तो वह एक बड़े जंगली पेड़ के नीचे, अपने घोड़े को रोक कर आराम करने लगा। तभी उस राजा को एक आवाज सुनाई दी, की इस आदमी का घोड़ा छोड़ लो। इसने जो धन लिया है, उसको भी छीन लें। राजा इधर उधर देखने लगा, कि आवाज कहा से आ रही है? चारों तरफ देखा लेकिन उसको कहीं, कोई आदमी नहीं दिखाई दिया। लेकिन जब राजा ने वृक्ष के उपर देखा, तो उसने एक पक्षी को यह सब कहते हुए सुना। तभी राजा को कुछ लोगों को उसके पास आने की आवाज सुनाई दी। राजा समझ गया, की यहां कुछ गड़ बड़ है। वह तुरंत अपने घोड़े के उपर बैठ कर, उसको अपने पैर से मारा, और घोड़ा वहां राजा को ले कर नौ दो ग्यारह हो गया। कुछ दूर जाने पर, राजा को एक आश्रम दिखाई दिया। राजा उस आश्रम में निःशंक प्रवेश कर गया। वहां पर भी एक पक्षी था। जिसने राजा के पहुँचते ही कहा- आए, आपका स्वागत है। घड़े में ठंडा पानी रखा है पीजिये। गुरु जी अभी कहीं बाहर गये हैं, वह आते ही होंगे। आप तब तक यहां आराम से विश्राम कर

सकते हैं। राजा को उस पक्षी की बात भली लगी, वह वहां पर घड़े से ठंडा पानी निकाल कर पिया। और पेड़ की छांव में विश्राम करने लगा। तब तक आश्रम के मालिक गुरु जी आ गये। उनका राजा ने अभिवादन किया। गुरु जी ने भी राजा का अभिवादन किया। तभी राजा ने कहा, कि मैं रास्ते में एक पेड़ के नीचे ठहरा था। उस वृक्ष पर भी एक पक्षी बैठा था। उसने मुझे देखते ही चिल्लाने लगा पकड़ों, लूटों, जल्दी करो, नहीं तो आदमी चला जायेगा। जिसकी पुकार को सुन कर, मेरे पास कुछ लोग गुफा से निकल कर, आने लगे। मुझे डकैतों का शक हुआ, ओर मैं वहां निकल कर भागा। जब आपके आश्रम में पहुंचा, तो मुझे यहां पर भी, उसी के जैसा एक पक्षी दिखाई दिया। जो कहता है आये, आपका स्वागत है पानी पीजिए, विश्राम करे, इत्यादि। यह सब क्या रहस्य है? इसके बारें में आपको कुछ पता है। इस पर आश्रम के गुरु जी ने, कहा वहां पर लुटेरों का झुंड रहता है। उसी की संगत में वह पक्षी रहता है, इसलिए वह वैसे ही बातें भी करता है। वह इस पक्षी का भाई ही है। जो पक्षी आपको आश्रम में दिखा है। वह यहां रहता है इसलिए वह यहां की भाषा में बात किया करता है।

इस कहानी से यहीं शिक्षा मिलती है, की हम जिस व्यक्ति कि संगत में रहते हैं, उसी के समान बातें भी करते हैं। उसी प्रकार का हमारा स्वभाव बन जाता है। जब हम परमात्मा के संगत में रहते हैं। तो हम परमात्मा जैसे ही बन जाते हैं। जो हमारा वास्तविक स्वरूप है, उसको हम सब प्राप्त कर लेते हैं। और जब हम साधारण मानव के साथ रहते हैं। जो हर प्रकार का केवल षड्यंत्र करता है, तो हम उसी प्रकार के षड्यंत्र कारी बन जाते हैं। यह कहानी विंध्यपर्वत के जंगल की ही है।

इस संसार में दो तरह मनुष्य रहते हैं, एक तो वह हैं, जो आजीवन अंधेरे में रहते हैं, और संसार का वह उपभोग करते हैं, और उन को हर कोई जानता है, सिवाय उनके। एक दूसरे तरह का भी मनुष्य यहां इस भूमंडल पर रहता है। जो प्रकाश में रहता है, अर्थात जिनके आत्मा का दीपक जलता है, लेकिन इस जगत के सूर्य प्रकाश में भी वह संसार में किसी को भी दिखाई नहीं देते हैं।

यहां विंध्य मंडल में जब राजा हुआ करते थे, तो पुरा क्षेत्र विंध्य क्षेत्र के नाम से ही जाना जाता था। बाद जब मुसलमान आता ताई आए। तो उन्होंने इस पर अपना अधिकार कर लिया। बाद में अंग्रेज आये, तो इन्होंने अपना अधिकार कर लिया। और उन्होंने अपने एक प्रसिद्ध मोजार्ट राजा के नाम पर इस क्षेत्र का मिर्जापुर नाम रखा। मोजार्ट का एक अर्थ राजाओं का नगर भी होता है। पहले से ही यहां पर बहुत राजा हो चुके हैं। यह पूरा क्षेत्र पहले बीहड़ जंगल हुआ करता था। दक्षिण में विंध्यपर्वत और उत्तर में गंगा नदी विद्यमान हैं।

जैसा कि मैंने प्रारंभ में बताया था मिर्जापूर के कुछ क्षेत्रों का वर्णन महाभारत में भी आती है यही के राजा भुरीश्रवा थे जिन्होंने महाभारत में युद्ध किया था, और वीरगति को प्राप्त हुए थे। गीता में भी इसके बारे में वर्णन आता है। भुरीश्रवा का युद्ध महाभारत के युद्ध में सात्विक के साथ हुआ था। इस से संबंधित बहुत सारे प्रमाण मिर्जापूर में अहरौरा के पास भुआलीखास गांव में आज भी उपलब्ध है।

जैसा कि हम जानते है कि मिर्जापूर नाम का अर्थ होता ही राजावो का शहर या राजावो का नगर होता है। जिस समय भारत पर मुसलमानों का राज्य था। जिसके बाद अँग्रेज़ों का अधिकार मिर्जापूर पर हो गया। जब इसका विंध्य क्षेत्र का नाम बदल कर मिर्जापूर कर दिया गया। मिर्जापुर के विंध्य क्षेत्र से थोड़ा-सा उत्तर में विंध्य कि घाटियों में उस समय जंगल पहाड़ के अतिरिक्त एक छोटा-सा राज्य एक रियासत के रूप में था। जिस को विजय पुर के नाम से जाना जाता था। जहाँ पर एक राजा हरिश्चन्द्र नाम के राज्य करते थे। उनके दरबार के मुख्य रत्नों में एक विद्वान ब्राह्मण कैलाश नाम भी था। पुराने समय की बात है राजा का कोई लड़का नहीं था, सिवाय एक लड़की के जिसकी शादी के बाद वह राजा रानी बहुत चिंतित थे। वह एक लड़का चाहते थे, जिसके लिये उन्होंने बहुत कुछ किया, मगर लड़का नहीं हुआ। इसके बारे में और कुछ विशेष मंत्रणा करने के लिये उन्होंने अपने मंत्री और विद्वानों की, एक सभा दरबार में बुलाई। जिसमें इस विषय पर राजा ने अपने अभिलाषा को सबके सामने रखा। तभी उन को एक बुरा समाचार मिला, क्योंकि कि उस समय भारत में मुग़ल साम्राज्य अपनी उचांईयों पर था। उनके पास मुग़लों का संदेश भेजा गया था। कि वह अपना राज्य मुग़ल साम्राज्य के हवाले कर दे, या फिर युद्ध के लिये तैयार रहे, किसी भी समय आक्रमण हो सकता है। राजा उस समय बहुत चिंतित हो गया, क्योंकि उनकी मृत्यु के बाद इस राज्य कि देखभाल कौन करेगा? राजा के इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं था। राजा के अधिकार में उस समय मिर्जापूर के लगभग सभी हिस्से थे। जो काफी बड़ा और विस्तृत था। जिसका क्षेत्र उत्तर में जौन पुर तक पूरब में वाराणसी तक पश्चिम प्रयाग राज से सटा हुआ था और दक्षिण में मध्य प्रदेश के बार्डर तक फैला हुआ। उस समय वाराणसी में राजा काशी नरेश का राज्य था। प्रयागराज में मांडा के राजा थे। जिनके ही वंशज के वि.पी. सिंह थे। जो भारत के अँग्रेज़ों से आजाद होने बाद, कुछ समय के लिये भारत प्रधानमंत्री भी चुने गये थे।

राजा ने अपने मंत्रियों और सेनापति को बुला कर, इनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि अपने राज्य को मुग़लों को सौंप देना चाहिए। इससे व्यर्थ में नर संहार होने बच जायेगा, और हम सब को कुछ क्षेत्र हमारे ज़ीने खाने के लिये, मुग़ल साम्राज्य से हमें अवश्य मिल जायेगा। राजा कि इस बात को सुन कर लगभग सभी लोग तैयार हो गये। सिवाय ब्राह्मण कैलाश के, दरबार में सब की बातों पर अपनी असहमति जताते हुए वह खड़ा हो गया, और राजा से अपनी बात कहने कि इजाजत मांगा।

पहले तो राजा ने कैलाश को बहुत तेज घूर कर देखा, फिर कुछ पल सोच कर उनकी विद्वता और प्रसिद्धि के बारे में विचार कर के, कैलाश को अपनी बात कहने कि इजाजत दे दी। कैलाश ने खड़ें हो कर सभी दरबारी और राजा हरिश्चन्द्र को संबोधित करते हुए, कहा कि इस तरह से हमको अपनी हार को स्वीकार करके, बिना युद्ध किये ही अपने राज्य को मुग़लों के अधीन करना कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है। इससे हमारा बहुत अपमान होगा और, हम सब भविष्य में कायरों के श्रेणी में माने जाएगे। हमें युद्ध करना चाहिए, हम जानते है कि उनके पास बहुत बड़ी सेना है। जिनके साथ उनकी सेना में बहुत बड़े-बड़े सुरमा और योद्धा है। इस तरह से हम अपने वीरों और योद्धाओं का अपमान नहीं कर सकते है। राजा ने कहा कैलाश तुम भूल रहे हो कि हमारी सेना और हमारे योद्धा सब मिला कर उसी प्रकार से हैं, मुग़लों की सेना के सामने, जैसे किसी ऊंट के मुंह में जीरा। हम कैसे उस विशाल सेना से युद्ध कर सकते है, क्या तुम्हारे पास कोई योजना है? तो हमें बताओ, हम अवश्य उस पर विचार करेंगे।

कैलाश ने कहा कि हम इसके लिये अपने पड़ोसी राजाओं से मित्रता कर सकते है। प्रयागराज के राजा और काशी के राजा की सेना यदि हमारे पास हो जाती है। तो हम मुग़ल सेना को अपने राज्य में प्रवेश करने से रोक सकते हैं। और यदि हम सब मिल कर मुग़ल सेना से लड़ते है, तो हम उनके सामने बड़ी मुसीबत बन सकते हैं। इसके साथ मुग़ल सेना को जो हमारे क्षेत्र से परिचित नहीं है। उसको हम सब गंगा कि तराई में घेर कर मार सकते है। यदि एक बार मुग़ल सेना विंध्य पर्वत की घाटी में, गंगा पार करके पहुंच जाती है। तो हम उसे जिंदा वापिस नहीं जाने देंगे। दक्षिण में पर्वत है, जहाँ से भागना संभव नहीं है उत्तर में गंगा है। पूरब में भी पहाड़ा है, मुग़लों कि सेना उत्तर से ही हमारे नगर में घूस सकती है। इसको रोकने के लिए हमें सिर्फ यही करना है, कि किसी तरह से छानबे क्षेत्र को पानी से भर देना है। रात्रि के समय में, पश्चिम के रास्ते से, जिससे उनकी सेना पुरी तरह से घीर जाएगी, और हमारे सैनिक आसानी से उन्हें मार सकेगी हैं। राजा हरिश्चन्द्र को कैलाश की योजना में दम मालूम पड़ा, और उन्होंने कहा तुम ठीक कह रहे हो।

अगले ही दिन पत्र लिख कर प्रयागराज और वाराणसी के राजा से संपर्क साधा गया, और युद्ध कि तैयारी की जाने लगी, और सेनापति के स्थान पर इस युद्ध का सेना पति कैलाश को राज ने नियुक्त किया। सारी सेना और सभी अधिकारी के साथ सेना भी कैलाश के आदेशों में कार्य करने लगी।

इस तरह से कैलाश ने एक अलग आपात कालीन सभा बुलाई। जिसमें राज्य के मुख्य अधिकारियों को भी शामिल किया गया, और कुछ गुप्तचर को भी काम पर लगाया गया। जो आने वाली मुग़ल सेना की सभी गुप्त जानकारी, लगातार कैलाश को देते रहे। इसके अतिरिक्त पड़ोसी राजाओं के पास भी कैलाश ने अपने दो विश्वसनीय आदमी को संदेश लेकर भेजा। कि आप हमारे साथ मिल कर मुग़लों का सामना

करे, अन्यथा सभी मुग़लों के अत्याचार का सामना करने के लिये तैयार रहे। इसके बाद कैलाश ने सभा का समापन किया, और अगले दिन मिलने का वादा करके सबसे विदा ले कर, अपने घर को चल दिया। कैलाश स्वयं एक बहादूर विद्वान व्यक्ति के साथ अपने नौ शक्तिशाली पुत्रों कि क्षत्र छाया में रहता था। जिससे जो कैलाश का विरोध करने वाले राज्य में थे। उन सब कि कैलाश के सामने बिल्कुल नहीं चलती थी। कैलाश ने अपने प्रत्येक पुत्रों को एक-एक सेना की टुकड़ी की कमान सौंप कर सब को युद्ध के मैदान में, गंगा कि तराई में भेज दिया, और उनसे एक ऐसी नहर का निर्माण करने को कहा, जिससे गंगा का पानी उस विशाल विंध्य की घाटी में पहुंच सके, जो जंगली और उस्र भूमि है। कैलाश के नौ पुत्र सब के सब एक से बढ़कर एक सुरमा और बहादुर व्यक्ति थे। जिनके खून में वफादारी और साहस कुट-कुट कर भरी थी। सबसे बड़ा बेटा राजेन्द्र नाथ जो एक खतरनाक तलवार बाज तीर बाण घोड़ सवारी और हर प्रकार के युद्ध की कला कौशल से युक्त था। इसी तरह कैलाश के प्रत्येक पुत्र हर तरह से सबल और सक्षम थे। जिन पर कैलाश को बहुत अभिमान के साथ स्वाभिमान भी था।

जिस गांव का कैलाश है उसके ही पड़ोस में एक गांव के रहने वाले ब्राह्मण परिवार में सदानंद नाम के व्यक्ति भी रहते है। जिन को प्रेम से लोग (मानस के नाम से भी पुकारते है) इनके भी दो पुत्र है जो बहुत वीर और सुरमा के साथ योद्धा भी है। जिन में से एक 'मानव' और दूसरे 'दानव' था। यह दोनों मानस के साथ उसके कार्य भार को देखते थे। इनका कार्य था राजा के द्वारा जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा जो लाखों एकड़ में फैला था। जहाँ पर खेती का काम होता था, जो गंगा किनारे उत्तर से लेकर दक्षिण में विंध्य पर्वत तक फैला है। जिसकी देखभाल मानस और उसके पुत्र करते थे। यह कैलाश के विशेष वफादार और परम मित्र थे। मानस सारी जमीन में खेती का कार्य कराता था, और उसकी लगान आदि किसानों और कास्तकारों से लेकर, राजा के कोश में जमा कराने के कार्य के साथ, अनाज संग्रह कराना इत्यादि कार्य, इनके जिम्मेदारी में होता था।

यह दोनों बहुत संपन्न और राजा के दो बाजू के समान थे। राजा हरिश्चन्द्र इन पर बहुत भरोसा रखता था। इसलिए इन को व्यक्तिगत रूप से उपयोग करने के लिए काफी जमीन दे रखा था। जिसमें यह अपनी स्वयं कि खेती कराते थे। जहाँ पर इनके अंतर्गत कई सारे गांव भी इन को दिए गये थे। इनके स्वयं के उपयोग के लिए, इन्हें बहुत सारे घोड़े - हाथी कि व्यवस्था राजा के द्वारा दी गई थी। जो इनके सेवा में हमेशा दिन रात तत्पर रहते है। जैसे कपड़ा साफ करने के लिये धोबी का खानदान, जिसके लिये अलग से जमीन को दिया गया था। लकड़ी का कार्य करने वाला लुहार, उसको भी जमीन दिया गया था, ज़ीने खाने के लिये। कहार मिट्टी आदि का बर्तन बनाने वाले, नाई, आदि आदी पारंपरिक सेवक थे।

इनका बहुत बड़ा अपना व्यापार भी नाव के माध्यम से हुआ करता है, जो यहां मांझी हैं, उनके पास बड़ी- बड़ी लकड़ी की मजबूत नाव हैं, जिन पर लद कर बहुत सारा अनाज यहां से बाहर जाया करता है, बंगाल की खाड़ी तक की यात्रा की जाती है अर्थात समंदर के मार्ग से माल बाहर जाया करता है, और वहां से वापिस में माल मसाला इत्यादि माल को लाद कर जहाज पर लाया जाता है।

इनके बहुत सारें शत्रु भी थी। जो इन की समृद्धि और शक्ति को देख कर जलते थे। इसलिए वह लोग अपना गुट बना कर, इस समय मुग़ल सेना से मिलकर इनके खिलाफ षड्यंत्र कर रहे थे। जिसमें कुछ लोग कमल नाथ के खानदान के पूर्वज भी थे, (जिसके बारे में और अधिक कहानी के उत्तरार्ध में ज्यादा जानकारी मिलेगी) लेकिन यह समय इतने शक्तिशाली नहीं थे, जो सामने से किसी प्रकार की कोई दिक्कत इनके लिए खड़ी कर सके, इसलिए यह सब कोलों भील और मुसहर आदी के समुह में रहते थे। यह कोल, भील, मुसहर एक बहुत ही प्राचीन समय की एक खतरनाक जन जाती है, जो आदिवासी कहे जाते हैं, जो प्रायः जंगलों में रहा करते थे, उन्होंने एक बार महाभारत युद्ध के सबसे बड़े योद्धा अर्जुन को भी परास्त कर दिया था। जिसके कारण किसी तरह से वह अपनी और अपने साथ कुछ लोगों की जान को बचाने में सफल हो पाया था, जब वह द्वारिका से महाराज कृष्ण की प्रजा को उनकी मृत्यु के बाद अपने राज्य में ला रहे थे, उस समय बड़ी मुश्किल से अर्जुन अपनी और अपने साथ मात्र कुछ एक हजार कृष्ण की प्रजा को लाने में सफल हो पाये थे, जिन को उन्होंने हरियाणा नामक स्थान पर बसाया था, जो आज भी दिल्ली के बगल का एक राज्य है।

इन सब का नेता कमला नाम का एक व्यक्ति था। जो मुग़ल सेना की हर प्रकार से सहायता करता था, जिसने विजय पुर साम्राज्य को जितने के लिये उत्तर के जंगलों में अपना पड़ाव डाल रखा है। जहाँ पर कमला रात्रि के समय जा कर, विजय पुर के राजा की गुप्त जानकारी को और उसके इरादे के बारें में बताता है। कि राजा हरिश्चन्द्र मुग़ल साम्राज्य के साथ विद्रोह करने के लिये तैयार हो गये हैं। जिसमें कैलाश ने उन को भड़का कर युद्ध के लिये तैयार कर लिया है, जिसके साथ वाराणसी और प्रयागराज के राजा की सेना भी होगी। उस समय मुग़ल साम्राज्य कि सेना का सेनापति शमशेर खान था। उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए, अपने गले से एक मोतियों कि माला निकाल कर कमला के हाथों में रखते हुए कहा, आने दो सालों को हम उन को वैसे ही भूजेगे जैसे दाना भूजने वाला दाने को भर भुजता है, अपनी भरसाई में, और आगे शमशेर ने कहा कमला को, कि तुम जा कर विजय पुर नगर की सेना, और सभी गाँवों के नागरिक में, यह गुप्त रूप से प्रचार कर दो, कि यदी जो हमारे मुस्लिम धर्म को ग्रहण कर लेगा, उन सब को माफ कर दिया जायेगा, और उन को हम विजय पुर रियासत जितने के बाद बड़े-बड़े पद पर अपने अधिकारी के रूप में नियुक्त करेंगे, इसलिए हमारा साथ दे। और कमला को वहाँ का नया राजा बना दिया जायेगा। जिस को

सुन कर कमला बहुत प्रसन्न हुआ, और रात्रि के समय अपने घोड़े पर सवार हो कर विजय पुर के लिये रवाना हुआ, और सुबह होने से पहले, भोर में ही विजय पुर राज्य कि सीमा में प्रवेश कर गया।

जिसकी सूचना कैलाश के गुप्तचर के द्वारा कैलाश और उसके पुत्र को हो गई।

कैलाश ने कहा कि उसको रास्ते में ही पकड़ कर जेल में डाल दिया जाये। ऐसा ही किया गया, कमला को सैनिकों के द्वारा पकड़ कर जेल में डाल दिया गया।

अगले दिन राजा हरिश्चन्द्र के दरबार में कमला को पेश किया गया, जहाँ पर उसने अपने अपराध को स्वीकार कर लिया, और मुग़ल सेनापति कि योजना और उसके द्वारा दी गई मोती कि माला भी, राजा के समक्ष प्रस्तुत किया। राजा ने कहा तुम्हारे गद्दारी की सजा तुम्हें मौत दी जाती है, और अपने सैनिकों को आज्ञा दिया, कि इसको ले जा कर विजय पुर नगर के चौराहा पर, फांसी के उपर लटका दिया जाये। जिससे राज्य के और नागरिकों को भी ज्ञात हो, कि हम से गद्दारी की सजा क्या होती है? इसके अतिरिक्त जो इसके साथी उनके भी पकड़ कर उन सब को अंग भंग कर दिया जाये। सिपाही गद्दार कमला को अपने साथ ले गये, और साम के समय उसको भरे बाजार के सामने नगर के चौराहा पर फांसी पर लटका दिया, जिससे कमला के प्राण पखेरू पल में ही उड़ गये, और दूसरे सभी उसके सहयोगी को पकड़ कर, उन को अंग भग कर दिया गया।

दूसरे दिन राजा हरिश्चन्द्र के दरबार में एक दुत ने आने की गुजारिश कि, और उसको आने की आज्ञा राजा के द्वारा दी गई। जब वह आया, तो राजा ने उससे पूछा, दुत क्या समाचार लाया है? दुत ने बताया कि प्रयागराज और वाराणसी के राजा के प्रतिनिधि हमारे युद्ध के निमंत्रण पर आयें है। और आप से मिलना चाहते है। राजा ने कहा उन को दरबार में आने दे। दरबार में दोनों राज्य के प्रतिनिधि आये, और पहले राजा का अभिवादन किया, और कहा कि हमारी सेना मुग़ल साम्राज्य की सेना से टक्कर लेने के लिये तैयार है। राजा ने कहा हमें ऐसी ही आप लोगों के राजा से उम्मीद थी।

कैलाश ने युद्ध कि पूर्व संध्या पर सभी को संबोधित करते हुए। अपनी सेना और सभी अधिकारियों को उत्साहित करते हुए, सबसे पहले सब का यथा योग्य अभिवादन किया, फिर उसने आगे कहा कि मेरे मित्रों यह संकट का समय है और यही समय हम सब कि परीक्षा का है। हम सब जानते है कि इस विश्व ब्रह्माण्ड के उद्भव से पहले केवल एक अदृश्य शक्ति परमेश्वर के रूप में विद्यमान थी। उसने इच्छा की मैं अनंत रूपों में हो जाए। उस अदृश्य परमेश्वर ने एक बृहद्त्तम उद्घोष रूप शब्द ओ३म का उच्चारण किया, जो परमेश्वर का निज नाम है। जैसा कि वेद की मान्यता है, जिसमें शब्द ज्ञान है। इस तरह से एक मायने में

शब्द को भी ईश्वर या ब्रह्म कहते है। इस परमेश्वर के ओ३म् नाम के उच्चारण मात्र से अदृश्य जगत से दृश्य जगत में बहुत सूक्ष्म एक अणु का सर्जन हुआ, जिसमें प्रथम ब्रह्म कण, दूसरा विष्णु कण, तीसरा महेश कण कहते है। यह एक परमाणु रूप बन गये, और यह ब्रह्म कण निरंतर विस्तार करने लगा। जिससे आकाश का जन्म हुआ, जिससे मन बना और उसी एक मन को अनंत ब्रह्माण्डो का गर्भ कह सकते हैं। यह उस परमेश्वर के लिये कच्ची सामग्री कि भाती था। जिससे ही वह अनंत किस्म के इस अद्भुत जगत की रचना की, जैसा की हमारे प्राचीनतम शास्त्रों में आता है कि अग्नि, वायु, जल, आकाश और पृथ्वी यह पांच प्राकृतिक भौतिक दृश्य मय पदार्थ हैं। जिस हम अपनी नग्न आँखों से देख सकते हैं। यही महेश कण है, यह एक ही पदार्थ से अलग-अलग रुपों में विभक्त हुए है। जैसा कि हम सब जानते है, कि जल एक ऐसा पदार्थ है जिसमें आग और हवा भी है। जिस प्रकार से वायु में आक्सिजन जीवन के लिये आवश्यक तत्व है। जिस को जल के अन्दर रहने वाले जलीय जीव मछली आदी पानी में से छान कर स्वयं लेते हैं। और अपने आप को पानी के अन्दर ज़ीने लायक बनाते है। पानी के एक परमाणु में दो तत्व है, आग और हवा और इससे तीसरा स्वयं जल बनता है, चौथा तत्व आकाश है, इनके मध्य में ही विद्यमान है पाँचवाँ तत्व यह पृथ्वी है, जो इन चारों के मेल से बनी है। सर्व प्रथम ज्वलनशील धुआं था, जो आगे चल कर अग्नि का रूप धारण किया, जिन से बहुत सारे तारों का उदय हुआ। इन तारों से अनंत ग्रहों का उद्भव हुआ, और फिर इन ग्रहों पर जीवों का उद्भव हुआ क्रमशः समय के साथ जब ग्रह और तारें आकाश गंगा में स्थापित हो गये। तो उसके बाद इस में उपस्थित कुछ ग्रह पर जैसे शुक्र, वृहस्पति, मंगल, आदी ग्रह पर जीवन का उद्भव हुआ। इन को व्यवस्थित रूप से उस परमेश्वर ने पैदा किया, सबसे पहले शुक्र ग्रह पर आज के अरबों खरबों साल पहले वायु मंडल निर्मित किया गया, उसके बाद उस ग्रह पर वनस्पति युग आया। जिससे तरह-तरह के वृक्ष लता पेड़ पौधों को उत्पन्न किया गया, उसके उपरान्त देव युग, फिर मनु युग आया। अर्थात मन का सर्जन हुआ जो आकाश का ही एक रूप है। यह विष्णु कण के रूप में है। क्योंकि मन ही है, जो दोनों में एक साथ उपस्थित रहता है। अर्थात यह एक ऐसा तत्व है जो दृश्य और अदृश्य को एक साथ जोड़ता है, अर्थात मन विशुद्ध रूप से ब्रह्म के स्वरूप को साक्षात्कार करके उनसे एकात्म कर सकता है और यही मन प्रकृति के मुख्य देवता महेश से भी विशुद्ध रूप से जुड़ कर इस दृश्य मय जगत का सर्जन कर सकता है। जो मन पहले ग्रह में तारा में रहा, फिर वनस्पतियों में रहा, फिर इसने एक कदम आगे बढ़ कर, चलते फिरते प्राणि और सूक्ष्म से बृहद जीवों के शरीर का रूप ग्रहण किया। सबसे अन्त में मानव की शरीर का उद्भव हुआ। इस मानव को स्वयं का ज्ञान परमेश्वर के सामन था। प्रारंभ से इसका झुकाव प्रकृति की तरफ अधिक रहा, जिसके कारण ही यह निरंतर अवनति ही करता रहा। जिस को हम यह कह सकते हैं। कि यह मन ही बहुत अधिक शरीरों को धारण किया, जिसमें बहुत सारें देवी देवता और अवतार आते हैं। ऋषि महर्षि के शरीर में यह मन उपस्थित हुआ। अवनति के कारण ही, यह एक ग्रह को नष्ट करता हुआ, दूसरे ग्रह पर अपना निवास बनाता रहा। शुक्र ग्रह के वायुमंडल को और वहाँ क सभी जीवों का अन्त करके, यह बृहस्पति पर अपनी वस्ति वसा लिया, और अरबों सालों तक

उस ग्रह के संसाधन का दोहन के साथ वहां रह कर उसका उपयोग किया, और उसको भी अधमरा करके, जब देखा, कि इस पर जीवन का रहना संभव नहीं है। तो वह मंगल ग्रह पर अपना निवास स्थान बनाया। वहाँ पर भी अरबों सालों तक रहा, जब उस ग्रह के जैविकी संसाधन का अंत हो गया, तो यह मानव अर्थात हम सब के पूर्वज इस पृथ्वी पर अपना निवास बनाने के लिये आ गये। यह मन ही परमेश्वर के साथ एक हो कर, ज्ञान वान बन कर, अपने ज्ञान से ही सभी जीव जंतु का पुनः सर्जन कर दिया, यहाँ पृथ्वी पर। सर्व प्रथम ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन पुरुष हुए इन तीनों के अधिकार में ही यह सम्पूर्ण दृश्य मय जगत हो गया। जैसा की मैंने पहले बताया कि महेश जिन को हम शिव के नाम से भी जानते हैं। यह संहार के देवता के रूप में माने जाते है। विष्णु अर्थात जो मन के स्वामी है जिनके अधिकार में दृश्य और अदृश्य दोनों प्रकार के जगत में संतुलन बनाने का कार्य है। जो इस जगत के पालन करता है। तीसरे ब्रह्मा जिनका मुख्य कार्य है। जगत का निरंतर सर्जन करना। ब्रह्मा ने ही, सर्व प्रथम अपनी बुद्धि से ब्राह्मणी नाम की स्त्री को जन्म दिया। इससे दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक यक्ष दूसरा रक्ष अर्थात जैसा की नामों से प्रतीत हो रहा है। कि यक्ष नाम का जो पुत्र ब्रह्मा के थे, वह सिर्फ पवित्र कार्यों को करते थे, जिसमें यज्ञ सर्व श्रेष्ठ कर्म है। जिससे ही इस विश्व ब्रह्माण्ड की रक्षा संभव है। दूसरे पुत्र रक्ष थे, जिसका कार्य था यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्मों की निरंतर रक्षा करना। जो आगे चल कर देवता और दैत्य के रूप में विख्यात हुए।

इस जगत में। जब इस जगत में बहुत समय तक देवता और दैत्यों ने राज्य किया, और इस दृश्य मय जगत के आकर्षण में शक्ति के कारण दोनों अपने मुख्य कर्मों से विरक्त होने लगे। जिससे उन दोनों में द्वेष और राग ने अपना स्थाई निवास स्थान बना लिया। जिसके परिणाम स्वरूप काम और क्रोध ने भी अपनी जड़ गहरी जमा ली। इसका परिणाम यह हुआ कि यज्ञ रूपी कर्म निरंतर कम होता गया, और निकृष्ट कर्मों की मात्रा में इजाफा होने लगा। जिसके कारण दोनों में संघर्ष होने लगा। यहाँ भारत भूमि पर उन को आर्य और अनार्य के नाम से जानते हैं। जैसे राम कृष्ण आदी के पुरखे आर्यों में आते हैं, रावण आदी के पुरखे राक्षस में आते है। उन्हीं को देवता और दैत्य कहते हैं, यह दोनों ही ऋषि महर्षि की संतान थी, जिनके पिता स्वयं ब्रह्मा है। इनके ही वंशज आज भी इस जगत में चल रहें है। एक श्रेष्ठ किस्म के मानव वह जो देवता के समान है। जो दूसरों के दुःख दर्द पीड़ा को समझते हैं। जो सत्य और धर्म की रक्षा करके दुष्टों के संहार के लिये इस पृथ्वी प्रकट होते हैं। जिनकी संख्या अत्यधिक कम है। दूसरे राक्षस दैत्य हैं, जिनकी संख्या बहुत अधिक है। जैसा की हम सब जानते है, कि जो श्रेष्ठ लोग पहले थे जिन में से कुछ के बारें हम अच्छी तरह से जानते हैं। जैसे राम या कृष्ण जिन को भारत का बच्चा-बच्चा जानता है। उन को लोग भगवान और विष्णु का अवतार मानते हैं। इनके पास इतनी क्षमता थी, कि यह जिसे हम आज जड़ समझते है। जैसे पानी जो सागर में विद्यमान है, जिसने उन को रास्ता दिया था। उसके उपर पुल बना कर वह रावण को मारने के लिये लंका गये थे। दूसरा कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कानि उंगली से उठ लिया था। अगस्त ऋषि ने सागर को सुखा दिया था। राम के ही वंशज थे भगीरथ जिन्होंने गंगा को

आकाश से जमीन पर लाया था। इसके पीछे मैं यह बताना चाहते हूं। राम के ही पूर्वजों में विश्वामित्र का भी नाम आता है जिन्होंने बहुत बड़ा चमत्कारिक कार्या किया था, कि पहले लोग इन पदार्थों के देवता शिव की आराधना करके उनसे अपना मन चाहा कार्य सिद्ध कर लेते थे। दूसरी बात जो मैं बताना चाहता हूं, वह यह है कि पहले जो शुक्र, वृहस्पति, मंगल पर सृष्टि कैसे खत्म हो गई? उसका कारण यही है कि देवता और दैत्यों का निरंतर युद्ध या संग्राम होता रहा। जब देवताओं की संख्या कम होने लगी दैत्यों का अधिकार ग्रह पर होने लगा। हर तरफ त्राहि - त्राहि मचने लगी, जिससे हर कोई प्रताड़ित होने लगा। तब जैसा की कृष्ण गीता में कहते है यदा-यदा धर्मस्यः जब- जब पृथ्वी पर दुष्टों की संख्या और अत्याचार बढ़ेगा और धर्म का नाश होगा। तब- तब मैं यहाँ जन्म लेकर उस ग्रह का उद्धार करुंगा, और उन सब का साम्राज्य समाप्त करके, धर्म और सत्य के राज्य की स्थापना करुंगा। यह एक सिद्धांत है, इसी पर चल कर परमेश्वर ने मानव शरीर में कुछ समय के लिये अवतरित हो कर, संपूर्ण जगत को अधर्म से मुक्त किया। जिसमें उस ग्रह के राक्षस बंस को खत्म करने के लिये, खतरनाक युद्ध हुए। जिसमें आज से भी आधुनिक और खतरनाक हथियारों का प्रयोग किया गया था। उनके पास परमाणु बम आदि कि श्रेष्ठतम और उत्तम किस्म के खतरनाक अस्त्र शस्त्र थे। इसका नया प्रमाण पृथ्वी पर आज भी मिल रहा है सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यता के अन्त का कारण यह परमाणु बम ही थे। जिन को हमारे पूर्वजों ने इस पृथ्वी पर गिराया था। पहले के समय में अति उत्तम विमान और स्पैसक्राफ्ट थे। जो आकाश में प्रकाश की गति से यात्रा करके, एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर आसानी से पहुंच जाते थे।

पहले के समय में एक राक्षस राजा शाल्व था जो लाखों साल जिंदा रहने वाला आदमी था, क्योंकि उसने अपनी चिकित्सा की उत्तम विधि के सृजन से उसने मृत्यु पर अधिकार कर लिया था। जिसके पास बहुत बड़ी सेना और बहुत अच्छे स्पैसक्राफ्ट थे। जिसने शुक्र ग्रह, वृहस्पति ग्रह और मंगल पर अपना अधिकार कर लिया था, और देवताओं को वहाँ से भगा दिया था। देवताओं ने अपनी जान बचा कर, यहाँ पृथ्वी पर अपना गुप्त स्थान रहने का बना लिया था। जिसकी खोज उसने करके यहाँ पृथ्वी पर भी हमला करना शुरु कर दिया था। जिसके संपर्क में रावण आदि राक्षस भी थे, जिनके राज्य और अत्याचार को राम ने एक बार समाप्त कर दिया था। और रामराज्य स्थापित कर दिया था। लेकिन कृष्ण के समय आते-आते राक्षस फिर बढ़त को प्राप्त कर लिया था। जिसमें दुर्योधन आदि प्रथम थे, इस पृथ्वी पर, जिसके लिये कृष्ण ने महाभारत जैसे भयंकर युद्ध को कराया। जिस युद्ध में इस पृथ्वी का तीन हिस्से से सभी जीव जंतु प्राणि को मार दिया गया था। जब शाल्व को यह को यह ज्ञात हुआ, की उसकी योजना कामयाब नहीं हो रही है। उसके सारे जो योद्धा हैं, वह मारे जा रहे हैं। और पृथ्वी पर सत्य के साथ धर्म का राज्य स्थापित हो गया है। तब उसने भयंकर क्रोधित हो कर, अपनी सभी शक्ति को अपने तीनों ग्रहों से एक साथ करके, कृष्ण के राज्य पर छोड़ा था। उस समय कृष्ण अपने राज्य द्वारिका में रहते थे। जब उस पर शाल्व ने भंयकर आक्रमण कर दिया, जिससे इस पृथ्वी पर उसने बहुत आतंक मचा दिया था। जिससे कृष्ण बहुत परेशान

हो गये थे। उन्होंने भगवान शिव साधना करके उन को प्रसन्न किया, और उनसे ऐसे अस्त्र शस्त्र लिये। जिनकी सहायता से शाल्व के रहने के स्थान शुक्र ग्रह, वृहस्पति ग्रह और मंगल ग्रह के जीवन को हमेशा के पूर्णतः नष्ट कर दिया। जिसके कारण ही भगवान शिव का एक नाम त्रीपुरारी भी पड़ गया क्योंकि इन्होंने अपनी शक्ति से तीन अलग – अलग ग्रह पर नियंत्रण करने वाले राक्षस राज शाल्व के संहार कि कल्पना को साकार किया था।

मंगल ग्रह से पृथ्वी पर हमारे महापुरुष कैसे आये, और पृथ्वी पर कैसे अपने मानव सभ्यता का आगे बढ़ा इसका पुरा विज्ञान हमें यजुर्वेद के 16 अध्याय में विस्तार से मिलता है, आप लोगों की जानकारी के लिए मैं इस विज्ञान का वर्णन करता हूं, यह इतिहास नहीं है, यह विज्ञान है, क्योंकि वेद में कोई इतिहास नहीं है, और यह संपूर्ण मानव जाती के लिए संरक्षित ज्ञान कोष है। जैसा की अध्याय का प्रारंभ रूद्र से होता है, जो दुष्टों को रुलाने वाला है।

हे रुद्र दुष्ट शत्रु को रुलाने वाले, बलवान इच्छा शक्ति वाले जीव, तेरा क्रोध युक्त शक्ति शाली पुरुष, को विनाश कारी अस्त्र वज्र उपलब्ध हो और इस विनाशकारी वज्र से शत्रु का संहार करने के लिये, उसे ब्रह्म तेज ऊर्जा की दिव्य शक्ति प्राप्त हो और आपके भुजाओं से हमारे शत्रु को वज्र प्राप्त हो जिससे उनका समूल संहार हो।

हे सूर्य के समान सत्य का प्रकाश करने वाले, उपदेश को देकर सभी जीव को आनन्द पहुंचाने वाले, रुद्र समान-समान दुष्टों को रुलाने वाले और भयभीत करने वाले, श्रेष्ठतों को आनंदित करने वाले शिक्षक विद्वान! अथवा आप जो उपद्रव से रहित सत्य ज्ञान को प्रकाशित करने वाले, कल्याणकारी मानव शरीर के लिये, विस्तृत उपदेश रूप जो नीतिमान हैं। उसके द्वारा अत्यन्त परम सुख को प्राप्त कराने वाले उपदेश से मानव शरीर के कल्याण के साधन के बारे में उपदेश दे कर हम लोगों को चारों ओर से श्रेष्ठ विचारों से आच्छादित करके शीघ्र तृप्त करने वाले परमेश्वर।

जिस प्रकार से बादल जल को वर्षा करके सूर्य के ज्वलनशील प्रकाश से तपती पृथ्वी को आनंदित करते है, उसी प्रकार से हाथों से अस्त्रों का संचालन करने वाले दिव्य पुरुष अपने अस्त्रों का प्रयोग सत्य और प्राणि के कल्याण के लिए ही उपयोग करके मानव जाती के उत्थान और आनन्द के विस्तार के लिये, दिव्य भावों से संपादित ज्ञान का प्रकाश करने वाले वेद मंत्रो के विस्तार से सम्पूर्ण मानव को पुरुषार्थ युक्त करते हुए और निर्बलों के जीवन का रक्षक बन कर संसार को ऐश्वर्य युक्त करें।

हे महा मानव विद्वान जन अपने कल्याणकारी वचन के उपयोग से तुम हम सब साधारण जन को परम कल्याण करने वाले हो, जिस प्रकार से हम सब का कल्याण परमेश्वर नित्य अपने सूर्य के प्रकाश,

वायु, अग्नि तेज के द्वारा दिन प्रतिदिन कर रहा है, इसी प्रकार से आप सब दिव्य परम ऐश्वर्य को उपलब्ध कराने वाले, ज्ञान का प्रकाश करने वाले वेद वचन का उपदेश नित्य कर करा कर के, हर प्रकार से समाधान करके सम्पूर्ण मनुष्यजाति जड़ जंगम और स्थावर राज्य को क्षयी आदि राजरोग से रहित करें। वैसे ही कल्याणकारी वचन से निवृत्त करने वाले जो चिकित्सक जन है उनका भी हम लोग सत्कार करते हैं।

हे दिव्य पुरुष ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान का निरंतर उपदेश करने वाले, जिस प्रकार से प्रथम दिव्य महापुरुष परमेश्वर हम सब के अज्ञान को जान कर हम सब के अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तित किया है। जैसे सागर से दूषित जल को सूर्य अपने प्रकाश के तेज से तपा कर इस पृथ्वी पर सभी जीव के कल्याण के अमृत युक्त जल पीने के लिये उपलब्ध कराता है। उसी प्रकार से तुम भी हम सब के लिये, जो अज्ञान खतरनाक बिस युक्त सर्प के समान है, उसको अपने ज्ञान रूपी औषधियों से सभी जीव को अथवा जो रोग को उत्पन्न करने वाली औषधियां या जो काम प्रधान व्यभिचारिणी स्त्रीयाँ उन को अपने ज्ञान के प्रकाश से शुद्ध करके हमारे समीप रखें।

यह जो ताम्र युक्त दृढ़ाङ्ग सूर्य के समान अर्थात जो किंञ्चीत पिला अथवा धुमैला वर्ण युक्त सुन्दर हम सब प्राणि का हर प्रकार से कल्याण करने वाला मंगल ग्रह है। यहाँ हम सब चैन और आनन्द पूर्वक इसके आश्रय में रहते हैं, और जब यह हम सब प्राणि को कष्ट देने वाला या रुलाने वाला बन जायेगा, तो हम सब हज़ारों की संख्या में एकत्रित हो कर वीरों के आश्रय से जो हमारे विरुद्ध आचरण करते है उनका त्याग कर देंगे। अर्थात मंगल ग्रह का त्याग करके पृथ्वी पर जा कर वसेगें।

वह जो दुष्टों के विरुद्ध आचरण करने वाले महापुरुष थे, वह सब नील मणि को धारण अर्थात समंदर से युक्त जो अन्तरिक्ष से नीला दिखने वाली पृथ्वी ग्रह है, जिस पर हर प्रकार के संसाधन से युक्त है जो सभी प्राणि के रहने के योग्य है और यह पृथ्वी हर प्रकार से हम सब प्राणि का रक्षा करने में जो समर्थ है, उसको हम सब ने देख लिया है, जिस प्रकार से कुम्हार कि स्त्रियाँ रेगिस्तान में जल के भण्डार को देख कर प्रसन्न होकर सुखी होते है उसी प्रकार से हम सब भी प्रसन्न और सुखी हुए।

पृथ्वी पर हम सब प्राणि को खाने के लिये अन्न प्राप्त हुआ, यह नीला ग्रह हर प्रकार से शुद्ध ऐश्वर्यों से भरा हुआ है, जहाँ हज़ारों लाखों प्रकार के प्राणि के लिये हर प्रकार का संसाधन है, जो इन सभी प्राणि का हर प्रकार से रक्षा करने में समर्थ है। इसके बाद यह जो पृथ्वी है इस पर राज्य करने के लिये सत्व गुण प्रधान पुरुष मैं हर प्रकार से अन्ना आदि को प्राप्त करके अपने पराक्रम के द्वारा अपनी सभी शुभ इच्छा को सिद्ध करने में समर्थ हुआ।

शक्तिशाली ऊर्जा से युक्त बाड़ के समान अन्तरिक्ष यान के अन्दर में हम सब बैठ कर नीचे और उपर दोनों दिशाओं में यात्रा करने में समर्थ हुए, जिस प्रकार से बाड़ को नीचे कि दिशा से बल द्वारा आकाश में छोड़ा जाता है उसी प्रकार से हमारा अन्तरिक्ष यान नीचे से अपने शक्ति के दबाव के कारण वह आकाश में यात्रा करने में समर्थ हुआ। इस यान को हमने अपने हाथ से स्वचालित करते हुए अपने मंगल ग्रह से बहुत दूर इस पृथ्वी ग्रह पर ऐश्वर्य करने के लिये आ बसें।

१०. इस अन्तरिक्ष यान के द्वारा जो वाण के समान जिस प्रकार से वाण धनुष से निकलने बाद सीधा अपने लक्ष्य पर पहुंच कर ही रुकता है। उसी प्रकार से हमारा यह अन्तरिक्ष यान हर प्रकार की युद्ध सामग्री से सुसज्जित हो कर, भयंकर और खतरनाक बाड़ के समान मिसाइलों से कभी खाली नहीं होने वाले भण्डार के साथ अन्तरिक्ष यात्रा करने लगा और हम उसमें अस्त्र शस्त्र खत्म होने से पहले ही अन्तरिक्ष ही में भरने समर्थ हुए।

जिस प्रकार से हमारा बाण धनुष से निकल कर अपने लक्ष्य को भेदता है ठीक उसी प्रकार से हमारा खतरनाक अस्त्र वज्र (परमाणु बम) हमारे द्वारा संचालित हो कर हमारी इच्छा को सिद्ध करने के लिये इस विश्व ब्रह्माण्ड में कहीं भी हमारे शत्रु को पराजित करने के लिये, हम सब इसका अच्छी प्रकार से संसाधन या उपयोग करते हैं।

जिस प्रकार से हम सब अपने धनुष से बाड़ को अपने लक्ष्य को अन्तरिक्ष आकाश की दूरी को ध्यान में रख कर उसको उतने ही अनुपात की शक्ति से छोड़ते हैं, उसी प्रकार से हम अपने पास इन खतरनाक वाणों को वज्र शक्ति (परमाणु बमों) से आच्छादित करके अपने पास इनका संग्रह करके रखते हैं। ओर जिस प्रकार से एक योद्धा वाणों को अपने तरकस में रखता है उसी प्रकार से हम सब अपने अस्त्रागार में इन मिशाइलों को धारण करके रखते है।

इन वाणों को जो वज्र शक्ति (परमाणु बम) को धारण करते हैं, असंख्य युद्ध से सम्बंधीत कार्यों में विजय प्राप्त करने के लिये है। इन की देखरेख के लिये हमने अपनी सेना और सेनाध्यक्ष को नियुक्त किया है। जो हमारे लिये संग्राम में अच्छी प्रकार से विजय को प्राप्त करने में समर्थ है, जो हमेशा अपने शस्त्रों के अग्र भाग को हमारे शत्रु की तरफ केन्द्रीत कर के रखते हैं। जिससे हमारे राष्ट्र में हम सब आनन्द और अपने मंगल कल्याण कारी कार्य को सिद्ध करने में समर्थ हुए है।

हम हमेशा अपने वैज्ञानिक और श्रेष्ठ पुरुषों को गुप्त रूप या हर प्रकार से उनकी प्रशंसा करते हुए, उनके लिये हर प्रकार के आवश्यक संसाधन को उपलब्ध करा के नित्य नये -नये अनुसंधान के द्वारा अपनी सेना और अपने राष्ट्र की रक्षा और स्वतंत्रता के साथ ऐश्वर्य को प्रोत्साहित करते रहते है और दोनों प्रकार कि शक्ति बल और पराक्रम के विस्तार के लिये योद्धा पुरुषों को अच्छी प्रकार से जीवन यापन करने के लिये पर्याप्त मात्रा में उनके लिये धन और अन्न उपलब्ध कराते हैं जिससे वह कभी राष्ट्र के साथ विद्रोह ना करें।

हमारे राष्ट्र के जो महान पुरुष ज्ञानी विज्ञानी और ब्रह्मज्ञानी हैं और जो हमारे राष्ट्र के कमजोर, कायर, नपुंसक, निरुत्साहित, अज्ञानी क्षुद्र पुरुष हैं, इनके अतिरिक्त जो हमारे राष्ट्र की जनसंख्या को बढ़ाने और घटाने वाले स्त्री पुरुष हैं, इन की किसी प्रकार से आपदा से नर संहार ना है, जिसके लिये हम उन सब के माता पिता के समान रक्षा करने के लिये इन को अपने पुत्र के समान मान कर अपने प्रिय स्त्री और पुत्र के समान जान कर कभी इन को कष्ट ना हो ऐसा प्रयास निरंतर करते हुए हम, अपने राष्ट्र का संचालन करते हैं।

हमारे राष्ट्र में तत्काल उत्पन्न हुए संतान के शरीर के रक्षा के लिये, जब तक उसकी उम्र पांच साल कि नहीं हो जाती है, तब तक हमारी सरकार पूर्णतः उसकी देखभाल कि ज़िम्मेदारियों का वहन करते हुए, इसके अतिरिक्त हमारे राष्ट्र के दूसरे जो पालतू और जंगली जीव हैं, उनकी रक्षा और उनके संरक्षण के लिये पर्याप्त योजना को बना कर उन को नाश होने से बचाने की जिम्मेदारी का भी वहन करती है। गाय, घोड़े और दूसरे पशु धन की रक्षा कि विशेष व्यवस्था की जाती है और हमारे राष्ट्र के शूर वीरों को शांत रखने के लिये उन को क्रोध से मुक्त रखने के लिये, उन को बहुत प्रकार कि शिक्षा, दीक्षा, ज्ञान, विज्ञान, ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त मनोरंजन का साधन उपलब्ध कराते है जिससे हमारे राष्ट्र में गृह युद्ध की समस्या कभी भी ना उपस्थित हो।

हम उन दिव्य महान पुरुषों का नमन करते है जिनकी ज्ञान कि दिव्य प्रभा के प्रकाश से हमारी सेना हर दिशा में हमारे विजय का डंका बजाने में समर्थ हुई है, और हम उन सब की प्रशंसा करते है जो हमारे जंगलों को उजड़ने से बचा कर संरक्षित रखते हैं, जिसके कारण ही हम सब अपनी इस पृथ्वी को सूर्य के खतरनाक किरणों से सुरक्षित रखने में समर्थ हुए है। इन जंगलों के सुरक्षित रहने से ही हमारे जंगली जीवन के अतिरिक्त और दूसरे प्राणि का जीवन इन जंगलों के आश्रित होकर सदा हमारे राष्ट्र के लिये जरूरी संसाधन उपलब्ध होता है और जो पुरुष विषय आदि बंधन से मुक्त होकर, इन जंगलों में निवास करते है ऋषि, मुनि इत्यादि हैं, जो हर प्रकार के न्याय युक्त ज्ञान से हमारे जनमानस के हृदय को आलोकित करते

हैं। जिससे संसार रूपी भवसागर से तरने का मार्ग हम सहजता से ही उपलब्ध कर लेते हैं, और औषधियों से हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने में भी समर्थ होते हैं। जो यज्ञोपवीत के समान है, अर्थात तीन प्रकार के दु:खों से मुक्त करने में समर्थ है, जो शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक है।

हम उन सभी महान पुरुषों का आदर सम्मान और प्रशंसा करते है, जिनके कंधे पर राष्ट्र को चलाने की जिम्मेदारी को हम सब ने रखा है, जो हमारे राष्ट्र को हर प्रकार से व्याधि और बंधनों से मुक्त करने वाले हैं। जो संसार साधन के विस्तार करने के लिये जिम्मेदार है, जो साधारण मनुष्य अन्य प्राणि के स्वामी है। इसके अतिरिक्त जो हमारे शत्रु को कष्ट देने में समर्थ हैं और उन को रुलाने में महारत रखते हैं। व्यापारी के अतिरिक्त जो धान धान्य युक्त खेतों के रक्षक किसान जन है, क्षत्रियों के जो पुत्र हैं जो हमारी सारी भूमि के रक्षक हैं, जो किसी भी प्राणी पर अन्याय नहीं करते हैं और जो जंगल में रहने वाले जन जाति के कल्याण के लिये उपयोगी कार्य करते हैं।

हम अपने राष्ट्र में अपने विद्वान और सद् पुरुषों का निरंतर स्वागत सम्मान और अभिनंदन करते है जिन्होंने हमारे राष्ट्र के दु:खों को दूर करने के लिये और सुखों को विस्तार करने के लिये अपने जीवन का समर्पण किया है। इनके अतिरिक्त हम उन महान शक्तिशाली पुरुषों को का आदर सत्कार करते हैं, जो अपने जीवन को संकट में डाल कर हमारी राष्ट्र की जनता के सामूहिक जीवन को जोखिम से बचाव का निरंतर कार्य करते हैं। इनके साथ हम अपने राष्ट्र के किसानों को जो हमारी राष्ट्र की जनता की आवश्यकता की पूर्ति के लिए फलोत्पादक और अन्नोत्पादन करके हमारे राष्ट्र को स्वावलंबी, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर बनाने में अपना निरंतर योगदान देते हैं और वह पुरुष जो अपने जीवन में सदाचरण चरित्रवान होते जिन से प्रेरणा लेकर हमारे राष्ट्र के नवयुवक निरंतर अपने जीवन का निर्माण करते हैं, उनका भी हम सब समय-समय पर आदर और सम्मान करते हैं। हमारे राष्ट्र के सेवक वर्ग जो अपने परिश्रम से हमारे राष्ट्र को नित नई उचांई पर पहुंचाने का योगदान देते हैं, और इनके अतिरिक्त जो पुरुष औषधियों अपने दिव्य ज्ञान के प्रचार प्रसार से हमारी साधारण जनता तो नीरोग और स्वस्थ रखते हैं, उन सब का भी आदर सम्मान और अभिनंदन करते हैं और हमारे राष्ट्र के कर्णधार नेता सांसद मंत्री जिनकी प्रेरणा और उचित निति से हम निरंतर अपने राष्ट्र का कुशलता पूर्वक संचालन करते हैं, जिनकी सहयोग और जिनकी संरक्षा में ही हमारे देश के व्यापारी वर्ग के जन अपना माल एक देश से दूसरे देश में निर्भयता पूर्वक व्यापार करने में समर्थ होते हैं, और जिनके आश्रय और संरक्षण में रहने वाले हमारे ग्राम नगर में गृहों में रहने वाले गृहस्थ जन सुकून कि जिन्दगी को व्यतीत करते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे राष्ट्र में निर्भय होकर जो जन उच्च आसन पर विराजमान हो कर सत्य और न्याय का पंचम हमेशा उपर ही रखते है ऐसे न्याधीष जन को भी उपर्युक्त अवसर आगे बढ़ने के लिये प्रदान किये जाते हैं। जिनके न्याय के कारण ही अन्यायी जन जो दुष्ट प्रकृति के जन है उन को आगे बढ़ने से रोका जाता है, और जिन को निरंतर

प्रताड़ित दण्ड दे कर किया जाता है। वह पुरुष जिनके कंधे पर देश की रक्षा का भार रखा गया उन को भी हर प्रकार से हम हमेशा अपने राष्ट्र में हर प्रकार के साधन से सुसज्जित रखते है और उनका भी समय-समय पर आदर सम्मान और निरंतर अभिनंदन करते हैं।

हम सब हमेशा अपने राष्ट्र के एक कोनों से दूसरे कोने तक पहुंचाने वालें साधनों को निरंतर विकसित करते रहते हैं। जिससे एक स्थान से देश के दूसरे कोने तक पहुंचने में किसी भी व्यक्ति को कम से कम समय में पहुंच आसान हो सके, जिसके लिये विद्युत वाहन, वायुयान, इत्यादि का प्रबंध हमारी सरकार के द्वारा किया गया है, जिसमें कोई भी व्यक्ति हमारे देश का बिना किसी भेद भाव के एक साथ यात्रा करने में समर्थ हैं, इन साधन को सुचारु रूप से चलाने के लिये हमने उचित और योग्य पुरुषों को नियुक्त किया है, जिनकी आवश्यकता की पूर्ति हमारी सरकार कि तरफ से निरंतर किया जाता है। इन सार्वजनिक संसाधन को नुकसान पहुंचाने वाले के लिये भी हमारी सरकार ने उन्हें दण्ड देने के लिये अलग से अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित सेना पुरुषों को नियुक्त किया है। अच्छी प्रकार से दुष्ट व्यक्तियों को जो हमारे समाज के और मानवता के शत्रु है उन को प्रताड़ित करने के लिये नियुक्त किया हैं, जो अच्छी प्रकार से हर आने वाली भविष्य के संभावित ख़तरों को ध्यान में रखकर हमने उनके लिये आधुनिकतम शस्त्र जैसे राकेट लांचर, तलवार, बंदूक रिवाल्वर, बम, गोले, तोप मिसाइल, इत्यादि की व्यवस्था की गई है। जल, थल, वायु कही पर भी शत्रु को शिकस्त देने के लिये हर समय हमारी सैन्य तैयार रहती है। जिसके लिये श्रद्धावान देश भक्त पुरुषों को नियुक्त किया गया है। जो अपने राष्ट्र कि रक्षा के लिये अपने सर की बली देने में पीछे नहीं हटते हैं, और ना ही सर कलम करने में ही पीछे हटते है, हम अपने ऐसे वीर जवान और योद्धाओं का निरंतर आदर सम्मान और अभिनंदन करते रहते है। अन्यायी प्रकृति के चोर, लुटेरे, डकैत जो दूसरों की संपत्ती पर नजर गड़ा कर रखते है, ऐसे लोगों को वश में करने वाले सुरमा वीरों के लिये विशेष प्रकार कि व्यवस्था सरकार करती है जो सी. बी, आई, के रूप में हमारे लिये निरंतर कार्य रत रहते हैं, जो गुप्त रूप से कार्य करते है जासूस जो अपने जीवन को खतरा में डालकर देश के लिये कार्य करते हैं शत्रु देश की गुप्त जानकारी हमें ला कर देते हैं। इसके अतिरिक्त जो अपने धर्म का भी आचरण करने में कभी कोताही नहीं बरतते है, अर्थात धर्म, माता, पिता, मित्र आदि की हर प्रकार की सेवा में जो निरंतर संलग्न रहते हैं और जो जंगलों के उत्थान के लिये अग्रसर महा मानव जन है उन सब का निरंतर आदर सम्मान और अभिनंदन हर प्रकार से करते हैं। जिससे कारण ही हमारा देश का निरंतर उत्थान ही होता रहता है।

हमारे समाज और राष्ट्र में रहने वाले पुरुषों और स्त्रियों को निर्भयता पूर्वक जीवन ज़ीने के लिए, हमारी सरकार निरंतर ऐसे प्रयास करती है जिसके द्वारा समाज में बढ़ने वाले ऐसे पुरुष जो धोखा धड़ी से छल या कपट किसी दूसरे का धन संपत्ती को लूटने वाले जन है, जो सब प्रकार से कपट पूर्ण आचरण करने परिपक्व हो कर समाज में संलग्न है उन को पकड़ कर सीधा-सीधा गोली मार कर उनकी तत्काल

हत्या की व्यवस्था की गई है, इनके अतिरिक्त जो पुरुष गुप्त रूप से समाज से दूर रह कर अपने आदमी के द्वारा गिरोह बना कर तस्करी आदी का कार्य करते नशे का व्यापार जिस्म व्यापार, मानव व्यापार, बड़े अस्तर पर जो लूट पाट को अंजाम देते है उनके लिये सीधा-सीधा उनके ठिकाने या उनके छोटे मोटे राज्य को मिसाइल के द्वारा उड़ा कर नेस्तनाबूद करने की व्यवस्था हमारी सरकार ने कर रखा है। इनके दमन के जरूरत पड़ने पर हम परमाणु बम का भी उपयोग करने में पीछे नहीं हटते है। इसके अतिरिक्त जो हमारे सज्जन पुरुषों को परमाणु बमों से मारने का प्रयास करते हैं, उनके लिये भी उनसे भी शक्ति शाली बमों से हम सब उनका दमन करते हैं, और जो चोरी छिपे गुप्त रूप से पृथ्वी को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते हैं, उन को भी समूल नाश के लिये हम परमाणु बमों का उपयोग करते हैं। समाज में अज्ञान का प्रसार करने वालों के लिये दण्ड प्रहार करके मारा जाता है, रात्रि की समय में रास्ते में राहगीरों को लूटने वालों को तलवार से अंग भंग करने का प्रावधान किया गया है। हर प्रकार की अव्यवस्था अत्याचार कुविचार कु संस्कार के विस्तार को रोकने के लिये हर तरह प्रतिबंध की व्यवस्था की गई है। इसके अतिरिक्त इन दुष्ट जनों को जान से मारने के लिये पुरुष नियुक्त किये गये है। जिनके लिये हमारी सरकार हर प्रकार की व्यवस्था करती है।

कुछ पल के कैलाश ने अपनी वाणी को विराम दिया और आगे कहना शुरु किया इस तरह से भगवान कृष्ण कि तुलना में और उनके शत्रुओं की तुलना में यह मुग़ल साम्राज्य हमारे लिये कुछ भी नहीं हैं, यह भी राक्षसों कि संतान और रावण आदि के ही वंशज हैं, जो शुक्राचार्य के द्वारा अरब में सर्वप्रथम बसाये गये थे। हम सब ही देवता के वंशज हैं। जो हमारे राज्य को हड़पना चाहते है, वह हम सब के शत्रु है, यह सब राक्षस के समान है हमें वही कार्य करना है जो कार्य योगेश्वर कृष्ण ने और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने किया है। हमें सत्य कि धर्म की और अपने प्रजा की रक्षा के लिये यदि अपने जीवन को दाव पर लगाना पड़े तो कोई परवाह नहीं है। इसके लिये हम सब को तैयार होना होगा, सब ने एक साथ कहा कि हम सब हर तरह से तैयार हैं।

मेरे प्रिय विजय पुर राज्य के वासीयों, मैं अपना अनुभव आप सब के साथ बाट रहा हूं। मैंने अपने गहन अनुभव और शोध से यह जाना है, कि इस संसार में रहना है, और सफलता को हासिल करना है, और आप अपने लिये कुछ श्रेष्ठ करना चाहते हो, तो तुम्हें कुछ एक वस्तु को जीवन में स्थान नहीं देना चाहिए। पहली सबसे खतरनाक वस्तु है। शांति, दूसरी सरलता, तीसरी सज्जनता। यह केवल शब्द कोश में ही रहें, तो बहुत अच्छा है। यदी इनका स्थान जीवन में हो गया, तो जीवन का रहना बहुत कठिन और दुष्कर होगा। जो लोग शांति, सरलता और सज्जनता निर्दोषता कि बातें करते हैं। वह सारे धूर्त के साथ हिंसक और बहुत खतरनाक किस्म के व्यक्ति होते हैं। इनसे तुम्हें सावधान रहना चाहिए। अब संसार बदल गया है, आज के संसार में एक सरल शांत सज्जन और निर्दोष आदमी का जीवन जीना एक आत्मा हत्या

के समान है। और कौन बुद्धिमान आदमी स्वयं की आत्म हत्या करना चाहता होगा? जैसा कि हम सब जानते हैं, कि जो बहुत शांत और सज्जन किस्म के व्यक्ति होते हैं, और हमेशा हर किसी के साथ बहुत सरलता से और प्रेम भाव से ही पेश आते हैं। जिसके कारण ही उनके जीवन में कोई भी व्यक्ति उनके साथ नहीं अच्छा व्यवहार नहीं करता है। हर आदमी उन को मूर्ख समझता है, हालांकि वह बहुत ईमानदार और बुद्धिमान व्यक्ति होते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि यह संसार षड्यंत्र और साम, दम, दण्ड, भेद से चलता है, जो ऐसा नहीं करता है। वह राज्य को चलाने के योग्य नहीं है, ना ही वह राज्य के रक्षा के योग्य ही होता है। सरल और शांत लोगों कि बुद्धिमानी उनके लिये हमेशा एक नये संकट को ही खड़ी करती। उनके पिता परमेश्वर भी उनसे खुश नहीं रहते, क्योंकि वह अपनी शांति के कारण ही, जरूरत से अधिक सहनशक्ति वाले मानव होने की वजह से, लोगों कि दृष्टि में वह मूर्ख और बेकार समझे जाते हैं। और हमेशा उन को तरह-तरह यातना कष्ट ही प्राप्त होता है। मेरे मित्रों और साथियों- यह वह समय है, जब हम कुछ ऐसा कार्य कर सकते हैं। जिससे हम अपनी मातृ भूमि का कर्ज चुका सकते हैं। हम सब को परमेश्वर का अहोभाग्य मानना चाहिए, कि परमेश्वर ने हम सब को इस योग्य समझा, और ऐसा कार्य करने के लिये नियुक्त किया है। इसको ईश्वर को आदेश मान कर, हम सब को अपनी जान कि बाजी लगा देने में कोई कसर नहीं छोड़ना है। हम ही इस दृश्य मय हज़ारों ब्रह्माण्डों के मुख्य केन्द्र या ब्रह्माण्डिय मानव हैं। हमारे अन्दर ही वह अनंत ब्रह्माण्डों का स्वामी विद्यमान हो कर, वह त्रीकदर्शी हर पल साँसे ले रहा है। वह सम्पूर्ण दृश्य अदृश्य चरा चर जगत का नियंत्रण करता है। हमारे अन्दर ही वह वीग वैंग की घटना घट रही है, और हमारे अन्दर ही वह ब्लैक होल भी विद्यमान हो कर, हर पल घट बड़ रहा है। वह हमारे द्वारा ही ब्रह्माण्डों का सर्जन कराता है और हमारे द्वारा ही ब्रह्माण्डों को नष्ट भी कराता है। वह स्वयं कुछ भी नहीं करता है। वह सारा कार्य हमारे द्वारा ही पूर्ण कराता है। चाहे वह कार्य किसी के विकास के लिये उत्थान के लिये हो, या किसी के पतन या नाश करने के लिये हो। वह हमारा ही उपयोग करता है हम सब उस अदृश्य सत्ता कि हमारे कर्म के मात्र मोहरे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। हम स्वतंत्र नहीं है। हम सब उसकी परतंत्रता में ही, अपना सम्पूर्ण जीवन जीते हैं। यदि कोई कहे की परमेश्वर हमारे कर्मों का फल देता है, यह सत्य नहीं है हम जैसा कर्म करते हैं। उसका फल भी हम स्वयं ग्रहण कर लेते हैं। इसमें उसका कोई अधिकार नहीं है। वह किसी को कभी ना ही प्रसन्न कर सकता है। ना ही वह उसे दुःखी ही कर सकता है। हम मृत्यु के भयंकर निर्दय पंजों में फंस चुके हैं। तो उसमें हमारे स्वयं के कर्म ही कारण है, उसमें वह परमेश्वर कुछ भी नहीं कर सकता है, वह हमें मृत्यु के घातक खतरनाक पंजों से मुक्त नहीं कर सकता है। हमने स्वयं के सर्वनाश में ही रस लेकर बहुत अधिक परिश्रम किया है। हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्म के परिणाम का ज्ञान ना होने के कारण या लापरवाही के कारण जो कर्म किये जाते हैं। जिसका परिणाम हमारे लिये विनाश कारक सिद्ध होता है। मान लिया कोई एक पुरुष या स्त्री है, जो नियम संयम से नहीं रहते हैं और व्यभिचार करते हैं। शरीर का निरंतर दोहन करते हैं, कामुकता पूर्ण जीवन जीते हैं, उनका जीवन हमेशा दुःख मय होता है। वह हमेशा अपने प्रत्येक कर्म से अपने लिये नये-नये दुखों का निरंतर सृजन

करते हैं। इसके उपरान्त वह कितनी ही प्रार्थना या उपासना करते रहे, इससे उन्हें कोई फायदा नहीं होता है। सिवाय इन की परेशानी और बढ़ जाती है।

हमारी प्रार्थना या उपासना हमें ताकत वर बनाती है, और हमारे संकल्प मनोबल की दृढ़ इच्छा शक्ति को बढ़ावा देता है। जिससे हम अपनी मुसीबतों से पार बाहर निकलने में समर्थ होते हैं। इस में उस परमेश्वर का कोई योग दान नहीं है। यह निश्चित है जिसके साथ परमेश्वर होता है। उसके साथ यह संपूर्ण सृष्टि होती है। परमेश्वर कभी भी किसी का ना ही पक्ष में होता है, ना ही वह कभी विपक्ष ही किसी के होता है। वह हमेशा निष्पक्ष होता है। वह ना किसी को जन्म ही देता है ना ही वह किसी को मारता ही है। ना ही वह किसी को अमीर बनाते हैं, ना ही वह किसी को गरीब ही बनाते हैं। ना ही वह किसी को विद्वान बनाते हैं, ना ही वह किसी को मूर्ख ही बनाते हैं। हम सब ही अपने पूर्ण मालिक हैं, हमने ही अपने आप को ऐसा बनाया है। जैसा की हम आज हैं। हम स्वयं के मृत्यु के, स्वयं के जीवन के, स्वयं के विकास के, स्वयं के पतन के, सब का सब दारोमदार अपना ही है।

हम सब को गलत बनाया गया है, हम सब गैर जिम्मेदार किस्म के हैं। अपनी कमी और त्रुटि का कारण दूसरों को घोषित करते हैं। जिससे हमें दूसरों की नजर में उचा उठने में सहायता मिलती है। और स्वयं के अहंकार को बल मिलता है। हमारा कर्म जब हमारे स्वार्थ के वशी भूत हो कर किया जाता है। तो वह हमें अपने वश में कर लेता है। हमारा स्वार्थ कितना क्षुद्र है, जो किसी परमाणु या अणु के समान हो सकता है। या फिर हमारा कर्म और उसका स्वार्थ इतना बड़ा हो सकता है जितना बड़ा यह ब्रह्माण्ड है। यह हमारे स्वार्थ की दो श्रेणियाँ हैं, एक परमाणु अणु की तरह बहुत सूक्ष्म गुप्त है, जो क्षुद्र रूप है, जिसके परिणाम से हम अनभिज्ञ होते है। इसका परिणाम बहुत खतरनाक होता है। ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार से परमाणु बम कार्य करता है। जो हमें हमारे अन्दर से ही पूरी तरह से नेस्त नाबूद कर देता है। वहाँ किसी वस्तु का कभी सर्जन नहीं होता है। वहाँ चारों तरफ हमेशा मृत्यु ही अपने पैरों को फैला कर ही रखती है, और एक दूसरे प्रकार का कर्म होता है, जो बहुत विशाल उद्देश्य को ध्यान में रख कर किया जाता है। जिसे हम परमेश्वर के समान कार्य करने वाले जो सभी परमाणु का संग्रह यह ब्रह्माण्ड जैसा कार्य है।

जो प्रकृति करती है जिस को नियंत्रित करने के लिये यह मानव प्रयास रत है। हर आदमी परमेश्वर बनने के लिये पैदा होता है यह उसका दुर्भाग्य है कि वह स्वयं को परमेश्वर नहीं बना पाता है। कुछ ऐसे भी होते हैं, जो इस कार्य को काफी हद तक कर लेते हैं। जिन्हें हम अपना महापुरुष मानते हैं, जिनके पद चिन्हों पर हम चलने का प्रयास करते हैं। और कुछ हमारे जैसे लोग हैं जो कुछ अभी भी बाकी है, जिसके लिये प्रयास रत हैं। एक तीसरे प्रकार का कर्म है जिस पर हमारे भारतीय मनीषी ने बहुत जोर दिया है। वह

है निष्काम कर्म करने के लिये। निष्काम कर्म का मतलब है जिसके पीछे हमार व्यक्तिगत कोई स्वार्थ ना हो, जो कर्म करना यहाँ जगत में बहुत दुर्लभ हो चुका है।

यह जीवन क्रान्ति का मार्ग उन पुरुषों के लिये है, जो पुरुषार्थ को अपना अस्त्र बनाने वाला उद्यमी पुरुष के समान प्रयत्न शील और शीघ्र वेग के साथ अपने शत्रु पर हमला करने वाले पराक्रमी योद्धा के समान हैं। शत्रु दो प्रकार के है एक आंतरिक अज्ञानता को धारण करने वाला शत्रु अज्ञान है, और दूसरे बाहरी सांसारिक शत्रु है, जो राग द्वेष को धारण करने वाले हैं। जो पराक्रमी योद्धा अपने शत्रु का नाश शीघ्र करता है, जिस प्रकार से अन्न को भुनने वाला मनुष्य अन्न को शीघ्रता से अन्न को भुनता है। उसी प्रकार पराक्रमी योद्धा अपने शत्रुओं की सेना को शीघ्रता से भुनता है। जिस प्रकार से आग पानी को वाष्प में पलक झपकते ही बदल देती है। जिस प्रकार से काला रंग हर रंग पर बहुत जल्दी चढ़ जाता है। ठीक इसी प्रकार से जो अपने विरोधी ताक़तों को अपने वश में कर लेते हैं। और जो ऐसा नहीं कर पाता है, फिर वह उन अपने शत्रुओं को सम्हलने का समय देता है। जिससे उभरना समय के साथ मुश्किल और कठिन हो जाता है। जैसे जब हमारी इन्द्रियों में शक्ति होती है तभी उन को नियंत्रित करके अपने जीवन उद्देश्य को उपलब्ध कर लेते है। जब इन्द्रियाँ कमजोर हो जाती है और स्वयं के द्वारा उन पर नियंत्रण करना असंभव हो जाता है। इस लिये कहा गया है कि जीवन के प्रारम्भ में ही जल्दी-जल्दी अपनी त्रुटि को जीवन से दूर करके, स्वयं परिपूर्ण करो, और सोम रस का पान करो, अर्थात जीवन रस के परम आनन्द का भोग करो, अर्थात सौम्य गुण वाले पेय शक्ति को बढ़ाने वाली परम दैवीय औषधियों का सेवन करो । क्योंकि वह परम तत्व एक रसायन ही है। इसके उपरांत हर्षित और उत्साहित होकर, अपनी दुष्ट वृत्तियाँ जो शत्रु के समान है, उन को परास्त करके इनसे हमेशा के लिये मुक्त हो जाओ।

अब सुनो जो जीवन में परम आनन्द पाने का और सत्य को प्राप्त करने का नियम है। जो अपने बल को बढ़ाने वाला है, जिसने अपनी त्रुटि को दूर करना जान लिया है और जो पुरुष सद्गुणों को धारण करने वाला है। ऐसा पुरुष ही हमेशा दूसरों को उत्तम उपदेश कर सकता है। जो अपने बल शक्ति सामर्थ्य को घटाते हैं, वह बुरे और निकृष्ट विचारों की प्रेरणा से अपने मन को दूषित करता है। ऐसे व्यक्ति पापी और दुष्ट वृत्तियों वाले जो जन है। उन को पकड़ कर बंधन में रखना चाहिए। अर्थात कड़े अनुशासन में निरंतर उस पर नजर रखनी चाहिए, उनके लिये यथा योग्य दण्ड देने की भी समाज में व्यवस्था होनी चाहे। जो वृत्तियां मन का नाश करती हैं, और मन को बेकार बना कर के नष्ट भ्रष्ट कर देती है, उसका संहार या हत्या करना योग्य है। उस ग्रंथी को जो बार-बार पीड़ा और क्लेश का कारण बनता है। उसे ऐसे ही काट देना चाहिए। जैसे कुल्हाड़ी से वृक्ष का काटते हैं।

जो घमंडी और अहंकारी मनुष्य अपने आप को ही सर्वोपरि सबसे महान मानता है, इतना ही नहीं हम जो ज्ञान का संग्रह करते हैं, उसकी भी वह निन्दा करता है। उसके सभी कर्म उसके लिये कष्टप्रद होते हैं। क्योंकि जो सत्य ज्ञान का विरोध करता है उसको दिव्य लोक का जो ज्ञान का है, उसे बहुत प्रकार का कष्ट देता है। जिस प्रकार घोड़ा अपना पांव जब उठाता है तो वह अपने प्राप्तव्य स्थान को प्राप्त करने के बाद ही रुकता है। उसी प्रकार इन सब विपत्ति के मुख्य श्रोत को देख कर ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान के माध्यम से उन मुख्य कारण के श्रोत को अपने में से अलग कर देना चाहिए। जिससे हर प्रकार की जीवन कि कलह और क्लेश में अपनी विजय निश्चित हो। ऐसी अपनी तैयारी हमेशा करनी चाहिए, और हर एक जीवन के युद्ध संग्राम में जाग्रत रहते हुए, विजय प्राप्त करने से ही, जीवन की सब पीड़ा हट सकती है।

विश्वव्यापक पुरुष जो अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा तथा विश्वम्भर ईश्वर अपनी पोषण शक्तियों के द्वारा हमेशा हमारी रक्षा करता है। मैं अपने आपको उसकी रक्षा में समर्पित करता हू क्योंकि परमेश्वर का सामर्थ्य पराक्रम, बल, जीवन, श्रवण, दर्शन और परिपालन इन शक्ति से युक्त है। जो वैरी, शत्रु, कंजूस, खून चूस और आसुरी वृत्ती वाले हैं, इनसे बचने की शक्ति तेरे अन्दर ही है। यह शक्ति मुझ में स्थिर कर, मैं अपने आपको तेरे लिये अर्पण करता हूं। यह मनुष्य परमात्मा के द्वारा बनाया गया है और गुरुओं के द्वारा शिक्षित किया गया है। वीरों के द्वारा उत्साहित किया गया है इस लिये यह शूर वीर योद्धा बन कर हमारे अन्दर आया है और सभी कार्य करता है। मातृ भूमि की उपासना करने वाला यह वीर भूख और प्यास से, कभी कष्ट को प्राप्त ना होता है। जो ज्ञानी पुरुष अपने मन और आँखों से बद्ध स्थित में रहते हुए, सभी प्राणियों को अनुकंपा कि दृष्टि से देखते हैं। वह ही विश्व का निर्माण करने वाले और प्रजाओ में रमने वाले हैं। उन को ही प्रकाश मय देव सबसे पहले मुक्त करता है। जो ज्ञानी पुरुष सब शरीर में संचार करने वाले प्राण को सब अंगों और अव्ययों से इकट्ठा करके अपने अधिकार में लाते हैं। वे ही ज्ञानी पुरुष शरीर से सुदृढ़ होते है। वे ही गमन करते हुए सीधे दिव्य मार्ग से स्वर्ग को जाते हैं और प्रकाश का स्थान प्राप्त करते हैं। और जो अन्न खाते हुए भी श्रेष्ठ कर्तव्यों को नहीं करते हैं, जिसके कारण उनके बुद्धियोग में रहने वाली आत्मा रूपी अग्नि बड़ा पश्चाताप करती है और दु:खों को उपलब्ध करती है। उनके जो दोष है, वह सुधर जायें, और विश्वकर्ता परमेश्वर की कृपा से वे हमारे सत्त कर्मों में सम्मिलित हों। इस जगत में अपना संरक्षण मनुष्य को स्वयं करना चाहिए, यह बात पुकार–पुकार कर सभी श्रेष्ठ और आप्त पुरुष करते हैं। हे मनुष्य तुम अग्निवत तेजस्वी बनो और अपना प्रकाश जगत में फैलावों, यह तभी संभव होगा, जब ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान को धारण करने में सक्षम होंगे। हे मनुष्यों! जो वेद वाणी को धारण करने वाला विद्वान पंडित नाश रहित दिव्य ज्ञान को विशेष रूप से अपनी बुद्धि में धारण करता है, वही मुक्ति के श्रेष्ठ साधन के बारे में जानता है, और उस नित्य चेतन ब्रह्म के शीघ्र गुण कर्म स्वभाव के सहित उपदेश करता है। और जो इस ब्रह्मज्ञान में कल्याण कि भावना के हितार्थ स्थित जानने योग्य तीन उत्पत्ति, स्थिती, प्रलय, भूत, भविष्य, वर्तमान

काल है। उन को अच्छी प्रकार से जानता है। वही पिता स्वरूप सर्व रक्षक परमेश्वर का ज्ञान देने का आस्तिकता से रक्षक बनता है।

द्युलोक, पृथ्वी लोक, दिन, रात्रि, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ब्रह्मज्ञानी, योद्धा, सत्य, अनृत, भूत भविष्य आदि सब किसी से भी डरते नहीं है इसी लिये यह विनाश कभी प्राप्त नहीं होते हैं। इससे कैवल्य ज्ञान मिलता है कि हम निर्भय वृत्ति से रह कर ही, जो अपने विनाश से बचने की संभावना है। अतः हे प्राण तू इस शरीर में निर्भय वृत्ती के साथ रह और अप मृत्यु के भय को दूर कर।

जिस प्रकार से यह जगत जो जागते हुए निरंतर गति कर रहा है। अपनी विविधता को त्याग कर एक रूपता को धारण करता है, और जिस परम तत्व का निवास हृदय में है। उस परम तत्व को मानव भाव से ही अपने हृदय में साक्षात देखता है, इस प्रकृति ने उसी एक आत्मा की विविध शक्ति को निचोड़ कर उत्पन्न होने वाले विविध जगत का निर्माण किया है। इसलिए आत्मज्ञानी मनुष्य सदा उस आत्मा की ही गुण गान करते है। जिस प्रकार से अपने हृदय में उपस्थित उस परम अमृत तत्व के परम धाम का वर्णन केवल आत्मज्ञानी संयमी वक्ता ही कर सकता है। जिसके तीन पाद है ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान हृदय में गुप्त है जो उन को जानता है, वही ब्रह्मज्ञानी होता है। वहीं हम सब का पिता, जन्म दाता और भाई के समान है। वही सभी प्राणि को सभी अवस्था में यथावत जानता है। वह केवल अकेला ही एक है, उसी के अनेक अग्नि आदि सम्पूर्ण अन्य देव के नाम प्राप्त होते हैं। अर्थात उसी को दिये जाते है, जिज्ञासु जन उसी के विषय में बारबार प्रश्न पुछते हैं, और अन्त में उसी को प्राप्त होते हैं।

पृथ्वी सूर्य समेत अनंत ब्रह्माण्डों के अन्दर जो अनंत पदार्थ है उन सब का निरीक्षण करने के बाद पता लगता है कि अटल शाश्वत नियमों का पहला प्रवर्तक एक ही परमात्मा है। इसलिए मैं उसी परमात्मा की प्रार्थना और उपासना करता हूं। जिस प्रकार वक्ता में वाणी विद्यमान रहती है, उसी प्रकार जग के सभी पदार्थों में अथवा सभी प्राणि में उपस्थित हो कर सब का धारण पालन पोषण कर्ता के रूप में एक आत्मा रहता है। उसको अग्नि भी कहते है, जिस प्रकार अग्नि लकड़ी में गुप्त रूप से विद्यमान रहती है, उसी प्रकार से वह परमेश्वर गुप्त रूप से सभी पदार्थों में अदृश्य हो कर व्याप्तता है।

जिस एक परमेश्वर में अग्नि, वायु, सूर्यादि देव समान रीति से आश्रित हैं, और जिसकी अमृत मई शक्ति सम्पूर्ण उक्त देव में कार्य कर रही है। वही एक सर्वत्र फैला हुआ, व्यापक काल जई सत्य है। उसी का साक्षात्कार करने के लिये मैंने सब वस्तु का निरीक्षण किया। जिसके पश्चात मैंने पाया, कि वह सबके अन्दर एक सूत्र कि तरह फैला हुआ है। जिस तरह से एक माला में फूल कई प्रकार के होते है यद्यपि उन को एक साथ जोड़ने वाला तागा एक ही है। इसको मैंने अनुभव किया, इसके साथ जीवन की अनंत कला

भी है। इन सब का निवास स्थान मध्य लोक अन्तरिक्ष है, जहाँ यह सब शक्ति प्रकट होती हैं। और वहीं पर यह अदृश्य भी हो जाती है।

अध्याय 2.

जिस प्रकार से यह ईख नामक वनस्पति स्वभाव से मधुर मीठी है, उसका लगाने वाला और उखाड़ने वाला भी मधुरता की भावना से ही उसको लगाता और उखाड़ता है। जिस प्रकार यह वनस्पति परमात्मा से यह मिठास अपने साथ ले कर आती है। उसी प्रकार से हम सब भी अपने जीवन में परमात्मा से मिठास और मधुरता को प्राप्त कर के अपने जीवन को मीठा और मधुर बनाये। मेरी जिह्वा के मुख्य भाग में मधुरता रहे, जिह्वा के अग्र भाग में और जिह्वा के मध्य भाग में भी मधुरता हमेशा बनी रहे। मेरे कर्म में मधुरता रहे, मेरा चित्त मधुर विचारों का ही चिंतन और मनन हमेशा करता रहे। मेरा चाल चलन हमेशा मधुर और मीठा हो, मेरा आना जाना मीठा हो, मेरे इशारे और भाव तथा मेरे शब्द भी मीठे और दूसरे को सुख देने वाले हों। ऐसा होने से मैं अन्दर बाहर से मिठास की मूर्ति बनुगां। मैं शहद से भी मीठा बनता हू, मैं मिठाई से भी मीठा बनता हूं, इस प्रकार जिस प्रकार से मधुर फल वाली शाखा को पक्षी प्रेम करते हैं। तुम सब भी मुझ से प्रेम करो, कोई किसी का द्वेष ना करें, इस उद्देश्य से व्यापक मधुर विचारों की-की चार दीवारी मैं अपने चारों ओर बनाता हूं। जिससे इस चार दीवारी में सब ओर मधुरता ही बढ़े सब एक दूसरे से हमेशा प्रेम करें, और विद्वेष से कोई किसी से विमुख ना हो।

जो इसकी चेतना विद्युत के समान है। वह हमेशा उपस्थित रहती है। यहां एक बात निश्चित जान ले, कि मेरे आत्म मन जो भी तुम्हें मिलता है। इसको तुमने बहुत परिश्रम से कमाया है, मुफ्त में तुम्हें यहाँ कुछ भी नहीं मिलता है। कांटों के समान पीड़ा देने वाले अथाह दुःख, ताप, संस्कार या फिर फूलों के समान हल्के सुख और आनन्द देने वाले परिणाम गुण संस्कार यहीं दो कोटि हैं। किसी भी मनुष्य को दोनों कभी साथ में नहीं मिलते हैं। यह प्रकाश और अंधकार के समान आते जाते रहते हैं। कोई फूलों के समान सुख के लिए व्याकुल है, तो कोई कांटों से भागना चाहता है।

कभी भी इन को देख कर भागना मत इन को भोगना। जो भी हो सुख या दुःख तुम्हारे हिस्से में आये हैं। यह एक कसौटी तुम्हारे धैर्य के असली परीक्षा कि, जो दोनों को सहन करने के लिए तैयार हैं। उन को परमेश्वर का पुरस्कार मान कर और अपने कर्मों का फल समझ कर, वहीं जीवन का सच्चा सुख पाता है। जिसने स्वयं को पत्थर के समान दृढ़ मजबूत और फौलाद जैसा शक्तिशाली स्वयं को बना लिया है। यह जीवन उसी को प्रसन्न करता है। जो एक-एक कदम मृत्यु को अपने सामर्थ्य से पीछे धकेल देता है।

ब्रह्म जो विद्युत से सूक्ष्म विद्युत के समान है। जो अपनी वाणी से ही ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करता है, और अपनी इसी वाणी से दुष्ट व्रत्तियों वालों जीवों को संतप्त करता है। जिस प्रकार से आकाशीय बिजली की मात्र भयंकर आवाज को सुन कर कितने प्राणि के हृदय में भय व्याप्त हो जाता है, और वह कांपने लगता है। उसी प्रकार वह परमेश्वर मानव मन में भय, लज्जा, शोक, मातम जैसी वेदनाओं आदि के भावों को उत्पन्न कर के उन को गलत कार्यों को करने से निरंतर रोकता है। जो सज्जनों के आदर सत्कार नमस्कार के योग्य है। जो हमारे लिये विभिन्न प्रकार के सुख और ऐश्वर्यों को प्रकट करता है। जिस को प्राप्त करने के लिये जो सज्जन विद्वान पुरुष है। वह अपने जीवन में संयम को धारण करके उसको प्राप्त करने के लिये निरंतर उसकी उपासना प्रार्थना स्तुति करते है। उसको मैं बारबार नमस्कार करता हूं।

कोई भी हमारा मित्र या शत्रु हमारी जाती वाला या पर जाती वाला बड़ा या छोटा कोई भी क्यों ना हो? यदि वह हमें दाश बनाने का प्रयास करता है, या हमारा नाश करने की चेष्टा करता है। तो उसका नाश शस्त्रों से करना योग्य है। जो प्रकट या छुपा हुआ हमारा शत्रु है और वह हमारा नाश करना चाहता है, या हमें बुरे ओर कड़वा शब्द बोलता है। सब सज्जन उस दुष्ट वृत्ती के मनुष्य को समाज से दूर करें। मेरा आंतरिक कवच मेरा सत्य ज्ञान ही है अर्थात ब्रह्मज्ञान ही है। इसके साथ कैलाश ने अपने वाणी को विराम दिया और अगले दिन सुबह युद्ध का ऐलान किया।

अगले दिन सुबह पूरब से राजा काशी नरेश कि सेना और पश्चिम से प्रयागराज के राजा की सेना ने धावा बोल दिया। जैसे ही उत्तर से मुग़ल साम्राज्य कि विशाल सेना लाव लश्कर के साथ गंगा की तराई में प्रवेश करने के लिये नदी को नाव से पार करने का प्रयास कर रही थी। उसी समय दोनों सेना में भयंकर युद्ध शुरु हो गया। कैलाश कि सेना नदी में ही मुग़लों के सेना कि नावों पर आक्रमण करके उनकी नाव को डुबोने लगे। जिससे कैलाश की सेना के लिये गंगा नदी भी एक हथियार कि तरह से काम कर रही थी। आगे कैलाश ने अपने पुत्रों से नहर के पानी से सारा का सारा इलाका डुबो के रखा था जिससे मुग़ल सेना की दम उखड़ने लगे, क्योंकि घोड़ों हाथीयों कि सेना कीचड़ में फंस कर मरने लगे, आगे बढ़ने भंयकर मुश्किल होने लगी। जिससे पैदल सेना भी कीचड़ में फंसने लगी, जिसका फायदा सर्वप्रथम कैलाश कि सेना और उसके पुत्रों ने खूब उठाया, और बहुत सारी सेना का संहार कर दिया। अपने तीर धनुष और तलवारों से ही पहाडियों के उपर खड़े हो करके, यह युद्ध कई दिनों तक चलता रहा, जिसमें दोनों तरफ की सेनाओं के वीर योद्धा और सैनिक मारे गये। इसके बाद मुग़ल सेनापति शमशेर ने अपने वीर योद्धाओं को तोप के गोले को वरसाने का आदेश दिया। जिसका प्रयोग मुग़ल सेना के द्वारा तब किया गया। जब कैलाश कि सेना थक चुकी थी। जिससे कैलाश की सेना के पैर उखड़ने लगे युद्ध के मैदान से क्योंकि कैलाश का एक लड़का वीरगति को उपलब्ध हुआ। उसके स्थान पर कैलाश के दूसरे लड़के ने जगह ली

और बड़ी बहादुरी से लड़ता रहा अपनी अंतिम सांस तक। लेकिन वह भी अधिक देर तक नहीं मुग़ल सेना का सामना कर सका, वह भी बुरी तरह से मारा गया। जिसका प्रभाव राजा हरिश्चन्द्र और कैलाश कि सेना पर नकारात्मक पड़ने लगा, जिससे उनकी सेना निरुत्साहित होने लगी। इसको देख कर मुग़लों कि सेना और उसके सेनापति शमशेर का हौसला अत्यधिक बढ़ने लगा। और उनकी सेना और चौगुना उत्साह से लड़ने लगी शमशेर हाथी पर सवार अपनी सेना का हौसला बढ़ा रहा था। अल्लाह हु अकबर के नारा से जैसे सारा आकाश ही गुंज रहा था। इधर कैलाश और राजा हरिश्चन्द्र कि सेना का हौसला पस्त हो रहा था। उन को यह डर सता रहा था। इस तरह से यदि मुग़लों की सेना आगे बढ़ती रही, तो विजय पुर पर फतह करने में दो दिन से अधिक समय नहीं लगेगा। तभी रात्रि ढलने लगी, और दोनों सेना अपने-अपने शिविरों में प्रस्थान करने लगी। दोनों तरफ से घायल सैनिकों को शिविर में इलाज करने के लिये ले जाया जा रहा था। जिसमें दो कैलाश के बेटों की लाशें भी थी, जिस को देखकर कैलाश की आंखें नम हो गई। लेकिन यह उसने दूसरे अधिकारियों को प्रतीत नहीं होने दिया। उसने राजा से मिल कर एक गुप्त सभा रात्रि में ही बुलाने को कहा- राजा ने सभी को आदेश दिया कि सभी जल्द से जल्द राजा हरिश्चन्द्र के शिविर में आ जाये, ऐसा ही हुआ।

कैलाश ने अपने मित्र मानस और उनके दो पुत्रों को खास रूप से आमंत्रित किया, सभा में आने के लिए, जब सभी विशेष लोग सभा में आ गये। तब सेनापति कैलाश ने अपने मित्र मानस को संबोधित करते हुए कहा कि मैं आपको एक पुरानी ज्ञान वर्धक कथा सुनाता हूं। एक राज कुमार के बलिदान कि कथा, जो इस तरह से है। राजकुमार और उसके पुत्र के बलिदान की कहानी है, किसी समय शूद्रक नामक राजा राज्य किया करता था। उसके राज्य में वीरवर नामक महाराज कुमार किसी देश से आया और राजा की ड्योढ़ी पर आ कर द्वारपाल से बोला, मैं राजपुत्र हूँ, नौकरी चाहता हूँ। राजा का दर्शन कराओ। फिर उसने उसे राजा का दर्शन कराया और वह बोला-महाराज, जो मुझ सेवक का प्रयोजन हो तो मुझे नौकर रखिये, शूद्रक बोला-तुम कितनी तनख्वाह चाहते हो? वीरवर बोला-नित्य पाँच सौ मोहरें दीजिये। राजा बोला-तेरे पास क्या-क्या सामग्री है? वीरवर बोला-दो बाँहें ओर तीसरा खड्ग। राजा बोला यह बात नहीं हो सकती है। यह सुन कर वीरवर चल दिया। फिर मंत्रियों ने कहा- हे महाराज, चार दिन का वेतन दे कर इसका स्वरूप जान लीजिये, कि यह क्या उपयोगी है? जो इतना धन लेता है या उपयोगी नहीं है। फिर मंत्री के वचन से बुलवाया और वीरवर को पान का बिड़ा देकर पाँच सौ मोहरें दे दी, और उसका काम भी राजा ने छीप कर देखा। वीरवर ने उस धन का आधा देवताओं को और ब्राह्मणों को अर्पण कर दिया। बचे हुए का आधा दुखियों को, उससे बचा हुआ भोजन के तथा विलासादि में खर्च किया। यह सब नित्य काम करके, वह राजा के द्वार पर रात दिन हाथ में खड्ग लेकर सेवा करता था। और जब राजा स्वयं आज्ञा देता, तब अपने घर जाता था। फिर एक समय कृष्णपक्ष की चौदस के दिन, रात को राजा को करुणा सहित रोने का शब्द सुना। शूद्रक बोला- यहाँ द्वार पर कौन-कौन है? उसने कहा-महाराज, मैं वीरवर हूँ। राजा ने कहा-

रोने की तो टोह लगाओं। जो महाराज की आज्ञा, यह कह कर वीरवर चल दिया, और राजा ने सोचा- यह बात उचित नहीं है, कि इस राजकुमार को मैंने घने अंधेरे में जाने की आज्ञा दे दी। इसलिए मैं उसके पीछे जा कर देखता हूँ, कि यह क्या है? और इसका निश्चय करुँ। फिर राजा भी खड्ग लेकर, उसके पीछे नगर से बाहर गया। और राजा जब उसके पीछे छीप कर देखता रहा, जब वीरवर ने जा कर एक रोती हुई, रूप तथा यौवन से सुंदर औरत को देखा, जो सब आभूषण पहीने हुए थी। जिस स्त्री को देख विरवर ने पूछा-तू कौन है? किस लिये रोती है? स्त्री ने कहा-मैं इस शूद्रक की राज लक्ष्मी हूँ। बहुत काल से इसकी भुजाओं की छाया में ,बड़े सुख से विश्राम करती थी। अब दूसरे स्थान में जाऊँगी। वीरवर बोला-जिसमें नाश का संभव है, उसमें उपाय भी है। इसलिए कैसे फिर यहाँ आपका रहना होगा? लक्ष्मी बोली- जो तू बत्तीस लक्षणों से संपन्न अपने पुत्र शक्तिधर को सर्वमंगला देवी की भेंट करे, तो मैं फिर यहाँ बहुत काल तक रहूँ। यह कह कर वह अंतर्धान हो गई। फिर वीरवर ने अपने घर जा कर सोती हुई अपनी स्त्री को और बेटे को जगाया। वे दोनों नींद को छोड़, उठ कर खड़े हो गये। वीरवर ने वह सब लक्ष्मी का वचन उन को सुनाया। उसे सुन कर शक्तिधर आनंद से बोला- मैं धन्य हूँ, जो ऐसे, स्वामी के राज्य की रक्षा के लिए, मेरा उपयोग प्रशंसनीय है। इसलिए अब विलंब का क्या कारण है? ऐसे काम में देह का त्याग प्रशंसनीय है।

धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत। सन्निमित्ते वरंत्यागो विनाशे नियते सति॥

अर्थात, पंडित को परोपकार के लिए धन और प्राण छोड़ देने चाहिए, विनाश तो निश्चित होगा ही, इसलिए अच्छे कार्य के लिए प्राणों का त्याग श्रेष्ठ है। शक्तिधर की माता बोली- जो यह नहीं करोगे, तो और किस काम से इस बड़े वेतन के ऋण से उनंतर होंगे? यह विचार कर सब सर्वमंगला देवी के स्थान पर गये। वहाँ सर्वमंगला देवी की पूजा कर वीरवर ने कहा- हे देवी, प्रसन्न हो, शूद्रक महाराज की जय हो, जय हो। यह भेंट लो। यह कह कर पुत्र का सिर काट डाला। फिर वीरवर सोचने लगा, कि लिये हुए राजा के ऋण को तो चुका दिया। अब बिना पुत्र के जीवित किस काम का? यह विचार कर उसने अपना सिर काट दिया। फिर पति और पुत्र के शोक से पीड़ित स्त्री ने भी अपना सिर काट डाला, तब राजा आश्चर्य से सोचने लगा।

जीवन्ति च म्रियन्ते च मद्विधा: क्षुद्रजन्तवः। अनेन सदृशो लोके न भूतो न भविष्यति॥

अर्थात, मेरे समान नीच प्राणी संसार में जीते हैं, और मरते भी हैं, परंतु संसार में इसके समान न हुआ और न होगा। इसलिए ऐसे महापुरुष से शून्य इस राज्य से मुझे भी क्या प्रयोजन है? बाद में शूद्रक ने भी अपना सिर काटने के लिए अपने खड्ग को उठाया। तब सर्वमंगला देवी ने राजा का हाथ रोका, और कहा- हे पुत्र, मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ, इतना साहस मत करो। मरने के बाद भी तेरा राज्य भंग नहीं होगा। तब

राजा साष्टांग दंडवत और प्रणाम करके बोला- हे देवी, मुझे राज्य से क्या है या ज़ीने से भी क्या प्रयोजन है? जो मैं कृपा के योग्य हूँ, तो मेरी शेष आयु से स्त्री पुत्र सहित वीरवर जी उठे। नहीं तो मैं अपना सिर काट डालूँगा। देवी बोली-हे पुत्र, जाओ तुम्हारी जय हो। यह राजपुत्र भी परिवार सहित जी उठे। यह कह कर देवी अंतर्ध्यान हो गई। बाद में वीरवर अपने स्त्री-पुत्र सहित अपने घर को गया। राजा भी उनसे छीप कर शीघ्र रानी निवास में चला गया। इसके उपरांत प्रातः काल राजा ने ड्योढ़ी पर बैठे वीरवर से फिर पूछा, तब वह बोला- हे महाराज, वह रोती हुई स्त्री मुझे देखकर अंतर्ध्यान हो गई, और कुछ दूसरी बात नहीं थी। उसका वचन सुन कर राजा सोचने लगा- इस महात्मा की किस प्रकार बड़ाई करुँ।

प्रियं ब्रूयादकृपणः शूरः स्यादविकत्थनः। दाता नापात्रवर्षी च प्रगल्भः स्यादनिष्ठुरः।

क्योंकि, उदार पुरुष को मीठा बोलना चाहिए, शूर को अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए, दाता को कुपात्र में दान नहीं करना चाहिए, और उचित कहने वाले को दयारहित नहीं होना चाहिए। यह महापुरुष का लक्षण इसमें सब है। बाद में राजा ने प्रातःकाल शिष्ट लोगों की सभा करके, और सब वृत्तांत की प्रशंसा करके, प्रसन्नता से उसे कर्नाटक का राज्य दे दिया।

आगे कैलाश ने कहा कि यह कहानी कहने का मेरा उद्देश्य यह है, कि हमें अपने राजा के लिए धन और पुत्रों कि परवाह किये वगैरह, अपने कर्तव्य और राज्य कि रक्षा करनी चाहिए। मानस तुम तुरंत अपने दोनों पुत्रों को विजय पुर नगर में भेज कर के, इस सूचना को गुप्त रूप कि सभी जनता को युद्ध के मैदान में अपने हथियार लेकर आने को कहे। क्योंकि हमारे राज्य पर बहुत बड़ा खतरा आ चुका है। हम सब को एक साथ रात्रि में ही हमला करना होगा। दिन के प्रकाश में इनसे युद्ध जीतना मुश्किल होगा। क्योंकि इन की सेना विशाल है, और इनके पास हम से आधुनिक हथियार भी है। इनसे जितने के लिये, हम सभी जनता इन को चारों तरफ से घेर कर उस इलाक़े कि तरफ खदेड़ें, जहाँ पर ज्यादा मात्रा में कीचड़ है। और वहाँ से निकलने ना दे, हम सब सारी सेना को चारों तरफ से घेर कर, चारों तरफ से तोप के गोलों से हमला करेंगे। इस तरह मानस के दोनों पुत्र मानव और दानव अपने साथ अपने विश्वस्त, कुछ आदमी को लेकर, अपने विजय पुर नगर के सभी युवा को एकत्रित कर लिया। और रात्रि के अंतिम पहर में सब ने मिल कर हमला बोल दिया, मुग़लों के शिविरों पर, जब सभी गहरी निद्रा में सो रहे थे। कुछ एक पहरेदार सैनिकों को छोड़ कर, अचानक हमला से वह से सम्हलते, उससे पहल सभी सेना और बहादुर योद्धा कैलाश के पुत्र मानस के पुत्रों ने ओर दुसरी राज्यों कि सेनाओं साथ वहां तांडव मचा दिया। भयंकर मार काट चारों तरफ चल रहा था। उसी बीच शमशेर मुग़ल साम्राज्य का सेनापति अपने शिविर से बाहर निकला, और बगल में ही मानस अपने वफादार सैनिकों के साथ खड़ा था। जिसने शमशेर के गले को अपने तलवार से अलग कर दिया। जिसकी सूचना मुग़ल सैनिकों को मिलते ही, उनमें भग दड़ मच गई, सभी इधर उधर भागने लगे।

उस मैदान में से भाग जाना आसान था, लेकिन निकलना बहुत कठिन था। क्योंकि वहाँ कि मिट्टी बहुत अधिक चिप चिपी थी। पानी पाने से वह बहुत भयानक बन चुकी थी। जिससे उसमें से निकलना मुग़ल सैनिकों के लिये बहुत कठिन हो गया। सब को घेर कर कैलाश कि सेना ने सब का सर कलम कर दिया, कुछ बड़ी मुश्किल से जान बचा कर, वहाँ से भाग ने में सफल हुए।

फिर भी इस संग्राम कि सफलता के श्रेय कैलाश के सर पर राजा हरिश्चन्द्र ने मढ़ दिया। और राजा हरिश्चन्द्र ने कहा यह सब कैलाश के ज्ञान और विजय के प्रति अगाध श्रद्धा के कारण ही इस नामुमकिन कार्य को मुमकिन कर दिया है। इसीलिए हमारे शास्त्रों में श्रद्धा के विषय में बहुत कुछ कहा गया है जैसे-

"दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धाममनृतेऽधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ॥" (यजर्वेद–१९.७७)

सर्वज्ञ और आदि स्रष्टा परमेश्वर ने अश्रद्धा को असत्य में तथा श्रद्धा को सत्य में स्थापित किया है। "श्रद्धा"–शब्द श्रत् धा इन दो तत्त्व के योग से निष्पन्न होता है। "श्रत्" का अर्थ है सत्य या ज्ञान और धा का तात्पर्य धारण करना या भावना है। अतः केवल सहज विश्वास अथवा अंध विश्वास का नाम श्रद्धा नहीं है। सत्य को निश्चय पूर्वक जान कर उसे दृढ़ता के साथ धारण करना श्रद्धा है। सत्य धारणा अथवा निष्ठा के साथ अभीष्ट की ओर उन्मुख रहना श्रद्धा है अथवा हृदय की गहनतम भावना के साथ साध्य की साधना करना श्रद्धा है। श्रद्धा हृदय की उत्कृष्टतम अनुभूति है। अन्य शब्दों में श्रेष्ठता की प्रति अटूट आस्था का नाम ही श्रद्धा है। अन्तःकरण की दिव्य भूमि में जब श्रद्धा अंकुरित होती है तो व्यक्ति का समग्र जीवन प्रशस्त हो उठता है। श्रद्धा आध्यात्मिक क्षेत्र की ऊर्जा है। जिस प्रकार भौतिक क्षेत्र में अग्नि या सूर्य की शक्ति ऊर्जा मानी जाती है, वैसे ही अध्यात्म के क्षेत्र में आंतरिक ऊर्जा श्रद्धा ही है। श्रद्धा ही सारे धार्मिक कृत्यों और आयोजनों का प्राण है, उसके बिना मनुष्य के सब धर्म निष्फल है। धार्मिक कर्म कांड और मान्यता श्रद्धा के अभाव में मूल्यहीन हो जाती है। अतः शक्ति या प्रभाव आडंबर की विशालता में नहीं, श्रद्धा की शक्ति में सन्निहित होता है। कर्म कांड या साधन-विधान का उतना महत्ता नहीं, जितनी उसके मूल में काम करने वाला श्रद्धा की है। श्रद्धा विहीन कर्म मनुष्य को लकीर का फकीर बना देते हैं। श्रद्धा न हो तो यज्ञ की अग्नि और रसोई के चूल्हे की अग्नि, वेद मंत्रों और साधारण शब्दों तथा गाय और घोड़ा में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। इसीलिए श्रुति का उद्घोष है-

"श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।" (ऋग्वेद –१०.१५१.१)

श्रद्धा के अभि सिञ्चन से असाध्य कार्य भी सिद्ध हो सकते हैं, पाषाण में भी प्राणवानों जैसी दिव्य शक्ति का सञ्चार हो सकता है। श्रद्धा के बल पर ही एकलव्य ने मिट्टी की द्रोणाचार्य की प्रतिमा से उतनी शिक्षा प्राप्त कर ली थी, जितनी पाण्डव साक्षात् द्रोणाचार्य से भी प्राप्त नहीं कर सके। श्रद्धा के कारण ही युधिष्ठिर का विशाल राजसूय यज्ञ नेवले के आधे शरीर को स्वर्णमय नहीं बना सका, किन्तु निर्धन ब्राह्मण के त्याग ने उसे आधी कञ्चन काया प्रदान कर दी थी। इसलिए नारद पुराण में कहा गया है कि श्रद्धा से ही सब कुछ सिद्ध होता है और श्रद्धा से ही भगवान संतुष्ट होते हैं। श्रद्धा की महिमा प्रकट करते हुए गीताकार ने भी कहा है—

"सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषों यो यच्छ्रर्द्धः स एव सः ॥" (गीता–१७.३)

अर्थ—जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वह वैसा ही बन जाता है। व्यक्तित्व की श्रेष्ठता-निकृष्टता की पहचान यही श्रद्धा ही है। श्रद्धा से ही सत्य की सिद्धि होती है—

"श्रद्धया सत्यमाप्यते" (यजुर्वेद–१९.३०) श्रद्धा से ही वसु की उपलब्धि होती है—

"श्रद्धया विन्दते वसु" (ऋग्वेद–१०.१५१.४) तथा श्रद्धा से ही विद्वान् जन देवत्व को प्राप्त करते हैं—

"श्रद्धया देवो देवत्वमश्नुते।" (तैत्तिरीय-ब्राह्मण—३.२.३) मानव जीवन में ज्ञान का महत्व सर्वोच्च है—

"नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" (गीता–३.३८) अर्थात् संसार में ज्ञान से बढ़ कर पवित्र कुछ भी नहीं है तथा ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में श्रद्धा का विशेष महत्व है—

"श्रद्धावांल्लभते ज्ञानम्।" (गीता–३.३९) श्रद्धावान् व्यक्ति को ही ज्ञान-लाभ होता है। श्रद्धा से ही ज्ञान रूप अग्नि प्रज्वलित होती है। श्रद्धा होने पर ही सद्गुरु एवं सद्ग्रन्थ प्रभावी होते हैं। इसीलिए कहा गया है कि श्रद्धायुक्त कर्मों का फल अनंत होता है—

"श्रद्धाविधिसमायुक्तं कर्म यत् क्रियते नृभिः।
सुविशुद्धेन भावेन तदनन्ताय कल्पते ॥" (याज्ञवल्क्य-स्मृतिः)

साधना के क्षेत्र में श्रद्धा की अपरिमित शक्ति ही काम करती है। श्रद्धा और विश्वास होने पर ही परमात्मा की प्राप्ति होती है, यह तर्क से संभव नहीं है। हमारे शास्त्रकार स्वयं यह घोषणा करते हैं कि जो हमारे अच्छे आचरण है, उन्हीं का तुम्हें अनुसरण करना चाहिए, अन्य का नहीं—

"यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।"

आज हमारे समाज में नैतिक मूल्यों का संकट विषम रूप में उपस्थित है। एक ओर वैज्ञानिक प्रगति ने तथाकथित शिक्षित मनुष्य को मानवीय गुणों से शून्य, यन्त्रवत् बना डाला है तो दूसरी ओर अधिसंख्य अशिक्षित जन अन्ध श्रद्धा के जाल में जकडे हुए हैं। अतः इस बात की महती आवश्यकता है कि "श्रद्धा" जैसे सार्वकालिक, सार्वभौमिक सद्गुणों के सत्य स्वरूप को जनसाधारण तक पहुंचाया जाए, ताकि भारतीय संस्कृति के सनातन सन्देश सर्वजन ग्राह्य हो सके । वैदिक ऋषि की यह कामना पूर्ण हो—

"श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि।
श्रद्धा सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥" (ऋग्वेद –१०.१५१.४)

इसके बाद राजा कि तरफ से दिये गये विजय उत्सव दावत में सभी ने मिल कर अपनी जीत कि खूशीयां मनाने में व्यस्त हो गये। इस तरह से मुग़ल सेना का बुरी तरह से हारने का सदमा को मुग़ल सम्राट दिल्ली में बैठा औरंग जेब बर्दाश्त नहीं कर सका। जिसके कारण वह मृत्यु को उपलब्ध हुआ। और उसके साम्राज्य का पतन बहुत तीव्रता से होने लगा। एक समय ऐसा भी आ गया। जब मुग़ल साम्राज्य केवल दिल्ली के कुछ इलाक़ों में ही सिमट कर रह गया था।

राजा हरिश्चन्द्र को अपने जीत कि उम्मीद नहीं थी उन्होने केवल कैलाश के कहने पर ही युद्ध का ऐलान किया था। और कैलाश कि सूझ बूझ के कारण ही युद्ध में विजय को उपलब्ध हुए। उसमें सबसे बड़ा घाटा भी कैलाश को ही उठाना पड़ा क्योंकि उसके दो बहादुर पुत्र भी हज़ारों सेना के साथ शहीद हो गये। विजय पुर के राजा हरिश्चन्द्र ने युद्ध के कुछ दिनों के बाद ही एक शानदार जलसे का आयोजन अपनी हवेली में किया। सब को यथा योग्य जित की खुशी में बधाई के साथ उपहार में बहुत सारा अपना धन दान किया जो मुग़लों की सेना से लुटा गया था। इसके अतिरिक्त कैलाश को हज़ारों एकड़ जमीन दिया गया। इसके साथ मानस को भी कई सौ एकड़ जमीन को दिया गया। यह कैलाश और मानस विजय पुर क्षेत्र के छनवर इलाक़े के सबसे बड़े जमींदार की उपाधि से नवाजे गये। ऐसा ही सब कुछ चलता रहा।

अध्याय 3.

मुग़लों के साम्राज्य के पतन के साथ ही दूसरी तरफ से अँग्रेज़ी इष्ट इंडिया कंपनी ने अपने पैर बंगाल में जमा लिया था, और उसने अपने पैर को पसारता हुआ बक्सर से होते हुए, वाराणसी प्रयागराज अवध आदि पर अपना कब्जा जमाते हुए, गंगा के रास्ते से चलते हुए, उसने अपना एक अड्डा विंध्य क्षेत्र में भी वसा लिया। और इसका नाम उसने मिर्जापुर रखा। जिसके अंतर्गत ही विजय पुर राज्य आता था। जो एक प्रकार से मिर्जापुर का हृदय था। जिसकी खबर अँग्रेज़ों को भली भाति हो चुकी थी। जिसके कारण ही वह इस हृदय रूपी विजय पुर नगर को प्राप्त करने के लिये षड्यंत्र शुरु कर दिया। उस समय यह मिर्जापुर का बिच का हरा भरा इलाक़ा जो हर प्रकार से संपन्न था। इस पर अँग्रेज़ों कि निगाह पड़ गई, जब वह गंगा में यात्रा करते हुए, वाराणसी से प्रयागराज दिल्ली के लिये सफर पर होते थे, जिस को प्राप्त करने के लिये, उन्होने एक बहुत खतरनाक षड्यंत्र रचा।

जिसकी किसी को कानों कान पता नहीं चला, ना ही कैलाश को ही इसकी खबर हुई, ना ही विजय पुर के राजा हरिश्चन्द्र को ही हुआ। अँग्रेज़ों में एक बहुत चालाक और धूर्त किस्म का अफसर था जिसका नाम पिटर डिसुजा था। उसने राजा के दामाद को अपना मित्र बना लिया, और उन को अपने साथ रख लिया, उनके लिये अच्छी- अच्छी विदेशी औरतों की व्यवस्था कर दी। जिससे राजा का दामाद अपनी सारी राजा से संबंधित गुप्त जानकारीयाँ, उन अँग्रेज़ों के सुपुर्द कर दिया। जिसका अँग्रेज़ों ने काफी फायदा उठाया। अँग्रेज़ों ने सीधा- सीधा आमने सामने युद्ध नहीं किया क्योंकि वह जानते थे। कि वह इस तरह से गंगा के तराई में फंस जायेगा। और यहाँ कि जमीन इन जमींदार और किसानों के साथ राजा के पक्ष में साथ देगी जिससे वह मुग़लों के समान हम से भी जित जायेगा। क्योंकि छानबे क्षेत्र छनवर के इलाक़े से बाहर निकलना आसान नहीं था। वहाँ पर वहाँ के लोकल लोग बहुत अधिक थे। अँग्रेज़ों सबसे पहले कैलाश को और राजा हरिश्चन्द्र को खत्म करने की योजना बनाई।

क्योंकि वह जानते थे, की इस राज्य के यह ही दो आधार भूत स्तंभ हैं। यदि इन को नष्ट कर दिया जाये, तो विजय पुर राज्य को नष्ट करने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। यह विजय पुर रेत के महल कि तरह से विखर जायेगा।

जैसा कि राजा को मारने के लिये राजा कि सबसे कमजोर कड़ी उसके दामाद को अँग्रेज़ों ने अपना मुहरा बना लिया था। इसी तरह से कैलाश को मारने के लिये, जो उसकी कमजोर कड़ी उसका मित्र था, उसके ही पड़ोस का इसलिए उन्होंने मानस को इसके लिए भड़काया और उसे जमीन का लालच दिया। यद्यपि वह कैलाश और मानस दोनों मित्र थे। लेकिन जमीन के मामले में दोनों जमीदारों में, सबसे अधिक

धाक और राजा के साथ निकटता कैलाश की अधिक थी। उसके पास जमीन भी काफी अधिक थी। मानस कि तुलना में, इसके साथ कैलाश के पास अपनी हाथी घोड़ों से सुसज्जित सेना भी थी। जैसा कि मानस के पास अपनी सेना नहीं थी। इसके दो बेटों के साथ में किसानों मज़दूरों की बड़ी संख्या थी। राजा हरिश्चन्द्र को मारने के लिये, अँग्रेज़ों ने राजा के दामाद को ही तैयार कर लिया गया। इसका लालच दे कर, कि राजा के दामाद को ही राजा विजय पुर का बना दिया जायेगा। राजा का दामाद एक चरित्र हीन और विलासी किस्म का एक घटिया चाल चलन वाला चरित्रहीन आदमी था। जिससे लालच में आकर वह तैयार हो गया।

मानस बहुत सम्मान अपने मित्र कैलाश का करता था, लेकिन अन्दर ही अन्दर वह कुढ़ता भी था। उसकी तरक्की को देख कर, उसे भी हज़ारों एकड़ जमीन के लालच ने पकड़ लिया।

मानस ने अपने कुछ आदमियों को कैलाश को मारने के लिये तैयार कर लिया। और अपने आदमियों कि गुप्त सभा बुलाया, और अपने सभी आदमियों को अपने विश्वास में ले कर, उसने कहा कि यही समय की मांग है। कि हमें अँग्रेज़ों से मित्रता कर लेनी चाहिए। क्योंकि अब हम अँग्रेज़ों से लड़ तो सकते नहीं है। क्योंकि इन्होंने मुग़लों को परास्त करके सम्पूर्ण भारत पर अपना एक तरफा अधिकार कर लिया है। जैसा कि राजनीति का नियम है, कि अवसर को देख कर जो उसका फायदा उठाता है, वहीं अपनी गाथा इतिहास के पन्नों में लिखता है। जैसा कि पंच तन्त्र में एक कथा आती है- दक्षिण दिशा में सुवर्ण वती नामक नगरी थी, उस में वर्धमान नामक एक बनिया रहता था। उसके पास बहुत सा धन भी था, परंतु अपने दूसरे भाई- बंधु को अधिक धनवान देखकर उसकी यह लालसा हुई, कि उसे और अधिक धन इकट्ठा करना चाहिए। अपने से नीचे (हीन) अर्थात दरिद्रियों को देख कर किस की महिमा नहीं बढ़ती है? अर्थात सब का अभिमान बढ़ जाता है, और अपने से ऊपर अर्थात अधिक धनवानों को देखकर सब लोग अपने को दरिद्री समझते हैं।

ब्रह्महापि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम्। शशिनस्तुल्यवंशोऽपि निर्धनः परिभूयते॥

जिसके पास बहुत-सा धन है, उस ब्रह्म घातक मनुष्य का भी सत्कार होता है, और चंद्रमा के समान अति निर्मल वंश में उत्पन्न हुए भी, निर्धन मनुष्य का अपमान किया जाता है। जैसे नवजवान स्त्री बूढ़े पति को नहीं चाहती है, वैसे ही लक्ष्मी भी निरुद्योगी, आलसी, "प्रारब्ध में जो लिखा है, सो होगा" ऐसा भरोसा रख कर चुपचाप बैठने वाले, तथा पुरुषार्थ हीन मनुष्य को नहीं चाहती है।

आलस्यं स्त्री सेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्। संतोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्त्वस्य॥

और भी आलस्य, स्त्री की सेवा, रोगी रहना, जन्मभूमि का स्नेह, रामनाथ और डरपोकपन ये छः बातें उन्नति के लिये बाधक है।

संपदा सुस्थितंमन्यो भवति स्वल्पयापि यः। कृतकृत्यो विधिर्मन्ये न वर्धयति तस्य ताम्॥

जो मनुष्य थोड़ी -सी संपत्ति से अपने को सुखी मानता है, विधाता समाप्त कार्य मान कर उस मनुष्य की उस संपत्ति को नहीं बढ़ाता है। निरुत्साहित, आनंदरहित, पराक्रम हीन और शत्रु को प्रसन्न करने वाले ऐसे पुत्र को कोई स्त्री न जने, अर्थात ऐसे पुत्र का जन्म न होना ही अच्छा है। नहीं पाये धन के पाने की इच्छा करना, पाये हुए धन की चोरी आदि नाश से रक्षा करना, रक्षा किये हुए धन को व्यापार आदि से बढ़ाना और अच्छी तरह बढ़ाए धन को सत्पात्र में दान करना चाहिए। क्योंकि लाभ की इच्छा करने वाले को धन मिलता ही है। एवं प्राप्त हुए परंतु रक्षा नहीं किये गये खजाने का भी अपने आप नाश हो जाता है। और भी यह है कि बढ़ाया नहीं गया, धन कुछ काल में थोड़- थोड़ा व्यय हो कर काजल के समान नाश हो जाता है, और नहीं भोगा गया भी खजाना वृथा है।

धनेन किं यो न ददाति नाश्नुते, बलेन कि यश्च रिपून्न बाधते।
श्रुतेन किं यो न च धर्ममाचरेत्, किमात्मना यो न जितेन्द्रियो भवेत्।

उस धन से क्या लाभ है? जो न देने के लिए है, और न खाने के लिए पर्याप्त है, उस बल से क्या है? जो वैरियों को नहीं सताता है, उस शास्त्र से क्या है? जो धर्म का आचरण नहीं करना सिखाता है और उस आत्मा से क्या है? जो जितेंद्रिय नहीं है। जैसे जल की एक बूँद के गिरने से धीरे- धीरे घड़ा भर जाता है, यही कारण सब कारण सब प्रकार की विद्याओं का, धन का और धर्म का भी है।

दानोपभोगरहिता दिवसा यस्य यान्ति वै। स कर्मकारभस्त्रेव श्वसन्नपि न जीवति॥

दान और भोग के बिना जिसके दिन जाते हैं, वह लुहार की धौंकनी के समान सांस लेता हुआ भी मरे के समान है। यह सोच कर नंदक और संजीवक नामक दो बैलों को जुए में जोत कर और छकड़े को नाना प्रकार की वस्तु से लाद कर व्यापार के लिए कश्मीर की ओर गया।

अंजनस्य क्षयं दृष्ट्व वल्मीकस्य च संचयम्। अवन्धयं दिवसं कुर्याद्दानाध्ययनकर्मसु॥

काजल के क्रम से घटने को और वाल्मीक नामक चींटी के संचय को देखकर, दान करना, पढ़ना और कामधंधा में दिन को व्यतीत करके अपने को सफल करना चाहिए, बलवानों को अधिक बोझ क्या है? और उद्योग करने वालों को क्या दूर है? और विद्यावानों को विदेश क्या है? और मीठा बोलने वाले के लिए शत्रु कौन है? फिर उस जाते हुए का, सुदुर्ग नामक घने वन में, संजीवक घुटना टूटने से गिर पड़ा। यह देखकर वर्धमान चिंता करने लगा- नीति जानने वाला इधर-उधर भले ही व्यापार करे, परंतु उसको लाभ उतना ही होता है, कि जितना विधाता के इच्छा में होता है। सब कार्यो को रोकने वाले संशय को छोड़ देना चाहिए, एवं संदेह को छोड़ कर, अपना कार्य सिद्ध करना चाहिए। यह विचार कर संजीवक को, वहाँ जंगल में छोड़ कर, फिर वर्धमान स्वयं धर्मपुर नामक नगर में जा कर एक दूसरे बड़े शरीर वाले बैल को ला कर जुए में जोत कर अपने आगे की यात्रा पर चल दिया। फिर संजीवक भी बड़े कष्ट से तीन खुरों के सहारे उठ कर खड़ा हुआ। समुद्र में डूबे हुए की, पर्वत से गिरे हुए की, और तक्षक नामक सांप से डसे हुए की भी, आयु की प्रबलता में उसके मर्म (जीवन स्थान) की रक्षा करती है।

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं, सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः। कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति।।

दैव से रक्षा किया हुआ धन, बिना रक्षा के भी ठहरता है, और अच्छी तरह रक्षा किया हुआ भी, दैव के मारे हुए के पास नहीं बचता है, जैसे वन में छोड़ा हुआ सहायता हीन भी जीता रहता है, और घर पर कई उपाय करने से भी कोई नहीं जी पाता है। फिर बहुत दिनों के बाद संजीवक अपनी इच्छानुसार खाता पीता वन में घूमता-फिरता हृष्ट-पुष्ट हो कर, ऊँचे स्वर से डकराने लगा। उसी वन में पिंगलक नामक एक सिंह अपनी भुजाओं से पाये हुए राज्य के सुख का भोग करता हुआ रहता था। जैसा कहा गया है, मृगों ने सिंह का न तो राज्य तिलक किया और न संस्कार किया है, परंतु सिंह अपने आप ही पराक्रम से राज्य को पा कर मृगों का राजा होना दिखलाता है। और वह एक दिन प्यास से व्याकुल होकर पानी पीने के लिए यमुना के किनारे पर गया, और वहाँ उस सिंह ने नवीन ॠतुकाल के मेघ की गर्जना के समान संजीवक का डकराना सुना। यह सुन कर पानी के बिना पिये वह घबराया- सा लौट कर अपने स्थान पर आ कर विचारने लगा, यह क्या है? यह सोचता हुआ चुप—सा बैठ गया, और उसके मंत्री के बेटे दमनक और करकट दो गीदड़ों ने, उसे ऐसे बैठे हुए देखकर। जिस को इस दशा में देख कर दमनक ने करकट से कहा- भाई करकट, यह क्या बात है कि प्यासा स्वामी पानी को बिना पीये डर से धीरे-धीरे आ बैठा है? करकट बोला-भाई दमनक, हमारी समझ से तो इसकी सेवा ही नहीं की जानी चाहिए । जो ऐसे बैठा भी है, तो हमें स्वामी की चेष्टा का निर्णय करने से क्या प्रयोजन है? क्योंकि इस राजा से बिना अपराध बहुत काल तक तिरस्कार किये गये, हम दोनों ने बड़ा दुःख सहा है।

सेवया धनमिच्छाद्भिः सेवकै: पश्य यत्कृतम। स्वायब्यं यच्छरीरस्य मूढैस्तदपि हारितम॥

सेवा से धन को चाहने वाले सेवकों ने जो किया, ऐसा देख कर शरीर की स्वतंत्रता भी मूर्खों ने हार दी है, और दूसरे से पराधीन हो कर जाड़ा, हवा और धूप में दुःखों को सहते हैं, और उस दुःख के छोटे से छोटे भाग से भी तप करके बुद्धिमान सुखी हो सकता है। स्वाधीनता का होना ही जन्म की सफलता है, और जो पराधीन होने पर भी जीते हैं, वह तो मरे के समान ही हैं? अर्थात वे ही मुरदों के समान हैं, जो पराधीन हो कर रहते हैं। धनवान पुरुष, आशा रूपी ग्रह से भरमाये गये हुए याचकों के साथ, इधर आ, चला आ, बैठ जा, खड़ा हो, बोल, चुप रह, इस तरह का खेल किया करते हैं।

अबुधैरर्थलाभाय पण्यस्त्रीभिरिव स्वयम्। आत्मा संस्कृत्य-संस्कृत्य परोपकरणीकृतः॥

जैसे वेश्या दूसरों के लिए सिंगार करती है, वैसे ही मूर्खों ने भी धन के लाभ के लिए अपनी आत्मा को संस्कार करके हृष्ट पुष्ट बना कर, पराये के उपकार के लिए कर रखी हैं। जो दृष्टि स्वभाव से चपल है और मल, मूत्र आदि नीची वस्तुओं पर भी गिरती है, ऐसी स्वामी की दृष्टि का भी सेवक लोग बहुत गौरव करते हैं।

मौनान्मूर्खः प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा, क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः।
धृष्ट: पार्श्वे वसति नियतं दूरतश्चाप्रगल्भः, सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥

चुपचाप रहने से मूर्ख, बहुत बातें करने में चतुर होने से, उन्मत्त अथवा बातूनी, क्षमाशील होने से डरपोक, न सहन करने से नीति रहित, सर्वदा पास रहने से ढीठ और दूर रहने से घमंडी कहलाता है। इसलिए सेवा का धर्म बड़ा रहस्यमय है, जिसे योगियों के द्वारा भी पहचाना नहीं जा सका है। विशेष बात यह है, कि जो उन्नति के लिए झुकता है, ज़ीने के लिए प्राण का भी त्याग करता है, और सुख के लिए दुःखी होता है, ऐसा सेवक को छोड़ कर और कौन भला मूर्ख हो सकता है? दमनक बोला- मित्र, कभी यह बात मन से भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि खामियों की सेवा यत्न से क्यों नहीं करनी चाहिए, जो सेवा से प्रसन्न हो कर शीघ्र मनोरथ पूरे कर देते हैं। स्वामी की सेवा नहीं करने वालों को चमर के ढलाव से युक्त ऐश्वर्य और ऊँचे दंड वाले श्वेत छत्र और घोड़े हाथियों की सेना कहाँ धरा है? करकट बोला- तो भी हमको इस काम से क्या प्रयोजन है? क्योंकि अयोग्य कामों में व्यापार करना सर्वथा त्यागने के योग्य है। दमनक ने कहा- तो भी सेवक को स्वामी के कामों का विचार अवश्य करना चाहिए। करकट बोला- जो सब काम पर अधिकारी प्रधान मंत्री हो, वही करे। क्योंकि सेवक को पराये काम की चर्चा कभी नहीं करनी चाहिए। पशुओं का ढूँढ़ना हमारा काम है। अपने काम की चर्चा करो। परंतु आज उस चर्चा से कुछ प्रयोजन नहीं है।

क्योंकि अपने दोनों के लिए भोजन से बचा हुआ आहार बहुत धरा है। दमनक क्रोध से बोला- क्या तुम केवल भोजन के ही अर्थी हो कर, राजा की सेवा करते हो? यह तुमने अयोग्य कहा। मित्रों के उपकार के लिये और शत्रुओं के अपकार के लिए चतुर मनुष्य राजा का आश्रय करते हैं। और केवल पेट कौन नहीं भर लेता है? अर्थात सभी भरते हैं।

जीविते यस्य जीवन्ति विप्रा मित्राणि बान्धवा:। सफलं जीवितं तस्य आत्मार्थे को न जीवति?

जिसके ज़ीने से ब्राह्मण, मित्र और भाई जीते हैं, उसी का जीवन सफल है और केवल अपने स्वार्थ के लिए कौन नहीं जीता है? जिसके ज़ीने से बहुत से लोग जिये वह तो सचमुच जिया और यों तो काग भी क्या चोंच से अपना पेट नहीं भर लेता है? कोई मनुष्य पाँच सौ में दासपन को करने लगता है, कोई लाख में करता है ओर कोई एक लाख में भी नहीं मिलता है।

मनुष्यजातौ तुल्यायाँ भृत्यत्वमतिगर्हितम। प्रथमों यो न तत्रापि स किं जीवत्सु गण्यते।।

मनुष्यों को समान जाति के सेवकाई काम करना अति निन्दित है, और सेवकों में भी जो प्रथम अर्थात सब का मानस नहीं है, क्या वह जीते हुए में गिना जा सकता है? अर्थात उसका जीना और मरना समान है।

अहितहितविचारशून्यबुध्दे:। श्रुतिसमयैर्वहुभिस्तिरस्कृतस्य।
उदरभरणमात्रकेवलेच्छो:। पुरुषपशोश्च पशोश्च को विशेषः?

हित और अहित के विचार करने में जड़ मति वाला और शास्त्र के ज्ञान से रहित होकर जिसकी इच्छा केवल पेट भरने की ही रहती है, ऐसा पुरुष रूपी पशु और सचमुच पशु में कौन-सा अंतर समझा जा सकता है? अर्थात ज्ञानहीन एवं केवल भोजन की इच्छा रखने वाले से घास खा कर ज़ीने वाला पशु अच्छा है। करकट बोला- हम दोनों मंत्री नहीं है, फिर हमें इस विचार से क्या? दमनक बोला- कुछ काल में मंत्री प्रधानता व अप्रधानता को पाते हैं। इस दुनिया में कोई किसी का स्वभाव से अर्थात जन्म से सुशील अर्थात दुष्ट नहीं होता है, परंतु मनुष्य को अपने कर्म ही बड़ेपन को अथवा नीचपन को पहुँचाते हैं। मनुष्य अपने कर्मों से कुआं के खोदने वाले के समान नीचे और राजभवन के बनाने वाले के समान ऊपर जाता है, अर्थात मनुष्य अपना उच्च कर्मों से उन्नति को और हीन कर्मों से अवनति को पाता है। इसलिए यह ठीक है कि सब की आत्मा अपने ही यत्न के अधीन रहती है।

करकट बोला- तुम अब क्या कहते हो? वह बोला- यह स्वामी पिंगलक किसी न किसी कारण से घबराया—सा लौट करके आ बैठा है। करकट ने कहा-क्या तुम इसका भेद जानते हो? दमनक बोला-इसमें नहीं जानने की बात क्या है? जताए हुए अभिप्राय को पशु भी समझ लेता है और हांके हुए घोड़े और हाथी भी बोझा ढोते हैं। पंडित कहे बिना ही मन की बात तर्क से जान लेता है, क्योंकि पराये चित्त का भेद जान लेना ही बुद्धियोग का फल है। आकार से, हृदय के भाव से, चाल से, काम से, बोलने से और नेत्र और मुंह के विकार से औरों के मन की बात जान ली जाती है। इस भय के सुझाव में बुद्धि के बल से मैं इस स्वामी को अपना कर लूँगा। जो प्रसंग के समान वचन को, स्नेह के सदृश मित्र को, और अपनी सामर्थ्य के सदृश क्रोध को समझता है, वह बुद्धिमान है। करकट बोला-मित्र, तुम सेवा करना नहीं जानते हो। जो मनुष्य बिना बुलाये घुसे और बिना पूछे बहुत बोलता है, और अपने को राजा का प्रिय मित्र समझता है, वह मूर्ख है। दमनक बोला-भाई, मैं सेवा करना क्यों नहीं जानता हूँ? कोई वस्तु स्वभाव से अच्छी और बुरी होती है, जो जिस को जो रुचती है, वही उसको सुंदर लगती है।

यस्य यस्य हि यो भावस्तेन तेन हि तं नरम। अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत॥

बुद्धिमान को चाहिए कि जिस मनुष्य का जैसा मनोरथ हो, उसी अभिप्राय को ध्यान में रख कर एवं उस पुरुष के पेट में घुस कर, उसे अपने वश में कर ले। थोड़ा चाहने वाला, धैर्यवान, पंडित तथा सदा छाया के समान पीछे चलने वाला, और जो आज्ञा पाने पर सोच-विचार न करे। अर्थात यथार्थ रुप से आज्ञा का पालन करे, ऐसा मनुष्य राजा के घर में रहना चाहिए।

करकट बोला-जो कभी कुसमय पर घुस जाने से, स्वामी तुम्हारा अनादर करे। वह बोला-ऐसा हो, तो भी सेवक को अपने मालिक के पास अवश्य जाना चाहिए। दोष के डर से किसी काम का आरंभ न करना यह कायर पुरुष का चिन्ह है। हे भाई, अजीर्ण के डर से कौन भोजन को छोड़ते हैं?

आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्यं, विद्याविहीनमकुलीनमसंगतं वा।
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च, यः पार्श्वतो वसति तं परिवेष्टयन्ति॥

पास रहने वाला कैसा ही विद्या हीन, कुलहीन तथा विसंगत मनुष्य क्यों न हो, राजा उसी से हित करने लगता है, क्योंकि राजा, स्त्री और बेल ये बहुधा जो उनके पास रहता है, उसी का आश्रय कर लेते हैं।

करकट बोला-वहाँ जा कर क्या कहोगे? वह बोला- सुन पहिले यह जानूँगा, कि स्वामी मेरे ऊपर प्रसन्न है या उदास है? करकट बोला-इस बात को जानने का क्या चिन्ह है? दमनक बोला- सुन दूर से बड़ी

अभिलाषा से देख लेना, मुसकाना, समाचार आदि पूछने में अधिक आदर करना, पीठ पीछे भी गुणों की बड़ाई करना, प्रिय वस्तुओं में स्मरण रखना।

असेवके चानुरक्तिर्दानं सप्रियभाषणम्। अनुरक्तस्य चिह्मानि दोषेऽपि गुणसंगंहः।

जो सेवक न हो, उसमें भी स्नेह दिखाना, सुंदर-सुंदर वचनों के साथ धन आदि का देना, और दोष में भी गुणों का ग्रहण करना, ये स्नेह युक्त स्वामी के लक्षण हैं। आज कल कह करके, कृपा आदि करने में समय टालना तथा आशा का बढ़ाना, और जब फल का समय आये, तब उसका खंडन करना ये उदास स्वामी के लक्षण हैं, जो हर मनुष्य को जानना चाहिए। यह जान कर जैसे यह मेरे वश में हो जायेगा, वैसे करुंगा, क्योंकि पंडित लोग नीतिशास्त्र में कही हुई बुराई के होने से उत्पन्न हुई विपत्ति को और उपाय से हुई सिद्धि को, नेत्रों के सामने साक्षात झलकती हुई- सी देखते हैं। करकट बोला-तो भी बिना अवसर के नहीं कह सकते हो, बिना अवसर की बात को कहते हुए वृहस्पति जी भी बुद्धि की निंदा और अनादर को सर्वदा पा सकते हैं। दमनक बोला-मित्र, डरो मत, मैं बिना अवसर की बात नहीं कहूँगा, आपत्ति में, कुमार्ग पर चलने में और कार्य का समय टाले जाने में, हित चाहने वाले सेवक को बिना पूछे भी कहना चाहिए और जो अवसर पा कर भी मैं राय नहीं कहूँगा तो मुझे मंत्री बनना भी अयोग्य है। मनुष्य जिस गुण से आजीविका पाता है, और जिस गुण के कारण इस दुनिया में सज्जन उसकी बड़ाई करते हैं, गुणी को ऐसे गुण की रक्षा करना और बड़े यत्न से बढ़ाना चाहिए। इसलिए हे शुभचिंतक, मुझे आज्ञा दीजिये। मैं जाता हूँ। करकट ने कहा-कल्याण हो, और तुम्हारे मार्ग विघ्न रहित अर्थात शुभ हो। अपना मनोरथ पूरा करो। तब दमनक घबराया-सा पिंगलक के पास गया। तब दूर से ही बड़े आदर से राजा ने भीतर आने दिया, और वह साष्टांग दंडवत करके बैठ गया। राजा बोला-बहुत दिन से दिखे नहीं। दमनक बोला- यद्यपि मुझ सेवक से श्री महाराज को कुछ प्रयोजन नहीं है, तो भी समय आने पर सेवक को अवश्य पास आना चाहिए, इसलिए आया हूँ। हे राजा, दांत के कुरेदने के लिए तथा कान खुजाने के लिए राजाओं को तिनके से भी काम पड़ता है। फिर देह, वाणी तथा हाथ वाले मनुष्य से क्यों नहीं? अर्थात अवश्य पड़ना ही है। यद्यपि बहुत काल से मुझ अनादर किये गये, अपने बुद्धि के नाश की श्री महाराज शंका करते हैं, सो भी शंका न करनी चाहिए।

कदर्थितस्यापि च धैर्यवृत्ते, बुंध्देर्विनाशो न हि शंड्कनीयः। अधःकृतस्यापि तनूनपातो, नाधः शिखा याति कदाचिदेव॥

अनादर भी किये गये, धैर्यवान की बुद्धि के नाश की शंका नहीं करनी चाहिए, जैसे नीचे की ओर की गई भी अग्नि की ज्वाला कभी भी नीचे नहीं जाती है, अर्थात हमेशा ऊँची ही रहती है। हे महाराज,

इसलिए सदा स्वामी को विवेकी होना चाहिए। मणि चरणों में ठुकराता है और कांच सिर पर धारण किया जाता है, सो जैसा है, वैसा भले ही रहे, काँच-काँच ही है और मणि-मणि ही है।

इस प्रकार से दमनक ने अपने राजा पींगलक की मित्रता संजीवक से करा देता है, और अपनी बुद्धि से और राजा की मुर्खता के साथ संजीवक की बेबसी का फायदा उठा कर। दमनक पिंगलक को कहता है कि यह संजीवक बहुत शक्तिशाली है, इससे आप मित्रता कर ले, जिससे आपको फायदा ही होगा। और ऐसा ही दमनक संजीवक को भी बोलता है। जिससे पिंगलक संजीवक को अपना मित्र बनाकर, उसे निर्भयता का अभय दान देकर, अपने दरबार का सदस्य बना लेता है। ऐसा ही कुछ दिन चलता है। इसके बाद एक दिन उस सिंह पिंगलक का भाई स्तब्धकर्ण नामक सिंह उसके पास आया। उसका आदर-सत्कार करके, और अच्छी तरह बैठा कर पिंगलक उसके भोजन के लिये पशु मारने चला।

इतने में संजीवक बोला कि- महाराज, आज मरे हुए मृगों का माँस कहाँ है? राजा बोला-दमनक करकट जाने, संजीवक ने कहा-तो जान लीजिये, कि है या नहीं, इस पर सिंह ने सोच विचार कर कहा- अब वह नहीं है, संजीवक बोला-इतना सारा मांस उन दोनों ने कैसे खा लिया? राजा बोला- खाया, बाँटा और फेंक फेंक दियाहोगा। नित्य यही हाल रहता है। तब संजीवक ने कहा महाराज के पीठ पीछे इस प्रकार वह क्यों करते हैं? राजा बोला-मेरे पीठ पीछे ऐसा ही किया करते हैं। फिर संजीवक ने कहा- यह बात उचित नहीं है। निश्चय करके वही मंत्री श्रेष्ठ है जो दमड़ी- दमड़ी करके कोष को बढ़ावे, क्योंकि कोष युक्त राजा का कोष ही प्राण है, केवल जीवन ही प्राण नहीं है।

यह सुन कर स्तब्धकर्ण बोला- सुनों भाई, ये दमनक करकट बहुत दिनों से अपने आश्रय में पड़े हैं और लड़ाई और मेल कराने के अधिकारी है। धन के अधिकार पर उन को कभी नहीं लगाना चाहिए। जब जैसा अवसर हो वैसा जान कर काम करना चाहिए। सिंह बोला- यह तो है ही, पर ये सर्वथा मेरी बात को नहीं मानने वाले हैं। स्तब्धकर्ण बोला- यह सब प्रकार से अनुचित है। भाई, सब प्रकार से मेरा कहना करो, और व्यवहार तो हमने कर ही लिया है। इस घास चरने वाले संजीवक को धन के अधिकार पर रख दो। पिंगलक ने अपने भाई कि सलाह मान कर संजीवक को अपने धन का रक्षक बना देता है। ऐसा करने पर उसी दिन से पिंगलक और संजीवक का सब बांधवों को छोड़ कर बड़े स्नेह से समय बीतने लगा।

फिर सेवकों के आहार देने में शिथिलता देखकर दमनक और करकट आपस में चिंता करने लगे। तब दमनक करकट से बोला- मित्र, अब क्या करना चाहिए? यह अपना ही किया हुआ दोष है, स्वयं के द्वारा किए गए दोष करने पर पछताना भी उचित नहीं है। जैसे मैंने इन दोनों की मित्रता कराई थी, वैसे ही मित्रों में फूट भी कराऊँगा। करकट बोला- ऐसा ही हो, परंतु इन दोनों का आपस में स्वभाव से बढ़ा हुआ बड़ा स्नेह

कैसे छुड़ाया जा सकता है। दमनक बोला-उपाय करो, जैसा कहा है कि- जो उपाय से हो सकता है, वह पराक्रम से नहीं हो सकता है। बाद में दमनक पिंगलक के पास जा कर प्रणाम करके बोला- महाराज, नाशकारी और बड़े भय के करने वाले किसी काम को जान कर आया हूँ। पिंगलक ने आदर से कहा-तू क्या कहना चाहता है? दमनक ने कहा-यह संजीवक तुम्हारे ऊपर अयोग्य काम करने वाला-सा दिखता है, और मेरे सामने महाराज की तीनों शक्तियों की निंदा करके राज्य को ही छीनना चाहता है। यह सुन कर पिंगलक भय और आश्चर्य में मन मार कर चुप हो गया। दमनक फिर बोला- महाराज, सब मंत्रियों को छोड़ कर एक इसी को जो तुमने सर्वाधिकारी बना रखा है। वही दोष है।

सिंह ने विचार कर कहा-हे शुभचिंतक, जो ऐसा भी है, तो भी संजीवक के साथ मेरा अत्यंत स्नेह है। बुराईयाँ करता हुआ भी जो प्यारा है, सो तो प्यारा ही है, जैसे बहुत से दोषों से दूषित भी शरीर किस को प्यारा नहीं है। दमनक फिर भी कहने लगा-हे महाराज, वही अधिक दोष है। पुत्र, मंत्री और साधारण मनुष्य इनमें से जिसके ऊपर राजा अधिक दृष्टि करता है, लक्ष्मी उसी पुरुष की सेवा करती है। हे महाराज सुनिये, अप्रिय भी, हितकारी वस्तु का परिणाम अच्छा होता है और जहाँ अच्छा उपदेशक और अच्छे उपदेश सुनने वाला हो, वहाँ सब संपत्तियाँ रमण करती है। सिंह बोला-बड़ा आश्चर्य है, मैं जिसे अभय का वादा दे कर लाया हूं, और उसको बढ़ाया, सो वह मुझ से क्यों वैर करता है? दमनक बोला-महाराज, जैसे मली हुई, और तैल आदि लगाने से सीधी करी हुई कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती है, वैसे ही दुर्जन नित्य आदर करने से भी सीधा नहीं होता है। और जो संजीवक के स्नेह में फँसे हुए स्वामी जताने पर भी न माने, तो मुझ सेवक पर दोष नहीं है। पिंगलक (अपने मन में सोचने लगा) कि किसी के बहकाने से दूसरों को दंड न देना चाहिए, परंतु अपने आप जान कर उसे मारे या सम्मान करें। फिर बोला- तो संजीवक को क्या उपदेश करना चाहिए? दमनक ने घबरा कर कहा-महाराज, ऐसा नहीं, इससे गुप्त बात खुल जाती है। पहले यह तो सोच लो, कि वह हमारा क्या कर सकता है? सिंह ने कहा-यह कैसे जाना जाए, कि वह द्रोह करने लगा है? दमनक ने कहा-जब वह घमंड से सींगों की नोक को मारने के लिए सामने करता हुआ निडर-सा आए, तब स्वामी आप स्वयं ही जान जायेंगे। इस प्रकार से सिंह से कह कर वह गीदड़ संजीवक के पास गया और वहाँ जा कर धीरे-धीरे पास खिसकता हुआ, अपने को मन मलीन-सा दिखाया। संजीवक ने आदर से कहा मित्र सब कुशल तो है? दमनक ने कहा-सेवकों को कुशल कहाँ? संजीवक ने कहा-मित्र, कहो तो यह क्या बात है, दमनक ने कहा-मैं मंदभागी क्या कहूँ? एक तरफ राजा का विश्वास और दूसरी तरफ बांधव का विनाश होना क्या करू? इस दुःख सागर में पड़ा हूं। यह कह कर लंबी साँस भर कर बैठ गया। तब संजीवक ने कहा-मित्र, तो भी सब विस्तारपूर्वक मन की बात कह। दमनक ने बहुत छिपाते-छिपाते कहा- यद्यपि राजा का गुप्त विचार नहीं कहना चाहिए, तो भी तुम मेरे भरोसे से आया हूं। अतः मुझे परलोक की अभिलाषा के डर से अवश्य तुम्हारे हित की बात करनी चाहिए।

सुनो तुम्हारे ऊपर क्रोधित इस स्वामी ने एकांत में कहा है कि संजीवक को मार कर अपने परिवार को दूँगा। यह सुनते ही संजीवक को बड़ा विषाद हुआ। फिर दमनक बोला-विषाद मत करो, अवसर के अनुसार काम करो। संजीवक छड़ भर अपने चित्त में विचार कर कहने लगा-निश्चय ही यह ठीक कहता है, अथवा दुर्जन का यह काम है, या नहीं है, यह व्यवहार से निर्णय नहीं हो सकता है। संजीवक फिर सांस भरकर बोला- अरे, बड़े कष्ट की बात है, कैसे सिंह मुझ घास के चरने वाले को मारेगा? विजय होने से स्वामित्व और मरने पर स्वर्ग मिलता है, यह काया क्षणभंगुर है, फिर संग्राम में मरने की क्या चिंता है? यह सोच कर संजीवक बोला-हे मित्र, वह मुझे मारने वाला है, यह कैसे मैं समझ सकता हूं? तब दमनक बोला-जब वह पिंगलक पूँछ फटकार कर उँचे पंजे करके और मुख फाड़ कर देखे, तब तुम भी अपना पराक्रम दिखलाना। परंतु यह सब बात गुप्त रखने योग्य है। नहीं तो न तुम बचोगे और न मैं ही बचुगा। यह कह कर दमनक करकट के पास गया। तब करकट ने पूछा-क्या हुआ? दमनक ने कहा-दोनों की आपस में फूट फैल गई। करकट बोला-इसमें क्या संदेह है? तब दमनक ने पिंगलक के पास जा कर कहा- महाराज, वह पापी आ पहुँचा है, इसलिए सम्हल कर बैठ जाइये, यह कह कर, पहले जताए हुए आकार को करा दिया, संजीवक ने भी आ कर वैसे ही बदली हुई चेष्टा वाले सिंह को देखकर, अपने योग्य पराक्रम किया। फिर उन दोनों की लड़ाई में संजीवक को सिंह ने मार डाला। बाद में सिंह, संजीवक सेवक को मार कर थका हुआ, और शोक-का मारा बैठ गया। और बोला-कैसा मैंने दुष्ट कर्म किया है? दमनक बोला-स्वामी, यह कौन—सा न्याय है कि शत्रु को मार कर पछतावा करते हो? इस प्रकार जब दमनक ने संतोष दिलाया, तब पिंगलक का जी में जी आया, और सिंहासन पर बैठा। दमनक प्रसन्न चित्त होकर" जय हो महाराज की"," सब संसार का कल्याण हो, " यह कह कर आनंद से रहने लगा।

अध्याय 4.

मानस ने कहा जिस प्रकार से पिंगलक ने अपने मित्र संजीवक को मार कर अपनी स्वतन्त्रता धन के साथ राज्य का विस्तार किया है, ऐसा ही हमें भी करना होगा।

और इसके बाद एक दिन कैलाश राजा हरिश्चन्द्र से मिलकर शाम के समय अपने कुछ वफादार सैनिकों और अपने एक पुत्र के साथ अपने हवेली को आ रहा था। सभी घोड़े से थे, इन को मारने के लिये छानबे क्षेत्र छनवर के लाखों एकड़ का सुनसान इलाका जो था। उसमें मानस द्वारा कैलाश की मृत्यु का चक्रव्यूह रचा गया। जो बस्ती से दूर एकांत जंगली घास फुस सरपत आदि से आच्छादित था। वहीं पर मानस ने अपने सशस्त्र सैकड़ों आदमियों को छुपा रखा था। जिसने कैलाश के घुड़सवार सैनिकों को चारों तरफ से घेर कर तलवार भाला लाठी आदि से आक्रमण कर दिया। हलाकी कैलाश स्वयं एक श्रेष्ठ योद्धा

के अतिरिक्त बहुत विद्वान ज्ञानी पुरुष थे, उसे पता था। कि उसकी जीत यहाँ संभव नहीं होगी। क्योंकि उसकी संख्या बहुत कम है, फिर भी उसने शेर कि तरह दहाड़ते हुए कहा। अपने पुत्र और अंगरक्षक सैनिकों का हौसला बढ़ाते हुए, सब को खत्म कर दो क्या देख रहे हो। इस तरह उस एकांत में चारों तरफ घमासान तलवार भाले कि आवाज गूंजने लगी। कैलाश कि उम्र उस समय 75 साल थी फिर भी वह 20 साल और 25 साल के योद्धा के समान घमासान नर संहार कर रहा था। उसने अच्छे-अच्छे के छक्के छुड़ा दिया था। लम्बा तगड़ा साढ़े सात फिट का जवान था। उसके समान ही उसके सारे पुत्र भी सब लंबे तगड़े हट्टे कट्टे और काफी मजदूर थे। यहाँ पर कैलाश के साथ केवल उसका सबसे छोटा बेटा था, वह भी उसके साथ युद्ध में जी जान से जुटा था। जिसकी अभी कुछ एक साल पहले ही शादी हुई थी। यदि कैलाश के सभी पुत्र यहाँ एक साथ होते, तो इन पर विजय पाना कठिन था। इसलिए ही मानस ने यह चाल चली थी। इन को एकांत में घेर कर मारा जाये। जिसमें उसका साथ देने के लिये अँग्रेज़ों के भी आदमी आ गये थे। यह लड़ाई कई घंटों तक चली अंत में मानस जो झाडियों के पीछे छीप कर सब देख रहा था। वह अचानक मौका पा कर झाड़ियों से बाहर निकल कर, अपने तिस किलो वजनी तलवार के एक खतरनाक वार से कैलाश के सर धड़ से अलग कर दिया। अब वह कैलाश नाम का योद्धा जो जमीन पर पड़ा था। अभी तक कैलाश अपने बहुत साथियों के साथ जो उसके सबसे चहेते अंगरक्षक थे। सब ने मिलकर एक साथ कुल सैकड़ों लोग को मौत कि गर्त में हमेशा के लिये सुला चुके थे। जिन में कुछ अपने थे और कुछ मानस के आदमी थे। बाकी सब जो अभी तक बचे थे, उन को मारने के लिये मानस के सभी आदमियों ने एक साथ अँग्रेज़ों के सिपाहियों को भी एक साथ लेकर गुट बंदी कर लिया, और उसी तरह से कैलाश के पुत्र पर आक्रमण कर दिया, जिस तरह से कौरवों ने अर्जुन के पुत्र अभीमन्यु को मारने के लिये महाभारत के युद्ध में, सभी महारथी एक हो गये थे। इस तरह से कैलाश के पुत्र की भी बड़ी बेरहमी से हत्या कर दी गई।

यह सूचना नगर गांव में ऐसे फैली, जैसे कि सुखी घास में आग फैलती है। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गई। इसके साथ अँग्रेज़ों कि सेनाओं ने गांव और नगर में डेरा डाल दिया। एक तरह से कर्फ्यु लागू कर दिया गया। किसी को भी घर के बाहर निकलने कि इजाजत नहीं थी।

राजा को जब यह खबर मिली, कि उसका वफादार और वीर योद्धा कैलाश और उसके पुत्र के साथ मार दिया गया। तब वह अपने कुछ वफादार सैनिकों अंगरक्षक के साथ अपनी हवेली से कैलाश कि हवेली के लिये उसको श्रद्धांजलि देने के लिये, उसी रास्ते से निकला। जहाँ पर कैलाश और उसके पुत्र की हत्या हुई थी, उसे क्या पता था कि उसका काल भी उसका इंतजार कर रहा है। जिसके इंतजार में घात लगाकर अंग्रेज सैनिक के साथ मानस के आदमी और राजा का दामाद बैठ हुए थे। उन्होंने सब मिल कर राजा के साथियों समेत राजा कि अंधेरी रात्रि में बड़ी निर्मम हत्या कर डाली।

जिसके कारण पूरे नगर में भयंकर कोहराम मच गया। इसी बीच राजा हरिश्चन्द्र का एक लौता दामाद राजा बना दिया गया। और इस तरह से अँग्रेज़ों ने अपने मन माफिक राजा बना कर अपनी नितियों को लागू करना शुरु कर दिया। विजयपुर के राज्य को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया, जिसमें से शहरी इलाक़ों को अपने बस कर लिया, और ग्रामिण इलाक़ों का मानस को सबसे बड़ा जमींदार बनाया गया, और कैलाश के बचे पुत्रों को कुछ सौ एकड़ जमीन ज़ीने खाने का देकर बाकी सारी जमीन छिन ली गई। उस जमीन में से कुछ जमीन को मानस को दिया गया। बाकी जमीन को अँग्रेज़ों के उन सिपाहियों सैनिकों के बीच में बांट दिया गया, जो कैलाश और उसको पुत्र के साथ राजा की हत्या करने में और अँग्रेज़ों की सत्ता को लागू कराने में, अंग्रेज सरकार कि मदद कि थी। और कैलाश के व्यक्तिगत सैनिकों को नष्ट कर दिया गया। इसके साथ भयंकर लूट पाट व्यभिचार किया गया, अंग्रेज सिपाहियों के द्वारा, जिसमें अकसर भारतीय सैनिक ही थे। जो दूसरे प्रान्त से बुलाये गये थे। उन को वहीं गांव और नगरों में हमेशा के लिये वसा दिया गया। सशस्त्र हथियारों के साथ जिनके पास आधुनिक राइफल और बंदूकें थी। इस तरह से यह सारे अंग्रेज सैनिक के वंशज आज राजपुत गहरवार नाम से विजय पुर के इलाक़े में आज भी पाये जाते हैं।

अँग्रेज़ों ने अपने मकसद को तो प्राप्त कर लिया, मगर कैलाश और मानस की दो खानदान में भयानक गृहयुद्ध शुरु हो गया, जिसे अँग्रेज़ों को शांत करने में पसीने छुटने लगे। जो कैलास को छः पुत्र अभी जिंदा थे, वह किसी तरह से भी अपने पिता कि हत्या का बदला लेने के लिये उतावले थे। जिन को शांत करने के लिये। अँग्रेज़ों के आदमियों का मानस की हवेली पर हमेशा पहरा रहता था। साथ में कैलाश के परिवार और उनके पुत्रों को मानस परिवार के किसी भी सदस्य से मिलने की मनाही थी। यदि ऐसा पाया गया तो मृत्यु दण्ड दिया जायेगा। एक तरफ तो मानस कि हवेली में चहल पहल और हमेशा खुशी का माहौल रहता था, और हमेशा मेहमान हाथी घोड़ों से आते जाते रहते थे। दूसरी तरफ कैलाश के परिवार में मातम का माहौल छाया रहता था। जिन में तीन युवा और विधवा औरतें भी थी, जिनके पुत्र और पुत्री अभी छोटे-छोटे थे। उनके उपर जैसे दु:खों का पहाड़ गिर गया था। वह सब अभी अपने दु:खों से उभर नहीं पाये थे। कि एक दिन अचानक कैलाश के दो मझले पुत्रों ने अपने कुछ विश्वस्त आदमियों के साथ मानस के बड़े पुत्र मानव को, वहीं छानबे छनवर के एकांत में घेर लिया। जब वह मिर्जापुर शहर से कुछ सामान ले कर, अपने कुछ आदमियो के साथ, शाम को वापिस आ रहा था। जहाँ पर उनके पिता कैलाश को मारा गया था। वह इलाका इतना वीरान और एकांत दिन में ही था। जहाँ पर सिवाय कुछ पक्षियों के और निल गांयों के कोई दूसरा व्यक्ति दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता था। उस पर भी शाम का समय तब सभी सर्दी के समय में अपने-अपने घरों में रज़ाईयों में दुबके हुए थे। कुछ आग का अलाव जला कर अपने शरीर को गर्म करते हुए अपने-अपने झोपड़े में पड़े हुए है। बाहर गांव में सिवाय कुछ अंग्रेज सिपाहियों के कोई नहीं दिखाई देता था, जो वहीं के निवासी बन चुके थे, उन को भी नहीं पता था कि इस समय यहां गांव से आठ

किलो मीटर दूर छनवर के मैदानों में क्या हो रहा है? जहाँ पर आज मानस का बेटा मानव अपने आदमियों के साथ अपनी जाने का भीख मांग रहा था। जिस पर कैलाश के दो जवान बेटे तलवार और गंड़ासे से उसके एक-एक अंगों को काट रहे थे। अपने पिता और भाई की हत्या का बदला लेने के लिये। इस तरह से कैलाश के पुत्रों ने मानव को मार कर जैसे आग में जलते हुए घी डालते हैं, उन्होंने यही काम किया। पहले तो किसी को पता ही नहीं चला कि मानव कि हत्या कैसे हुई? उनकी लास का भी पता नहीं चला, क्योंकि उनकी लास के टुकड़े करके रात्रि के समय में गंगा कि धारा में प्रवाहित कर दिया गया था। जहाँ पर एक मछुआरा ने कैलाश के पुत्रों को देख लिया था। जिसके कारण उन को उस माझी कि भी हत्या कर के उसको भी गंगा नदी में डाल दिया। अंग्रेज सैनिकों ने इस हत्या का पता लगाने के लिये बहुत छान बिन की लेकिन कुछ पता नहीं चला। इस बात का पता बहुत समय के बाद मानस को हुआ।

मानस को इस बात का बहुत दुःख हुआ, वह अभी किसी प्रकार का संघर्ष नहीं करना चाहता था, क्योंकि उस समय मानव के चार पुत्र और एक पुत्री थी। जो अभी छोटे-छोटे बच्चे थे। जिनका नाम क्रमशः मनुनाथ, केदारनाथ, ओंकारनाथ, दयानाथ था इस के अतिरिक्त मानव की एक पुत्री भी थी जिसका नाम कबला था। जिनके पालन पोषण शिक्षा के जिम्मेदारी मानस पर आ गई थी। इसके अतिरिक्त दूसरा पुत्र दानव जो अभी कुछ दिन पहले ही अपनी दूसरी शादी कि थी। वह अपनी नई पत्नी के साथ हनीमून मनाने के लिये कश्मीर गया था। दानव की पहली पत्नी का देहांत हो चुका था, जिससे एक पुत्र करनाथ नाम का था और एक जुगनू नाम कि पुत्री थी। आगे चल कर दानव की दूसरी पत्नी को तिन पुत्र हुए, जिसमें कामनाथ, दमनाथ, समरनाथ था।

अभी मानस के सभी पुत्र और वह स्वयं एक साथ ही रहते था। जो उसके दूसरे पुत्र दानव की दूसरी पत्नी को अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि वह अपने लिये नई हवेली बनाना चाहता था। जिसके लिये मानस ने कहा ठीक है, तुम्हारे लिये एक हवेली का निर्माण कर दिया जायेगा, लेकिन तुम्हें मानव के बच्चों का ध्यान देना होगा। जब तक कि वह स्वयं को सम्हालने के योग्य नहीं हो जाते हैं। लेकिन इस पर दानव की दूसरी पत्नी ने एक साथ रहने से मना कर दिया। दानव भी अपनी इस बात पर तैयार था। जिसके बाद मानस ने एक साथ दो नई हवेली का निर्माण कराया, जिस एक नई हवेली में दानव अपनी पत्नी और दोनों पत्नी के द्वारा उत्पन्न अपने बच्चों के साथ रहने के लिये जाता है। और जिस दूसरी हवेली का और निर्माण किया गया था, उसमें मानव कि विधवा पत्नी अपने चार पुत्र और एक पुत्री के साथ रहने लगी।

इस तरह से मानस अपनी पत्नी के साथ अपनी पुरानी हवेली में अकेला रहता था। अचानक उनकी पत्नी बीमार हो जाती है। जिस को गंगा पार से चिकित्सों को बुला कर दिखाया जाता है। लेकिन उनकी तबीयत में सुधार नहीं आता है और कुछ महीने के बीमारी के बाद उसकी मृत्यु हो जाती है। क्योंकि वह

अपने पुत्र मानव से बहुत अधिक जुड़ी थी, और मानव की अचानक युवा अवस्था मृत्यु को वह बर्दाश्त नहीं कर सकी थी। इस तरह से मानस अकेले पड़ गया। उनकी उम्र अभी केवल साठ साल कि थी। वह उस समय भी बहुत युवा और शानदार पुरुष था, उसके पास जमीन जायदाद हाथी घोड़े की कोई कमी नहीं थी। ना ही किसी नौकर चाकर कि ही कमी थी वह किसी राजा की तरह से रहता था। उसे यह महसूस हुआ कि उसकी संपत्ति की देखभाल करने वाले कम है। जिससे उन्होंने अपनी दूसरी शादी कर ली, और उससे चार पुत्र के साथ एक पुत्री के पैदा किया। मानस की दूसरी पत्नी सै पैदा हुआ उसका पहला पुत्र राघव था, जो आगे चल कर बहुत अधिक शक्तिशाली के साथ सत फीटा का जवान था, साथ में एक बहुत कुशल तलवार बाज बना, जो आगे चलकर उस क्षेत्र का सबसे ताकतवर पुरुष के रूप में प्रसिद्ध हुआ। जिसने अपने तेज से सारा इलाका अपने कब्जे में कर लिया। जिसके बाद वह भी अँग्रेज़ों कि आँख का तिनका बन गया था। मानस का दूसरा पुत्र श्रवण था, जो आगे चल कर अँग्रेज़ों का पक्का वफादार खुफिया गुप्तचर बना। मानस की दूसरी पत्नी से तीसरा पुत्र साघव पैदा हुआ था, जो खूंखार आतंकी की तरह से उभरा, जिसके नाम से ही पुरा क्षेत्र कांपता था। वह किसी कि औरत को अपने पास रात बिताने के लिये कभी भी बूला लेता था। जो उसके आदेश का उलंघन करता था उसका सर कलम कर दिया जाता था। क्योंकि इनके साथ अंग्रेज भी थे। मानस की दूसरी पत्नी से चौथा पुत्र जो उत्पन्न हुआ जिसका नाम बड़े प्रेम से दानवीर रखा जो आगे चलकर अँग्रेज़ों की सेना में भरती हो गया बन गया। इनके अतिरिक्त मानस की एक शुशीला नाम की सुन्दर पुत्री भी थी, जो अपने भाईयों के समान बहुत तेज तर्रार थी।

दूसरी तरफ मानस के पहली पत्नी से उत्पन्न मानव का बड़ा लड़का एक बहुत बड़ा जुआरी बना मनुनाथ जो अपना जीवन विलास और ऐयाशी पूर्वक बिताने में ही व्यतीत करता थ। लोगों कि पंचायत करना उसका प्रमुख कार्य था। जबकि मानव का दूसरा बेटा केदारनाथ जमींदार बना, और उसने अपने पूर्वजों की परंपरा से प्राप्त जमीन की देखभाल करने के साथ उसका सारा हिसाब किताब रखता था। हज़ारों एकड़ में जमीन फैली थी, जिसमें हज़ारों किसानों के परिवार कार्य करते थे, कितने मज़दूरों का जीवन उस जमीन की खेती पर आश्रित था। तीसरा मानव का पुत्र ओंकार नाथ भी, अपने घोड़े पर सवार हो कर केदारनाथ के साथ किसानी के काम को देखता था। चौथा बेटा मानव का बहुत पढ़ने लिखने में तेज था। इसलिए वह सरकारी इन्जीनियर बन कर गांव के झंझट से स्वयं को मुक्त करने के लिए वह गांव से बाहर किसी बड़े नगर में चला गया। और अपनी सारी जिंदगी बाहर ही व्यतीत करता रहा। जिसके साथ दानव के पुत्र पुत्री सभी बड़े हो जाते है सब का शादी विवाह हो जाता है।

अभी भी कैलाश के पुत्रों ने अपने हृदय में उस दुःख को समेट कर रखा था, कि किस तरह से मानस ने उनके पिता कैलाश की निर्मम हत्या का षड्यंत्र रच कर उन को मारा था। जिसकी आग अब भी उनके दिल में दहक रही थी। इसलिए वह सब मानस की हत्या के फिराक थे, कि किसी तरह से मानस को

छनवर के एकांत में घेर कर इसका काम तमाम कर दिया जाये। जिसका वह सब इंतजार कर रहे थे, एक दिन उन को मौका मिल गया। जब मानस अपनी हवेली से दूर अपने घोड़े से छनवर में घूमने के लिये अकेले ही चला गया, वह से भूल ही चुका था। कि कुछ लोग उसकी हत्या के लिये उसके लिये जाल फैला कर रखा था। उसका काल उसे अकेला ले जा रहा था। जिसमें वह फंस गया, जिसका फायदा कैलाश के पुत्रों ने उठाया। और मानस वहाँ पर घेर कर सभी कैलाश के पुत्रों ने एक साथ मानस पर आक्रमण कर दिया, उस समय मानस 80 साल का था। फिर भी काफी ताकतवर था, उसने काफी समय तक अपनी रक्षा कि और लड़ता रहा, लेकिन कैलाश के पुत्रों के सामने वह अधिक समय तक नहीं ठहर सका। कैलाश के पुत्रों ने उसके एक-एक अंगों को बारी-बारी काटा और उसको बहुत मरने से पहले तड़पाया, और जब मानस के प्राण पखेरू उसके शरीर से बाहर निकल गये। तब कैलाश के पुत्रों ने मानस कि शरीर को झाड़ फुस में एकत्रित करके उसमें रख दिया, और उसे आग के हवाले कर दिया। इस तरह से मानस और उसके पुत्र मानव कि हत्या करके उन्होंने अपने पिता और भाई का बदला ले लिया। लेकिन उन को पता नहीं था, कि इसका परिणाम उनके पूरे खानदान के नाश का कारण बन जायेगा। जैसा कि क्रोध में आदमी अपना आपा खो देता है।

कैलाश की अंतिम विधवा बहु जानती थी, कि यह गलत कार्य किया जा रहा था, इसलिए वह एक दिन अपने परिवार के सदस्यों बुला कर कहती है, कि हम सब जीव हैं, हमारे कल्याण के लिये ही इस उपासक जीव को प्रभु प्रेरणा देना प्रारम्भ करते हुए कहते हैं, कि हे जीव तुम सतत गतिशील कर्मशील बनों अकर्मण्यता तुम्हें कभी भी दूर–दूर तक स्पर्श ना कर सके, आत्मा शब्द का अर्थ ही होता है निरंतर गतिशील बने रहने वाला तत्व, क्योंकि अकर्मण्यता वस्तुओं को जीर्ण शीर्ण कर देती है। जो जड़ता का प्रथम गुण है। इस तरह से कर्मशीलता निरंतर क्रियाशील बने रहना ही विकास और प्रादुर्भाव के साथ परमार्थ और उत्थान का कारण बनती है। अर्थात क्रियाशीलता ही जीवन का मुल उद्देश्य है, स्वयं का जीवन रूप निरंतर बहने वाली ऊर्जा है। बस तुम कुछ ऐसा उद्योग पुरुषार्थ करो, की विद्वान महापुरुष तुम्हें आगे बढ़ने में तुम्हारा सहायता करें, जिससे तुम दिन प्रतिदिन निरंतर बढ़ते रहो, और तुम्हारा झुकाव श्रेष्ठतम कर्मों की तरफ ही हो। जो तुम्हारे उत्थान के लिये ही हो, तुम्हारा पुरुषार्थ निरंतर सही दिशा में सार्थक अपने जीवन को श्रेष्ठ उद्देश्य की प्राप्ति के लिये पुरुषार्थी बनाये। तुम हिंसा रहित अहिंसक कर्मों को करने वाले मनुष्यों में अग्रणी मनुष्य बनों, तुम्हारे जीवन के प्रत्येक कार्य से यह प्रतिबिंबित हो, कि तुम्हारा कार्य मानव कल्याण के साथ मानव निर्माण और सर्व जनहित और सर्वजन के सुख का कारक हो। तुम्हारे किसी भी कार्य से किसी भी प्राणी का अन्याय से विनाश ना हो, ना ही तुम्हारा कार्य किसी प्रकार से विध्वंसक हो। तुम परम ऐश्वर्यशाली परमेश्वर मेरे समान मेरे ही सभी गुणों को धारण करने वाले और तुम्हारे जीवन में मेरे ही श्रेष्ठ गुणों की अधिकता हो, ना कि मेरे विपरीत प्रकृत के गुणों की अर्थात जड़ता और नश्वरता की मात्रा की अधिकता हो। इस तरह से तुम मेरे साथ मेरे सान्निध्य से अपने सभी कार्य को

सरलता से सिद्ध करने में सबल होंगे। अर्थात तुम केवल प्रेय के पीछे न चल कर मरने वाले मरण धर्मा ना बन कर श्रेय के साथ चले जिससे तुम अमरता की उपलब्धि अपने जीवन में कर सको। अपने जीवन को तुम ऐसा बना कर, निश्चित रूप से उत्तम-उत्तम संतानों वाला बनों। तुम्हारे जीवन की यह एक महत्त्वपूर्ण असफलता होगी, यदी तुम्हारे संतान या प्रजा निकृष्ट स्वभाव कि होगी जो तुम्हारा ही शत्रु बनेगी, जिससे तुम्हारा जीवन साक्षात नरक बन कर रह जायेगा। इस जीवन यात्रा में ऐसी समझदारी युक्त यात्रा करना कि तुम्हारा शरीर रोग से आक्रांत ना हो। यह शरीर रूप तुम्हारा रथ मध्य में ही ना तुम्हारा साथ छोड़ दे, यदि ऐसा हुआ तो तुम्हारी जीवन यात्रा कैसे पुरी होगी? इसके प्रती हमेशा सचेत रहना जैसे सूर्य पृथ्वी का के प्रती सचेत रहता है। जब तुम हमारा ध्यान करोगे, तो हमेशा स्वस्थ रहोगे, दुःखी और बीमार रोग ग्रस्त वही होते है। जो अत्यधिक शारीरिक प्राकृतिक विषय भोग में ही आसक्त या तल्लीन रहते हैं। तुम्हें यक्ष्मा रोग ना घेरे इस राज रोग के घेरे में मत आओ, यदि तुम प्रकृति का सही सद् उपयोग करोगे, तो इसके शिकार में तुम कैसे फंस सकते हो? चोर लुटेरे तुम्हारे संपत्ती के स्वामी कभी ना बनने पाये। इसके लिए तुम हमेशा सतर्क रहो, और अपनी धन की रक्षा के लिये उचित प्रबंध करो। बिना श्रम या पुरुषार्थ के धन संपत्ती को प्राप्त करना भी एक प्रकार की चोरी या स्तेन ही है। इससे तुम हमेशा स्वयं को मुक्त रखों। यह चोरी विभिन्न प्रकार के सट्टे लाटरी जुआ आदि इसी में आते हैं। यह मनुष्य कामचोर निकम्मा आराम पसंद विलासी बनाते हैं। जिससे मानव भयंकर तम विपत्ति और गंदे व्यसन के साथ बीमारियों के चपेट में आ जाता है। जिसमे से निकलना बड़ी मशक्कत के बाद भी मुश्किल होता है कभी–कभी असंभव हो जाता है। पाप को अच्छी तरह से व्यक्त या चित्रीत करने वाला पापी पुरुष तुम्हारे विचारों, तुम्हारे मस्तिष्क पर कभी हावी, या तुम कभी उसके बस में ना हो, या वह पाप आत्मा तुम्हारे विचारों पर कभी भी शासन ना करें। तुम हमेशा निश्चल एक शांत चित्त रहों और अपनी इन्द्रियों को हमेशा अपने वश में रखो, अथवा उन को अपने पर नियंत्रण रखो। क्योंकि इन्द्रियों के स्वामी परमेश्वर के सान्निध्य में रहने से इन्द्रियां अपना मार्ग कभी नहीं भटकती है, और जब ऐसा नहीं होता है, तो यह मनुष्य की इन्द्रियां किसी भी निकृष्ट काम को करना नहीं छोड़ती है। जिससे यह हर प्रकार से मनुष्य को पथ भ्रष्ट कर देती है। जब मनुष्य वेद वाणी को जानने वाला परम पिता के ज्ञान से स्वयं को जोड़ कर रखता है, तो वह प्रभु में हमेशा केन्द्रीय रहना, अपना केन्द्र परमेश्वर को बना कर रखता है। जो मनुष्य परमेश्वर के समीप केंद्रित रहता है, वहीं यहाँ मृत्यु लोक में स्वयं को बचा सकता है। जिसने ऐसा नहीं किया वह यहाँ संसार रूपी चक्की के दो पाटों के बिच में फंस कर पिसता रहता, उसका बचना लगभग असंभव हो जाता। प्रभु ही इस विश्व चक्र की धुरी की मुख्य कील हैं। इसी में तुम हमेशा स्थिरता से निवास करना है। बहुत होना संसार में स्वार्थता आत्म केंद्रित बन कर मत रहना, अधिक से अधिक प्राणि और जीवों से अपना सम्बन्ध स्थापित करने का निरंतर प्रयास करते रहना, दूसरों के भी दुःख दर्द को समझना, और एक से मैं बहुत हो जाऊं, इस भाव या इसका ख्याल रख कर अपने जीवन को जीना, और प्रार्थना करना की इस सृष्टि यज्ञ को चलाने वाला वह प्रभु हमें काम

क्रोध को धारण करने वालों पशु रूप मनुष्य से सुरक्षित रखें। और तुम्हारा प्रयास भी इस तरह से हो की तुम्हारे उपर भी काम क्रोध आदी पाशविक गुण कभी अपना एकाधिकार ना करने पाये।

क्योंकि पानी को ज्यादा सुरक्षित रखना आवश्यक नहीं है, लेकिन आग को बहुत सावधानी से रखने की जरूरत होती है, अन्यथा इससे बहुत भयंकर कष्ट और दुःख उत्पन्न होता है। इसका मुख्य कारण है इन को असुरक्षित रखना और इनका लापरवाही के तरीके से उपयोग करना। जिस प्रकार से चिड़िया घर में मृग आदी को बहुत अधिक बंधन में रखना आवश्यक नहीं होता है। लेकिन उसी चिड़िया घर में शेर आदि प्राणी को बहुत सख्त पिंजड़ा में रखना कितना परम आवश्यक होता है? इसी प्रकार से इन पशु रूप काम क्रोध आदी को भी अपने सख्त नियन्त्रण में रखना आवश्यक होता है। क्योंकि यह कामादि के द्वारा ही संसार में प्रजनन आदि का कार्य निरंतर होता है। यह काम ऊर्जा ही संसार का मूल है, मन की भी उत्पत्ति इस काम से हुई है। मन से शरीर बना और शरीर से संसार बना है। प्रजनन आत्मक कार्य पवित्र होना चाहिए, लेकिन जब यह अनियंत्रित हो जाता है, तो यह काम विकास के स्थान पर विनाश क्षय का कारक बन जाता है। क्रोध भी आवेश रूपी एक शक्ति है लेकिन जब यह अनियंत्रित हो जाता है, तो विनाशकारी सिद्ध होता है और सब विघ्न विपत्ति और अनर्थों का मुख्य श्रोत बन जाता है। जैसा की योगेश्वर कृष्ण गीता में कहते हैं।

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।

कामः विषयवासना; एषः यह; क्रोधः क्रोध; एषः यह; रजो-गुण रजोगुण से; समुद्भवः उत्पन्न; महा-अशनः सर्वभक्षी; महा-पाप्मा महान पापी; विद्धि— जानो; एनम्—इसे; इह—इस संसार में; वैरिणम्—महान शत्रु। हे अर्जुन इसका कारण रजोगुण के संपर्क से उत्पन्न काम है, जो बाद में क्रोध का रूप धारण करता है और जो इस संसार का सर्व भक्षी पापी शत्रु है। जब जीवात्मा भौतिक सृष्टि के संपर्क में आता है, तो उसका शाश्वत प्रभु प्रेम रजोगुण की संगति से काम में परिणत हो जाता है अथवा दूसरे शब्दों में, ईश्वर-प्रेम का भाव काम में उसी तरह बदल जाता है, जिस तरह इमली के संसर्ग से दूध दही में बदल जाता है, और जब काम की संतुष्टि नहीं होती है, तो यह क्रोध में परिणत हो जाता है, क्रोध मोह में और मोह इस संसार में निरंतर बना रहता है। अतः जीवात्मा का सबसे बड़ा शत्रु अनियंत्रित काम है, और यह काम ही है जो विशुद्ध जीवात्मा को इस संसार में फंसा रहने के लिए प्रेरित करता है। क्रोध तमोगुण का प्रकट्य है। ये गुण अपने आपको क्रोध तथा अन्य रूपों में प्रकट करते हैं। अतः यदि रहने तथा कार्य करने की विधीय द्वारा रजोगुण को तमोगुण में न गिरने देकर सतोगुण तक ऊपर उठाया जाए, तो मनुष्य को क्रोध में पतित होने से आत्म आसक्ति के द्वारा बचाया जा सकता है। अपने नित्य वर्धमान चिदानंद के लिए भगवान ने

अपने आपको अनेक रूपों में विस्तार कर लिया, और जीवात्माएँ उनके इस चिदानंद के ही अंश हैं। उन को भी आंशिक स्वतंत्रता प्राप्त है, किन्तु अपनी इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग करके जब वे सेवा को इंद्रिय सुख में बदल देती हैं। तो वे काम की चपेट में आ जाती हैं। भगवान ने इश सृष्टि की रचना जीवात्माओं के लिए इन काम पूर्ण रुचि की पूर्ति हेतु सुविधा प्रदान करने के निमित्त की है। और जब जीवात्माएँ दीर्घकाल तक काम-कर्मों में फंसी रहने के कारण पूर्णतया ऊब जाती हैं, तो वे अपना वास्तविक स्वरूप जानने के लिए जिज्ञासा करने लगती हैं।

इस प्रकार से दिया गया कैलाश की आखिरी बहु का उपदेश, उसके घर के किसी सदस्य के गले नहीं उतरा, उसी प्रकार से जिस प्रकार से किसी ज्वर ग्रस्त मनुष्य को मीठा रस मीठा नहीं लगता है। बदले में घर के और दूसरे सदस्य उसको भीरु और मूर्ख कहने लगे, और कहा कि यह जाहिलों का कार्य है, जिसे तुम परमेश्वर का उपदेश कहती हो। अपनी बात को लोगों ने ठीक कहा कि यह हत्या और बदले का कार्य सर्वथा उचित है। जिससे नाराज हो कर कैलाश कि आखिरी बहु जो वाराणसी जिला के एक जमींदार कि पुत्री थी, वह अपने पिता के घर वहाँ जा कर रहने लगी, क्योंकि उसे इस हत्या का परिणाम पहले से जैसे ज्ञात हो गया था, कि आगे क्या होने वाला है?

मानस के बेटों को जब यह ज्ञात हुआ, कि उसके पिता कि निर्मम हत्या कर दिया गया है। कैलाश के पुत्रों के द्वारा तब उन सब ने एक साथ कैलाश की हवेली पर रात्रि के समय हमला बोल दिया, और उस समय जो उस घर में उपस्थित थे, सब को अपनी तलवार और गड़ासा भाले से मौत के घाट उतार दिया, जिसमें अधिकतर बच्चे औरतें थी। इसके बाद पुरी हवेली में आग लगा दिया गया। इस सामूहिक नर संहार में मानस के कुछ एक सदस्य को छोड़ कर सभी लोग मारे गये थे। इस हृदय विदारक दृश्य को देख कर कितनों के हृदय ने चलना बन्द कर दिया। मानस के पुत्रों के हाथों से केवल कैलाश के दो पुत्र और उसके परिवार बाल बच्चों के साथ और एक अंतिम विधवा बहु ही बची थी। जो उस समय कैलाश की हवेली में नहीं थी, वह अपने मायके चली गई थी। वह उसी पुत्र की पत्नी थी, जिसकी हत्या कैलाश के साथ कि गई थी। वह बहुत दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति की नेक महिला थी, और बहुत अधिक धनी थी। वह प्रायः अपने मायके में ही रहती थी। इस तरह से मानस के पुत्र उन सब को तलाशने लगे, और जो उनके हाथ में नहीं आये थे। कुछ समय के बाद पता चला कि कैलाश के बचे पुत्रों अपना नया निवास कुसेहरा के जंगल में बसाया है, जो विंध्य पर्वत पर है।

कैलाश के परिवार को, यह मानस के सभी लोग मिल कर एक-एक कर के बारी-बारी कर सभी पुत्रों और पौत्रों को धोखे से चाल चल कर अँग्रेज़ों कि सहायता से एक-एक कर के इस तरह से मारने लगे बारी-बारी करके, जिससे किसी को शक भी ना हो, और सब मारे भी जाये। अर्थात खाने में जहर दे दिया,

या फिर दुर्घटना करा दिया। सरकारी अँग्रेज़ी हुकूमत ने उन पर तरह-तरह के आरोप को लगा दिया था। क्योंकि अँग्रेज़ों को एक बहुत बड़ा भूभाग पर अपना नया रेल्वे स्टेशन बनाना था। जिसका कैलाश का परिवार विरोध कर रहा था। क्योंकि वह जमीन बाजार से सटी हुई कीमती थी। जो कैलाश के परिवार के नाम थी। इस तरह से अँग्रेज़ों ने मानस की मृत्यु के बाद उनके तीनों बेटों को राघव, साधव, श्रवण को अपने हाथ का मोहरा बना कर कैलाश के सारे वंश का ही सफ़ाया कर दिया। सिवाय कैलाश की अंतिम बहु को छोड़ कर, उसके लिये कुछ सौ एकड़ जमीन को छोड़ कर और उसकी सारी जमीन को मानस के परिवार को दे दिया गया।

जिस जमीन पर बाद में मानव के पुत्रों का कब्जा बन गया। जब मानव के तीसरे पुत्र ओंकारनाथ और उसके पुत्र रामनाथ कि शादी कैलाश की आखिरी बहु के भाई अयोध्या की पुत्री राजलक्ष्मी के साथ हो गया। क्योंकि यह जमीन की देखभाल करते थे। राघव ने अपनी एक नौटंकी की कंपनी खोल रखी थी। जो हमेशा यात्रा पर ही रहता था। जब वह आता जो इधर गुंडे किस्म के लोग उभरते उसका सफ़ाया कर देता था। अंग्रेज सभी का उपयोग अपने मतलब से करते थे। राघव जो अँग्रेज़ों के कहने पर नदी किनारे रेत कि खान को भी देखता था। राधव के ना रहने पर रेत कि खान को साधव और श्रवण दोनों भाई देखते थे। यह दोनों की चरित्र हीनता के कारण से साधारण जनता ने इनके खिलाफ विद्रोह कर दिया। इस तरह से इन की दुश्मनी ऐसे लोगों से हो गई। जो इनके आतंक और अत्याचार से अत्यधिक दुःखी और परेशान थे। जिसके लिये उन्होंने एक गुट बना लिया। जिसका नाम लंपट गुट था, जिससे इन दोनों गुटों की लड़ाईयाँ अकसर होती रहती थी। दूसरी तरफ मानव का बड़ा लड़का मनुनाथ भी इनके समान ही था। वह लड़ाईयाँ नहीं करता। लेकिन जुआरी और विलासिता के लिये बहुत समाज में प्रसिद्ध हो चुका थ। दूसरों की औरतों को देखना उसकी बुरी आदत थी। जिसके खिलाफ उस क्षेत्र के यादव लोगों ने विद्रोह कर दिया। जिसके लिये बराबर लड़ाई इन गुटों में होती होने लगी, कभी इस गुट के एक दो आदमी मारे जाते, कभी दूसरे गुट एक दो आदमी मार दिये जाते आदमीयों का मरना बहुत आसान कार्य था इनको अपनी प्रतिष्ठा किसी की जान से अधिक प्रिय थी। इन गुटों के पास अपनी बंदूक और दूसरे हथियार भी थे। जिसका यह सब गलत उपयोग करते थे। जिसकी वजह से आगे चल कर अँग्रेज़ों ने इन गुटों में समझौता कराने के लिये जमीन का और बटवारा कराया। जिसके जिम्मे जितनी जमीन थी। वह जमीन उन सब को दे दिया गया। इस तरह से जमीन कम होने लगी, और सारे भाई एक साथ में रह नहीं पाये। उन्होंने अलग होने का फैसला किया और सब ने अपने-अपने लिये अलग-अलग घर बनवाना शुरु कर दिया। क्योंकि सब का परिवार बढ़ रहा था। सबके कई-कई पुत्र और पुत्री थी।

इस तरह से मानस के वंश में इस समय उसकी पहली पत्नी से दो पुत्र में मानव और दानव, जिसमें से मानव के चार पुत्र और दानव के पहली पत्नी से एक पुत्र और दूसरी पत्नी से तीन पुत्र कुल मिला कर चार

पुत्र दानव के भी थे, और स्वयं मानस के दुसरी पत्नी के चार पुत्र यह सब मिला कर कुल मानस के वंश में छः पुत्र और आठ पौत्र हो गये थे। जो लग भग हम उम्र ही के ही थे उन सभी में बहुत अधिक अंतर नहीं था बस साल दो साल या चार साल या साल था। उन सब ने अपनी सारी संपत्ती का बटवारा कर लिया, जिसमें जमीन के अतिरिक्त हाथी घोड़े सोने चांदी भी उसके साथ नौकर चाकर भी बट गये।

इस पर भी अंग्रेज शांत नहीं हुए, उन को और जमीन की जरूरत पड़ गई, एक दूसरे नये रेल्वेस्टेशन के अतिरिक्त दूसरा बड़ा यार्ड बनाने के लिये। जो पचास एकड़ का जमीन का टुकड़ा शहर के पास का था। जो जमीन मानस के दूसरी पत्नी के पुत्रों कि जमीन थी। जिस जमीन से काफी आमदनी होती थी। क्योंकि वह आम अमरूद का बगीचा था जिस को नष्ट करके अंग्रेज वहाँ रेल्वे का यार्ड बनाने का प्रयास कर रहे थे। जब इसकी बात एक अंग्रेज अधिकारी ने राघव मानस के बड़े बेटे से की, तो वह भड़क गया, और उस अंग्रेज अधिकारी को अपनी दालान से मार कर भगा दिया। यह कहते हुए कि अब यहाँ कभी मत दिखाई देना, नहीं तो मैं तुम्हें जान से मार दुंगा। इस बात का पता जब और बड़े अंग्रेज अधिकारियों को चला तो उन सब ने एक नई कुरूप योजना बनाई।

राघव जो इस समय सबसे अधिक तपा था। उसको मारने की, जिसके लिये अँग्रेज़ों ने लंपट गुट को अपने साथ ले लिया, और उन को रेत कि खान देने का वादा किया। जिससे बहुत बड़ी आमदनी राघव बंधु को होती थी। जिस को छिन कर अंग्रेज मानस के पुत्र और पौत्र अर्थात मानव दानव के पुत्रों की कमर को तोड़ना चाहते थे।

राघव को जब यह पता चला कि उसको मारने के लिये अंग्रेज उसके शत्रुओं के साथ मिल कर उसके मारने के लिये जाल बिछा रहे हैं। तो उसने भी अपने को मजबूत करने के लिये, जनता को अपने साथ करने के लिये। एक योजना बनाई, जैसा कि हम सब जानते है मानस खानदान और कैलाश खानदान कई पुस्त से दुश्मनी चल रही थी। जिसका अंत लगभग हो चुका था। आज के तारीख में केवल मानस कि अंतिम विधवा बहु के कोई नहीं जिंदा नहीं बचा है। राघव एक योद्धा के साथ काफी बुद्धिमान और कलाकार प्रकृति का आदमी था। जो जनता के भावों को समझता है। उसने मानस की बहु को अपने साथ मिलाना चाहता था, जिसके लिए उसने एक योजना बनाई।

क्योंकि मानस के पुत्रों के पक्ष में बहुत सी साधारण जनता नहीं थी। वह कैलाश के वफादार लोग थे, जो अपने नेता के तौर पर कैलाश की बहु को ही आज भी देखते थे। राघव यह विचार करने लगा, कि किसी तरह से यदि हम अपने लोकल लोगों को अपने साथ कर लेंगे? तो हम अँग्रेज़ों का सामना कर सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, कि कैलाश का आखिरी विधवा बहु जो अपने मायके में रहती थी।

जिसके पिता बहुत बड़े वाराणसी के जमींदार और धनी आदमी थे। वहाँ पर एक बार जा कर राघव ने कैलाश की आखिरी बहु से मिलने का निर्णय किया। जाने से पहले उसने अपने आने का संदेश पहले भेज दिया। कैलाश की बहु भी यह लड़ाई झगड़ा नहीं चाहती थी, और वह किसी तरह से इस लड़ाई को खात्मा, अपने जीवित रहते ही करना चाहती थी। इसलिए वह राघव का संदेश स्वीकार कर लेती है और उससे मिलती है। कैलाश कि बहु उस समय तक वृद्ध हो चुकी थी उसकी उम्र 90 साल के करीब थी। जबकि राघव 60 साल का हो चुका था। यह राजनीतिक मुलाकात थी। दोनों कि मुलाकात एक हवेली में बहुत सारे वफादार आदमी मध्य निश्चित किया गया। जहाँ पर राघव पहुंच कर, अपनी मनसा को कैलाश की बहु के सामने रखा, और उसने कहा कि यह अंग्रेज हमारी दुश्मनी का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं। हम ऐसे ही लड़ते रहे तो हमारे और आपके आदमी में कोई भी जिंदा नहीं बचेगा। इस तरह से हम सब को ही मार दिया जायेगा। जैसा कि कहा गया है कि बाहरी शत्रु से लड़ने के लिये अपने आंतरिक शत्रुता से मिल जाना चाहिए। इस समय हमारे साथ अंग्रेज धोखे पर उतर आयें हैं। जो हमारे पिताजी (मानस) के साथ मित्रता की थी, और बहुत सारे वादा किया था। उसको वह सब भूल चुके हैं। उनका केवल एक मतलब है, हम सब का नर संहार। कैलाश कि बहु ने कहा हम युद्ध के पछ में कभी नहीं थे। यह तो हमारे बड़े भाईयों के सर पर खून सवार हो चुका था। जिसका बदला लेने के लिये उन्होंने अपना सब कुछ गंवा दिया। यदि तुम्हें हमारी बची हुई जमीन चाहिए, तो तुम उसको भी ले सकते हो। उसके लिये तुम्हें हमारे परिवार के एक सदस्य को अपने परिवार में शामिल करना होगा। इस तरह से हमारी दुश्मनी मित्रता में बदल सकती है। मैंने सुना है कि तुम्हारे भाई मानव के चार पुत्रों में ओंकारनाथ का दूसरा पुत्र शादी के योग्य हो चुका है। उससे मैं अपने भाई कि पुत्री की शादी करा देंगे। जिससे हमारी शत्रुता के स्थान पर मित्रता के बीजा रोपण होगा। जिसके लिये राघव तैयार हो गया। क्योंकि वह किसी भी कीमत पर कैलाश के आदमियों को अपने पक्ष में करना चाहता था। इस तरह से फैसला हो गया, और इस खुश खबर के साथ राघव अपने घर पर आ गये, और यह बात मानव के पुत्रों को बताया। साथ में नगर में भी फैला दी गयी, कि अब मानस और कैलाश खानदान अपनी शत्रुता को भूल कर आपस में मित्रता कर रहे हैं। और मानस खानदान के लड़के कि शादी कैलाश खानदान के लड़की से तय हो चुकी है। पूरे नगर में इसका ढिंढोरा पीट दिया गया।

इसके साथ विवाह कि तारीक तय कर दिया गया, और विवाह कि चारों तरफ तैयारी होने लगी। दूर-दूर तक सभी को निमंत्रण विवाह में शामिल होने के लिये भेजा गया। निश्चित तारीख पर ओंकारनाथ के दूसरे बेटे रामनाथ और अयोद्धया प्रसाद जो कैलाश की विधवा बहु के छोटे भाई थे, उनकी पुत्री राजलक्ष्मी का विवाह वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य संपन्न हुआ। बारात में सैकड़ों हाथी घोड़ा हज़ारों बराती सब अयोध्या प्रसाद के घर पर दो तीन दिन तक रहे, और उनके स्वागत खाने पीने की रहने की किसी प्रकार कि कमी नहीं कि गई थी। जब वहाँ से बारात वापिस चली, तो कई पड़ावों के बाद अपने गांव पहुंची। जहाँ पर भी पूरे गांव और नगर के नर नारी सभी लोगों ने उन सब का भव्य स्वागत किया,

और नये विवाह के बंधन में बंधे दांपत्य जोड़ी को आशीर्वाद के साथ, बहुत सारा भेंट, सभी लोगों के द्वारा दिया गया। जिसके साथ पूरे नगर और गांव में जैसे दीवाली का माहौल हो गया। हर तरफ घी के दिये जलाए गये, और कामना कि गई, यह कैलाश और मानस खानदान की प्रसन्नता हमेशा ऐसी ही बनी रहे। लेकिन यह बात अँग्रेज़ों को अच्छी नहीं लगी।

एक दिन रात्रि में राधव को पकड़ने के लिये भारी मात्रा में अँग्रेज़ी सिपाही गांव ब्रह्म पुरा में आ टपके और फायर करना शुरु कर दिया, जब गांव वालों ने विरोध किया। तो उन पर गोलीयाँ बरसाई जाने लगी। उस समय अँग्रेज़ों का एक आफीसर और उसके साथ पुरी एक सैनिक टुकड़ी भी जो सब हथियार बंद थे। जिसमें कुछ एक को छोड़ कर सभी भारतीय सैनिक ही थे। जब गांव वालों ने देखा कि अंग्रेज सैनिक गोलियों कि वारिस कर रहें हैं। तो सभी गांव के आदमी बाहर आ गये जिसमे हज़ारों कि संख्या में युवा और तलवार बाज थे। उन्होंने अंग्रेज सिपाहियों पर हमला बोल दिया, कुछ ऐसे भी गांव बड़े किसान थे। जो राधव के लिये अपनी जान कि बाजी लगाने में भी पीछे नहीं हट रहे थे। गांव के बड़े किसानों ने अपने सरदार कि रक्षा करने के लिये अपनी-अपनी बंदूकें निकाल लिया, और अंधा धुन फायरिगं दोनों तरफ से होने लगी। कितनी क्रास फयरिंग हुई, जिससे दोनों तरफ लास पर लासें गिरने लगी। गांव के लोग भारी पड़ने लगे। कुछ ही घंटे में राघव और उसके भाईयों ने किसानों मजदूर और गांव वालों कि मदद से अंग्रेज सिपाहियों को अपने कब्जे में कर लिया, जो सब बचे थे। इसके बाद सब का सर कलम करके गंगा की धारा में बहा दिया। उस समय गंगा की धारा ऐसे दिख रही थी, जैसे गंगा के पानी में खून घोल दिया गया हो। जो रात्रि के चन्द्रमा के प्रकाश में ऐसे चमक रहा था, जैसे नदी ही खून कि बह रही हो। पूरे क्षेत्र में हाँ हा कार कोहराम जैसा मच गया। सब अपने-अपने घरों से बाहर आ गये। रात्रि के समय दुसरी सेना भी नहीं आ सकी ना ही उनके पास इसकी सूचना ही जिला मुख्यालय पहुंच पाई, कि अंग्रेज के सभी सैनिक और अधिकारी मारे गये।

जब यह सूचना अँग्रेज़ों के कानों में पहुंची तो उन्होंने सुबह ही ब्रह्म पुरा में हज़ारों कि सेना में पुलिस फोर्स को जिला मुख्यालय मिर्जापुर से भेज दिया। और पूरे क्षेत्र को एक छावनी में बदल दिया गया और ब्रह्म पुरा नगर के हर गांव के हर घर की तलाशी कि जाने लगी। जहाँ पर केवल बच्चे वृद्ध औरतें ही मिली वहाँ पर कोई भी युवा या जिसकी तलाश अंग्रेज सेना और पुलिस को थी, उसमें कोई नहीं मिला। क्योंकि राघव जानता था। कि यह अंग्रेज सुबह ही आ जायेंगे, और उससे पहले ही वह अपने मुख्य आदमीयों के साथ ब्रह्म पुरा कि सीमा को छोड़ कर विंध्य पर्वत की पहाड़ियों और गुफाओं में अपनी मंडली के साथ जा कर रहने लगा। इधर अंग्रेज सैनिक और अधिकारी निर्दोष जनता और राघव के दूसरे आदमियों और दुर के रिश्तेदारों पर अपने आतंक का कहर बढ़ाने लगे। कितने निर्दोष लोगों के साथ महिला बच्चों और वृद्ध को जान से मार दिया गया, और कितने सारे लोगों को घरों में जिंदा जला दिया गया।

अध्याय 5.

जब राघव को यह सब ज्ञात हुआ, तो उसने अपनी एक डकैतों कि सेना खड़ी कर ली। रात को ब्रह्म पुरा में आता और सुबह से पहले ही सब विंध्य की पहाड़ीयों में खो जाता था। जहाँ पर अँग्रेज़ों कि दाल नहीं गलती थी। और रात्रि के समय सभी अँग्रेज़ों और अंग्रेज अधिकारी जो भी मिल जाते थे। वह सब मारे जाते राघव और उसके आदमियों के द्वारा। ब्रह्म पुरा के नगर वासियों के लिये राघव कि गैंग भगवान के समान थी, भले ही वह मर जाये। लेकिन साधारण ब्रह्म पुरा का एक भी नागरिक राघव के खिलाफ एक भी शब्द बोलने के लिये तैयार नहीं थे। जिन्होंनें एक साथ मिल कर अँग्रेज़ों के नाकों में लोहे का चना चबवा दिया। मिर्जापुर नगर के सभी बड़े व्यापारी राघव के सेना के लिये हर प्रकार के धन साधन को पहुंचाते थे। उनके पास राघव का पत्र पहुंचता और उन्हें सभी व्यापारी सामान भेज देते थे। जो नहीं भेजता था और अँग्रेज़ों के साथ देते थे। उनके राधव गैंग के लोग चून- चून कर मौत के घाट उतार दिया करते थे। इस तरह से राघव पूरे मिर्जापुर में एक ऐसा नाम हो गया। जिसके नाम से ही लोगों की पैंट गिली हो जाती थी। जितनी भी अँग्रेज़ी सेना रात्रि के समय ब्रह्म पुरा नगर में प्रवेश किया। उन सब को उसी छानबे छनवर में खदेड़ सभी ग्रामवासियों और साथ नगर वासी एक साथ कीचड़ में फंसा कर उन सब का काम तमाम कर देते। वहाँ का राजा राधव ही बना रहा, और उसकी सेना अँग्रेज़ों के ही अस्त्रों को छिन कर उनके उपर ही हमला किया जात था। अंग्रेज भी उससे हार मानने वाले नहीं थे। फिर भी सभी अंग्रेज सतर्कता बरतने लगे और रात्रि के समय ब्रह्म पुरा के गाँवों और नगर में प्रवेश करने से बचने लगे। क्योंकि अंग्रेज दस लोगों को मारते तो राघव कि सेना 20 अंग्रेज सिपाही और अफसर को मारती थी। अंग्रेज डाल-डाल चलते जो राघव पात-पात चलता था, और कई सालों तक अँग्रेज़ों को चकमा दे कर, वह उन को और उनके आदमियों को मारते रहा।

राघव कि सेना के लिये हथियार गोला बारूद और खाद्य सामग्री आदि को जब जरूरत पड़ती। वह सब प्रयागराज से कलकत्ता कि तरफ जाने वाली ट्रेन को छनवर के एकांत में रोक लेते थे। रात्रि के समय में जिससे वह अपने जरूरत कि सभी वस्तु को लूट लेते थे। इसके अतिरिक्त अंग्रेज यात्री से उनका धन भी छिन लेत थे। ऐसा भी होता था। कभी कलकत्ता से दिल्ली के लिये ट्रेन भी लूट ली जाती थी। ट्रेन के चालक उस मिर्जापुर के इलाक़े से इतने भयभीत हो चुके थे, कि राधव की गैंग का आदमी भी आकर यह लूट पाट को अंजाम देता था। क्योंकि अँग्रेज़ों को अपना सभी सामान दिल्ली से कलकत्ता और कलकत्ता से दिल्ली में पहुंचाने के लिए, यही एक रेलगाणियों का मुख्य रूट था जैसा कि वह आज भी है। जहां पर

यह सब लूट को अंजाम देते थे वह इलाका चारों तरफ जंगल और पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जिसके कारण अँग्रेज़ों के लिये, इस गैंग को अपने बस में करना एक समय मुश्किल कार्य बन चुका था, उन्होंने प्रयास तो बहुत किया लेकिन उन को हर बार यहां छानबे क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति एक बहुत बड़ा सर दर्द बन चुकी था, जिसके कारण उन्होंने इस पूरे क्षेत्र को ही नक्सल प्रभावित घोषित कर दिया। और राघव गैंग से वह सब भिड़ने से बचने लगे थे। इसके बजाय वह दूसरे प्रकार का तरीका आजमाने लगे, साथ में लाखों रुपये का इनाम भी घोषित कर दिया था। इस सभी कार्य को अकसर राघव का भाई साधव अंजाम देता था। जो काफी तेज और दबंग किस्म का व्यक्ति के साथ अपनी सेना का नेतृत्व बहुत अच्छी तरह के करता था, जिसकी आवाज में ही एक अजीब किस्म का आकर्षण और तेज था, और सारी खुफिया जानकारी अँग्रेज़ों कि राघव का तीसरा भाई श्रवण एकत्रित करके राघव तक पहुंचाता था। इस तरह से राघव के दोनों भाई उसके दो हाथ के समान हो चुके थे।

इन सब भाईयों ने अपनी योग्यता पर उस समय इतना अधिक धन संपत्ती लूट कर जमा कर लिया था। जिस को रखने के लिये, और अपने पूरे आदमी और परिवार के साथ रहने के लिये। जमीन के अन्दर-अन्दर ही एक विशाल किला बनवाने का कार्य शुरु कर दिया, जमीन अंदर पहाड़ काट कर एक कीला का निर्वाण जिस को कुछ एक साल में ही बड़ी सफाई से पुरा भी कर लिया, तब राघव गैंग अँग्रेज़ों से हमेशा सुरक्षित रहने अपना सराय बना लिया।

जिस कीले के अंदर की सभी प्रकार की आंतरिक सारी व्यवस्था को मानव के पुत्र के साथ दानव देखता था। और उसमें अपने सभी अदमियों के साथ राधव राजा कि तरह वहाँ पर रहने लगा। वह किला जमीन के अन्दर इतना बड़ा था कि उसमें लाखों लोग आराम से कई सालों तक रह सकते थे। वहाँ किसी अंग्रेज आदमी और उसको गुप्तचर का पहुँचना मुश्किल ही नहीं असंभव था। अँग्रेज़ों के अधिकारियों के नाक के नीचे इतना बड़ा विशाल कार्य हो गया। जिसकी उन को कानों कान खबर नहीं हुई। उस कीले में पहुंचने का रास्ता सुरंग के रास्ते से पहाड़ियों से हो कर जाता था, कई रास्ते थे। एक रास्ता नदी किनारे भी निकालता। जिस रास्ते से कभी-कभी राघव गंगा दर्शन के लिये भी आता। जहाँ पर रेत की खान थी। एक दिन किसी मुखबिर ने जो लंपट गुट का था जिनका दबदबा नदी के पार उसी प्रकार से था जिस प्रकार से नदी के इस पार विंध्य क्षेत्र में राधव और उसके भाईयों का था। एक अंग्रेज अधिकारी को यह सूचना दी की राघव हर माह की अमावस्या के दिन रात्रि के तीसरे पहर में गंगा स्नान के लिये आता है।

अंग्रेज अधिकारियों ने गुप्त रूप से अपने सशस्त्र सैनिकों को रेत की खानों में छुपा दिया। साथ में लंपट गुट के कई खतरनाक गुर्गों को भी शामिल किया गया था। और जब राघव अपने कुछ विशेष आदमियों के साथ सुरंग के रास्ते से गंगा किनारे नहाने के लिये आया, अंग्रेज सैनिकों ने उसको पकड़ने के लिये

उसको चारों तरफ से घेर लिया, और ताबड़तोड़ फायरिगं शुरु कर दिया। जिससे पहले तो राघव और उसके आदमी सकते में आ गये। इसके साथ ही सब ने अपना मोर्चा संभाल लिया, और दोनों तरफ से नदी किनारे रेत कि खदान में बंदूकें गरजने लगी। जिसमें से एक राघव का अंग रक्षक वापिस राघव को कीले के दरवाजे के पास ले गया, और भाग जाने के लिये कहा। लेकिन राघव ने कहा कि हमने कभी पीठ देखा कर भागना नहीं सीखा है। काफी समय तक यह संघर्ष चलता रहा अंत में राघव और उसके आदमियों कि गोलीयां खत्म हो गई। और उसके आदमी भी अँग्रेज़ों के गोलीयों के शिकार हुए, जिसके बाद राघव ने आत्म समर्पण करना ही उचित समझा और अपनी सफेद पगड़ी को अपने सर से खोल कर अपनी बंदूक कि नाल पर रख कर हवा में लहराने लगा। उस समय सूर्य अपनी लालिमा के साथ आकाश में प्रकट हो रहा था। राघव को जब अंग्रेज आफिसर ने देख कर, अपने सेना को गोलीबारी रोकने का हुक्म देता है। और कहता है गिरफ्तार कर लो, हमें यह आदमी जिंदा चाहिए। अंग्रेज सिपाही राघव को पकड़ कर उसके हाथों में हथकड़ी डाल देते हैं। लेकिन किसी भी अंग्रेज सैनिक कि या अंग्रेज अधिकारी की राघव पर हाथ उठाने या मारने कि हिम्मत नहीं हुई। राघव को पकड़ कर अंग्रेज सिपाही गंगा नदी के द्वारा ही नाव से ही मिर्जापुर के चुनार के कीले में ले गये, और वहाँ पर उसको कैद कर दिया। इसके बाद उसे यातना दे कर उससे पूछ ताछ करने का प्रयास करने लगे, लेकिन उससे कुछ काम कि जानकारी नहीं देने पर, बाद में राघव को राजनीतिक कैदी बनाया गया, और उनके उपर लोगों को और साधारण जनता को भड़का कर आंदोलन का रूप दिया, जिसमें हज़ारों लोगों कि जान गई। इसका आरोप लगाया गया।

इधर जब ब्रह्म पुरा नगर और यहाँ के नागरिकों पता चला, कि राघव को अँग्रेज़ों ने पकड़ लिया है। तो राघव के कीले का शासक उसका छोटा भाई साधव बन गया, और उसने हर एक प्रयास किया की राघव को अँग्रेज़ों के कैद से मुक्त कराया जाये। उसके लिये उसने एक बार चुनार के कीले पर भी हमला किया, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। क्योंकि यह बात अंग्रेज अफसर जानते थे। कि यह आदमी बहुत खतरनाक है, इसको यहाँ रखने का मतलब बहुत बड़ा विद्रोह होगा। इसलिए रात्रि के समय ही राघव और उसके कुछ और आदमियों को ट्रेन से अपनी राजधानी कलकत्ता भेज दिया। कड़ी सुरक्षा के बीच, और वहाँ पर भी नहीं रखा, वहाँ से भी एक पानी की जहाज से काले पानी की जेल में भेज दिया गया। जहाँ पर राघव और उसके आदमियों के साथ बहुत जुल्म और अमानवीय व्यवहार किया जाता तरह-तरह की यातना दी जाती थी।

साधव ने जब ब्रह्म पुरा के कीले पर अपना कब्जा किया, तो वह पुरी तरह से जमीन के अन्दर ही रहता था। उसने एक जोरदार हमला करके लंपट गुट का सारा नामों नीसान मिटा दिया, और बहुत लूट पाट करने के बाद उनके गांव को पुरी तरह से आग के हवाले कर दिया गया। क्योंकि उसको यह ज्ञात हो चुका था। कि राघव के बारे में गुप्त सूचना देने वाला यह लंपट गुट ही था। उसने उस रास्ते को जो नदी कि तरफ

खुलता था। उसको हमेशा के लिये बन्द करा दिया, जो नदी के किनारे के लिये जाता था। वह केवल उन रास्तों का ही प्रयोग करता था जो पहाड़ीयों और जगंलों में निकलती थी। धन कि कोई कमी नहीं थी। क्योंकि काफी धन संपदा राघव ने एकत्रित कर रखी थी। जो उसके भाईयों और भान्जों के लिये बहुत थी। उसके अतिरिक्त जमीन जो मानस और कैलाश की थी उसमें भी बहुत कुछ हर साल पैदा होता था। जो गुप्त रूप से किला में पहुंच जाता था। क्योंकि अब भी लोग वफादार थे। क्योंकि जमीन का सारा व्यापार और कारोबार मानव के दो बेटे ही देखते थे। केदारनाथ और ओंकारनाथ इनका व्यवहार साधारण जनता के साथ बहुत अच्छा और मजबूत था। ऐसे ही समय गुजरने लगा।

एक दिन अंग्रेज अधिकारियों को वह गुप्त मार्ग एक जंगली गड़ेरिये ने दीखा दिया, वास्तव में कोई जंगली गड़ेरिया नहीं था, वह एक अँग्रेज़ों का खुफिया अधिकारी था, जो राघव की गैंग और उसकी खोज कर रहा था, क्योंकि राघव के ना रहने पर भी, इन सब ने मिल कर लंपट गुट को सफ़ाया किया था। यह अँग्रेज़ों के लिए बहुत बड़ी बात थी, क्योंकि यह लंपट गुट अँग्रेज़ों के लिए बहुत काम का था। जो यह गड़ेरिया के रूप में था वह अंग्रेज अकसर पहाड़ी जंगल में अपनी भेड़ को चराने के लिए जाया करता था। जहां पर उसको एक दिन कुछ लोग मिल गये, जिनका वह पीछा करता हुआ, उनके साथ काफी दूर तक जंगल में छीप –छीप कर गया। लेकिन कुछ समय के बाद जिसका पीछा वह गड़ेरिया कर रहा था, वह सब अचानक गायब हो चुके थे, जिससे उसको शक हो गया, कि यहां से कोई रास्ता जमीन के अंदर जाता है। जहां पर उसने कई दिनों तक तलाश किया, अंत में वह स्थान मिल गया, जहां से एक रास्ता मिला जो ब्रह्म पुरा कीले के अन्दर जाता था। जहाँ पर एक दिन रात्रि में अचानक अंग्रेज अधिकारी अपनी हज़ारों की सेना को लेकर पहुंच गये, और साधव के साथ उसके भाई श्रवण को भी गिरफ्तार कर लिया। और उन को मिर्जापुर के कारागार में डाल दिया। ब्रह्म पुरा का किला अब मानव के पुत्रों के अंदर में आ गया। इनका स्वभाव ठीक था, इस लिये अँग्रेज़ों ने उन को भी कुछ समय के लिये जेल में डाला मगर कोई गवाह उनके खिलाफ ना मिलने के कारण मानव के लड़के मुनीनाथ, केदारनाथ, ओंकारनाथ को छोड़ना पड़ा। जबकि दानव के पुत्र इसमें नहीं रहते थे। वह अलग ही रहे अपने गांव की हवेली में जिससे उन को किसी प्रकार की ज्यादा दिक्कत का समान नहीं करना पड़ा। उस समय दानव बहुत बीमार चल रहा था। जिसकी थोड़े समय के बाद मृत्यु हो गई।

ओंकारनाथ के पुत्र रामनाथ और उनकी पत्नी राजलक्ष्मी को विवाह के दस साल पूरे कर लिये थे, और उनके दो पुत्र और एक पुत्री भी हो चुके थे। रामनाथ काफी पढ़ा लिखा और समझदार था इसलिए वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सहर में रहने लगा। जहाँ पर अपने पुत्रों और पुत्री को शिक्षा ग्रहण करने के लिये एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश कर दिया और स्वयं वह एक चिकित्सक का कार्य करता था, जिससे उसको अच्छा पैसा मिल जाता था। जिससे उसकी जीवन की गाड़ी अच्छी तरह चल रही थी।

इसके साथ रामनाथ गुप्त भेड़िया के समान धूर्त था, जिसके कारण वह राजलक्ष्मी और अपने बच्चे काफी नफरत करता था क्योंकि वह एक रूढ़ि वादी विचारधारा वाला व्यक्ति था। जो यह अब भी मानता है कि यह राजलक्ष्मी और इसके बच्चे उसके शत्रु खानदान कैलाश से संबंध रखते हैं। यद्यपि उसने कभी खुल कर ऐसा नहीं कहा, लेकिन यह बात काफी समय के बाद सामने आती है। जब वह शहर से एक लौट कर अपने गांव में आकर रहने लगा।

इस तरह से धीरे-धीरे यह मानस खानदान का पुरा परिवार बिखरना शुरु कर दिया और लोग ब्रह्म पुरा नगर को छोड़ कर शहर कि तरफ रुख करने लगे। एक समय ऐसा आ गया कि लोग धीरे-धीरे किला को छोड़ कर अँग्रेज़ों के आतंक से बचने के लिये। वहाँ से दूर वाराणसी और प्रयागराज में बसने लगे। क्योंकि अंग्रेज हर किसी को राघव का ही साथी समझते थे। जो भी ब्रह्म पुरा के कीले में रहता था और उन को तरह-तरह की यातना दे कर उस किला को छोड़ने के लिये विवश करते थे। जिससे उस कीले पर उनका कब्जा हो सके।

एक समय ऐसा भी आता है जब अंग्रेज उस किला पर अपना अधिकार कर लिया, और अपने सैनिकों के साथ कुछ अंग्रेज अधिकारी उसमें रहने लगे। जो उनका साथ देता था, वह उसमें रहता और जो उनके खिलाफ जाता, उसको और उसको परिवार को दंड का सामना करना पड़ता था। अंत में वह परिवार या तो मारा जाता या फिर किला से बाहर अपना ठिकाना बना लेते थे। इस में मानव और दानव के लड़के भी थे। जो वहाँ से बाहर रहने के लिये आ गये और अपने एक-एक पुत्रों को अँग्रेज़ी सेना में भरती कर दिया। जिसके कारण अँग्रेज़ों का रुख इनके प्रती थोड़ा नरम हो गया। अब अंग्रेज फिर अपने मन का अत्याचार और कर वसुली करने लगे थे। इनका विरोध करने वाला कोई नहीं था। लोगों को अपनी रोजी रोटी भी कमाने में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था। कुछ एक बड़े जमींदार को छोड़ कर जैसे दानव और मानव के पुत्रों के और सभी किसान कर्ज में डुबने लगे। क्योंकि अंग्रेज जितना पैदा खेत में होता था, उससे अधिक कर में ही लेते थे। जिसमें बहुत से किसानों को अपनी जमीन भी बेचनी पड़ रही थी। और कितने किसानों को आत्महत्या करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

ऐसे ही लोगों में मुनीनाथ जब अपने परिवार से अलग हो कर, अपने एक पुत्र के साथ अलग रहने लगा, तो उसका खर्च खेती की आमदनी से नहीं चलता था। जिसके लिये अपनी बहुत सारी जमीन उन अंग्रेज सैनिकों को बेचना पड़ा, जो अँग्रेज़ों के द्वारा जमींदारो के झगड़ों को सुलझाने के लिये ब्राह्म पुरा में बसाये गये थे। राजपूत और गहरवार आदी।

इस तरह से मानस के परिवार के द्वार कैलाश के खानदान का अंत और बाद में समझौता किया जाना, और कुछ समय के लिये एक तरफा अधिकार मानस के परिवार का होना। जिसके बाद उस जमीन में राजपुत और गहरवारों ने भी अपना हिस्सा बना लिया। धीरे-धीरे इस तरह से उस क्षेत्र में गहरवार और राजपूत हावी होने लगे, और पुराने मानस और कैलाश के परिवार का पतन शुरु हो गया।

इसके साथ ही अँग्रेज़ों कि भी भारत देश पर उनकी पकड़ कमजोर पड़ने लगी। जिससे उन्होने भारत को दो भागों में बाट दिया भारत और पाकिस्तान फिर भी समस्या का समाधान नहीं हुआ। तो उन्होने भारत को छद्म भेष में रहकर अपने अधिकार का प्रारंभ किया जिसमें सभी जन्म से भारतीय रंग से भारतीय थे। मगर संस्कृत सभ्यता से वह सब काले अंग्रेज और उनकी दोगला नस्ल ने अधिकार करना शुरु कर दिया। जब संसार में मशीन क्रान्ति का युग शुरु हो रहा था। बैल के स्थान पर ट्रैक्टर ने लिया। हाथी घोड़ों के स्थान पर कार और मोटर साइकिल ने ले लिया। जो इस दौड़ में आगे बढ़ गया, वह आगे ही बढ़ता गया और जो अपने पुराने रीति रिवाज के साथ ही जुड़े रहे वह पिछड़ इस अंधी दौड़ में। जैसा कि मानव का एक लड़का जो अभियंता बन चुका था उसके लड़के अमरीका इंगलैड और दूसरे बाहर देशों में जा कर वहाँ के नागरिक बन गये।

राघव एक दिन काले पानी कि जेल से रात्रि के समय वहाँ की गुप्त सुरंग के रास्ते से भाग निकला और समुद्र में छलांग लगा दिया, और तैर कर ही समुद्र को पार करने का प्रयास करने लगा। क्योंकि वह गंगा नदी के किनारे का रहने वाला था। अच्छी तरह से तैरना जानता है। काफी तैरने के बाद उसको समंदर में एक बड़ी ह्वेल मछली मरी हुई तैरती मिलती है, पहले तो वह उसे समुद्र में कोई छोटा द्वीप समझता है। लेकिन वह पास आया। तो देखा कि वह एक मछली की लास थी। जो तैर रही थी, वह उस लास के उपर चढ़ गया, राघव ने उसको एक नाव कि तरह से उपयोग किया, और उसी के सहारे समुद्र को पार करने का प्रयास करता रहा। जब भूख लगती तो मछली को खाता, और जब प्यास लगती तो धूप से समुद्र के पानी को भाप बना कर करता, मछली के खाल का पात्र बना कर, उनकी सहायता से, इस तरह से रात दिन समुद्र से संघर्ष करता हुआ, और इसी तरह से कई एक साल तक वह यात्रा कर के, वह पांच एक साल में भारत के दक्षिण समुद्र किनारे पहुंच गया। और वहाँ से चलकर कई एक महीने में भिक्षु बन कर अपने नगर ब्रह्म पुरा पहुंचा जहाँ पर उसने सब कुछ बदला हुआ पाया। उस समय उसकी उम्र 80 साल हो चुकी थी जब उसे पता चला, कि उसके भाई जेल में बन्द हैं। तो उसने स्वयं सन्यास ले कर उसी कीले के दरवाजे पर एक छोटी झोंपड़ी बना कर रहने लगा। यद्यपि अब उस कीले का केवल दरवाजा ही बचा है क्योंकि अंग्रेज को जब यह ज्ञात हो गया कि उन को भारत छोड़ना है। तो वह नहीं चाहते थे कि यह किला दुबारा किसी क्रान्ति कारी गिरोह के कब्जे में आये। क्योंकि वह बहुत गुप्त और जमीन के अन्दर था, जिसके कारण बहुत अधिक लोगों को उसके बारे में ज्ञान भी नहीं था। अँग्रेज़ों ने उसको एक पहाड़ी गुफा के रूप

में प्रचारित किया जो डकैतों का ठिकाना थी। जिसके कारण लोगों का उस कीले पर से ध्यान हट गया। जिसका उन्होंने खूब फायदा उठा कर उस कीले को अन्दर से ही तबाह कर दिया। अर्थात कीले के अन्दर भयानक बम विस्फोट किया। जिससे वह किला जमीन के अन्दर धरासाई हो गया। जब राघव को यह सब ज्ञात हुआ, तो उसने अपना सब कुछ भूल कर। एक नये जीवन को ज़ीने का निर्णय किया, और उसने अपने मन में निश्चय किया कि वह अपने पुराने जीवन के बारे में किसी को भी नहीं बतायेगा, और वही जंगल में रह कर लोगों को ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान का उपदेश देते रहा। जिससे उनके बहुत भक्त बन गये, और लोग दूर दुर से उससे मिलने के लिये आते थे। बाद में उन को लोग पहाड़ी बाबा के नाम से जानते थे। जिनके नाम का एक बहुत बड़ा आश्रम आज भी विन्ध्याचल के पहाड़ियों के उपर है। जहाँ पर एक बार पगला को भी जाने का अवसर मिला। जिससे उसे कुछ विशेष उनके बारे में गुप्त जानकारी मिली।

यह सत्य है कि इस भारत को आज आजाद देश माना जाता है। लेकिन यह आजाद नहीं हुआ है, आज भी मानस और कैलाश कि खानदान को समाप्त करने के लिये प्रयास कर रही है। हालांकि अब मानस और कैलाश नहीं रहे, लेकिन जो उनके वंशज है, जिन में से ही एक पगला भी है। आज का समय बदल गया है। आज आदमियों को सताने का और किसी की संपत्ती को हड़पने का तरिका बदल गया गया। लेकिन षड्यंत्र आज भी चल रहा है। सरकार आज कहने को भारतीय है लेकिन इसका सारा कार्य बाहरी शक्तियाँ निश्चित करती है। पगला तो यह मानता है कि हमारा देश आज भी किसी प्रकार से आजाद नहीं हुआ है। आज भी पहले से भी खतरनाक जाहिल और दुष्ट प्रकृति के व्यक्तियों का ही अधिकार इस देश पर है। जब से पगला का जन्म हुआ तभी से उसके साथ किसी कैदी के समान व्यवहार किया जाता है। कहने को वह आजाद है, वास्तव में वह किसी जेल में नहीं रहता है, लेकिन यह भी सत्य है कि यह दुनिया ही उसके लिये, यातना गृह बन गई है। और जब से पगला जानने लायक हुआ है, तब से ही उसे ज्ञात हुआ है कि उसके साथ कोई गृह युद्ध हो रहा है। जिस को हम शीत युद्ध कह सकते है।

प्रारम्भ में यह युद्ध पगले के साथ केवल पगला का परिवार करता था धीरे-धीरे जैसा वह बड़ा होता गया, उसका युद्ध क्षेत्र भी उसके साथ बढ़ता गया, और उसके योद्धा जो उसके खिलाफ लड़ने के लिये बदलते रहे। पगले को इसका ज्ञान तब हुआ जब उसने उस छनवर की जमीन पर एक ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान नामक वैदिक विश्व विद्यालय बनाने की योजना पर काम करना शुरु किया। जो लाखों एकड़ में फैली है, जिसमें आज भी उसकी कुछ जमीन उस मैदान के बिच में उपस्थित है। क्योंकि वह क्षेत्र काफी बड़ा और खाली है, वहाँ केवल एक खेती होती है। या केवल एक फसल उपजाई जाती है। जब गंगा में बाढ़ आने से सारा लाखों एकड़ का इलाका पानी से डूब जाता है। वहाँ पर विस फिट ऊंचा पानी गंगा के बढ़ने पर जमा हो जाता है। इस लिये उसने वहाँ पर जमीन के अन्दर किला बना कर विश्व विद्यालय चलाने का निर्णय किया। क्योंकि उसे ज्ञात हुआ कि यहाँ हमारे समाज में दुःख का कारण अज्ञान है। ज्ञान का प्रसार करने के

लिये एक बृहद विश्व विद्यालय बनाया जाये। क्योंकि मिर्जापुर में आज भी कोई विश्व विद्यालय नहीं है। कहने के लिये वह राजावों का शहर है। आज भी मिर्जापुर को नक्सल प्रभावित क्षेत्र की श्रेणी में रखा गया है। वह ऐसा क्षेत्र है, इसका भी उसे अच्छी तरह से आभास हो चुका था। क्योंकि उस क्षेत्र की कुछ ऐसी विशेषता है जहाँ पर आज कि सरकार के लिये खतरा महसूस होता है। भारत सरकार को डर है जिस को पीछे से अंग्रेज चला रहे है। कि यहाँ यदि किला बनाया गया, तो वह भारती अँग्रेज़ों जो देश को चला रहे हैं, उनके सामने वही चुनौति खड़ी हो सकती है, जो कभी राघव और उसे भाईयों कि गैंग ने किया था। अँग्रेज़ों के जाने बाद भी आज तक पूरे भारत में कोई वैदिक विश्व विद्यालय नहीं है। कहने के लिये वैदिक ज्ञान सर्वोपरि है। जितने भी विश्व विद्यालय भारत में चलते हैं, वह सब अँग्रेज़ी कि शिक्षा पद्धति से-से चलते हैं। जिस को कार्ल मार्क्स, लार्ड मैकाले और मैक्समुलर नें मिलकर तैयार किया था। या कुछ ऐसे भी हैं, जो संस्कृत के भी हैं जैसे संपूर्णनन्द आदि जो वाराणसी में है। वहाँ पर भी केवल पौराणिक ज्ञान के प्रचार किया जाता है। यह उसके द्वारा एक बहुत बड़ा कदम उठाया गया। जिससे ऐसा प्रतीत होता है। कि जैसे कोई जिन्न कई सौ वर्सों से किसी कब्र में कैद था वह मेरे इस कृत्य से जागृत हो गया। जिससे यह सारी दुनिया एक साथ उसको मारने के लिये उसके पीछे पड़ गई हो। क्या अपने क्या पराये? जहाँ भी गया मैं हर जगह जैसे उस पर निगाह रखी जाती हो, और हर प्रकार से उसको नष्ट किया जाने का प्रयास किया जाने लगा हो। जैसे पगले ने इस दुनिया के किसी दुःखती रग पर अपनी पैनी तलवार को चुभों दिया हो। जिससे यह दूनिया ही उसके खून कि प्यासी बन गई हो।

यद्यपि पगला शुरु से ही साधु किस्म का आदमी था, जिसके कारण ही पगला यहाँ पर अब तक जिंदा है। यद्यपि वह किसी भी क्षेत्र में आज तक सफल नहीं हो पाय है। हर क्षेत्र में उसको असफल करने के लिये उसके शत्रु उससे पहले से खड़े उसे मिलते रहे हैं। फिर भी पगले ने हार नहीं माना, आज भी संघर्ष रत है। वह जानता है कि वह इस दुनिया से नहीं जित सकता है, लेकिन वह अपने विरोधितों से लड़ते-लड़ते मरना चाहता है। जैसा कु गीता में कृष्ण अर्जुन को कहते हैं, कि जब जित जाओगे, तो तुम्हें यहाँ याद किया जायेगा और हार जावोंगे तो भी एक योद्धा के रूप में याद किये जाओंगे। हर हालत में संघर्ष करना ही श्रेयस्कर है। आज से हज़ारों साल पहले महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन अपने ही भाईयों के विरुद्ध लड़ने के विचार से कांपने लगते हैं, तब भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। कृष्ण ने अर्जुन को बताया कि यह संसार एक बहुत बड़ी युद्ध भूमि है, असली कुरुक्षेत्र तो तुम्हारे अंदर है। अज्ञानता या अविद्या धृत राष्ट्र है, और हर एक आत्मा अर्जुन है और तुम्हारे अंतरात्मा में, श्री कृष्ण का निवास है, जो इस रथ रूपी शरीर के सारथी हैं। ईंद्रियाँ इस रथ के घोड़े हैं। अहंकार, लोभ, द्वेष ही मनुष्य के शत्रु हैं। गीता हमें जीवन के शत्रुओं से लड़ना सिखाती है। और ईश्वर से एक गहरा नाता जोड़ने में भी मदद करती है। गीता त्याग, प्रेम और कर्तव्य का संदेश देती है। गीता में कर्म को बहुत महत्व दिया गया है। मोक्ष उसी मनुष्य को प्राप्त होता है। जो अपने सारे सांसारिक कामों को करता हुआ, ईश्वर की आराधना करता

है। अहंकार, ईर्ष्या, लोभ आदि को त्याग कर मानवता को अपनाना ही गीता के उपदेशों का पालन करना है।

गीता सिर्फ एक पुस्तक नहीं है, यह तो जीवन मृत्यु के दुर्लभ सत्य को अपने में समेटे हुए है। कृष्ण ने एक सच्चे मित्र और गुरु की तरह अर्जुन का न सिर्फ मार्गदर्शन किया बल्कि गीता का महान उपदेश भी दिया। उन्होने अर्जुन को बताया कि इस संसार में हर मनुष्य के जन्म का कोई न कोई उद्देश्य होता है। मृत्यु पर शोक करना व्यर्थ है, यह तो एक अटल सत्य है जिसे टाला नहीं जा सकता। जो जन्म लेगा, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। जिस प्रकार हम पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्रों को धारण करते हैं, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर के नष्ट होने पर नए शरीर को धारण करती है। जिस मनुष्य ने गीता के सार को अपने जीवन में अपना लिया, उसे ईश्वर की कृपा पाने के लिए इधर उधर नहीं भटकना पड़ेगा।

श्री कृष्ण का मानव जीवन ज़ीने का उपदेश, श्रीमद भगवद के एकादश स्कंध अध्याय ७ श्लोक ६-१२ कहते हैं।

तुम अपने आत्मीय स्वजन और बंधु -बांधवों का स्नेह सम्बन्ध छोड़ दो, और अनन्य प्रेम से मुझ में अपना मन लगाकर समदृष्टि से पृथ्वी पर स्वच्छंद विचरण करो। इस जगत में जो कुछ मन से सोचा जाता है, वाणी से कहा जाता है, नेत्रों से देखा जाता है और श्रवण आदि इन्द्रियों से अनुभव किया जाता है, वह सब नाशवान है, स्वप्न की तरह मन का विलास है। इसीलिए माया-मात्र है, मिथ्या है- ऐसा जान लो। जिस पुरुष का मन अशांत है, असयंत है उसी को पागलों की तरह अनेक वस्तुयें मालूम पड़ती हैं। वास्तव में यह चित्त का भ्रम ही है। नानात्व का भ्रम हो जाने पर ही "यह गुण है" और "यह दोष है" इस प्रकार की कल्पना करी जाती है। जिसकी बुद्धि में गुण और दोष का भेद बैठ गया हो, दृढ़ मूल हो गया है, उसी के लिए कर्म, अकर्म और विकर्म रूप का प्रतिपादन हुआ है। जो पुरुष गुण और दोष बुद्धि से अतीत हो जाता है, वह बालक के समान निषिद्ध कर्मों से निवृत्त होता है; परन्तु दोष बुद्धि से नहीं। वह विहित कर्मों का अनुष्ठान भी करता है, परन्तु गुण बुद्धि से नहीं। जिसने श्रुतियों के तात्पर्य का यथार्थ ज्ञान ही प्राप्त नहीं कर लिया, बल्कि उनका साक्षात्कार भी कर लिया है और इस प्रकार जो अटल निश्चय से संपन्न हो गया है, वह समस्त प्राणियों का हितैषी सुहृद होता है और उसकी सारी वृत्तियाँ सर्वथा शांत रहती हैं। वह समस्त प्राणि मात्र विश्व को मेरा ही स्वरूप–आत्मस्वरूप देखता है; इसलिए उसे फिर कभी जन्म-मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ना पड़ता।

श्रीकृष्ण ने जहाँ तक हो सका मित्रता, सहयोग सामंजस्य आदि के बल पर ही परिस्थितियों को सुधारने का प्रयास किया, लेकिन जहाँ जरूरत पड़ी, वहाँ सुदर्शन चक्र उठाने में भी उन्होंने संकोच नहीं

किया। वहीं अपने निर्धन सखा सुदामा का अंत तक साथ निभाया, और उनके चरण तक पखारे। गीता को हिन्दू धर्म में बहुत खास स्थान दिया गया है। गीता अपने अंदर भगवान कृष्ण के उपदेशों को समेटे हुए है। गीता को आम संस्कृत भाषा में लिखा गया है, संस्कृत की आम जानकारी रखना वाला भी गीता को आसानी से पढ़ सकता है। गीता में चार योगों के बारे विस्तार से बताया हुआ है, कर्म योग, भक्ति योग, राजा योग और ज्ञान योग। गीता को वेदों और उपनिषदों का सार माना जाता, जो लोग वेदों को पूरा नहीं पढ़ सकते हैं, वह सिर्फ गीता के पढ़ने से भी अपने आप को ज्ञान प्राप्त करा सकते हैं। गीता न सिर्फ जीवन का सही अर्थ समझाती है बल्कि परमात्मा के अनंत रूप से हमें रूबरू कराती है। इस सांसारिक दुनिया में दुख, क्रोध, अहंकार ईर्ष्या आदि से पीड़ित आत्माओं को, गीता सत्य और अध्यात्म का मार्ग दिखा कर मोक्ष की प्राप्ति करवाती है। गीता में लिखें उपदेश किसी एक मनुष्य विशेष या किसी खास धर्म के लिए नहीं हैं, इसके उपदेश तो पूरे जग के लिए है। जिसमें अध्यात्म और ईश्वर के बीच जो गहरा संबंध है उसके बारे में विस्तार से लिखा गया है। गीता में धीरज, संतोष, शांति, मोक्ष और सिद्धि को प्राप्त करने के बारे में उपदेश दिया गया है।

ज्ञानी भक्त के चरित्र पर यह श्लोक और अधिक प्रकाश डालता है। इन छ गुणों को बताकर भक्त के चित्र को और अधिक स्पष्ट किया जा रहा है। जो अनपेक्ष (अपेक्षा रहित) है सामान्य पुरुष अपने सुख और शांति के लिए बाह्य देश? काल? वस्तु? व्यक्ति और परिस्थितियों पर आश्रित होता है। इनमें से प्रिय की प्राप्ति होने पर वह क्षण भर रोमांचित कर देने वाले हर्षोल्लास का अनुभव करता है। परन्तु एक सच्चा भक्त अपने सुख के लिए बाह्य जगत् की अपेक्षा नहीं रखता? क्योंकि उसकी प्रेरणा? समता और प्रसन्नता का स्रोत हृदयस्थ आत्मा ही होता है। जो शुचि अर्थात् शुद्ध है एक सच्चा भक्त शारीरिक शुद्धि तथा उसी प्रकार आंतरिक शुद्धि से भी संपन्न होता है। जो भक्त साधक की स्थिति में भी शरीर मन और जगत् के साथ अपने संबंन्धो में शुद्धि रखने के प्रति जागरूक रहता है, वही फिर सिद्ध भक्त शुचि को प्राप्त होता है। यह एक सुविदित तथ्य है कि कोई पुरुष जिस वातावरण में रहता है? उसे देखकर तथा उसकी वस्तुओं? वस्त्रों आदि की दशा देखकर उस पुरुष के स्वभाव? अनुशासन तथा संस्कृति का अनुमान किया जा सकता है। शारीरिक शुचिता तथा व्यवहार में भी पवित्रता रखने पर भारत में अत्यधिक बल दिया गया है। बाह्य शुद्धि के बिना आन्तरिक शुद्धि मात्र दिवा स्वप्न? या व्यर्थ की आशा ही सिद्ध होगी। दक्ष (कुशल) सदा सजगता तो सुगठित पुरुष का स्वभाव ही बन जाता है। किसी भी कार्य की सफलता की कुंजी उत्साह है। कुशल और समर्थ व्यक्ति वह नहीं है, जो अपने व्यवहार और कार्य में त्रुटियाँ करता रहता है। दक्ष भक्त मन से सजग और बुद्धि से समर्थ होता है। उसमें मन की शक्ति का अपव्यय नहीं होता अत एक बार किसी कार्य का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेने के पश्चात् वह उस कार्य का सिद्धि के लिए सदा तत्पर रहता है। जैसा कि हम देख रहे हैं? यदि धार्मिक कहे जाने वाले लोग अपने कार्य में आलसी? असावधान और अशिष्ट हो गये हैं? तो हम समझ सकते हैं कि हिन्दू धर्म अपने प्राचीन वैभव से कितना दूर भटक गया है।

उदासीन समाज में ऐसे अनेक भक्त कहे जाने वाले लोगों का मिलना कठिन नहीं हैं? जिन्होंने अपने आप को एक अनभिव्यक्त दुखपूर्ण स्थिति में समर्पित कर दिया है और उसका कारण केवल यह है कि किसी ने उसके साथ विश्वासघात अथवा दुर्व्यवहार किया था। ऐसे मूढ़ भक्त सोचते हैं कि समाज के इन अपराधों के प्रति वे उदासीन रहेंगे। बाद में उनकी भक्ति ही उन्हें एक दुर्भाग्य पूर्ण दायित्व प्रतीत होने लगती है? न कि एक वास्तविक लाभ दर्शनशास्त्र को विपरीत समझने पर उसकी समाप्ति समाज के आत्मघात में ही होती है। उदासीन भाव का प्रयोजन केवल अपने मन की शक्तियों का अपव्यय रोकने के लिए ही है। मनुष्य के जीवन में? छोटी-छोटी कठिनाइयाँ? सामान्य बीमारियाँ सुख सुविधा का अभाव आदि का होना तो स्वाभाविक और सामान्य बात है। उन को ही अत्यधिक महत्व देना और उनकी निवृत्ति के लिए दिन रात प्रयत्न करते रहने का अर्थ जीवन भर परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के संघर्ष में ही डुबे रहना है। यहाँ साधक को यह उपदेश दिया गया है कि जीवन की इन साधारण परिस्थितियों में वह अपनी मानसिक शक्ति को व्यर्थ ही नहीं खोने दे? बल्कि इन घटनाओं में उदासीन भाव से रहकर शक्ति का संचय करे। छोटे मोटे दुःख और कष्ट अनित्य होने के कारण स्वतः ही निवृत्त हो जाते हैं? अत उनके लिए चिन्ता और संघर्ष करने की कोई आवश्यकता नहीं है। व्यथा रहित (भयरहित) जब मनुष्य किसी वस्तु विशेष की कामना से अभिभूत हो जाता है? तब उसे मन में यह भय लगा रहता है कि कहीं उसकी इच्छा अतृप्त ही न रह जाये। परन्तु ज्ञानी भक्त सब कामनाओं से मुक्त होने के कारण निर्भय होता है। सर्वारम्भ परित्यागी संस्कृत में आरम्भ शब्द का अर्थ कर्म भी होता है। अत सर्वारम्भ परित्यागी शब्द का अर्थ कोई यह नहीं समझे कि भक्त वह है? जो सब कर्मों का त्याग कर देता है इस प्रकार के शाब्दिक अर्थ के कारण बहुसंख्यक हिन्दू लोग कर्म करने में अकुशल और आलसी हो गये हैं। इन लोगों को देखकर ही अन्य लोग हमारी आलोचना करते हुए कहते हैं कि हिन्दू धर्म में आलस्य को ही दैवी आदर्श के रूप में गौरवान्वित किया गया है। परन्तु यह अनुचित है? क्योंकि इस शब्द के आशय की सर्वथा उपेक्षा की गयी है। यदि कोई व्यक्ति किसी कर्म में निश्चित प्रारम्भ देखता है? तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह स्वयं को उस कर्म का आरम्भ कर्ता मानता है। उसके मन में यह भाव दृढ़ होना चाहिए कि उसने ही यह कर्म विशेष किसी विशेष फल को प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ किया है? जिसे प्राप्त कर वह कोई निश्चित लाभ या सुख प्राप्त करेगा। जो पुरुष भगवान का भक्त है। और सांस्कृतिक पूर्णत्व को प्राप्त करना चाहता है। उसको इस प्रकार के मान और कर्तृत्व के अभिमान को सर्वथा त्याग कर निरहंकार भाव से जगत् में कर्म करने चाहिए। वास्तविकता यह है कि हमारे जीवन में कोई भी कर्म नया नहीं है। जिसका अपना स्वतंत्र प्रारम्भ और समाप्ति हो। सम्पूर्ण जगत् के सनातन कर्म व्यापार में ही सभी कर्मों का समावेश हो जाता है। यदि भली भांति विचार किया जाये तो ज्ञात होगा कि हमारे सभी कर्म जगत् में उपलब्ध वस्तुओं और स्थितियों से नियन्त्रित, नियमित, शासित और प्रेरित होते हैं। ईश्वर के भक्त को विश्व की इस एकता का सदैव भान बना रहता है, और इसलिए, वह जगत् में सदा ईश्वर के हाथों में एक करण या निमित्त के रूप में

कर्म करता है। न कि किसी कर्म के स्वतंत्र कर्ता के रूप में। उपर्युक्त सद्गुणों से संपन्न भक्त मुझे प्रिय है। भक्त के कुछ और लक्षण बताते हुए भगवान कहते हैं।

वह पुरुष परम भक्त कहलाता है जिसने मन और बुद्धि की अनात्म उपाधियों तथा जगत् से अपने तादात्म्य को त्याग कर आनन्द स्वरूप आत्मा में दृढ़ स्थिति प्राप्त कर ली है। अत यह स्वाभाविक ही है कि अनात्म जगत् से होने वाले सुख दुख आदिक अनुभव उसे किसी भी प्रकार से न आकर्षित कर सकते हैं और न विचलित। इसे ही इस श्लोक में बताया गया है। सामान्य मनुष्य जगत् की सभी वस्तुओं को वे जैसी हैं? वैसे ही नहीं देखता। उसे कोई वस्तु प्रिय होती है? तो कोई अप्रिय। तत्पश्चात् वह प्रिय वस्तु की आकांक्षा या इच्छा करता है और अप्रिय से द्वेष। इसके पश्चात्? तीसरा द्वंद्व उत्पन्न होता हैं प्रवृत्ति और निवृत्ति का? अर्थात् इच्छित वस्तु को प्राप्त करने के लिए और द्वेष्य वस्तु को त्यागने के लिए वह प्रयत्न करता है। इसके परिणामस्वरूप इष्ट की प्राप्ति होने पर वह हर्षित होता है? अन्यथा शोक करता है। ज्ञानी भक्त में इन समस्त विकारों और प्रति क्रियाओं का यहाँ अभाव बताया गया है। इसका कारण यह है कि वह अपने परम आनन्द स्वरूप में स्थित होने के कारण बाह्य मिथ्या वस्तुओं में सुख और दुःख की कल्पना करके उनसे राग या द्वेष नहीं करता। राग और द्वेष के द्वंद्व के अभाव में हर्ष और शोक का स्वत अभाव हो जाता है। वह भक्त जगत् को अपनी कल्पना की दृष्टि से न देखकर यथार्थ रूप में देखता है। शुभाशुभ परित्यागी जब मनुष्य अपने आनन्द स्वरूप को नहीं जानता है वह बाह्य जगत् में सुख और शांति की खोज करता रहता है। उस स्थिति में, अपने राग और द्वेष के कारण वस्तुओं की प्राप्ति के लिए शुभ और अशुभ (पुण्य और पाप) दोनों ही प्रकार के कर्म करता है। परन्तु भक्त के मन में राग और द्वेष नहीं होने के कारण वह शुभ और अशुभ दोनों ही से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उपर्युक्त श्लोक में प्रयुक्त सभी शब्दों का एक विशेष गूढ़ अभिप्राय है। अन्यथा केवल वाच्यार्थ को ही स्वीकार करने पर ऐसा प्रतीत होगा कि ज्ञानी भक्त कोई शव अथवा पाषाण मात्र है, क्योंकि वह न इच्छा करता है और न द्वेष न हर्षित होता है, और न दुखी अर्थात् वह मृत पड़ा रहता है। यह श्लोक इस बात का अत्यन्त प्रभावी उदाहरण है। कि धर्म शास्त्रों के शब्दों का वाच्यार्थ उसके मर्म या प्रयोजन को स्पष्ट नहीं करता है। अत उनके लक्ष्यार्थ पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। इस श्लोक में वर्णित गुण से युक्त भक्त भगवान को प्रिय होता है। यह श्लोक प्रस्तुत प्रकरण का चतुर्थ भाग है? जिसमें ज्ञानी भक्त के और छः लक्षण बताये गये हैं। इस प्रकार अब तक छब्बीस गुणों को बताया गया है? जो भक्त के स्वाभाविक लक्षण होते हैं।

अध्याय 6.

जैसा कि हमने बताया कि कैलाश के खानदान में केवल उनके अंतिम पुत्र कि पत्नी जो वाराणसी की रहने वाली थी और वह अपने खानदानी छोटे भाई जमींदार अयोध्या प्रसाद के यहां, अपने मायके में रहती थी। अपने पति के मृत्यु के बाद। उनका पति कैलाश जमींदार का आखिरी संतान था। जो दो भयंकर शत्रु खानदानों के बीच में अपनी दुश्मनी कि आग में जल रहे थे। जिसमे बहुत सारे लोग दोनों तरफ के अपनी जान को गंवा चुके थे। उसमें एक कैलाश का आखिरी पुत्र भी था। जिसकी पत्नी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह और खानदानों के बिच में खून खराबा नहीं चाहती थी। वह इन दोनों कट्टर खून के प्यासे खानदानों को फिर से प्रेम के मधुर सूत्र में बांधना चाहता थी। जिसमें उसका साथ मानस का दूसरी पत्नी का पुत्र राघव ने दिया और उसने अपने भाई मानव को पुत्र ओंकारनाथ के पुत्र रामनाथ और कैलाश की बहु के भाई अयोध्या प्रसाद की पुत्री राजलक्ष्मी का विवाह करा दिया था। जिससे यह दो जलती हुई अग्नि ज्वाला आपस में मिलकर एक हो सके, और इन दोनों के मध्य जो झगड़े का कारण जमीन है, उसको एक कर दिया जाये। लेकिन यह पुरी तरह से संभव नहीं हो पाया, जिस को उपर से तो प्रेम संबंध नाम दिया गया। लेकिन वास्तव में वह एक परिवार का गृहयुद्ध बन गया। जिसमें कुछ निर्दोष लोगों को प्रताड़ित किया जाने लगा। उस राजलक्ष्मी का सबसे बड़ा पुत्र पगला हुआ। जिसके जन्म के साथ ही मृत्यु के साथ संघर्ष शुरु हो गया।

राजलक्ष्मी का बड़ा पुत्र बहुत अधिक बुद्धिमान था। जिस को उसकी मां बहुत अधिक प्रेम करती थी, लेकिन उसका पिता रामनाथ उससे नफरत करता था। क्योंकि उसका पिता यह नहीं चाहता था, कि उससे अधिक कोई बुद्धिमान व्यक्ति उस परिवार में रहे। क्योंकि वह परिवार का स्वामी था, यह उस समय की बात है, जब औरत पर्दा प्रथा अपने चरम पर था। भले ही खाना घर में नहीं हो, फिर भी घरों में रहने वाली स्त्री अपने घर से बाहर नहीं निकला करती थी। औरतें पुरी तरह से अपने पति के ही आश्रित रहती थी। ऐसा ही उस ब्राह्मण की पत्नी के साथ भी था, वह लाख चाह कर भी कुछ नहीं कर सकती थी। वह एक गुलाम से अधिक नहीं थी। उसका सारा जीवन केवल निःस्वार्थ भाव से, अपने पति की सेवा करना ही धर्म या उसकी मजबूरी थी। उनका जो बड़ा लड़का पगला था, वह जब थोड़ा समझदार हुआ, और वह अपने माता पिता की स्थिति को समझ गया। जिससे उसने संकल्प किया की वह अपने परिवार की सहायता करेगा। अब तक उसके पिता के द्वारा उसको यहीं समझाया गया था। कि संसार में सबसे बड़ी समस्या है, गरीबी जो इस गरीबी को अपने जीवन से दूर करने में किसी भी तरह से भी समर्थ होता है। वही इस संसार में सुखी रहता है।

तो पगला ने अपने पिता से कहा की वह बहुत अधिक धन को कमायेगा। और अपने माता पिता के साथ परिवार को इस गरीबी के संकट से हमेशा किए मुक्त कर देगा। इसी तरह से समय गुजरता गया। पगला के पिता ने सरकारी प्राथमिक स्कूल में उसका प्रवेश करा दिया। जहां पर पगला ने कुछ शब्द ज्ञान को अपने गुरु से प्राप्त किया। और कुछ ही साल में वह अपनी सारी किताबों को पढ़कर अपने गुरुओं को पढ़ाने लगा। कुछ साल तक ठीक था, लेकिन उसके पिता के लिए यह असहनीय हो गया, यह बर्दाश्त करना की उसका लड़का उससे अधिक प्रतिष्ठा समाज में अर्जित कर रहा है, क्योंकि पगला हमेशा लोगों के लिए कौतूहल बना रहता था। जिससे उस गांव के लोग और उसके पिता ने आपस में यह निर्णय किया, की यह बहुत अधिक बुद्धिमान है। इसको किसी तरह से मारा दिया जाये। जिसके लिए पगला का पिता और विद्यालय के गुरु ने आपस में मिलकर एक योजना बनाई, कि कुछ ऐसा कार्य किया जाये। जिससे सांप भी मर जाये और लाठी भी ना टूटे। पगला का पिता कई बार उसको मारने का प्रयास कर चुका था। लेकिन वह समर्थ नहीं हुआ था। क्योंकि पगला का पिता बहुत ही अधिक धूर्त किस्म का था। वह मारता भी था और मरने भी नहीं देता था। वह अपने समाज में लोगों को यह दिखाना चाहता था। कि वह अपने पुत्र को बहुत प्रेम करता है। जैसा की हाथी के दाँत खाने के अलग और दिखाने के लिए अलग होते हैं। इसी प्रकार से वह दिखाता कुछ और था, और करता कुछ और ही था। वह ऐसे समाज में रहता था जहां समाज में ब्राह्मणों का भांग खाना, गर्व का विषय माना जाता था। क्योंकि भांग, गाँजा,को भगवान भोले नाथ का प्रसाद मान कर वह सब सेवन करते थे। पगला का पिता भी इससे बचा नहीं था। वह दिन में कई बार भांग खाता था। और जिस विद्यालय में पगला पढ़ता था। उसका मुख्य अध्यापक भी भांग खाने का आदी था। इस लिये पगला के पिता का वह मित्र बन गया था। वह विद्यालय से जब पढ़ा कर वापिस आता, तो पगला के घर के सामने उसके पिता के साथ, नीम के पेड़ के नीचे मड़ई में बैठता था। जहां पर पगला का पिता भांग को घोटता था, और दोनों मिलकर प्रेम से रोज भाँग पीते थे। यह कार्य पगला की मां को अच्छा नहीं लगता था। जिससे वह पगला के पिता को कई बार बोल चुकी थी, लेकिन पगला का पिता अत्यधिक क्रोधित हो कर, उसको भी मारने पीटने पर आ जाता था। जिससे वह शांत हो जाती थी। लेकिन यह सब पगला को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। जिससे वह मन ही मन कुढ़ता था। और समय के साथ अपने पिता के प्रती अत्यधिक द्वेष भाव को पाल लिया था। लेकिन वह अपने पिता की हत्या करना नहीं चाहता था। वह केवल यहीं चाहता था, की उसका पिता भी और बच्चों के पिता के समान, उससे भी प्रेम करे। लेकिन यह उसके पिता लिये संभव नहीं था।

एक दिन जब पगला का पिता नीम के पेड़ के नीचे अपनी मड़ई में बैठा भांग को घोट रहा था। तभी पगला को पढ़ाने वाला वह अध्यापक भी आ गया। पगला के पिता ने कहा पगला विद्यालय में कैसा पढ़ता है? वह तो महा मूर्ख है, मुझ को परेशान कर दिया है, कुछ काम धाम करता नहीं है, केवल किताब लेकर ही लगा रहता है। तब पगला के गुरु ने कहा की वह बहुत अधिक समझदार है, वह तो मुझ से कुछ

नहीं पढ़ता है, वह हमें और बच्चों को पढ़ता है। जिससे मेरा काफी अपमान होता है। विद्यालय के बच्चे मेरा सम्मान नहीं करते हैं। मैं भी बहुत परेशान हो चुका हूं। लेकिन मुझे पता है, की वह आपका पुत्र है, तो मैं सब कुछ भूल जाता हूं, यह सोच कर की मेरे मित्र का पुत्र है, यदि तुम्हारा पुत्र नहीं होता, तो मैं उसको जहर दे देता। यह सुन कर, पगला के पिता ने कहा यह तो मेरे मन की बात कर दी, लेकिन यह करोगे कैसे? किसी को पता नहीं चलना नहीं चाहिए, नहीं तो हम दोनों की बहुत बदनामी होगी। हम समाज में मुँह उठा कर चल नहीं पायेगें।

इसको सुन कर उस आदमी ने कहा जो विद्यालय का अध्यापक था, और जो पगला को पढ़ाता था, मैंने एक योजना बना लिया है, तुम्हारी इच्छा हो तो बताएं। पगला के पिता ने कहा इसमें पूछना क्या है? तुम बताओ किसी प्रकार का संकोच मत करो। क्योंकि वह मेरा पुत्र नहीं है, वह साला किसी और का लड़का है। इसकी मां ने किसी और के साथ मिलकर इसको पैदा किया है। इसको सुन कर उस अध्यापक ने कहा, क्या तुम सच कह रहे हो, पगला के पिता ने कहा की मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं। वह साला मेरी औलाद नहीं हैं। मेरी औलाद होता, तो मेरे जैसा होता, वह साला पागल है। मैं समझा -समझा कर थक गया था, तब मैंने आपके विद्यालय में दाखिल किया था। कि शायद वहां पर कुछ पढ़- लीख कर बुद्धिमान होगा। लेकिन वह तो मेरे लिये बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है। वह साला किसी सांप का बच्चा है, जिस को मार देना ही सही है। अंयथा यह मेरे पूरे परिवार और इस समाज के सभी बच्चों को खराब कर देगा। मेरे पास बराबर उसकी शिकायत आती है। कि वह बच्चों को अपने साथ लेकर नदी में तैरने के लिए ले जाता है, और वहां नदी के गहरे पानी में बैठा करता है। कभी पहाड़ और जंगल में चला जाता है, और वहीं पर कई - कई रात रहता है। गांव के किसी व्यक्ति के पुत्र के साथ कभी कोई बुरी घटना घट जाती है, जैसे कोई नदी में डूब जाये, या जंगल में जाता है वहां किसी को किसी खतरनाक जानवर ने अपना शिकार बना लिया, तो मेरा इस गांव में जीना मुश्किल हो जायेगा।

यह सब सुन कर पगला के पिता के मित्र विद्यालय के अध्यापक ने कहा ठीक है, तो सून क्या करना है, इस भांग में थोड़ी सी संखियाँ (एक प्रकार का देशी जहर) के साथ गुड़ को मिलाकर आज घोटा बनाओ, और इसको मुझे दे दो। यह उसको मार देने के लिए पर्याप्त होगा। मुझे पता है, वह जंगल में जहां जाता है, और उसके साथ मेरा एक चेला भी जाता है, उसने मुझ से कहा था, की पगला जंगल में पेड़ के उपर बैठ कर ध्यान लगाता। और जब वह ध्यान से निकल कर बाहर आता है। तो वह सब रात्रि में वहीं भोजन बना कर खाते हैं। और तालाब से पानी पीते हैं, मैं आज अपने, चेले से कहूँगा, की आज वह अपने साथ इस घोटे (जहर) को अपने साथ ले कर जाये, और उसको ध्यान से बाहर निकलने पर पिला दे। इसको सुन कर पगला के पिता की मूँछ खिल गई। उसने कहा अभी मैं नदी किनारे जाता हूं, और थोड़ी संखिया ले कर आता हूं। तुम सच में मेरे गुरु हो, कभी यह विचार मेरे मन में नहीं आया था। आप अपने

घर जायें, और अपने चेले को मेरे पास भेज देना। मैं यह घोटा बना कर उससे आपके पास पहुंचवाता हू। नहीं तो मैं ही पहुंचा दूगां, और उसने ऐसा ही किया ही कुछ ही समय में वह जहर का घोटा बनाया। और अपने मित्र के घर, उस अध्यापक के यहाँ लोटा में जहर का घोल, भर कर पहुंचा दिया। जो रस गुण के रस के समान था।

पगला अब तक सोलह साल का हो चुका था, पिछले एक दो साल से उसकी रोज शाम की आदत थी, की वह जंगल में जा कर वृक्ष के उपर ध्यान करता था। और रात्रि में वहीं पर एक पुराने खंडहर में ही रहता था। सुबह होने पर वह उठता था। और भोर में ध्यान के बाद नदी में स्नान कर पूजा पाठ करने के बाद, अपनी मां के पास घर पर आता था। जो भी रूखा सुखा होता था। उसको खा कर अपने विद्यालय चला जाता था। तब तक उसका पिता अपने बिस्तर पर ही पड़ा रहता था। वह उठते ही अपनी पत्नी को गालियों की बौछार के साथ पुकारता था। पगला की मां सबके लिए भोजन की व्यवस्था करती थी। इनका जीविकोपार्जन पगला के पिता द्वारा अर्जित पूजा पाठ की कमाई से ही होता थी। क्योंकि पगला के पिता के पास बहुत सारे यज्ञमान थे जिनके यहां अकसर पूजा पाठ शादी, विवाह, तिलक, रुद्रा विशेष तथा हवन यज्ञ हुआ करता ही रहता था। जहां पर लोग पगला के पिता को, इस कार्यक्रम को संपन्न कराने के लिए प्रायः बुलाते थे। क्योंकि सभी ब्राह्मणों के कुछ यज्ञमान बंधे थे। उनका कार्यक्रम वहीं ब्राह्मण ही कराता था, कोई दूसरा नहीं करा सकता था। पगला का पिता चाहता था की पगला भी उसके इस कार्य को आगे बढाये। लेकिन पगला ने जब से समझने लायक हुआ था, उसने अपने पिता में सिर्फ उन्हीं गुणों को देखा, जिससे वह द्वेष करता था। उसे अपने पिता में राक्षस, दैत्य, पीचास, शैतान के अतिरिक्त कोई दूसरा कभी नहीं दिखता था। वह अपने मां के बहुत करीब था, वह उसके लिए ही उस घर में कुछ समय के लिए रहता था। लेकिन यह थोड़ा समय उसके पिता उसके गुरु और उसके समाज के लिए बहुत अधिक असहनीय थे। सभी को यही समझ में आ रही था, की वह सभी को बिगाड़ रहा है। और समाज के बच्चों को बिगाड़ रहा है। वह उसी प्रकार का कार्य करता था जैसा की सुक़रात अपने देश में करता था, अर्थात सुक़रात के उपर यहीं अपराध लगाया गया था। कि वह लोगों को उनके पारंपरिक धर्म के खिलाफ भड़काता है, और लोगों को नया धर्म सिखाता है। ऐसी बात पगला का गुरु कहा करता था पगला के लिए। क्योंकि वह ना मूर्ति पूजा करता था, ना ही उनका सम्मान ही करता था। ना वह किसी प्रसिद्ध मंदिर में दर्शन करने के लिए जाता था। ना अपने पिता के द्वारा बताये गये, पूजा पाठ को ही करता था। वह जंगल, पहाड़ और नदी के किनारे ध्यान में लीन हो जाता था। और अपने तर्क से सभी को परास्त कर देता था। और सभी बच्चों को कहता था, तुम वहीं करो जो तुम्हारा दिल कहता है।

जैसा की वह रोज किया करता था, आज शाम को भी अपने एक मित्र को, अपने साथ खाना पानी लेकर आने के लिए कह कर, वह गांव से बाहर निकल गया। और एक दूसरे मित्रों को अपने साथ लेकर

विंध्य पर्वत की चोटी पर चढ़ाई शुरु कर दी, क्योंकि वह एकांत में रोज स्थान को बदलता रहता था। क्योंकि कई बार रात्रि में उसके पिता उसको जंगल से पकड़ कर ले आया था। और उसको मार पीट कर सुधारने का प्रयास किया था। जिसमें उसके पिता को सफलता नहीं मिली। लेकिन अब उसका पिता जानता है, की उसका पुत्र पगला अब काफी मजबूत हो चुका है। जिसके कारण उसका पिता उससे अब मार पीट अकेले करने से बचता था। वह और दूसरे समाज के लोगों, और दूसरे आवारा गांव के लड़कों को अपने पुत्र के खिलाफ भड़का कर, अपने साथ कर लिया है। उसमें से ही एक लड़का ददुआ है, जो उसके पिता के मित्र विद्यालय के अध्यापक का चेला है। वह भी खाली समय में चोरी - चोरी जंगल से भांग को लाकर एक मंदिर में जो गांव से बाहर है, वहां पर पत्थर के शील बट्टा पर बनाता और खाता था। और कभी - कभी अपने मित्रों में कुछ मित्रों को भी खिलाता था, वह रोज नहीं खाता था। लेकिन भांग का प्रयोग शौकिया रूप में करता था। आज जब उसके गुरु अर्थात पगला के पिता के मित्र विद्यालय के अध्यापक ने उसको सौ रुपये का एक नोट दिया, और साथ में एक लोटा भांग जिसमें संखियाँ जहर के साथ गुड़ का रस था, और कहा ददुआ बेटा, आज तुम लोग अच्छी पार्टी करना, और गांव में नौटंकी हो रही है। जा कर तुम लोग देखना। इस पैसे के साथ, उससे पहले, यह रस ले जा कर अपने मित्र पगला को पिला देना। तुम्हें तो पता होगा, कि वह कहां है? यह उसकी मां ने बना कर दिया है। जिस को उसके पिता ने मुझ को दिया है।

ददुआं सौ रुपये का नोट देखते ही खील खिला कर हँसने और हँसने लगा, और कहा ठीक है, मैं अभी पहुंचा कर आता हूं, और आप के साथ ही नौटंकी देखने के लिए चलेगे।

ददूंवा वहां से जहर भरा लोटा लिया, और उसके ढक्कन को बंद देख कर कसते हुए, अपनी साइकिल पर सवार हुआ, जिस को वह तूफान मेल कहता था। और जंगली मार्ग पर चल पड़ा, कुछ ही समय में जंगल में पहुंच गया। जहां उसको अपना एक मित्र गोपु दिखाई दिया। जो चांद के प्रकाश में बैठ कर त्राटक कर रहा था। ददुआ ने कहा पगला कहा पगला कहां है? गोपु पहले कुछ समय तो नहीं बोला, फिर उसने कहा क्या बात है? तुम इतना जल्दी में क्यों है? और आज साइकिल से क्यों आया है? क्या रात में यहां नहीं रहेगा। ददूआं ने सौ रुपये की नोट दिखाते हुए कहा, नहीं आज मुझ को गुरु जी ने यह दिया है, और कहा है की तुम लोग आज रात नौटंकी देख कर आवो। इस पर गोपु ने कहा पगला तो गुफा के अंदर ध्यान में चला गया है। वह तो नहीं जायेगा। और मैं भी कुछ समय में जाने वाला था, लेकिन तुम भी आ गये, यह तो मेरे लिए अच्छी बात है। हम दोनों साथ में ही चलते हैं। आगे गोपु ने पूछा की इस लोटे में क्या है? ददुआ ने कहा पगला की मां ने आज रस भेजा है, पगला के लिए। गोपु ने कहा ठीक है, तुम इसको उस गुफा के दरवाज़े के पास, पेड़ की डाली से बाँध दो। पगला जब ध्यान से बाहर आयेगा, तो इसको पी लेगा। ददुआ ने वहीं किया, जो गोपु ने उससे कहा था। फिर वह गोपु भी ददुआ की सवारी साइकिल पर

सवार हुए, और साँय - साँय करते हुए, जंगल की पगडंडीयों पर हवा की रफ्तार से गांव की तरफ निकल पड़े। कुछ ही घंटों में वह अपने गुरु के साथ गांव के बाजार में नौटंकी देख रहे थे। जहां पर भोजपुरी गाना चल रहा था। जिस पर अर्ध नग्न युवती नाच रही थी। जहां सभी एक साथ भांग के नशे में मस्त थे। जब कि पगला का पिता और उसका मित्र विद्यालय का अध्यापक रात्रि के खत्म होने का इंतजार कर रहें थे, जिसके साथ उन को यह शुभ समाचार मिलने वाला था, कि पगला जंगल से वापिस नहीं आया। और वह सब उसकी तलाश के लिए, गांव के सभी लोगों को अपने साथ ले कर, जंगल में जायेंगे। और वहां पर वह उसकी मृत शरीर को देखेंगे, की पगला जहर से मर चुका होगा। और उन को यह सिद्ध करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। कि किसी सांप आदि विषैले जानवर ने उसको काट लिया है, जिससे उसकी मृत्यु हो चुकी है।

उनके लिये रात्रि व्यतीत ही नहीं हो रही थी, और वहीं रात्रि बहुत जल्दी व्यतीत हो रही थी ददुआ और गोपु के लिए। क्योंकि समय हमारे मनःस्थिति के उपर चलता है जब हम किसी वस्तु में आनंद लेते हैं, तो वह बहुत अधिक जल्दी व्यतीत होती है। और जब हमें कोई चिंता या दिक्कत में होते हैं, तो समय जल्दी व्यतीत ही नहीं होता है। ऐसा हमें लगता है। समय सच में अपने मार्ग पर ही चलता है। हमारे मन में कुछ परिवर्तन होता है। इस सब से अनभिज्ञ पगला की मां अपने बिस्तर पर पड़ी सो रही थी, की अचानक वह चीख कर उठ पड़ी। क्योंकि वह स्वप्न देखती है, की एक काला बड़ा सांप उस पेड़ पर चढ़ रहा है, जहां पर बैठ कर उसका प्रिय पुत्र पगला ध्यान कर रहा है। पगला की मां के रात्रि में अचानक चीखने पर पास में ही पगला का अपाहिज भाई सोहन, और अंधी बहन रोशनी अपने बिस्तर पर उठ कर बैठ गये। और पूछने लगे मां - मां क्या हुआ? तुम क्यों चिल्ला रही हो? उसकी मां ने जब समझा की यह स्वप्न था, उसका मन मार्मिक समवेदनाओं से भर गया था। लेकिन उसने अपनी भावना को छिपाते हुए, कहा कुछ नहीं तुम लोग सो जाओ। मैं अब वृद्ध हो चुकी हूं, रात्रि में निद्रा में बड़ बड़ाती हूं। यह सुन कर वह फिर बिस्तर पर सो गये। लेकिन पगला की मां को नींद नहीं आई, वह अपने पुत्र का चिंतन करने लगी। और सोचा वह उसके पास जायेगी। लेकिन फिर पगला के पिता की मार के भय से वह घर से बाहर निकलने का निर्णय नहीं कर सकी।

इधर जंगल में कुछ एक घंटों के बाद जब पगला ध्यान से बाहर निकला, और अपने उपर आकाश में देखा तो चांद आकाश में अपने पूर्ण रूप से चांद खिल रहा था। और दूर पहाड़ की घाटी में स्थित मंदिर में से घंटी की आवाज़ आ रही थी। पक्षि चह चंहा रहे थे। जैसे सुबह होने वाली हो। फिर उसकी निगाह उस लोटे पर पड़ी, जो पेड़ की डाली पर बंधा लटका था। पगला ने उत्सुकता पूर्वक उसको डाली से नीचे उतारा, और ढक्कन को खोल कर लोटे को हिला करा रस को एक बार मिलाया, जिसमें गुड़ और भांग

की गंध आ रही थी। पगला ने सोचा यह उसकी मां ने बनाकर भेजा है, जो उसके लिए अमृत के समान है, और वह उसको सब एक सांस में गड़ गड़ करके अपने गले के नीचे उतार दिया।

एक तरफ धीरे - धीरे आकाश में सूर्य अपने पैर पसारने के साथ, अपनी लाल किरणों के साथ दूर अन्तरिक्ष से चल पड़ा था, वही पगला को दूसरी तरफ जहर पीने के बाद अपने जीवन के सूर्य के अस्त का आभास हो रहा था। और उसने अपनी शरीर में एक अलग प्रकार की दम घुटन को महसूस किया। जिसके साथ वह समझ गया की, उसको साथ धोखा किया गया है। उसने अपने मन को अपने आत्मा के द्वारा समझने का प्रयास किया, कि मैं स्वयं को मरने नहीं दूँगा। स्वयं को बचाना है, वह अपने अंदर बहुत अधिक गर्मी को महसूस कर रहा था। वह वहां से तुरंत भागा गांव की तरफ ना जा कर वह जंगल में और अधिक गहराई में जाने लगा। कि शायद कोई जंगली बस्ती मिल जाये। उससे बिल्कुल चला नहीं जा रहा था। उसकी शरीर जैसे बहुत भारी हो गई थी, जो उसके लिये भार बनती जा रही थी। उसका एक - एक कदम बड़ी मुश्किल उठा रहा था। थोड़ीसी दूर जाने पर, उसको वह तालाब दिखा, जिसमें पानी लबा - लब भारा हुआ था। जहां वह अकसर पानी पीने के लिए आता था। यह उस स्थान से करीब दो - तीन किलोमीटर दूर था, जहां बैठ कर पगला ध्यान किया करता था। उसने अपनी शरीर में बहुत अधिक गर्मी महसूस किया, जबकि यह सर्दी का मौसम था, इसके साथ उसका गला भी बहुत अधिक तेजी से सुख रहा था। जिसके कारण तालाब से उसने बहुत पानी पिया। फिर भी उसकी गर्मी शांत नहीं हो रही थी। उसने अपना कपड़ा तालाब के बाहर उतार दिया। और तालाब में घुस कर अपनी शरीर ठंडा करने लिए कीचड़ लपेट लिया, और वहीं पानी में अपनी साँस को रोक कर सवासन की मुद्रा में ध्यान में चला गया। इसके साथ उसने अपने मन को ढाढ़स बँधाते हुए कहा यदि मरना ही है, तो क्यों ना मैं मरने में अपनी शरीर का साथ दुं। ध्यान भी तो एक प्रकार का मरना ही है। धीरे - धीरे उसने अपने शरीर को छोड़ने लगा, अर्थात ध्यान में स्थित हो गया। जिससे उसके शरीर को शांति नहीं मिली, यद्यपि उसकी आत्मा को उससे अवश्य शांति मिल रही थी।

दूसरी तरफ सूर्य का उदय हुआ और गांव में पगला को वापिस ना लौटने पर, तो सब से पहले उसकी मां ने कहां अपने पति से कहा कि पगला रोज इस समय तक घर आ जाता था। आज क्यों नहीं आया? उसके पति ने कहा, गया होगा साला कहीं, और मुझ को वह कहां सब कुछ बताता है, की वह क्या - क्या करता है? इस पर पगला की मां ने अपनी छोटे पुत्र को कहा बेटा जा कर पगला के मित्रों से पता कर के आ। की वह क्यों अभी तक घर वापिस नहीं आया? सोहन ने अपनी खाट के पास पड़ी अपनी लाठी को उठाया, और लाठी का सहारा लेकर वहां से सीधा पहले गप्पु के घर गया। गप्पु की मां बाहर अपने दरवाज़े के अपनी गाय को चारा पानी करा रही थी। सोहन ने गप्पु की मां से कहा की गप्पु घर में है क्या? इस पर गप्पु की मां ने कहा वह निकम्मा रात भर नौटंकी देख कर आया है। और अभी सो रहा है, सोहन ने

कहा मेरी मां ने मुझे भेजा है, और पुछवाया है, की जाओ गप्पु से पूछ के आवो, पगला अभी तक घर वापिस नहीं आया। गप्पु की माने कहा मैं उसको बुलाती हूं, तुम स्वयं उससे पूछ लेना, मुझ को तो उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। गप्पु की मां घर में गई, और गप्पु के उपर पानी के छींटे डालकर जगा दिया। और कहा बाहर जा कर देख सोहन आया है। और वह अपने भाई पगला के बारे में पूछ रहा है। वह अभी घर तक नहीं आया है। उसकी मां उसके लिए बहुत परेशान हो रही है। उसने ही सोहन को हमारे यहां भेजा है। गप्पु पहले नहीं उठा, लेकिन जब उसको पता चला की पगला की मां बहुत परेशान है। तो वह तुरंत अपनी चार पाई से, उठ कर अपने घर के बरामदा में आया। क्योंकि वह भी पगला की मां का बहुत अधिक सम्मान करता था। और उसने बाहर उदास बैठे सोहन को देखा, और वह समझ गया, की जरूर कुछ गड़ बड़ हुआ है। उसने सोहन से कहा की चल ददुआ से पुछते हैं। इसके बारे में मुझ को कुछ भी पता नहीं है। क्योंकि हम दोनों कल शाम को ही जंगल वापिस चले आये थे। इस तरह से सोहन उसके साथ ददुआ के पास पहुँचा। और ददुआ अपने घर के बाहर ही सो रहा था। उसको जगाता है, और गप्पु ने उससे पूछा की क्या तुम जानते हो? पगला अभी तक घर नहीं आया। ददुआ ने गप्पु से कहा तुम पागल हो गये हो, मैं तो तुम्हारे साथ ही जंगल से आ गया था। और रात भर हम दोनों नौटंकी देखा था। इसलिए मैं अभी तक सो रहा था। तुम ने मेरी नींद खराब कर दी जाओ यहां से, इस पर सोहन ने कहा की मेरी मां बहुत अधिक परेशान है, पगला भैया के बारे में सोच कर, और हम भी परेशान हो रहे है। मैं उससे क्या कहूँगा? इस पर गप्पु ने कहा चल गुरु जी के पास चलते है। रविवार है वह आज घर पर ही होंगे, वह अवश्य कुछ बतायेगें। इस तरह से वह तीनों ददुआ, सोहन और गप्पु एक साथ अपने गुरु जी के पास पहुँचे। और उसको सारा समाचार बताया की पगला अभी तक घर नहीं आया है, दोपहर होने वाली है। वह अध्यापक जो पगला के पिता का मित्र था। जिसने वह जहर भेजा था, ददुआ के हाथ से, उसने सुनते ही अविश्वास भरी दृष्टि से देखते हुए, कहां पगला घर नहीं आया। तो कहां गया? कहीं जंगल में किसी जानवर ने तो नहीं उसको मारा दिया। चल वह सीधा उठा और पगला के घर आकर पगला के पिता से मशवरा करने लगा। कुछ ही देर में यह समाचार पूरे गांव में जंगल की आग की तरह से फैल गई, की पगला जंगल में कहीं गायब हो गया है। कुछ लोग कहने लगे की उसको किसी जंगली जानवर ने मार कर खा लिया है। इसके साथ ही धीरे - धीरे पगला के घर के सामने गांव वालों की भीड़ जूटने लगी। उसी भीड़ में से किसी ने अपने मोबाइल से पुलिस को 100 नंबर पर फोन कर के सूचना दे दी। कि पगला नाम का एक लड़का पहाड़ पर शाम को घूमने गया था। अभी तक वापिस नहीं आया। लोगों को शक है, की उसको किसी जंगली जानवर ने मार कर खा लिया। यह सब सुन कर पगला की मां का जैसे सीना ही फट गया। और उसका कलेजा उसके हृदय से बाहर आने लगा। वह दहाड़ें मार कर रोने लगी, पूरे गांव में हाहाकार मच गया। और चारों तरफ मातम जैसा सन्नाटा छा गया। यह सब होते - होते शाम के 3.30 बज गये। तब तक पुलिस आ गई, और वह जंगल में अपने साथ गांव वालों को लेकर पगला की तलाश करने के लिए निकल पड़ी। पहाड़ जंगल की तलाश करते - करते उन को शाम हो गई। लेकिन उनके हाथ कुछ भी नहीं

आया। शिवाय लोटे के जिसमें वह जहर का घोल रस भेजा गया था। जिस को पाते ही, उन सब ने यह मान लिया, की किसी खतरनाक जानवर ने पगला को मार कर खाल लिया है। क्योंकि कुछ समय पहले ही यह बात उठी थी, की एक आदम खोर शेर है, जो कुछ जंगली चरवाहों पर हमला किया था। अंधेरा होने लगा था। और उन सब ने कहा की आज यहां से सब लोग चलो, कल सुबह आकर आगे और अंदर जंगल में तलाश करेंगे। क्योंकि वह भी भयभीत हो गये थे। कहीं उनके उपर भी शेर हमला कर सकता है। इस लिये धीरे - धीरे भीड़ वहां से छिटकने लगी। अंत में पुलिस वाले भी पगला के पिता और विद्यालय के अध्यापक के साथ गप्पु, ददुआ सभी को लेकर वापिस गांव आ गये। क्योंकि सर्दी का मौसम था। जिसके कारण अंधेरा जल्दी ही हो जाता था, और सब अपने -अपने घर के सामने बैठ कर अंगीठी को जला कर पगला के बारे में चर्चा करने लगे। कुछ कहते की वह बहुत अच्छा था। और कुछ कहते थे की वह अवारा था, जो कुछ वृद्ध थे, वह कहते की यह सब उपर वाले की मर्जी है। क्या कर सकते है? एक दिन तो सब को ही मरना है। पगला का पिता भी दुःखी होने का नाटक करता, जब लोग उसके यहां आकर सांत्वना देते तो वह अपनी रुमाल से अपनी आँखों के आशु को पोंछता। सब से अधिक दुःखी तो पगला की मां और उसके छोटे भाई बहन थे। जिनके रोते - रोते आँख फूल गई थी।

इधर जंगल के तालाब में पगला अपनी शरीर को कीचड़ में धंसा पानी के अंदर अपनी साँसों को प्राणायाम की सहायता से रोक लिया था, जिसके कारण उसके शरीर के जहर को मिट्टी ने अपने अंदर खींच लिया। और वह मरने से बच गया। मध्य रात्रि में वह जब ध्यान से बाहर आया, तो वह जिंदा था वह पानी से बाहर निकल कर आया। चारों तरफ जंगल में जंगली कुत्ते, सियार, और भेड़िया रो रहे थे। उसको भी चक्कर आ रहा था। उसने पानी को और पिया, जिससे उसको थोड़ा राहत मिली। वह जंगली रास्ते परिचित था। वह जानता था, की आगे से एक रास्ता जाता है, जो नदी के पास निकलता है। और वह यह समझ गया था, की उसके चाहने वाले उसको मारना चाहते हैं। इसलिए वह गांव में नहीं जायेगा। नदी के रास्ते से चलकर वह शहर में पहुंच सकता है, और वहां से ट्रेन पकड़ कर कही और इन लोगों से बहुत दूर चला जायेगा। यह विचार करता हुआ। उसने पास में पड़ी हुई एक सुखी टहनी को तोड़ कर लाठी के रूप में बनाया और उसको लेकर, नदी कि तरफ निकल पड़ा। कई घंटों तक चलने के बाद उसको सुबह होते - होते, वह शहर में चलने वाली रेलगाड़ी आवाज़ को सुना।

अध्याय 7.

पगला एक पढ़ा लिखा अनपढ़ गवार जाहिल किस्म का मूर्ख आदमी के समान समझा जाता। इसलिए तो कोई उसकी बातों को नहीं सुनता था, और उसको यहाँ संसार में शांति के साथ जीना नहीं आता है,

पगले को हमेशा संसार से शिकायत ही रहती है। यह बिल्कुल सत्य है। इसे वह ही जानता है, कि किस तरह उसने अपने आलस्य और व्यर्थ पूर्ण कार्य को करने में और क्षणिक सांसरिक सुख कि चाह में उसने ने अपने शाश्वत सुख और आनन्द को आग लगा दिया। अब जब वह स्वयं अपनी चिता तैयार कर के स्वयं ही उसमें आग लगा कर बैठ गया। उसके पास अब इतना सामर्थ्य भी नहीं था। कि वह स्वयं को अपनी चिता से अलग कर सके। अब उसे से यह जलने का असहनीय पीड़ा दर्द सहा नहीं जा रहा था। फिर भी वह सब कुछ सह रहा था, उसने लाख चाह कर भी स्वयं को इससे मुक्त नहीं कर पा रहा था। उसकी मजबुरियों और कमजोरियों ने उसको इस कदर जकड़ कर पकड़ लिया था, जैसे सूर्य के प्रकाश को बादल आकाश में ही रोक लेते हैं। और उस प्रकाश को पृथ्वी पर नहीं आने देते है। उसकी विरोधी शक्तियां जिसे वह बादल कहता है। और यहाँ सम्पूर्ण जीवन आहें भरते हुए रोता है। जिस प्रकार से किसी नदी को बांध बनाकर उसके पानी को रोक लिया जाता है। जिस प्रकार से किसी शेर को पिंजड़ा बन्द कर लिया जाता है, बिना उसकी इच्छा के विपरीत, वह लाख प्रयास करता है। मगर वह शेर पिंजड़ा से निकल नहीं पाता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसके जीवन में जैसे कोई प्रकाश ही नहीं है। उसे अपने हर तरफ केवल अंधेरी घाटिया ही नजर आ रही है। उसकी स्वयं की अपनी इच्छा होती है कि वह स्वयं को ले कर किसी अनजाने कंदरा में हमेशा के लिये खो जाए, जहाँ ना ज़ीने कि चाह हो ना मरने का गम हो। वहाँ यह सब कुछ भी नहीं हो। लेकिन यह भी उसके लिये संभव नहीं था, क्योंकि उसका शत्रु उसके ही अन्तर जगत में हर समय विद्यमान रहता था, और वह उसकी सभी गुप्त से गुप्त जानकारी की खबर रखता था। उसके शत्रु से उसका कोई भी गुप्त राज भी छुपा नहीं था। जो आज उसके चारों तरफ संसार विद्यमान है। क्योंकि यह संसार उसको रास नहीं आया। जैसा कि किसी शायर ने कहाँ है कि यह दुनिया यह महफिल मेरे काम की नहीं। या फिर वह स्वयं इस दुनिया और महफिल के किसी का काम का नहीं रहा। वह बिल्कुल बेकार हो चुका हूं। उसका कोई उपयोग नहीं उसे इस संसार में समझ में नहीं आ रहा था, ना ही यह संसार ही उसके लिए किसी कार्य का सिद्ध हो रहा था। इस तरह से उसका इस संसार से कोई संबंध ही नहीं बन रहा वह। उसको वह गीत प्रिय लगता था जिसमें संसार के दर्द कि कराहने की आवाज आती थी। जिसमें उसको आत्मिक ध्वनि सुनाई देती थी। बाकी सब गीत तो उसको फीका- फीका बिना स्वाद के लगते थे। जिसमें उसको कोई रस ही नहीं आता था, ना उसे किसी कार्य से प्रसन्नता का ही अनुभव हो रहा था, ना ही वह किसी से अप्रसन्न ही हो रहा था। वह भरी भिड़ में भी स्वयं को अकेला पा रहा था। ऐसा पगले के साथ ही क्यों हो रहा था, क्या पगला सच में पागल हो रहा था? या उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था। उसे संसार में अपना फायदा क्यों नहीं दिख रहा था? यह संसार उसको ही क्यों रास नहीं आ रहा था? जबकि उसके अतिरिक्त सभी यहाँ संसार में सभी प्रकार का मजा लूट रहे हैं। उसने भी मजा लेने का प्रयास किया। बदले में उसे स्वयं को मजा नहीं आया। उसने स्वयं के सर्वनाश की आधार शिला अवश्य रख दी, जिसके उपर ही आज उसके जीवन का महल खड़ा है। जो धीरे-धीरे धरा साई हो कर गिर रहा था। जिस प्रकार से किसी रेत का महल जिस को ना बनते देर लगती है ना ही बिगड़ते ही। यहाँ उसके

साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। जिससे उसका दिल डुबता जा रहा था। उसके हृदय से बेबस आह निकल रहीं थी। अपनी नाकामियों और अपनी असमर्थता को देख कर उसे आश्चर्य हो रहा था। कि यह सब उसने क्या कर दिया, क्या यह सब उसने स्वयं किया है? उसे स्वयं पर भरोसा नहीं हो रहा था। उसे स्वयं से बहुत भय और आतंक महसूस हो रहा है। या फिर उसके अतिरिक्त कोई उसके अन्दर रहता है। जो उसकी इच्छा के विपरीत कार्य कराता है। जिसका फायदा, सुख और आनन्द वह स्वयं लेता है। उसको उसके साथ नहीं बाटता है, और दुनिया भर के क्लेश पीड़ा अपमान और सांसारिक मूर्खता पूर्ण कर्मों के परिणाम है। वह पगले के सर पर दे मारता है। इस बात में दम है उसने यह अनुभव किया था, कि कोई एक दूसरा जो उससे ताकत वर और बहुत शक्तिशाली है। वह बिल्कुल उसके जैसा ही उसका ही नकल है। लेकिन उसके पास शरीर नहीं है। वह पगले की शरीर में निवास गुप्त रूप से रहता है, पगला कहता है कि उसको खूब याद है। जब वह उसके अन्दर उसके हृदय में प्रकट हुआ था। ऐसा केवल एक या दो बार ही हुआ था। वह कुछ ऐसी बातें पगला से कर रहा था। जैसे वह पगले के जीवन का स्वामी हो, जिसे वह अपना परमात्मा समझ बैठा, उसका हृदय उस समय बैठा जा रहा था। एक समय के लिये तो वह बहुत भयभीत हो गया। कि यह उसके अन्दर से कौन बोल रहा है। क्योंकि उसकी वाणी में शक्ति थी, उसने जो कहा वह उसके तरह से कहा, लेकिन वह पगले से अलग था। क्योंकि पगला अपने आपको जब से जानता है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि उसके अन्दर से वह ही दो रूपों प्रश्न उत्तर किया हो, अपने आप से ही। उसके बाद उसने कई बार उससे बात चित करने का प्रयास किया, जो उसके ही अंदर उसकी दूसरी कापी रहता है। लेकिन वह सफल नहीं हो सका। क्योंकि वह अपनी मर्जी से उसके अंदर प्रकट होता है। और अपनी मर्जी से अदृश्य भी हो जाता है, और वह बहुत संक्षिप्त में बातें करता है। वह शब्द रूप है जो उसके अंदर अचानक प्रकट हो जाता है। उसने जो कहा वह बिल्कुल सत्य उसके साथ सिद्ध हो रहा था। उसने पगला की असमर्थता को पगले के सामने प्रकट किया। पगले ने कहा कि मैं समर्थ हूं, लेकिन उसको यह बहुत समय के बाद ज्ञात हुआ। कि वह उसके भविष्य कि घटना को देखने वाला था। जबकि पगला अपने अतीत को भी अच्छी तरह से देख नहीं पा रहा था। तो अपने भविष्य को कहाँ से देख पाएगा। जिससे वह अपने भविष्य के लिये कुछ अच्छे कदम उठा सके। वह उस पर बहुत मेहरबान था। उसने उस पर कृपा कर के उसके जीवन की सीमा को कुछ समय के लिये बढ़ा दिया है। जब वह उस में प्रकट हुआ तो उसने कहा कि तुम मेरे लिये बेकार हो, मैं तुम्हें मार दुंगा। पगले ने कहा कि मैं आपके काम का बनुगां। लेकिन यही तो उसकी कमजोरी कि मैं वह उसके काम का नहीं बन पाया। यहां तो वह स्वयं के भी काम का नहीं बन पाया। तो उस परमात्मा के काम का कैसे बन पाएगा? उसने ठीक ही कहा है कि वह पगले को मार देगा, और वह अदृश्य आत्मा यह कार्य कर रहा है, रोज वह पगला को मार रहा है। जिसके मार कि चोट का कोई नीसान भी नहीं पड़ रहा है। लेकिन पगला उसको और उसके द्वारा दिये जा रहे हर कष्ट को अच्छी तरह से अनुभव कर रहा था। वह यह भी कह सकता है, कि यह तुम्हारे कर्मों का फल है, जबकि पगला यह मानने को तैयार नहीं हैं। क्योंकि पगला जब से स्वयं को जानता है, प्रारंभ से ही अपने कर्मों में स्वतन्त्र नहीं हैं। पगला

ने समझा कि यह कोई बहुत पहुंचा हुआ तत्व है, जो उसके जैसा ही आदमी है जिसने किसी सूक्ष्म और गुप्त तकनीकी के द्वारा उसके अन्तर जगत में प्रवेश कर लिया है। और- वह उसके जीवन का उपयोग करता है। वह परमात्मा नहीं है। कोई और क्योंकि परमात्मा दयालु और न्याय कारी भी है। जबकि जो आदमी उसके अन्दर उसके साक्षात्कार के समय में आया वह स्वार्थी है और दया हीन उसको लगा। जिससे वह किसी दया या न्याय कि कामना नहीं कर सकता है। वह उसकी बाहरी प्रकृति पर भी अधिकार कर लिया है। उसको यह अनुभव होता है केवल वह ही भयभीत नहीं होता हैं, यद्यपि जो उसकी प्रकृत है जैसे आकाश, पृथ्वी, सूर्य, वायु, जल यह भी भयभीत हो जाते हैं। और वह हमेशा रात्रि के समय भयभीत करता है। इसको केवल पगले ही ने अनुभव नहीं किया उसके साथ उसका बहुत बड़ा परिवार जो हज़ारों कि संख्या वाला है। गांव के और दूसरे लोगों ने भी अनुभव किया है। जैसे यह भयभीत और आतंकित करने कि घटना किसी सूक्ष्म मशीन के द्वारा किया जा रहा हो। वह उन सब के मनो मस्तिष्क पर अधिकार कर लेता है।

एक ऐसी ताकत है जिसका उपयोग केवल अमीर देश या अमीर लोग ही कर रहें हैं। जिसका उपयोग करके किसी भी क्षेत्र में भूकंप, बाढ़, या ऐसी हवावों के साथ तरंगों को फैलाया जा सकता है जिसके प्रभाव में आने के बाद उस क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति या बहुत बड़े समुह पर अधिकार किया जा सकता है। इसका भरपूर उपयोग किया गया है, पगला और पगले के परिवार, रिश्तेदारों को और उसके समाज को भयभीत करने के लिये। ऐसे अमीर आतंकवादी है, जो यह नहीं चाहते है कि लोग सत्य और ज्ञान को उपलब्ध करें। जिसने कर लिया हो, उसके पूरे समुह को ही पुरी तरह से समाप्त हत्या कर उसकी संपत्ति को अपने अधिकार में कर लेने कि योजना बना लिया है। इसमें हमारी सरकार का भी हाथ है यह भी निश्चित है, और इस तकनीकी के साथ आज भी कार्य कर रहे हैं। पगले की खानदान के साथ, उसके गांव के लोगों पर, उसके परिवार के लोगों पर, उसके सम्प्रदाय के लोगों पर, इस तरह कि सूक्ष्म मशीनों का उपयोग करके। उन सब कि हत्या हो रही है, और काम इतनी सफाई से करते है। कि इसका कोई प्रमाण प्रशासन को नहीं मिलता है। यह केवल पगले के जीवन या पगले के परिवार या समाज कि बात नहीं है। यह सभी पर प्रयोग किया जायेगा जो सत्य और ईमानदारी के कार्य में लगे हुए हैं, उन सब कि किसी ना किसी प्रकार से समाज में हत्या हो रही है। जैसा कि पगला की भी हत्या का प्रयास कई बार हो चुका है। पगला अपनी दैवीय शक्ति के प्रभाव से कई बार बच चुका हू। लेकिन वह जो उसके शत्रु हैं, वह उसको किसी भी कीमत पर समाप्त करने के लिये उतारू हैं। इनके जाल बहुत बड़े है। इनके अंडर में दुनिया कि सरकारें चलती है। यह स्वयं को परमात्मा समझते है। और बहुत भयानक तरह से यह सब गुप्त रूप से लोगों का शोषण और लूट पाट के साथ हत्या भी करते है।

यह उन दिनों कि बात है जब पगला अपने गांव में रहता था और उसने एक क्रांतिकारी कदम उठा लिया था, और वह अपना व्यक्तिगत ज्ञान विज्ञान ब्रह्मज्ञान वैदिक विश्व विद्यालय बनाने के लिये कार्य कर रहा था। जिसके आधार शिला को रखने के लिये। मिर्जापुर छानबे क्षेत्र में स्वामी जी भारत के एक बहुत बड़े योगी जि को आमंत्रित किया था, और स्वामी जी अपने नियमित समय पर आयें और उस स्थान का मुआयना भी किया, उसको बनाने के लिये। उन्होंने एक बड़ी रकम को देने का वादा भी कुछ समृद्ध लोगों के सामने किया था। जिससे जनता में एक प्रकार कि लहर व्याप्त हो गई, कि पगले पास बहुत बड़ा मात्रा में धन आ चुका है। सुनने वालों में ज्यादातर लोगों को यह अच्छा नहीं लगा, जिसमें उसके जो सबसे करीबी थे। उन्हें बहुत गहरा दुःख हुआ। वह सब पगले के विपरीत खड़े हो गये। क्योंकि वह सब नहीं चाहते थे कि पगला वहाँ पर किसी प्रकार निर्माण का कार्य कराए। पगले के पक्ष में कोई नहीं था अकसर लोग पगले के खिलाफ ही थे। पगला जि जान से लगा हुआ था कि उसको विश्व विद्यालय बनाना है। उससे जो भी संभव था वह कार्य वह कर रहा था। लेकिन उसके द्वारा जो कार्य किया जा रहा था, वह कार्य किसी मायने से बहुत तुच्छ था। क्योंकि आज के समय में किसी प्रकार का कार्य करने के लिये सबसे पहले धन चाहिए। धन का वादा तो सब के सामने स्वामी जी ने कर दिया। लेकिन समय आने पर वह मुकर गये। अर्थात धन नहीं दिया, जिस को बनाने के लिये पगले सबसे शत्रुता कर ली थी। पगला यह समझता था कि स्वामी जी का पैसा मिल जायेगा, इस तरह से उसका कार्य संभव हो जायेगा। उसका साथ कोई देने के लिये तैयार नहीं हुआ। उस समय उसके पास धन कि बहुत कमी थी। यहाँ तक उसका खाना पीना भी बड़ी मुश्किल से चल रहा था। उसके खिलाफ शुरु से उसके पिता ही रहे, क्योंकि वह किसी भी शर्त पर नहीं चाहते थे। कि पगला उनकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य करें। जबकि पगला सारे कार्य उनके विपरीत ही करता था। वह पगला को देखना नहीं चाहते थे। जबकि पगला वही पर रह कर बहुत बड़े कार्य को सिद्ध करने का प्रयास कर रहा था। इस तरह से सबसे बड़ा शत्रु उसका पिता ही उसके खिलाफ खड़ा हो चुका था। वह एक भी रुपया उसको देने के पक्ष में नहीं था। उसने सारी पुश्तैनी संपत्ती पर एक तरफा अपना अधिकार कर लिया है। यहाँ तक पगले को घर में भी रहने नहीं दिया। गांव वाले कुछ पड़ोसियों के साथ मिल कर पगले पर जान लेवा हमला भी कर चुका है। उसने पगले को समाज में पागल सिद्ध कर दिया था। और सब उसकी बातें मानने लगे। पगले के हाथ और पैर में बेड़ियाँ डालने कि तैयारी चलने लगी। इस बात से सारा समाज परिचित है, कोई भी पगले की एक रुपये से भी सहायता नहीं करना चाहता है। पगले पास खाने पीने रहने कि बहुत भयानक दिक्कत आ चुकी थी। किसी प्रकार से उसकी माँ उसके पिता के चोरी से उसको खाने पीने के कुछ वस्तु को दे देती थी। जिसके लिये उसकी मां को भी अकसर प्रताड़ीत होना पड़ता था। हर तरफ से केवल पगले के शत्रु ही निकल रहे थे।

थोड़ा इससे पहले जैसा कि पगला ने अनुभव किया था। कि उसका पिता बचपन से ही उससे से शत्रुता करता था। उसकी ऐसी समझ है, कि पगला उसका पुत्र नहीं किसी और का पुत्र है जिसके मेरी माँ अपने साथ ले कर आई थी। जिस कारण से वह पगला और उसकी माँ को जान से मारने चाहता था। जब से वह जानने लायक हुआ, वह अपनी जान उससे बड़ी मुश्किल से बचा पाया था। वह हमेशा से बहुत अधिक परेशान सबसे अधिक अपने पिता से ही रहता था। यहाँ तक वह अपने स्वप्नों में भी अपने पिता कि यातना का बहुत अधिक शिकार रहा। जिससे बचने के लिये वह घर को छोड़ कर भाग ने लगा था। जब भी वह उसके साथ मार पीट करता पगला घर छोड़ कर भाग जाता था।

कुछ समय के बाद जब पगला ने अपनी जीवन की यात्रा को प्रारम्भ किया था, और एक दिन एक अनाथालय के अत्याचार से परेशान हो कर, वहां से घूमते- घूमते पास के एक मन्दिर में पहुँचा, जो आगरा छावनी के पास में थी। जहां पर उसने वहां की एक मन्दिर के पुजारी से मित्रता करके उसके साथ रहने लगा और वहीं मन्दिर के पीछे मन्दिर के जहां पुजारी की समाधि स्थली बनी थी, वहां पर वह उस मन्दिर के पुजारी के साथ खाना वगैरह बनाता, और पूजा पाठ करता रहता था। ऐसे ही किसी तरह से रोते गाते जीवन को गुंजार रहा था। कि अचानक एक दिन उस मन्दिर में राजस्थान के कोटा ज़िले के एक बड़ी मन्दिर का एक बाबा पुजारी आता है। जिसकी मुलाकात पगला से होती है। और पगला उस लवकुश बाबा कि बातों के बहकावे में आ जाता है। और उसके साथ मिल कर भांग बूटी को पीने खाने लगता है। और उसका मित्र बन जाता है। लवकुश बाबा एक मोटा तगड़ा काफी शक्तिशाली ताकतवर सनकी किस्म का ब्रह्मचारी साधु बाबा था। जिसने पगला को बताया की उसकी कोटा में एक बहुत बड़ी मन्दिर है। और वह वहीं पर रहता है। और उसने पगला से कहा की तुम भी मेरे साथ चलो, और हमारी गाड़ी को चलाना। पगला ने कहा कि मैं तो गाड़ी चलाने नहीं जानता हूं, तो उसने कहा कि कोई बात नहीं, मैं तुम्हें बहुत जल्दी सीखा दुंगा। इसके बाद जब वह अपने मन्दिर पर वापिस जाने लगा, तो वह अपने साथ पगला को भी अपना एक कुरता पहना कर और एक धोती के साथ एक पगड़ी उसके सर पर बांध कर अपना चेला बना कर वहां से चल पड़ा, और आगरा के एक छोटे से स्टेसन पर आकर गाड़ी के इंतजार में बैठ गये, उस समय दोनों भांग के नशे में मस्त थे। काफी देर वहीं पर एक रेल्वे की जो लोहे की ठेलिया होती है, उस पर बैठ कर तरह -तरह की खयाली पुलाव वाली बातें करने लगे। कुछ देर में शाम के 7 बजे एक पैसेन्जर ट्रेन आ जाती है। जिसमें दोनों घुस कर बैठ जाते हैं। लवकुश बाबा किसी तरह से लोगों की भीड़ में अपने लिए सीट की व्यवस्था कर करके बैठ जाता है। और पगला भी सामने वाली सीट पर किसी तरह से स्वयं को व्यवस्थित कर लेता है।

जब ट्रेन वहां रेल्वेस्टेसन से चलती है, तो लवकुश बाबा लोगों से धार्मिक बहस छेड़ देता है। और लोगों को तरह -तरह के चौपाई और सुन्दर काण्ड, हनुमान चालीसा का पाठ सुनाने लगता है। जिससे

पगला काफी देर तक सुनने के बाद बाबा से कहता है कि मुझे निंद आ रही है। मैं वहां उपर जहां पर ट्रेनों में सामान रखा जाता है। उस तरफ एक खाली स्थान को दिखाते हुए कहता है। कि वहां सोने के लिए जा रहा हूं। इस तरह से पगला वहां से उपर जा कर सोने का प्रयास करने लगता है, और कुछ देर में सो जाता है।

कुछ एक घंटे में बोगी में अचानक शोर गुल होने लगता है। जिसके कारण पगला की आंख खुल जाती है, और वह नीचे ट्रेन की बोगी में जब देखता है, तो पाता हैं कि लोग लवकुश बाबा से झड़प रहे थे। और गालि गलौच कर रहे थे। पगला तुरन्त अपने स्थान से नीचे उतर कर लोगों को रोकने का प्रयास किया, लेकिन कहां भीड़ मानने वाली थी। किसी तरह से कुछ समय में भिड़ ने अपने डिब्बे से लवकुश बाबा के साथ पगला को भी निकाल बाहर करके लोग धीरे -धीर शांत होने लगे। जिसके बाद पगला लवकुश बाबा के साथ बोगी के दूसरी तरफ जा कर बैठ गया, जहां कुछ देर तक सब कुछ शांत रहा, फिर पगला क्या देखता है, कि लवकुश बाबा सामने सीट पर बैठी एक महिला के पैर को पकड़ कर वह कहने लगा, कि मुझे माफ कर दे, वह मना कर रहीं थी लेकिन वह बार - बार ऐसा ही कर रहा था। जिसके कारण वह औरत बोगी में चिल्लाने लगी कि यह आदमी मुझे बहुत देर से परेशान कर रहा है। जिसके कारण बोगी के सारे आदमी एक बार फिर एकत्रित होकर गली गलौच और लवकुश बाबा को मारने लगे, जिसके हाथ में जो आया उसी से मराता था। पुरी बोगी में हंगामा मच गया था। जब पगला ने मना करना चाहा तो दो चार हाथ उसको को भी पड़े गये थे। जिसके बाद लोग लवकुश बाबा को ट्रेन से नीचे फेंकने के लिये आमद हो गये। ईश्वर कि कृपा थी तभी ट्रेन ने अपनी रफ्तार को कम दिया, और कुछ ही देर में एक जंगली स्टेशन पर जा कर खड़ी हो गई, और लोगों ने धक्का मार कर लवकुश बाबा और पगला को ट्रेन से बाहर धकेल दिया। और कुछ ही मिनट में ट्रेन ने रेल्वे स्टेसन को छोड़ दिया, इस तरह से हम दोनों रात के करिब बारह बजे वहां एक में जगंली स्टेसन पर खेड़े थे। उस समय बाबा काफी अधिक नशे में था। पगले ने उससे कहा चलो स्टेशन मास्टर के पास चलते है, और वही पर आराम करते है। जब कोई दूसरी ट्रेन आयेगी तो हम उसमें बैठ कर आगे के लिए चलेगे। इसके साथ हम दोनों वहां से टिकट मास्टर के आफिस के पास आ गये। वह बहुत छोटा सा पहाड़ी जंगली स्टेशन था, वहां पर एक छोटा सा प्रतीक्षालय भी था। और टीकट मास्टर के आफिस के सामने दो लकड़ी का ब्रेन्च दिवाल से लगी हुई थी। जिसमें से एक पर जा कर लवकुष बाबा अपने बैग को अपने सर के पास रख कर अपनी टांग को फैला कर बेधड़क सो गया। और कुछ ही देर में खर्राटे भरने लगा। लेकिन पगला को निंद नहीं आ रही थी, पता नहीं क्यों पगला कुछ अनजाना भय जैसा लग रहा था। वहां सिवाय एक टीकट मास्टर के कोई नहीं था। और वह स्टेशन मास्टर भी अपनी केबिन में अन्दर आराम कर रहा था। चारों तरफ सन्नाटा और सांय- सांय कर रहा था। केवल प्लेट फार्म पर कुछ लाईट जल रही थी। और एक बत्ती स्टेशन मास्टर के केबिन में जल रही थी। और इसके अतिरिक्त चारों तरफ घनघोर अंधेरा था। कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। वहां पानी

भी नहीं कही दिखाई दे रहा था। उस समय पगला गला प्यास से सुख रहा था, फिर भी पगला ने अपने मन को मार कर किसी तरह से रात को बिताने का प्रयास कर रहा था।

तभी अचानक वहां पर बाहर से एक आदमी लम्बा सा दुबला पतला, फिर भी शरीर से कसा हुआ था एक आदमी आ टपका, और सीधा पगला के पैरों के पास बैठ कर पगला से बातें करने लगा। पहले तो अपनी जेब से बिड़ी निकाला और उसको जला कर पीने लगा। फिर कहता हैं कि मेरी पत्नी मर गई है। इस समय केवल मेरे दो लड़के और एक लड़की हैं। जो मेरी बात नहीं सुनते है। उन पर मुझे बहुत क्रोध आता है। मैं क्या करुँ मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है, बाबा मुझे इसका कुछ समाधान बताओ। पगला ने कहा धैर्य से काम लो सब ठीक हो जायेगा। फिर उसने पगला से पूछा कि आप कहां से आयें हैं? और यहां पर कैसे आ गये? जिस को पगला ने उसको सब कुछ सच- सच बता दिया। जिससे वह बहुत ही जल्दी क्रोधित हो गया, और कहा की मैं इस इलाक़े का पुलिस इस्पैक्टर हूं, अभी कल रात को ही यहां रेल्वेस्टेसन पर एक आदमी की हत्या कर के उसका सारा सामान लूट लिया गया है। मुझे शक है कि वह कत्ल तुम लोगों ने ही किया है। और तरह तरह से धमकाने लगा। पगला ने उसको बहुत कहा ऐसा नहीं हैं। फिर वह पगला को धमकाने लगा। जिसके कारण उसकी रूह भय और आतंक से कांपने लगी, वह बार - बार लवकुश बाबा की तरफ देखता था और मन में यहीं सोचता था, कि इस कमीने ने मुझको इस जंगल में लाकर किस मुसीबत में फंसा दिया। और लवकुश बाबा इस सब से बेखबर गहरी निद्रा में बेधड़क हो कर अपना घोड़ा बेच कर सो रहा था। पगला ने उसको जगाने का प्रयास किया, कई बार मगर हर बार ही वह विफल रहा। अन्त में वह लम्बा आदमी जो स्वयं को पुलिस का दरोगा कहता था, और पगला और लवकुश बाबा दोनों को हत्यारा बता रहा था। उसी ने लवकुश बाबा को निंद से जगा कर उससे पूछ ताछ करने लगा, और उसने ही लवकुश बाबा को बताया की कल बिती रात को यहां रेल्वेस्टेसन पर एक आदमी को मार कर उसका सारा समान लूट लिया गया था। मुझे शक है, कि कल रात की हत्या तुम दोनों ने ही की है। चलो खड़े हो जाओ तुम दोनों को अभी पुलिस स्टेसन चलना होगा। लवकुश बाबा नशे में आखें मलते हुए निंद से उठ कर बैठ गया, और बड़े तेज से उसको डांटते हुए कहा कि तुम क्या बकवास कर रहे हो? हम दोनों आगरा से आ रहे हैं। हमको हमारी ट्रेन से यात्रीयों ने हम से झगड़ा कर यहां के रात्रि में उतार दिया है। और हम यहां पर अपनी रात बिताने के लिए यहां पर आराम कर रहे है। दुसरी ट्रेन आते ही हम यहां से कोटा के लिए से प्रस्थान कर जायेंगे।

फिर उस दरोगा ने कहा साले झूठ बोलता है। हर चोर जब पुलिस के द्वारा पकड़ा जाता है, तो यही कहता है कि मैंने चोरी नहीं किया है। अभी ले चल कर थाने में जब हम तुम दोनों की धुलाई करेंगे, तो सब कबूल कर लोगों। मुझे चोरों और कातिलों का लम्बा अनुभव है। मुझे क्या तुम उल्लू समझते हो? इस पर लबकुश बाबा थोड़ा नरम होते हुए कहा साहब हमने जैसा आपको पहले बताया की हम यात्री हैं। और

दूसरी ट्रेन से आगे अपने सफर पर चले जायेगें, हमारा इस हत्या से कोई संबंध नहीं हैं। दरोगा ने कहां तुम सब फिर यहां रात को क्यों उतरें जब तुम्हारे पास आगरा से कोटा का टिकट है? तो तुम्हारा यहां रात्रि के समय इस रेल्वेस्टेसन पर उतरने का क्या कारण हैं?

फिर पगला ने दरोगा को सब कुछ साफ -साफ बताया कि ट्रेन में क्या हुआ था? जैसा कि लवकुश बाबा उसकी बातों से सहमत नहीं था। तो उस दरोगा ने कहा कि मुझे तो इसकी सकल से ही लगता हैं, यह तो एक नंबर का हत्यारा दिखाई पड़ता हैं। अभी मैं टिकट मास्टर से आज्ञा लेकर तुम को यहां से लेकर चलता हूं। इसके साथ वह दरोगा अपनी सीट से उठा और सीधा टिकट मास्टर के केबिन में चला गया। और उससे कुछ समय तक उसके केबिन में ही बात किया, फिर वह दोनों कमरे से बाहर आये। और एक बार पुनः नये सिरे से दोनों से जांच पड़ताल हत्या की करने लगे, पगला और लवकुश बाबा से बारी -बारी बात की। पगला की तो जान सकते में आ गई, उस समय पगला को कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। कि उस भयानक डरावनी रात में क्या किया जाये? वह दोनों यह सिद्ध करना चाहते थे कि पगला और लवकुश बाबा ने ही हत्या की है। और वह दोनों इसको कबूल करके उनके साथ पुलिस स्टेसन पर जाये। और उन दोनों ने हर प्रकार से यह सिद्ध करने का प्रयास किया, की वह दोनों निर्दोष है। अन्त में वह दरोगा अपनी शक्ति का प्रयोग करने लगा और लवकुश बाबा को ज़बरदस्ती वहां से ले चलने के लिए सीट पर घसीट कर उतारने लगा। लवकुश बाब उससे अधिक शक्तिशाली था। वह तुरन्त लड़ने के लिए तैयार हो गया और दोनों में हाथा पाही होने लगी। इस प्रकार से दोनों वहां रात्रि में प्लेटफार्म पर दो बैलों के समान द्वंद्व युद्ध छेड़ दिया, और टिकट मास्टर यह सब कुछ देख रहा था। पगले के साथ बैठे कर दोनों समान ताकत वर थे दोनों में खूब पटका पटकी और मार-पीट होने लगी, दोनों ने एक दूसरे को कस कर पकड़ लिया। और वह किसी शर्त पर छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे। अन्त में टिकट मास्टर ने बिच बचाव करते हुए उनके द्वंद्व युद्ध को छुड़ाने का प्रयास किया, और कुछ देर में दोनों शांत हो गये।

फिर उस दरोगा ने टिकट मास्टर से कहा कि आपके पास और जो आदमी हैं। उसको तुरंत यहां पर बूला लिजिये, टिकट मास्टर ने अपने वायर लेस से पास में फाटक बन्द करने के लिए एक कर्मचारी था। उसको अपने पास बुला लिया। जब वह आदमी आ गया तो उस दरोगा ने उस कर्मचारी और टिकट मास्टर को सख्त आदेश देते हुए कहा आप दोनों इन दोनों पर नजर रखे। और इन को यहां से भागने मत देना, मैं अभी जाता हूं और अपने थाने से कुछ आदमी को लेकर आता हूं। फिर इन सालों को मजा चखाते हूं। इनके अपराध का, इस तरह से वह टिकट मास्टर और उसका साथी कर्मचारी पगला और लवकुश बाबा की निगरानी करने लगे, और वह दरोगा स्टेसन से बाहर चला गया।

इधर टिकट मास्टर और उसका साथी कर्मचारी पगला और लवकुश बाबा दोनों के तरह से समझाने लगा, कि वह दोनों अपने अपराध को स्वीकार कर ले, अन्त में उन दोनों ने टीकट मास्टर से कहा साहब हमने आपको पहले बता दिया है, कि हमने किसी की हत्या नहीं की है। हम दोनों ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। और हमें ट्रेन के यात्रियों ने हम से झगड़ा करके ट्रेन से बाहर इस स्टेसन पर उतार दिया। आप हमारी बातों पर भरोषा कीजिये उन्होंने कहां तुम दोनों पक्का अपराधी हो, हम तुम्हारी कोई सहयाता नहीं कर सकते हैं। ऐसे ही पूंछ ताछ में रात्रि के एक डेढ़ बज गया। फिर वह दरोगा अपने साथ पास के गांव में के करीब पचास आदमी जो आदिवासी किस्म के थे। सब के पास अपना हथियार था, जैसे भाला, बरछा, गड़ासा, कुल्हाड़ी, लाठी, डन्डा इत्यादी उनमें से कुछ अधेड़ उम्र के थे, और कुछ जवान लड़के थे। वह चिल्लाते हुए रेल्वेस्टेसन के अन्दर घुसे पुरे स्टेसन परिसर में उनके शोर गुल कोलाहल से रात्रि में बहुत भयावह प्रतीत हो रही थी। वह कह रहे थे, पकड़ो सालों को कहां है? इन को यहां मार कर काट कर फेंक देंगे।

यह सब देख कर और उनकी भाषा को सुन कर हीं पगला को तो प्राण सूखने लगा। वह आते ही एक बार फिर से जांच पड़ताल उन दोनों से अलग - अलग करने लगे। और दोनों की बैग को बारीकी से छान बिन किया। और उसमें जो भी काम का सामान मिला उसको ले लिया। जैसा पैसा रुपया इत्यादि केवल उन दोनों के कपड़े को छोड़ कर। और एक बार फिर वह सब मिल कर मार पीट करने लगे और लवकुश बाबा को रेल्वेस्टेसन से बाहर ले जा कर उनकी काफी धुलाई करने लगे, उसके कपड़े को फाड़ दिया। पगला उनमें से जो कुछ अधेड़ उम्र के थे, हाथ पैर पकड़ कर बिनती किया, की हमें ना मारे पीटें तो वह किसी तरह से उसकी बातों को मान गये। और अन्त में उन को पगला की बातों पर भरोसा हो गया कि इन्होंने ने कोई हत्या नहीं की हैं। और वह दोनों सच में यात्री हैं। इस तरह से रात्रि से सुबह के चार बज गए और एक ट्रेन कोटा के लिए आने का समय हो गया। और किसी तरह से पगला ने उनसे अपनी जान को बचाया ले देकर अर्थात बाबा के पास जो रुपया और अच्छे -अच्छे कपड़े थे, वह सब उन को दे दिया। अन्त में बाबा ने अपने कपड़ों को जो फट गये थे, उन को निकाल कर दूसरे अपने अच्छे कपड़ों को पहना, और पगला ने अपने पुराने उसी पैंट सर्ट को पहन लिया। और जब ट्रेन रेल्वेस्टेसन पर रुकी वह तुरंत भाग कर उसमें बैठ गये। तब जा कर कहीं उनकी जान में जान आई, उस समय ट्रेन काफी खाली थी इस तरह से उन दोनों को ट्रेन में सोने के लिए सीट मिल गई। और पगला उस सीट पर पड़ते ही सो गया। यह ट्रेन करीब दिन बारह एक बजे कोटा रेल्वेस्टेसन पर पहुंची, तब पगला को लवकुश बाबा ने जगाया और कहा चलो यही पर हमें उतरना हैं। हमारा स्टेसन आ गया है। इस तरह से वह दोनों कोटा रेल्वेस्टेसन से बाहर निकले, और वहां से पगला लवकुश बाबा के साथ एक बस में सवार हुआ। जो कुछ दुर के बाद एक बस स्टाप पर जा कर खड़ी हुई, जहां पर लवकुश बाबा गया एक मेडिकल की दुकान से आल्पोज की कुछ टैब्लेट को लिया और उसमें से कुछ खा लिया, और बहुत सारे टैब्लेट के पत्तों को अपनी जेब में ठुस लिया। उसको यह बहुत देर के बाद पता चला की यह नशे की गोली है। जिसका सेवन लवकुश बाबा करता था। जिसमें

से कुछ मंडेक्स की गोलिया भी होती थी। जिसके बारें में पहले पगला ने सुन रखा था। हमारे गांव के जो राघव के भाई थे वह इस गोली का अकसर नशे के लिए प्रयोग करते थे। इस तरह से वह दोनों कोटा से शाम के वक्त लवकुश बाबा के मन्दिर तक पहुंच गये। वह मन्दिर सच में काफी बड़ी और पुराने जमाने की कीले नुमा मन्दिर थी। एक बहुत बड़ा दरवाजा पत्थर का बना था। जिसमें पगला ने लवकुश बाबा के साथ मंदिर में प्रवेश किया, जहां पर उसकी मुलाकात लवकुश बाबा के गुरु से हुई, जो एक लम्बा तगड़ा एक काला डाढ़ी वाला आदमी था। जो मन्दिर का मुख्य पुजारी था। और स्वभाव से भी काफी सरल था।

जिस मन्दिर में लवकुश बाबा अपने गुरु के साथ रहता था, वह बहुत पुरानी राम सिता की मन्दिर थी। जो कोटा शहर के एक छोटे से कस्बा में विद्यमान हैं। जो कोटा शहर से लगभग पचास साठ किलोमीटर दूरी पर है। उस मन्दिर की बनावट पुराने जमाने कि थी, जैसे किला वगैरह बनते थे, कुछ इस प्रकार कि थी। जो दो तल्ले की थी। पहला महला जो था। उसमें एक बड़ा सा हाल था। जिसमें तुड़ा वगैरह रखा जाता था। दूसरे महले पर एक तरफ पर मन्दिर और पुजारी के रहने के लिए कमरे थे। पीछे एक आंगन और एक कमरा रसोइ का था। और छोटे - छोटे कुछ एक कमरे थे एक गुप्त कमरा भी था, जिसका दरवाजा मन्दिर के अन्दर जहां पर राम सिता हनुमान की मूर्ती थी ठीक उनके पीछे से खुलता था। वह भी केवल एक झरोखा था पुरा दरवाजा नहीं था। उसी में से लवकुश बाबा का गुरु आता जाता था। कभी-कभी जरूरत पड़ने पर उस में कुछ गुप्त सामान रखे थे। जैसे तलवार इत्यादि। वहीं दूसरी तरफ पूरब में मन्दिर से थोड़ा हट कर दूसरे महले पर ही एक विशाल पीपल का वृक्ष भी था, उसके चारों तरफ कुछ कमरे और उनसे लगा हुआ आगे बरामदा था। जिसमें पत्थर के नक्काशी दार खम्भें लगे हुए थे। जिसमें एक जुनियर हाईस्कूल स्कूल चलता था।

इस मन्दिर के नीचे महले के पूरब और उत्तर से सट कर दो सड़के गुजरती थी अर्थात मंदिर एक चौराहे पर थी। जिसके कारण ही मन्दिर के पूरब और उत्तर तरफ दोनों तरफ दुकाने बनाकर जो पचासों की संख्या में थी। उन को किराये पर दे रखा था। जो आमदनी का बहुत बड़ा जरिया था लवकुश बाबा और उसके गुरु के लिए। इसके अतिरिक्त मन्दिर के दक्षिण तरफ सट कर कुछ एकड़ मन्दिर की खाली जमीन थी जिस को एक किसान को दे रखा था। जिसमें वह तरह - तरह के हर मौसम की हरी सब्जियों और हर प्रकार के खाने के अनाज को पैदा करता था। और रोज मन्दिर में नियमित रुप से लवकुश बाबा और उसके गुरु के खाने के लिए पहुंचवाता था। इसके अतिरिक्त मन्दिर में काफी मात्रा में लोग मन्दिर में दर्शन करने के लिए आते थे। और बाद में लवकुश बाबा और उसके गुरु से मिलते थे, प्रणाम करके उसके पास बैठते थे। एक छोटा सा कमरा था। जो मन्दिर से सट कर था जिसमें दो विस्तर लगे थे। पश्चिम में गुरु का और पूरब में लवकुश बाबा का था जिस पर प्रायः दोनों अपने -अपने आसन पर बैठते थे। वहां जितने भी लोग आते थे सब नशेड़ी किस्म के लोग होते थे। जिसके कारण वहां दिन भर चिलम पर चिलम चढ़ती रहती थी। और

गांजा भांग पर्याप्त मात्रा में मन्दिर में रखा गया था। अर्थात बोरे में भर कर रखा जाता था। इसके अतिरिक्त वहां पर शाम को लवकुश बाबा अपने लिए विशेष रुप से एक बड़ा मग भर के भांग को घोटा बनाता था, जिसमें वह एक पाव बादाम जो पहले से भिगो कर रखता था उसको पीस कर सिल बट्टे पर भांग में मिलाता था। ऐसा रोज सुबह शाम करता था। और उसको पिता था इसके कारण ही वह मोटा तगड़ा साड़ के समान था। वह बहुत क्रोधी और झक्की किस्म का आदमी था।

मन्दिर के उत्तर में एक जहां पर सामने कि तरफ दुकानें थी पीछे की तरफ काफी जगह खाली थी। जहां पर रात्रि के समय में दिवाल पर एक सो फिल्म चला करती थी। जिस को पगला उपर छत पर से बरामदा में बैठ कर खिड़कियों से देखा करता था। पगला का वहां पर काम था खाना बनाना और बर्तन वगैर साफ करना। जहां पर तीन आदमियों का खाना बनता था। लवकुश बाबा उसके गुरु और पगला के लिये। कभी कभी लवकुश बाबा भी पगला के साथ में होता था। पगला को धीरे - धीरे यह ज्ञात हुआ की वहां सब कुछ नशे में ही होता था। प्रायः पगला भी जमकर नशा करता था। जिसके कारण पगला का वीर्य का स्खलन अकसर होता था । लेकिन लवकुश बाबा और उसके गुरु दिन भर पीते रहते थे, उन को जैसे नशा ही नहीं होता था। गाँजा और भांग का एकाक दिन जब पगला भांग का घोंटा पी लेता था तो पगला का जीना मुश्किल हो जाता था। क्योंकि उसका नशा बहुत ही जबरदस्त होता था जो उसके बर्दाश्त से प्रायः बाहर ही रहता था। इसके पहले भी पगला जब अपने गांव में रहता था। और दिल्ली में भी भांग का नशा करता था। लेकिन उसका नशा इसके समान तेज और भयंकर नहीं था। इसके अतिरिक्त एक गौशाला थी जिसमें कुछ गाय और बछड़ें भी थे, जिन को भी देखना पड़ता था। इसको देखने के लिए और पगला को गाइड करने के लिए प्रायः उसके साथ लवकुश बाबा रहता था। ऐसा ही कुछ एक दिन चलता रहा, पगला सब कुछ करता और अपने स्वभाव के अनुकूल बोलता बहुत था। जो लवकुश बाबा को अच्छा नहीं लगता था। कई बार वह मुझको डाट कर चुप करा देता था। उसका गुरु बहुत अच्छे स्वभाव का था। उसने पगला को एक दिन बताया कि लवकुश बाबा कई साल पहले यहां नग्न भभूत शरीर पर लगाये हुए घूमते - घूमते आ गया था। और उससे कहा कि मुझे अपना शिष्य बना ले, फिर लवकुश के गुरु ने उसको अपना शिष्य बना लिया, और तब से यह लवकुश बाबा उसके पास ही रह रहता है, लगभग दस पन्द्रह साल पहले की बात है। कई बार पूजा पाठ भी करता था लवकुश बाबा हवन करता तो उसमें सुन्दर काण्ड की चौपाईयों से आहुतिया डालता था। जिसके साथ पगला भी रहता था। लेकिन इस सब के वावजुद पगला उन सब से बिल्कुल प्रभावित नहीं हुआ। पगला की अकसर लवकुश बाबा से बहस हो जाती थी। जिससे वह कभी-कभी बहुत अधिक आक्रोशित और क्रोधित हो जाता था। कुछ समय तक तो उसने अपने आप पर किसी तरह से नियंत्रित रखा, लेकिन एक दिन सुबह-सुबह जब वह अपनी भांग को पीस रहा था। उसकी पगला से किसी बात पर बहस हो गई। जिससे वह बहुत अधिक क्रोधित हो गया और अपने आपा से बाहर हो गया। और भांग बनाना छोड़ कर सीधा पगला की तरफ गाली देते हुए बड़ी तेजी से लपका

और पगला की गर्दन को पकड़ के बड़ी शक्ति से दीवाल पर दबाने लगा। जिसके कारण पगला की तो सांस जैसे बन्द होने लगी। तभी यह यह शोर गुल सुन कर उसका गुरु वहां तत्काल आ गया। और उसको डाटते हुए कहा मूर्ख तू यह क्या कर रहा हैं? क्या इसको जान से मारेगा? उसने कहा हां यह मुझको पागल समझता हैं। इस तरह से उसके गुरु ने पगले की उस शैतान से जान बचाई। पगला की तो हालत गंभीर हो गई थी। पगले ने तुरन्त उसके गुरु से कहा कि मैं तत्काल यहां से जाना चाहता हूं, मुझे यहां से जाने के लिए कुछ किराया दे दीजिये। इसके सिवाय मैं आप सब से कुछ नहीं चाहता, यदी आप नहीं भी देंगे तो भी मैं किसी तरह से यहां से चला जाउंगा। इस तरह से पगला अपना पुराना जो एक पैंट सर्ट था उसको तत्काल पहना और वहां से बाहर निकलने लगा, तो उसके गुरु ने उसको बूला कर पांच सौ रुपये देते हुए कहा ठीक हैं, तू यहां से चला जा नहीं तो वह तुम को मार सकता हैं। मैं जानता हूं कि वह बहुत क्रोधी आदमी हैं । उसको मैंने यहां रखा हैं क्योंकि उसकी मुझको जरूरत हैं। इस तरह से पगला वहां मन्दिर से बाहर निकल कर बाहर चौराहे से एक प्राइवेट बस को पकड़ लिया जो कोटा के लिए जा रही थी।

कुछ एक घंटे में मैं कोटा शहर में आ गया, बस स्टेशन के पास में कई सिनेमा हाल थे। जिसमें दो नम्बर की फिल्में लगी थी उन को देखने के लिए टीकट कटा कर सिनेमा हाल में घुस गया। ऐसा ही दिन भर किया कोटा शहर में जितने सिनेमा हाल थे उनमें घूम-घूम कर सब में फिल्म देखा। अर्थात एक मार्निंग शो दूसरा नून शो और तीसरा मैटनी शो। और अन्त में शाम को कोटा स्टेसन पर पहुंच गया। और वहां से टीकट लेकर आगरा के लिए चल पड़ा। इस तरह से पहली रात फिर ट्रेन में सोने में व्यतीत किया। और सुबह - सुबह वह आगरा छावनी रेल्वे स्टेशन पर पहुंच गया। और वहां स्टेशन से बाहर निकल कर घूमने लगा घूमते-घूमते वह आगरा के ताज महल तक पहुंच गया। और टीकट लेकर ताज महल को देखने चला गया। और काफी समय तक ताज महल का दीदार करता रहा फिर कुछ एक घंटे में उससे बाहर आकर यूं ही वह घूम रहा था। लेकिन उसका दिल अन्दर ही अन्दर से बैठा जा रहा था, क्योंकि जो आने वाला खतरा था उसका कोई समाधान उसके पास नहीं था। कि उसको कहां जाना है और क्या करना? और अपनी जिन्दगी का आगे गुजर बसर कैसे करना हैं? इसी विचार में खोया हुआ वह आगरा के ताज महल को देख कर कुछ एक घंटों में बाहर आ गया। और फिर वहां से रेल्वे स्टेशन पर और वहां से सड़क पकड़ कर कई बार आगरा शहर का पैदल ही भ्रमण किया। और अन्त में थक हार कर आगरा कैंट रेल्वे स्टेशन पर आकर सो गया। वहां कुछ देर के बाद उसको एक पुलिस वाले ने जगाया और उससे पूछा कहां जाना हैं? और वह कहां से आया हैं? शायद वह उसको इस स्टेसन का चक्कर लगाते हुए कई बार देख चुका था। उसने तुरन्त कोटा से आगरा आने का जो टिकट उसके पास था, उसको जेब से निकाल कर दिखा दिया। और उससे बचने के लिए, उसने उससे कहा कि मुझे बंगलौर जाना हैं। उस पुलिस वाले ने कहा

बंगलौर जाना हैं और तुम्हारे पास कोई सामान नहीं हैं। पगले ने कहा मेरा मित्र वहीं पर रहता हैं। वहां जाने पर हमारी सारी व्यवस्था हो जाएगी।

उस पुलिस वाले ने कहा ठीक हैं चलो टिकट ले लो ट्रेन आने वाली है। और प्लेट फार्म पर पहुँचों, इस तरह से पगला ना चाहते हुए भी उस पुलिस वाले से स्वयं को बचाने के लिए, टीकट खिड़की पर पहुंचा और एक टिकट बंगलौर का ले लिया। और वहां से सीधा प्लेट फार्म पर जा कर गाड़ी का इंतजार करने लगा। करीब बारह बजे ट्रेन बंगलौर जाने वाली आ गई। जिसके लोकल डिब्बे किसी तरह से मशक्कत के साथ पगले ने प्रवेश कर लिया। और किसी तरह से रात को व्यतीत करने लगा। कुछ देर में पगले ने किसी तरह से अपने आपको बोगी के गलियारे में व्यवस्थित कर लिया। और निंद ने अपने आगोश में उसको खिंच लिया। जिसका कारण उसकी दिन भर की थकान थी।

इस तरह से वह बंगलौर पहुंच गया, उससे पहले उसको कुछ उत्तर प्रदेश के मजदूर जो वहां पर कार्य करने जा रहे थे उन को उसने अपना मित्र बना लिया। और उनके साथ हो लिया और उन सबसे उसने बहुत अनुनय विनय किया की वह मुझको भी किसी कार्य को अपने साथ ले चलकर वहां पर लगवा दे दें, पहले तो तैयार नहीं हुए मगर उसके बार- बार अनुरोध करने पर वह सब तैयार हो गये। और उसको अपने साथ ले जाने के लिए। इस तरह से वह उन मज़दूरों के साथ बंगलौर उनके रहने के स्थान पर पहुंच गया। वह सब अपने कुछ अपने पुराने आदमियों के पास गये थे। वह सब एक इमारत जो बन रही थी उसमें सैटरिंग का कार्य करते थे। उन सब के लिए एक पार्क के गंदे इलाक़े में टिन के कमरा बना कर दिया गया था जैसा कि प्रायः किसी इमारत में काम करने वाले मजदूर रहा करते हैं। पगला का वहां उन मज़दूरों ने परिचय कराया और अपने साथ रख लिया और उससे कहा की कल सुबह हमारे साथ चलना, और अपने काम के लिए हमारे ठेकेदार से बात करना, यदी वह तुम को काम दे देता है तो ठीक है नहीं तो तुम कहीं और जा कर अपने लिए काम तलाश ले लेना।

अगले दिन सुबह सभी मजदूर सुबह -सुबह खाना वगैरह खा कर वहां से अपने -अपने काम पर चल पड़ें। जो वहीं पास में एक नई इमारत बन रहीं थी उसमें सैटेरिंग का कार्य था। अर्थात ऐसा कार्य जब नई कोई बड़ी इमारत बनती है तो उसमें छत ढालने के लिए जो जैक और सोल्जर इत्यादी लगा कर उसके लिए सपोर्ट तैयार किया जाता है। फिर उसी के उपर छत या पिलर को ढाल देते हैं। ऐसा ही यहां भी था यहां एक बहुत बड़ी इमारत बन रहीं थी। जिसमें हज़ारों आदमी एक साथ कार्य कर रहें थे। उसमें इन्जिनियर और ठेकेदार सब अलग-अलग प्रकार का कार्य करा रहे थे।

जब पगला वहां साइड पर पहुंचा जहां पर इमारत बन रहीं थी, तो पगला ने देखा कि एक बड़ी सी सड़क के किनारे गड्ढे को खोद कर करके उसमें एक इमारत बन रहीं थी। जिसकी पहली मंजिल बन चुकी थी और दूसरी मंजिल को तैयार करने के लिए सैटरिंग कि जा रही थी। पगले को जो मजदूर अपने साथ ले गये थे, उन्होंने उसको बताया कि यह ठीकेदार है, जा कर बात कर लो, जब पगला उसके पास गया और उसको नमस्कार करके के उससे अपनी मजबुरीयों के बारें में कहा की मुझको यहां पर काम करने के लिए दे दीजिये। वह ठेकेदार एक कन्नड़ आदमी था जो हिन्दी बहुत कम समझता था। उसने कहा काम तो मिल जायेगा मगर यहां पर तू रहेगा कहां? क्योंकि यहां तेरे पास ना पैसा हैं और ना ही कोई और साधन है, तू वापिस चला जा तू यहां नहीं रह सकता है। पगला ने कई बार कहा इस पर ठेकेदार ने उससे बार -बार से कहा कि तुम को मैं कहां रह सकता हूं पहले तू अपने रहने की व्यवस्था कर। क्योंकि यहां तुम को कोई जानता नहीं हैं। तेरी गारंटी कौन लेगा? तू किसी का कोई सामान ले कर भाग गया। तो मैं क्या कर पाउंगा? और फिर हम तुम को कहां तलासेगें? क्योंकि किसी के शकल पर तो लिखा नहीं होता हैं कि यह आदमी इमानदार हैं। पगला उस समय बहुत अधिक परेशान होकर बड़ी आशा भरी दृष्टि से उन मजदूरों को देख रहा था। जिनके साथ वहां पर वह गया था, वह मजदूर भी मजबूर थे। वह पगले के लिए कुछ भी करने में असमर्थ थे। इसी बीच पगले की बात को उन मज़दूरों में से एक पुराना मजदूर जो सारे मज़दूरों के मैनेजर का बड़ा भाई था। जिस को लोग वहां पर लम्बु- लम्बु कहते थे। वह था भी काफी लम्बा उसने वहीं अपने स्थान जहां वह काम कर रहा था वहीं से ठेकेदार से कहा कि कोई बात नहीं आप इस लड़के को काम दे दीजिये। मैं इसके अपने कमरे में रख लुगां, और इसकी गारंटी मैं लेता हूं। यह सारे आदमी प्रायः बहुत गरीब और शूद्र किस्म के बेकार अनपढ़ लोग थे। लेकिन इनका हृदय बहुत बड़ा था जिसका प्रमाण एक बार पगला को फिर मिल चुका था।

इस प्रकार से पगला वहां पर उनके साथ सैटरिंग के कार्य में हेल्पर के स्थान पर कार्य करने लगा। जिसमें उसका काम था उन सब का सहयोग करना जैसे जैक और सोल्जर लगाना, और जहां पर कार्य पुरा हो चुका हैं। अर्थात जहां कि ढलाई हो जाती थी और छत कुछ पक जाती थी। तो उसके नीचे से जैक सौल्जर को निकाल कर वहां से लक्कड़ वगैरह को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना और लगाना पड़ता था। उसके साथ और भी बहुत से आदमी कार्य करते थे। और भी बहुत प्रकार के छोटे-छोटे कार्य वहां पर करने के लिये थे। यह कार्य 12 घंटे का था दोपहर में खाने के लिए भी थोड़ा समय मिलता था। फिर रात में लम्बु के कमरे में रहते थे जो टिन का बना था। जिसमें रात्री के समय वही एक लकड़ी का चुल्हा था जिस पर खाना बनता था जिसमें भी पगला थोड़ा सहयोग करता था। वहां बहुत सारे लोग एक साथ रहते थे। एक प्रकार कि स्थाई कालोनी थी जिसमें कुछ लोग अपनी पत्नी के साथ भी रहते थे। जिन्होंनें थोड़ा अच्छा झोपड़ा बना रखा था, बाकी सब साधारण थे। वह सब मजदूर प्रायः सभी मंसाहारी थे जिसमें

पगला अकेला शाकाहारी था इसलिए धीरे -धीरे उन मज़दूरों में उसकी एक अलग पहचान बन गई थी। सभी उसको पंडित-पंडित कह कर बुलाया करते थे, और उसके साथ काफी अधिक सहानुभूति रखते थे।

सप्ताह में एक दिन के लिए छुट्टी हुआ करती थी और यह कार्य रात दिन बराबर चलता था। क्योंकि जो इमारत का मालिक बनवा रहा था वह इसको जल्दी से जल्दी पुरा करना चाहता था। और मजदूर सभी ज्यादा से ज्यादा काम करके नशे और मांश का सेवन करके चौबिस छत्तिस अड़तालिस घंटों तक लगातार कार्य करते थे। कि वह सब ज्यादा से ज्यादा पैसा वेतन में उठा सके। लेकिन पगला के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं था, वह बारह घंटे का कार्य भी बड़ी मुश्किल से करता था। और एक दो बार हफ़्ते में भी नागा कर देता था अर्थात काम करने के लिए नहीं जाता था। वहीं कमरे पर आराम करता रहता था। या फिर मैं बंगलौर शहर में घूमने के लिए चला जाता था। और सिनेमा हाल को तलाश कर उनमें वहीं गन्दी-गंदी फिल्मों को देख कर अपने वीर्य का नाश करता था। (जिसका परिणाम उसके आगे के जीवन के लिये अत्यन्त दुःख का कारण बना जिसके द्वारा ही उसका लगभग सर्वनाश होने लगा) ऐसा ही कई दिनों तक लगभग महीनों तक इसी में बित गए, और पता नहीं चला अकसर लम्बु अपने कार्य पर ही रहता था। वह पगला से नहीं मिलता था इस तरह से ज्यादा बातें पगला से कोई कहने वाला नहीं था। वह स्वतंत्र रूप से जैसी इच्छा होती वैसा करता था। पैसा हर सप्ताह का मिलता था खाने पीने का थोड़ा रुपया काट कर लम्बु का छोटा भाई जो मज़दूरों का मैनेजर पैसा लाकर वह सब को कमरे पर एक दिन जिस दिन अवकाश होता था प्रायः सब को देता था जिसमें एक पगला भी था।

इस तरह से जब पगला के पास पैसे आते तो वह उनका बहुत अधिक बेपरवाही से खर्च करता था। अपनी काम वासना की तृप्ति के लिए, कभी-कभी होटलों में भी खाना खाता था। एकाक बार पुराना फुटपाथ से अपने लिए कपड़ा भी खरीद लिया था। क्योंकि उसके पास एक ही पैंट सर्ट था पहले जिससे उसको साफ करने में काफी दिक्कत होती थी। कभी कभार एकाक महीने में ही साफ करता और नहाता था। वहां पर सभी कन्नड़ बोलते थे और मांस सेवन और शराब पीना लगभग सभी की यहीं आदत थी। ठेकेदार भी काफी शराब पिता था इसलिए वह सुबह प्रायः नशे में ही रहता था और सब को डांट डपट कर ही बातें करता था। जिसके कारण वहां काम का दबाव हमेशा बना कर रखता था। वह भी जल्दी से जल्दी कार्य को पुरा करना चाहते था। यह स्थान बंगलौर का एक गाद्दागली नाम से जाना जाने वाला इलाका था। वहीं से थोड़ी दूरी पर एव बहुत बड़ी इस्कान की मन्दिर भी थी, जिसमें पगला कभी कभार जाता था और बाहर से ही देख कर वापिस आ जाता था। उसका खाली समय काम के अतिरिक्त बंगलौर शहर घूमने में और सिनेमा हालों के चक्कर लगाने में और वहां फिल्म देखने में ही व्यतीत होता था। इसके अतिरिक्त वह खाली सड़को का युं हीं चक्कर लगाता रहता था।

सब कुछ ठीक चल रहा था किसी तरह जीवन की गाड़ी घसीट-घसीट कर चल रही थी, कि एक दिन जब वह पानी लेने के लिए टंकी पर गया था जहां पर लोग प्रायः नहाया भी करते थे। वहीं पर एक कन्नड़ जवान स्त्री भी आया करती थी, वह एक दिन पगला पर नाराज हो गई, और उसको गाली गलौच देने लगी, और अपने पति को बुला लिया, वह भी आकर पगले पर लाला पिला होने लगा। जिससे उसको ज्ञात हुआ कि वह लोग बहुत अधिक क्रोधी होते हैं। और उनमें अत्यधिक नस्ल वाद भी होती है। उनके हाव भाव से वह जान गया कि उन को पगला का वहां पर नहाना अच्छा नहीं लगा। तब तक लम्बु का एक आदमी वहां पर आ गया और वह समझ गया मामला गंभीर होने वाला हैं इसलिए वह पगला को वहां ले कर तुरंत चला गया।

अगले दिन सुबह जब पगला काम करने के लिए साईट पर गया, वहां पर कुछ समय तक तो सब ठीक था फिर कुछ देर में एक आदमी जो उसके साथ था वह पगला से दबा कर काम लेने लगा। वहां पर बहुत अधिक सोल्जर थे जिन को हटाने कार्य वह पगला के साथ कर रहा था। पगला को नीचे खड़ा करके स्वयं उपर खड़ा हो कर काफी तेजी-तेजी से उसकी तरफ सौल्जरों को फेंकने लगा, वह काफी पुराना वहां का आदमी था। जिसके कारण वह कार्य को बहुत फुर्ती से करता था पगला उसके साथ पुरी तरह से सट नहीं पा रहा था। अचानक इसी कार्य में एक सोल्जर पगले के पंजे से फिसल कर उसकी कलाई पर काफी तेजी से गिरा पड़ा, जिसके कारण उसकी कलाई छील गई और उसकी कलाई में काफी अधिक दर्द होने लगा, जो उसकी सहन शीलता से बहुत अधिक था। जिसके कारण वह काफी तेज बच्चों के समान रोने लगा, बच्चों की तरह से और वहां से रोते हुए बाहर निकल आया। और लोग उसको आश्चर्य से देख रहे थे जिसमें प्रायः कन्नड़ ही थे। क्योंकि पगला यह समझा की उसकी कलाई टूट गई हैं लेकिन मेरी कलाई टूटी नहीं थी अन्दुरीनि चोट लगी थी। जिसके कारण पगला ने काम पर जाना बिल्कुल बन्द कर दिया, कुछ एक दिन तक कमरे पर रहा और ऐसे ही शहर में घूमा करता था। किसी दूसरे काम कि तलाश में लेकिन उसको इसमें सफलता नहीं मिली। और अन्त में लम्बु ने पगले के व्यवहार से तंग आकर अपने भाई से कह कर पगला को कुछ रुपया दिला दिया। और बोला की तुम अब अपने घर चले जाओ, तुम यहां पर नहीं रह सकते हो। पगला ने उससे या वहां पर किसी से बिल्कुल बात चित करना बन्द कर दिया था। पगला ने लोगों को पहले से ही लिख कर बता चुका था की अब मैं बिल्कुल बात नहीं कुरुगां और हमेशा मौन ही रहुंगा। वह लोग भी उसकी बातों को मान चुके थे इसलिए पगला से कोई बात करता भी नहीं था। क्योंकि बात करने से कोई समाधान नहीं निकलने वाला था। पगला साथ ही हमेशा ऐसी ही विकराल स्थिती खड़ी होती थी।

इस तरह से पगला एक बार फिर सड़क मुसाफिर बन चुका था, उसका वहां रहना मुश्किल ही नहीं असंभव हो चुका था। सिनेमा हालों का चक्कर लगाया और कुछ एक फिल्म को देखा, और अन्त में वह

बंगलौर स्टेशन पर पहुंच गया, और काफी समय यूं ही बहर रेल्वे स्टेशन पर बैठ कर बिताया। और रात्रि के समय वहां से एक ट्रेन को पकड़ लिया, जो दिल्ली के लिए थी। यह सफर कई एक दिनों का था क्योंकि उसने टीकट नहीं लिया था इसलिए वह एक ट्रेन में सफर नहीं करता था कुछ घंटे एक ट्रेन में यात्रा करने के बाद किसी बड़े स्टेशन पर उस ट्रेन को छोड़ कर किसी दूसरी ट्रेन में सवार हो जाता था। ऐसा करते हुए वह एक दो दिन में नान्देड़ रेल्वेस्टन पर पहुंचा और वहां स्टेसन से बाहर निकल कर शहर की दिवालों पर पोस्टरों को देखता हुआ सिनेमा हाल को तलाश लिया जिसमें गंदी फिल्म लगी हुई थी। और वहीं पर काफी देर तक बैठ फिल्म चालू होने का इंतजार किया और टीकट लेकर अन्दर गया, जब फिल्म पुरी हो जाती हैं तो वह सिनेमा हाल से बाहर निकला और फिर स्टेशन पर पहुंचा और वहां से फिर एक ट्रेन पकड़ लिया, जिस ट्रेन सें वह रात्रि के समय में इटारसी रेल्वेस्टेसन पर नीचे उतर गया। क्योंकि वह ना ही दिल्ली जाना चाहता था और ना ही अपने घर ही जाना चाहता था। क्योंकि दोनों जगह के दर्दनाक यादें अभी उसकी स्मृति में व्याप्त थी। जिस को वह फिर से बार -बार दोहराना नहीं चाहता था। इसलिए वह दिन भर इटारसी शहर में घूमता था, और रात्रि के समय वहीं स्टेशन के बाहर एक छोटा पेड़ था जिसके नीचे काफी धुल धक्कड़ थी। वहीं पर आ कर थक हार कर सो जाता था। ऐसे ही एक दिन वह इटारसी के एक सिनेमा हाल में फिल्म देखने के लिए गया था, जहां पर उसके साथ एक लड़का भी फिल्म उस अश्लील फिल्म को देखने के लिए आया था। जब उसकी उससे काफी बात हुई तो उसको उससे अत्यधिक सहानुभूति हो गई, और वह पगला को फिल्म खत्म होने के बाद अपने साथ लेकर घर गया और उस से कहा तुम मेरे यहां पर ढोरों को चराने का कार्य करना। लेकिन जब वह पगला को लेकर अपने घर पहुंचा तो उसकी मां ने पगला को खाना खिलाया और बोली तुम जाओ किसी और काम की तलाश कर लो, हमारे पास तुम्हारे लिए किसी प्रकार सा काम नहीं है। इस तरह से पगला फिर इटारसी रेल्वेस्टेसन पर आ गया। और किसी मन्दिर या आश्रम की तलाश करने लगा जहां पर वह कुछ दिन रह सके, उस समय उसके पैसे लगभग खत्म हो चुके थे। वहां किसी मन्दिर पर जाने के बाद उसको पता चला की यहां से थोड़ीसी दूरी पर होसंगाबाद है। जहां पर नर्मदा नदी है जिसके किनारे बहुत बड़ी मन्दिर है और वहां पर बहुत अधिक लोग रहते हैं। और जहां पर उसको रहने के लिए जगह मिल सकती है। इस तरह से आज उसके लिये वहां जाना संभव नहीं था क्योंकि उसके पास पैसे किराये के नहीं थे? उसने यह निर्णय किया की मैं कल सुबह ही यहां से पैदल ही चलुगा। और उसने किसी तरह से उस पेड़ के नीचे धुल - धुसर में अपनी रात को बिताया और सुबह - सुबह वहां से होसंगाबाद के लिये निकल पड़ा जो इटारसी से लगभग 18 से बीस किलोमीटर दूरी पर है। जहां पर वह लगभग एक बजे दिन में पहुंच गया। और वहां से सीधा मैं नर्मदा नदी के किनारे गया, लेकिन उसे वहां किसी प्रकार के आश्रय की आशा नहीं लगी। क्योंकि उस दिन कोई विशेष दिन था जिसके कारण वहां नदी किनारे पर काफी भीड़–भाड़ थी। वह वापिस फिर बाजार में आ गया वहीं पर एक पार्क था। जिसमें कुछ समय आराम करने के लिए लेट गया और उस समय उसके पास एक प्लास्टिक की पन्नी थी। जिसमें एक पैन्ट सर्ट के अतिरिक्त एक रजिस्टर और एक पेन थी जिसमें कभी

-कभी वह ऐसे हीं रजीस्टर में अपने दिल में जो भी आता था अपने दुःख और अनुभवों को लिखता रहता था। इस प्रकार से उस थैले को अपने सर से लगा के सो वह गया, हरी -हरी घासों पर जिससे उसको कुछ समय में निंद आ गई।

वही पार्क के पास में एक कबाड़ी की दुकान थी जो वहां पार्क में अकसर घूमने के लिए आता था। पगला की नींद जब खुली तो शाम हो चुकी थी और उसकी मुलाकात वहां पर बैठे कबाड़ी के दुकान के मालिक से हुई। पगला ने उससे बात चित करना शुरु किया और कहा की मुझे यहां पर कोई काम मिल सकता हैं क्या? वह कबाड़ी वाला पेशे से कबाड़ी वाला था और स्वभाव और हाव भाव से पंडित की तरह से दिखता था। उसने पहले पगले के बारें में उससे सब कुछ पूछा कि वह कहां से आ रहा हैं? पगला ने उसकी सांत्वना के लिए कुछ सही कुछ गलत उत्तर के रुप में जवाब दे दिये। उस कबाड़ी ने उससे कहा यहां काम मिलना कोई आसान कार्य नहीं हैं। हां यहां और जब तक तुम को कोई कार्य नहीं मिलता हैं। तब तक तुम मेरे यहां खाना खा लेना और मेरे पास में ही होसंगाबाद रेल्वे स्टेशन है। वहां जा कर सो जाना मैं रेल्वे स्टेशन पर कई लोगों को जानता हूं उनसे बोल दुंगा, जिससे वह तुम को कुछ भी नहीं बोलेगे।

इस प्रकार से पगला उस कबाड़ी के साथ उसकी पास में ही एक छोटी सी कबाड़ी कि दुकान पर पहुँचा, उस दुकान के पीछे उसका परिवार रहता था। जिसमें उसकी पत्नी और उसका एक बेटा और एक उसकी एक लड़की रहती थी। पगला वहीं बाहर उसके साथ उसके गोमती के बगल में एक छोटी सी बेन्च पर बैठ गया। कुछ देर बीतने के बाद उसने अपने लड़के से कह कर उसके लिये कुछ रोटी और सब्जी को मंगाया। और उसने लाकर पगले को खाने के लिए दिया। जिस को पगला ने खा लिया उसके बाद उसने अपने लड़के से कह कर पगला को रेल्वे स्टेशन पर भेज दिया। जहां पर उसके लड़के ने पगला को एक स्थान दिखा दिया, और बोला यही सो जाना, तुम को यहां पर कोई नहीं बोलेगा। पगला साथ ऐसा ही हुआ वह वहां रात भर आराम से सोया रहा, उसके पास कोई भी नहीं आया यह पूछने के लिए कि वह वहां पर क्यों सोया हुआ है। सुबह होने पर पगला फिर कबाड़े की दुकान पर पहुंच गया जहां पर कबाड़ी नहा धो कर अपने सफेद धोती और सफेद आधे बांह की गंजी को पहन कर माथे पर चंदन वगैरह लगा कर बैठा था। जब उसकी निगाह पगला पर पड़ी तो उसने कहा आवो रात अच्छे से बीत गई ना, पगला ने कहा हां। उसने कहा बैठो तुम्हारें लिए चाय मँगवाता हूं, और उसने अपने लड़के से चाय मँगा कर उसको पीने के लिए दिलाया। कुछ एक दिन ऐसा ही चलता रहा, रोज दिन में पगला काम की तलाश में होसंगाबाद शहर में घूमने के लिए चला जाता था। एक दिन ऐसे ही घूमते - घूमते एक सड़क छाप होटल पर पहुंच गया। और उससे काम के लिए कहा, वह एक ऐसा ही सड़क के किनारे ताल पतरी और लकड़ी की झोंपड़ी बना कर बना था। उसके बगल में एक शराब का ठीका था जिससे वह होटल काफी अच्छा चलता था। उस होटल का एक ठिगना सा मालिक था उसने पगला से बात किया और जब पगला के बारें

में सब कुछ जान लिया। तो उसने कहा ठीक है तुम यहां रह सकते हो खाना पीना रहना उसके अतिरिक्त मैं तुम्हें छः सौ रुपये महीने में तनख्वाह के रुप में दे दुंगा। और इस प्रकार से पगला ने कबाड़ी के साथ को छोड़ कर यहां इस सड़क छाप होटल में अपना ठिकाना बना लिया। जहां पर पगला के लिए खाने की कोई कमी नहीं थी। और काम भी बहुत अधिक था वहां मांस को पकाया जाता था, उसको साफ करना, प्याज काटना, बर्तन साफ करना, खाना ग्राहक परोसना बहुत सा कार्य था। उस होटल के पीछे एक नाला था जिसके किनारे पर बैठ कर बर्तन वगैरह साफ करना, और मांस को पकाने के पहले उसको धोना पड़ता था। यह मांस धोने का कार्य पगला को बहुत घटिया लगता था। पगला अतिरिक्त भी वहां पर और भी नौकर थे, वह सब कारीगर थे, वह सब प्रायः कार्य के लिए उससे कहते थे। कि छोटू यह कार्य कर दो थाली लगा दो ,ग्लास पानी रख दो सलाद रखो इत्यादी कार्य होता था। वहां होटल में प्रायः लोग शराब पीने के लिए ही आते थे। और दिन भर शराब ही पीते रहते थे। सुबह से रात्रि बारह बजे तक यह कार्य की धमाल चौकड़ी चलता रहता था। ऐसे ही रात में कुछ सोने का मौका मिलता था वहीं झोपड़पट्टी नुमा होटल में कुछ दिनों में पगला उस कार्य से भी तंग आ गया।

अकसर वहां से स्नान करने के लिए में नर्मदा नदी के किनारे पर जाता था और वहां पर काफी समय आराम करता था, और काफी देर में स्नान करके आता था। जो होटल मालिक और दूसरे नौकरों को अच्छा नहीं लगता था। इसके बारें में उससे कई बार कह चुके थे स्नान करके जल्दी आया करो। पगला यहीं कहता कपड़ा गंदा था उसको साफ करने में देर हो गई। ऐसा ही कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन वह होटल से नर्मदा नदी में स्नान करने गया उसका मन बहुत अधिक परेशान था उसके पास कुछ भी नहीं था सिवाय दश बिस रुपये के वह काफी देर तक नदी किनारे बनी पत्थर की सिढ़ियों पर बैठा रहा और होटल पर ना जाने का फैसला किया। उसने सोचा की आज मैं अपने लिए कोई दूसरा ठिकाना की तलाश करुंगा।

इस तरह से वह वहां नदी किनारे बड़ी-बड़ी मन्दिरों का चक्कर लगाने लगा, और कई मन्दिरों में गया और वहीं पर स्वयं को रहने के लिए लोगों से बात की क्या मैं यहां किसी मन्दिर में रह सकता हूं? और यहीं पर सेवा भाव का कार्य करना चाहता हूं। कई मन्दिरों में जाने के बाद उसे निराशा हुई। वह मन्दिरें प्रायः एक प्रकार से साधु और सन्यासियों के लिये एक प्रकार के आश्रम के समान थी। जो वहां महत्त्वपूर्ण बात थी वह यह थी कि उन मन्दिरों में प्रायः उसी सम्प्रदाय के लोग या साधु सन्यासी ही रह सकते थे। जैसा कि पगला किसी सम्प्रदाय का तो था नहीं और ना ही उनके बारे में उसके पास कोई अधिक जानकारी ही थी। कुछ राम सिता की मन्दिर थी और कुछ हनुमान, कुछ संकर, और कुछ विष्णु आदी देवताओं की हैं। वह सब काफी पुरानी मन्दिरें है जो काफी बड़ी है जहां पर हर प्रकार की व्यवस्था की गई है। वहां पर भी प्रायः नशेणी और गँजेरी किस्म के गुरु शिष्य की परम्पराओं का पालन किया जाता था।

जहां पर प्रायः मठाधिसो के अन्तर गत सारे कार्य किये जाते थे। मन्दिरों को काफी सुन्दर और साफ शुथरा रखने की अच्छी व्यवस्था की गई थी।

लेकिन इन मन्दिरों में पगले को कही रहने का कोई स्थान नहीं मिला, हां यह अवश्य था की वही एक मंदिर में से उसको किसी एक सज्जन मिश्रा जी ने बताया की यहां होसंगाबाद में यहां से कुछ दूरी पर एक आश्रम हैं जहां पर उसके राज्य अर्थात उत्तर प्रदेश वाराणसी के पास के काफी ब्रह्मचारी रहते हैं। यदी वह वहां पर चला जाए तो उसको वहां पर रहने के लिए स्थान मिल सकता हैं। और वहां पर उसकी सारी व्यवस्था हो सकती है। यह सुनते ही उसके हृदय में एक आशा का संचार हुआ और जीवन में एक ज़ीने की ललक फिर पैदा हो गई। उसने उन महाशय से उस आश्रम का पता पूछा और उनका धन्यवाद करके, सीधा उस आश्रम की खोज पर निकल पड़ा उस समय करीब शाम के चार बज चुके थे। वह कई लोगों से रास्ते में पूंछ-पूंछ कर अन्त में उस आश्रम में पहुंच गया। जिसका नाम था गुरुकुल होसंगाबाद, जो नर्मदा नदी के किनारे पर हैं। जिसके बगल से ही रेल्वेलाईन गुजरती हैं।

जब वह आश्रम में पहुंचा तो देखा कि वह गुरुकुलिय आश्रम काफी बड़ा था लगभग 24 एकड़ में फैला हुआ है। जिसमें काफी मनोरम दृश्य थे फल फूल के बाग़ीचे थे और उसमें काफी लड़के पढ़ने के लिए रहते थे वह एक आवासीय विद्यालय था जिस को गुरुकुल कहते थे। उस समय शाम का समय था करीब छः बजने वाले थे। उस गुरुकुल के आचार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी सन्यासी ऋतस्पती जो लाल कपड़ों में थे। वह कुछ लड़को को ले कर वहां पर कुछ साफ सफाई का काम कर रहा थे। वह सीधा उनके पास पहुंचा और बड़े सलीके से नमस्कार करके उनसे वहां अपने आने का कारण बताया, और उसने कहां की मैं इस समय बड़ी मुसीबत में हूं मेरी किसी प्रकार से सहायता करें। उन्होंने उससे काफी बात चित की और उसके बारें में सब कुछ पूछ कर स्वयं को आश्वस्त किया। फिर उन्होंने उससे कहा की यहां पर ब्रह्मचारी रहते हैं। वह पढ़ते हैं और कुछ अध्यापक रहते हैं जो उन को पढ़ाते हैं। तुम यहां पर रह कर क्या कर सकते हो? उसने कहा कि मैं यहां रह कर अध्ययन करुंगा। मुझे यहां पर रह कर पढ़ने का मौका दीजिये, आपकी बड़ी कृपा होगी इस तरह से वह सहृदय सन्यासी ने उसको वहां आश्रम में रहने की अनुमति दे देता हैं। जहां पर उसको खाने की अच्छी व्यवस्था और रहने के लिए एक अच्छा कमरा दे दिया। इस तरह से वह वहां रह कर अध्ययन करने लगा। और वहां की दिन चर्या का हिस्सा बन गया, वहां पर कई सौ ब्रह्मचारी जो लगभग पूरे भारत से आकर अध्ययन किया करते थे। जिन में कुछ उसकी तरफ के भी ब्रह्मचारी थे। जिन से बाद में पगला की काफी अच्छी मित्रता हो गई थी।

जहां तक उसकी शिक्षा का सवाल था पहले जब वह अपने घर पर रहता था, स्नाकोत्तर महाविद्यालय में कुछ एक साल अध्यन के बाद उसके जीवन में आने वालीं व्यवधानो से परेशान हो कर उसको छोड़

कर शहरों और महानगरों में रहने लगा था। और महानगरों में जब वह रहता था तो वह किसी तरह से रजनिश ओशो के बिचारों के सम्पर्क में आ गया था। और उसने जमकर उनकी किताबों का लगातार कई सालों तक खूब अध्ययन किया था। और उनके द्वारा ही ध्यान योग का भी अभ्यास करने लगा था जिसके कारण उसके जीवन पर रजनिश ओशो के बिचारों का बहुत अधिक प्रभाव था। वह बात -बात पर उनके विचारों का और उनके नाम का वर्णन करता था। और उनके उदहारणों के द्वारा अपनी बातों को सिद्ध करने का प्रयास करता था। लेकिन यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ की जिस गुरुकुल में उस समय था वह सब रजनिश के विचार के बिरोधी थे। यह सब प्राचीन ऋषि प्रणीत आर्ष ग्रन्थों को मानने वाले थे। और जिनके संस्थापक महर्षि स्वामीदयानन्द सरस्वती थे। अर्थात वह सब आर्य समाजी हैं, जो ईश्वर को निराकार मानते हैं, और उस ईश्वर का मुख्य निज नाम ओ३म् हैं। इनके मुख्य ग्रन्थ है चार वेद हैं पहला ऋग्वेद दूसरा यजुर्वेद तीसरा साम वेद और चौथा अथर्वेद हैं। इसका साक्षात्कार क्रमशः अग्नी ऋषी, वायु ऋषी, आदित्य ऋषी और अङ्गिरा ऋषि को माना जाता हैं। और यह वेद मानव कृत नहीं माने जाते हैं। यह स्वयं परमेश्वर सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त इसके छः अंग हैं शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द व्यकरण और ज्योतिषी हैं। और इसके उपांग हैं जिन को सब आस्तिक दर्शन मानते हैं जिन में न्याय दर्शन, गौतम ऋषि द्वारा प्रणीत हैं, वैशेषिक दर्शन कणाद ऋषि द्वारा प्रणीत हैं, सांख्य दर्शन जो कपिल ऋषि द्वारा प्रणीत है, योग दर्शन जो पतंञ्जली ऋषि द्वारा प्रणीत हैं। मीमांसा जैमिनी ऋषी द्वारा प्रणीत हैं और वेदान्त व्याष ऋषि द्वारा प्रणीत हैं। इसके अतिरिक्त ग्यारह उपनिषद को यह मानते है। और वैदिक इतिहास के रुप में रामायण, महाभारत को मानते हैं। यह पुराणों को नहीं मानते हैं, और यह मूर्ति पूजा नहीं करते हैं। यह सब यज्ञ हवन करते हैं, इनके अनुसार यहीं प्राचीन भारतीय पद्धति हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित उनका कालजई ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश इनका मुख्य ग्रन्थ माना जाता हैं। इस प्रकार से पगला को इस गुरुकुल में रह कर इन ग्रन्थों को चिंतन मनन करने का समय मिला और सबसे बड़ी बात यह है कि यहां पर आचार्य ब्रह्मचारी लड़कों पर विशेष जोर दिया करते थे। कि वह सदैव लँगोट को पहने और वीर्य का रक्षण करना सीखे, किसी प्रकार से अपने वीर्य का स्खल ना होने दे, जिसके लिये एक निश्चित दिन चर्या बना कर रखी गई हैं। सुबह चार बजे उठना नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर व्यायाम करना स्वाध्याय करना रोज सुबह संध्या करना। फिर नाश्ता इसके बाद विद्यालय में अध्ययन करना, शाम को फिर व्यायाम, संध्या, स्वाध्याय और एकाक घंटे शारीरिक परिश्रम गुरु के लिए करना पड़ता था। जो लगभग सब को करना पड़ता था जो पढ़ने के लिए वहां ब्रह्मचारी के रुप में रहते थे। जो विशेष बात देखने को मिली उसको वहां हर कार्य को करने से पहले वेदों मन्त्रों का गायन करना पड़ता था। व्यायाम के लिए प्रातः कालिन मन्त्र, शांय कालिन मन्त्र सोने से पहले के मन्त्र जिसका निरंतर अनवरत होता था। जो धीरे - धीरे लगभग उसको भी कंठस्थ हो गये। जिनकी संख्या हज़ारों में हैं जो उसको किसी ना किसी रुप में आज भी याद हैं। जैसे कुछ मन्त्रों का उदाहरण यहां पर देता हूं।

प्रातःकालीन के मन्त्र

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ।।
(ऋग्वेद ७.४१.१)

हे ज्ञानस्वरूप ज्ञानप्रद परमात्मन्, हे सकल ऐश्वर्य के दाता प्रभो, हे परम प्यारे सूर्य, चन्द्र आदि सब जगत् के रचयिता अपने भक्तों और ब्रह्माण्ड का पालन करने वाले जगदीश, सब मनुष्यों के लिये आप ही सेवनीय हो। आप ही सब भक्तों को शुभ कर्मों में लगाने वाले और उनके रोग शोक आदि कष्टों को दूर करने वाले और अन्तर्यामी हो। हम आपकी ही स्तुति, प्रार्थना और उपसना करते हैं, अन्य की नहीं।

तमोमयी दोषा हुई व्यतीत, प्रातःकाल की वेला आई, पावन परम पुनीत ।
प्रातः अग्नि अक्षय प्रकाश को, प्रातः इन्द्र वैभव निवास को,
प्रातः वरुण बलनिधि विक्रम को, प्रातः मित्र प्रिय प्राणोपम को,
प्रातः सोम को, प्रातः रुद्र को, भजते भक्त विनीत
तमोमयी दोषा हुई व्यतीत ।।१।।

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजाचिद्यं भगं भक्षीत्याह।।
(ऋग्वेद ७.४१.२)

हे सर्वशक्तिमान्, महातेजस्विन् जगदीश, आपकी महिमा को कौन जान सकता है?आपने सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्रादि लोकों को बनाया और इनमें अनन्त प्राणी बसाये हैं। उन सबको आपने ही धारण किया और उनमें बसने वाले प्राणियों के गुण, कर्म, स्वभावों को आप ही जानते और उनको सुख, दुःखादि देते हैं। ऐसे महासमर्थ आप प्रभु को, प्रातःकाल में हम स्मरण करते हैं। आप अपने स्मरण का प्रकार भी मन्त्रों द्वारा बता रहे हैं, यह आपकी अपार कृपा है, जिसको हम कभी भूल नहीं सकते।

तमोमयी दोषा हुई व्यतीत
प्रातः उग्र शुचि प्रभावन्त का, जयस्वरूप वैभव अनन्त का,
राजा, खल-शासनकर्त्ता का, लोकों दिव्य आदि धर्त्ता का,
मन्यमान सर्वज्ञ सभी का, भग भजनीय देव अवनी का,
सेवनीय आराध्य देव का, हम गाते शुचि गीत,
तमोमयी दोषा हुई व्यतीत

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।
(ऋग्वेद ७.४१.३)

हे भजनीय प्रभो, आप सारे संसार को उत्पन्न करने वाले और सदाचारी अपने सच्चे भक्तों के लिये सच्चा धन ऐश्वर्य प्रदान करते हैं। जिस बुद्धि से आप हम पर प्रसन्न होवें ऐसी बुद्धि हमें देकर हमारी रक्षा करं। सारे सुखों की जननी उत्तम बुद्धि ही है। इसलिये हम आप से ऐसी प्रज्ञा, मेधा उज्ज्वल बुद्धि की प्रार्थना करते हैं। भगवन्, गौ-घोडे आदि हमें देकर हमारी समृद्धि को बढावें और अच्छे-२ विद्वान् और वीर पुरुषों से हमें संयुक्त करें, जिससे हमें किसी प्रकार का भी कष्ट न हो।सर्वप्रणेता प्रेरक भग हे, सत्य वित्त संप्रषक भग हे।दो वरदान हमें प्रज्ञा का, भार वहन कीजे रक्षा का।
गोधन,वाजि सुभग पशुधन से,हमें समृद्ध करो धन-जन से।
हम होवें सम्यक् नृवन्त, बन्धु सुजन नेह-उपवीत॥
तपोमयी दोषा हुई व्यतीत॥३॥

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥
(ऋग्वेद७.४१.४)

हे भगवन्, आपकी कृपा और अपने पुरुषार्थ से हम लोग इस सूर्य के उदयकाल में ऐश्वर्यशाली हों और दिन के मध्यभाग में–मध्याह्न–में ऐश्वर्य से युक्त हों तथा सूर्यास्त के समय (सायंकाल) ऐश्वर्य से युक्त हों। हे परमपूजित, असंख्य धनप्रदाता परमात्मन्, हम लोग देवपुरुषों की उत्तम प्रज्ञा और सुमति में, उत्तम परामर्श में सदा रहें।

हम उत्कर्ष प्राप्ति में इस क्षण, हों भगवन्त, पूज्यवर, भगवन्।
सूर्योदय की वेला पावन, दिव्य सुमतियुत हों हम शोभन॥
देवों की अनुकूल सुमतियुत हों हम दिव्य प्रतीत।
तमोमयी दोषा हुई व्यतीत ॥

ओ३म् भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ॥
(ऋग्वेद ७.४१.५)

दे सकल ऐश्वर्यसम्पन्न जगदीश्वर, जिससे सब सज्जन निश्चय ही आपको पुकारते हैं, आपकी प्रशंसा और गुणगान करते हैं, हे ऐश्वर्यप्रद, आप इस संसार में हमारे अग्रणी, नेता अर्थात् आदर्श, शुभकर्मों में प्रेरित करने वाले हों। पूजनीय देव परमात्मा ही हमारा ऐश्वर्य हो। आपके कृपाकटाक्ष से हम विद्वान् लोग सकल ऐश्वर्यसम्पन्न होकर, सब संसार के उपकार में तन-मन-धन से प्रवृत्त होवें।
सुभग बनें भगवान् हमारे, पथ-दर्शक जीवन उजियारे।
हो जावें सौभाग्यवान् हम, सकल देवजन तुझसे प्रियतम॥
हों धन-धान्यवान् हम भगवन्, करते मुक्त-कण्ठ तव वन्दन।
होवें हम तव कृपाकोर से धन-वैभव के मीत।

तमोमयी दोषा हुई व्यतीत।।

ईश्वर की स्तुति - प्रार्थना – उपासना के मंत्र

ईश्वर की स्तुति - प्रार्थना – उपासना के मंत्र

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

मंत्रार्थ – हे सब सुखों के दाता ज्ञान के प्रकाशक सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता एवं समग्र ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर! आप हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुखों को दूर कर दीजिए, और जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव, सुख और पदार्थ हैं, उसको हमें भलीभांति प्राप्त कराइये।

ॐ हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

मंत्रार्थ – सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व और सृष्टि रचना के आरम्भ में स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाशयुक्त सूर्य, चन्द्र, तारे, ग्रह-उपग्रह आदि पदार्थों को उत्पन्न करके अपने अन्दर धारण कर रखा है, वह परमात्मा सम्यक् रूप से वर्तमान था। वही उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत का प्रसिद्ध स्वामी केवल अकेला एक ही था। उसी परमात्मा ने इस पृथ्वीलोक और द्युलोक आदि को धारण किया हुआ है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सृष्टिपालक, शुद्ध एवं प्रकाश-दिव्य-सामर्थ्य युक्त परमात्मा की प्राप्ति के लिये ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास व हव्य पदार्थों द्वारा विशेष भक्ति करते हैं।

ॐ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

मंत्रार्थ – जो परमात्मा आत्मज्ञान का दाता शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बल का देने वाला है, जिसकी सब विद्वान लोग उपासना करते हैं, जिसकी शासन, व्यवस्था, शिक्षा को सभी मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है, और जिसको न मानना अर्थात भक्ति न करना मृत्यु आदि कष्ट का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप एवं प्रजापालक शुद्ध एवं प्रकाशस्वरूप, दिव्य सामर्थ्य युक्त परमात्मा की प्राप्ति के लिये ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास व हव्य पदार्थों द्वारा विशेष भक्ति करते हैं।

ॐ य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

मंत्रार्थ – जो प्राणधारी चेतन और अप्राणधारी जड जगत का अपनी अनंत महिमा के कारण एक अकेला ही सर्वोपरी विराजमान राजा हुआ है, जो इस दो पैरों वाले मनुष्य आदि और चार पैरों वाले पशु आदि प्राणियों की रचना करता है और उनका सर्वोपरी स्वामी है, हम लोग उस सुखस्वरूप एवं प्रजापालक शुद्ध एवं प्रकाशस्वरूप, दिव्यसामर्थ्ययुक्त परमात्मा की प्रप्ति के लिये योगाभ्यास एवं हव्य पदार्थों द्वारा विशेष भक्ति करते हैं।

ॐ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व: स्तभितं येन नाक: ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

मंत्रार्थ – जिस परमात्मा ने तेजोमय द्युलोक में स्थित सूर्य आदि को और पृथिवी को धारण कर रखा है, जिसने समस्त सुखों को धारण कर रखा है, जिसने मोक्ष को धारण कर रखा है, जोअंतरिक्ष में स्थित समस्त लोक-लोकान्तरों आदि का विशेष नियम से निर्माता धारणकर्ता, व्यवस्थापक एवं व्याप्तकर्ता है, हम लोग उस शुद्ध एवं प्रकाशस्वरूप, दिव्यसामर्थ्ययुक्त परमात्मा की प्रप्ति के लिये ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास एवं हव्य पदार्थों द्वारा विशेष भक्ति करते हैं।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

मंत्रार्थ – हे सब प्रजाओं के पालक स्वामी परमत्मन! आपसे भिन्न दूसरा कोई उन और इन अर्थात दूर और पास स्थित समस्त उत्पन्न हुए जड-चेतन पदार्थों को वशीभूत नहीं कर सकता, केवल आप ही इस जगत को वशीभूत रखने में समर्थ हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग अपकी योगाभ्यास, भक्ति और हव्यपदार्थों से स्तुति-प्रार्थना-उपासना करें उस-उस पदार्थ की हमारी कामना सिद्ध होवे, जिससे की हम उपासक लोग धन-ऐश्वर्यों के स्वामी होवें ।

ॐ स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशाना स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

मंत्रार्थ – वह परमात्मा हमारा भाई और सम्बन्धी के समान सहायक है, सकल जगत का उत्पादक है, वही सब कामों को पूर्ण करने वाला है। वह समस्त लोक-लोकान्तरों को, स्थान-स्थान को जानता है। यह वही परमात्मा है जिसके आश्रय में योगीजन मोक्ष को प्राप्त करते हुए, मोक्षानन्द का सेवन करते हुए तीसरे धाम अर्थात परब्रह्म परमात्मा के आश्रय से प्राप्त मोक्षानन्द में स्वेच्छापूर्वक विचरण करते हैं। उसी परमात्मा की हम भक्ति करते हैं।

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

मंत्रार्थ – हे ज्ञानप्रकाशस्वरूप, सन्मार्गप्रदर्शक, दिव्यसामर्थ्ययुक्त परमात्मन! हमें ज्ञान-विज्ञान, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति कराने के लिये धर्मयुक्त, कल्याणकारी मार्ग से ले चल। आप समस्त ज्ञानों औरकर्मों को जानने वाले हैं। हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिये । इस हेतु से हम आपकी विविध प्रकार की और अधिकाधिक स्तुति-प्रार्थना-उपासना सत्कार व नम्रतापूर्वक करते हैं।

शांयकालीन मन्त्रा शिवसंकल्प सूक्त

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥

वह दिव्य ज्योतिमय शक्ति (मन) जो हमारे जागने की अवस्था में बहुत दूर तक चला जाता है, और हमारी निद्रावस्था में हमारे पास आकर आत्मा में विलीन हो जाता है,वह प्रकाशमान श्रोत जो हमारी इंद्रियों को प्रकाशित करता है, मेरा वह मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

जिस मन की सहायता से ज्ञानीजन(ऋषिमुनि इत्यादि)कर्मयोग की साधना में लीन यज्ञ,जप,तप करते हैं,वह(मन) जो सभी जनों के शरीर में विलक्षण रुप से स्थित है, मेरा वह मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

ओ३म् यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥

जो मन ज्ञान, चित्त , व धैर्य स्वरूप , अविनाशी आत्मा से सुक्त इन समस्त प्राणियों के भीतर ज्योति सवरुप विद्यमान है, वह मेरा मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम् । येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥

जिस शाश्वत मन द्वारा भूत,भविष्य व वर्तमान काल की सारी वस्तुयें सब ओर से ज्ञात होती हैं,और जिस मन के द्वारा सप्तहोत्रिय यज्ञ(सात ब्राह्मणों द्वारा किया जाने वाला यज्ञ) किया जाता है, मेरा वह मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥

जिस मन में ऋग्वेद की ऋचाये व सामवेद व यजुर्वेद के मंत्र उसी प्रकार स्थापित हैं, जैसे रथ के पहिये की धुरी से तीलियाँ जुड़ी होती हैं, जिसमें सभी प्राणियों का ज्ञान कपड़े के तंतुओं की तरह बुना होता है, मेरा वह मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

ओ३म् सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

जो मन हर मनुष्य को इंद्रियों का लगाम द्वारा उसी प्रकार घुमाता है, तिस प्रकार एक कुशल सारथी लगाम द्वारा रथ के वेगवान अश्वों को नियंत्रितकरता व उन्हें दौड़ाता है, आयुरहित(अजर)तथा अति वेगवान व प्रणियों के हृदय में स्थित मेरा वह मन शुभसंकल्प युक्त (सुंदर व पवित्र विचारों से युक्त) हो।

इशावास्योपनिषद यजुर्वेद 40 अध्याय

ईशा वास्यामिदं सर्व यत्किँ च जगत्यां जगत्। तेन यत्केन भुञ्जीथा मा गृध: कस्य स्विध्दनम्॥१॥

भावार्थ : इस सृष्टि मेँ जो कुछ भी (जड़ अथवा चेतन) है, वह सब ईश द्वारा आवृत-आच्छादित है (उसी के अधिकार मेँ) है। केवल उसके द्वारा (उपयोगार्थ) छोड़ गये (सौंपे गये) का ही उपयोग करो (अधिक का) लालच मत करो। (क्योंकि यह) समस्त सम्पति किसकी है ? (अर्थात किसी व्यक्ति का नहीँ केवल ‘ईश’ का ही है)॥१॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:। एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥२॥

भावार्थ : यहाँ (ईश्वर से अनुशासित इस जगत् मेँ) कर्म करते हुए सौ वर्षोँ (पूर्णायु) तक जीने की कामना करेँ। (इस प्रकार अनुशासित रहने से) कर्म मनुष्य को लिप्ति (विकार ग्रस्त) नहीँ करते। (विकार मुक्त जीवन

जीने के निमित) यह (मार्गदर्शन) तुम्हारे लिए है। इसके अतिरिक्त परम कल्याण का कोई अन्य मार्ग नहीँ है॥२॥

आसुर्या नाम ते लोकाऽ अन्धेन तमसावृता:। ताँस्ते प्रत्यपि गच्छन्ति येके चात्महनो जना:॥३॥

भावार्थ : वे (इस अनुशासन का उल्लंघन करने वाले) लोग आसुर्य (केवल शरीर और इन्द्रियोँ कि शक्ति पर निर्भर सद्विवेक की उपेक्षा करने वाले) नाम से जाने जाते हैँ वे (जीवन भर) गहन अन्धकार (अज्ञान) से घिरे रहते हैँ वे आत्मां (आत्मचेतना के निर्देशोँ) का हनन करने वाले लोग प्रेतरूप मेँ (शरीर छूटने पर) भी वैसे ही अन्धकार युक्त लोकोँ मेँ जाते हैं॥३॥

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽ आप्नुवन् पूर्वमर्शत। तध्यावतोन्यानत् येति तिष्ठत्तस्मिन्न यो मातरिश्वा दधाति॥४॥

भावार्थ : चंचलता रहित वह ईश एक (ही है, जो) मन से भी अधिक वेगवान है। वह स्फूर्तिवान पहले से ही है (किन्तु) उसे देवगण (देवता या इन्द्रिय समूह) प्राप्त नहीँ कर पाते। वह स्थिर रहते हुए भी दौड़कर अन्य (गतिशीलोँ) से आगे निकल जाता है। उसके अन्तर्गत (अनुशासन मेँ रहकर) ही गतिशील वायु-जल को धारण किये रहता है॥४॥

तदेजति तन्नैजीत तद्दूरेतद्वन्ति के। तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बह्मत:॥५॥

भावार्थ : वह (परमात्मतत्व) गतिशील भी है और स्थिर (भी) है, वह दूसरे से दूर भी है और निकट से निकट भी है। वह इस सब (जड़, चेतन, जगत्) के अन्दर भी है तथा सबके बाहर (उसे आवृत किये हुए) भी है॥५॥

यस्तु सर्वणि भूतान्यात्मन्नै वानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति॥६॥

भावार्थ : व्यक्ति (जब) सभी भूतोँ (जड़, चेतन, सृष्टि) को (इस) आत्मतत्व मेँ ही स्थित अनुभव करता है तथा सभी भूतोँ के अन्दर इस आत्मतत्व को समाहित अनुभव करता है, तब वह किसी प्रकार भ्रमित नहीँ होता ॥६॥

यस्मिन्त्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानत:। तत्र को मोह: क: शोक ऽएकत्वमनुपश्यत:॥७॥

भावार्थ : जिस स्थिति मेँ (व्यक्ति) यह (मर्म) जान लेता है कि यह आत्म तत्व ही समस्त भूतोँ के रूप मेँ प्रकट हुआ है, (तो) उस एकत्व की अनुभूति की स्थिति मेँ मोह अथवा शोक कहाँ टिक सकते हैँ? अर्थात ऐसी स्थिति में व्यक्ति मोह और शोक से परे हो जाता है॥७॥

स पर्यगाच्छक्रमका यभव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीणी परिभू: स्वयम्भूर्याताथ थ्यतोर्थान व्यदधाच्छाश्वती भ्य: समाभ्य:॥८॥

भावार्थ : वह (परमात्मा) सर्वव्यापी है, तेजस्वी है। वह देह रहित है स्नायु रहित एवं छिद्र (व्रण) रहित है। वह शुध्द और निष्पाप है। वह कवि (क्रान्तदर्शी), मनीषी (मन पर शासन करने वाला) सर्वजयी और स्वयं ही उत्पन्न होने वाला है। उसने अनादि काल से ही सबके लिए यथा-योग्य अर्थोँ (साधनोँ) की व्यवस्था बनाई है॥८॥

अन्धं तम: प्र विशन्ति यंसंभूतिमुपासते। ततो भुयऽ इव ते तमोँ यऽ उ सम्भूत्यायां॥९॥

भावार्थ : जो लोग केवल असम्भूति (बिखराव-विनाश) की उपासना करते हैँ (उन्ही प्रवृत्तियोँ मे रमे रहते हैँ) वे घोर अन्धकार मेँ घिर जाते हैँ और जो केवल सम्भूति (संगठन-सृजन) की उपासना करते हैँ, वे भी उसी प्रकार के अन्धकार मेँ फंस जाते हैँ।९॥

अन्यदेवाहु: सम्भवादन्यहुरसम् भवात्। इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे॥१०॥

भावार्थ : जिन देव पुरुषो ने हमारे लिए (इन विषयोँ को) विशेष रूप से कहा है,

उन धीर पुरुषोँ से हमने सुना है कि संभूतियोग का प्रभाव भिन्न है, तथा असंभूति योग का प्रभाव उससे भिन्न है॥१०॥

संभूतिँ च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह। विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यमृतमश्नुते॥११॥

भावार्थ : (इसलिए) संभूति (समय के अनुरूप नया सृजन) तथा विनाश (आवाञ्छनीय को समाप्त करना) इन दोनोँ कलाओँ को एक साथ जानो। विनाश की कला से मृत्यु को पार करके (अनिष्टकारी को नष्ट करके मृत्यु-भय से मुक्ति पाकर) तथा संभूति (उपयुक्त निर्माण की) कला से अमृतत्व की प्राप्ति की जाती है ॥११॥

अन्धं तमः प्र विशन्ति येविद्यामुपास्ते। ततो भूयऽ इव ते तमो यऽ उ विद्यायां॥१२॥

भावार्थ : जो लोग (केवल) अविद्या (पदार्थ-निष्ठ विद्या) की उपासना करते हैं, वे गहन अंधकार (अज्ञान) से घिर जाते हैं और जो (केवल) विद्या (आत्म-विद्या) की उपासना करते हैं, वे भी उसी प्रकार अज्ञान में फंस जाते हैं॥१२॥

अन्यदेवाहुर्विद् यायाऽअन्यदाहुरविद्या याः। इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे॥१३॥

भावार्थ : जिन देवपुरुषों ने हमारे लिए (इन विषयों को) विशेषकर कहा है, उन धीर पुरुषों से हमने सुना है कि विद्या का प्रभाव कुछ और है और अविद्या का प्रभाव उससे भिन्न है॥१३॥

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह। अविद्या मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते॥१४॥

भावार्थ : (इसलिए) इस विद्या (आत्म-विज्ञान) तथा उस अविद्या (पदार्थ-विज्ञान) दोनों का ज्ञान एकसाथ प्राप्त करो। अविद्या के प्रभाव से मृत्यु को पार करके (पदार्थ-विज्ञान से अस्तित्व बनाये रखकर), विद्या (आत्म-विज्ञान) द्वारा अमृत तत्व की प्राप्ति की जाती है॥१४॥

वायुरनिलममृतमथे दं भस्मान्तं शरीरम। ओ३म क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर॥१५॥

भावार्थ : यह जीवन (अस्तित्व) वायु-अग्नि आदि (पंचभूतों) तथा अमृत (सनातन आत्म चेतना) के संयोग से बना है। शरीर तो अंततः भस्म हो जाने वाला है। (इसलिए) हे संकल्पकर्ता ! तुम परमात्मा का स्मरण करो, अपनी सामर्थ्य का स्मरण करो और जो कर्म कर चुके हो, उसका स्मरण करो॥१५॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यास्मज्जु हुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं विधेम॥१६॥

भावार्थ : हे अग्ने (यज्ञ प्रभु) ! आप हमें श्रेष्ठ मार्ग से ऐश्वर्य की ओर ले चलें। हे विश्व के अधिष्ठातादेव ! आप कर्म मार्गों के श्रेष्ठ ज्ञाता हैं। हमें कुटिल पापकर्मों से बचाएँ। हम बहुशः (भूयिष्ठ) नमन करते हुए आप से विनय करते हैं॥१६॥

हिरण्येन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम। योसावादित्ये पुरुषः सोसावहम। ॐ खं ब्रह्म॥१७॥

भावार्थ : सोने के (चमकदार-लुभावने) पात्र से सत्य का मुख (स्वरुप) ढंका हुआ होता है। (आवरण हटाने पर पता चलता है कि) वह जो आदित्यरूप पुरुष है, वही (आत्मरूप में) मैं हूँ। ॐ (अक्षर) आकाशरूप में ब्रह्म ही संव्याप्त है॥१७॥

ओ३म् सं समिधवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इड़स्पदे समिधुवसे स नो वसुन्या भर॥

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को॥
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन वृष्टि को॥

ओ३म सगंच्छध्वं सं वदध्वम् सं वो मनांसि जानतामं।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानानां उपासते॥

प्रेम से मिल कर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो॥

समानो मन्त्र:समिति समानी समानं मन: सह चित्त्मेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि॥

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो॥

ओ३म समानी व आकूति: समाना ह्दयानी व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति॥

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढे सुख सम्पदा॥

यह मैंने कुछ वैदिक मंत्रों के उदाहरण दिये यदि मंत्रों की बाते करेगें तो उसके लिए मुझे अलग से इसके लिए किताब लिखनी पड़ेगी। जो अभी संभव नहीं हैं मेरे लिए। अभी हम बात कर रहें थे पगला के बारें में जो यहां गुरुकुल में रहकर किस प्रकार के ज्ञान का अर्जन किया, और अपने ज्ञान का विस्तार किया और इसका दिवाना बन गया। जिसके लिए उसने जीन्दगी के संग्राम को एक बार लड़ने की योजना को बनाता हैं। वहां होसंगाबाद गुरुकुल में जब एकाक साल हो गया था। वहां पर रहना और वहां उपलब्ध किताबों का अध्ययन फ्री था। मगर वहां पर किसी प्रकार से आमदनी पैसे के रुप में कही से बिल्कुल भी नहीं था।

कुछ समय बाहर में दु:खों और कष्टों को सहता बड़े छोटे महानगरों में रहा और हजारों प्रकार कि छोटी-छोटी नौकरियाँ भी कि इस तरह से मैं लगभग सम्पूर्ण भारत का बहुत दर्दनाक भ्रमण किया। जिससे उसके जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा यूं ही दुनिया के अन छूए सत्य का साक्षात्कार करने में भी व्यतीत हो गया। जिसका आभास शायद ही कभी किसी को हुआ। इसी बिच उसका निर्वाण भी हुआ। इस तरह से पगला केवल ना एक परिवार का ना एक समाज का ना एक सहर का ना ही एक राज्य का यद्यपि वह सम्पूर्ण रूप से भारतीय बन गया था। जिसमें बहुत ही असहनीय और दुखान्त अनुभव भी जुणें है। क्योंकि पगला का यह भारत भ्रमण कि यात्रा सुख सुविधाओं के बिच में नहीं कि गयी यद्यपि बहुत भयानक तंगी और असुविधा में कि गई थी, अकसर उसके लिये खाने पीने के लिये भोजन भी उपलब्ध नहीं होता था। जिससे वह लंबे समय तक भूखा ही रहता था। सिवाय पानी पी कर कभी-कभी तो उसे पानी भी नहीं मिलता था। यूं ही कहीं किसी कोने में मूर्छा अवस्था में कई दिनों तक इस हालत में कहीं भी पड़ा रहता था और अंत में मजबूर हो कर घर को वापस आ जाता था। क्योंकि बिना धन के कही पर रहना बहुत कठिन कार्य है। यहाँ तक बहुत मुश्किल या असंभव कार्य है। इसी तरह से चलता रहा। बहुत समय के बाद पगले की भी उसकी मां ने किसी तरह शादी भी करा दिया पत्नी आ गई, और उसको एक पुत्र भी हो गया। लेकिन यह सब उसको रास नहीं आया। उसकी पत्नी उसके पुत्र कि मृत्यु के बाद उसको छोड़ कर चली गई, क्योंकि वह पगले के पिता के व्यवहार से तंग आकर उसके घर को छोड़ कर चली गई और किसी दूसरे से उसने विवाह कर लिया। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण उसका पिता ही था। वह पगले को हर तरह से मिटाना चाहता था और उसके लिए उसने भरपूर प्रयास किया, और काफी हद तक सफल भी हुआ।

एक दिन रात्रि के करीब नौ बज रहे थे सर्दी का समय था और उसको मारने के लिये उसके पिता ने बाहरी हत्यारों को बूला लिया था। जैसे ही वह बाहर खाने के लिये बैठा हुआ था। अचानक उसके अंदर से बहुत भयानक भय कि लहर उठने लगी। जैसा कि पहले एक बार उसके साथ पहले भी हो चुका था। जब वह दिल्ली में रहता था। उस समय दिल्ली में वह एक बहुत बड़े व्यापारी परिवार से उसकी कुछ समय के लिये मित्रता हो गई थी। बाद में वह उसके विचार क्रांतिकारी होने के कारण वह सब पगले के साथ शत्रुता का व्यवहार करने लगे। यहाँ तक बात पहुंच गई, कि उन्होंने पगले को जान से मारने की भी

योजना बना लिया। उसका जीना दिल्ली में मुश्किल कर दिया, उनकी पहुंच काफी उपर तक थी। एक बार धोखे से बूला कर वह लोग अपने घर में पगले को पुलिस के हवाले मरा पीट कर-कर दिया और यह इल्जाम लगाया कि पगला उनके घर में चोरी के लिये आया था। पगला के साथ बहुत बड़ा अन्याय हो रहा था। उस समय जेल से छुड़ाने में उसके वह मालिक काम आये जिनके यहाँ पर वह कुछ दिनों से कार्य करता था।

इसके बाद उसका दिल्ली में रहना बहुत मुश्किल हो गया, और वह बहुत परेशान रहने लगा था। वह भी बदला लेना चाहता था। एक बार फिर उनके यहां पर वह चला गया, पिछला सब कुछ भूल कर कि शायद वह उसकी मदद करना चाहते हो। लेकिन वह एक बार फिर गलत सिद्ध हो गया था। वह सब उसकी हत्या कि योजना पुरी तरह से बना चुके थे। उसके पहुँचते ही वहाँ पर उसके उपर चार पांच आदमियों ने जानलेवा हमला कर दिया, और उसको तब तक मारते रहे, जब तक की वह पुरी तरह से मरा तुल्य नहीं हो गया। जब उन को विश्वास हो गया कि वह अब मर जाएगा। तो उन्होंने पगला को छोड़ दिया। इस शर्त पर कि वह पुलिस से संपर्क नहीं करेगा। वह 25 नवम्बर 2002 की बहुत भयानक रात थी। जब पगला जीवन और मृत्यु से लड़ रहा था। उस समय पगला से एक कदम भी नहीं चला जा रहा था। बड़ी मुश्किल से वह कनाट प्लेस के भिड़ भाड़ वाले सर्कल से गाड़ीयों कि रोशनी के बिच में गिरते लड़खड़ाते बाहर निकल पाया, नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन के लिये। वह रेल्वे स्टेशन के अन्दर ना जा कर सीधा पहाड़ गंज कि तरफ से उस पुल पर चढ़ गया जो रेल्वेलाईनो को पार कर के अजमेरी गेट और पहाड़ गंज को जोड़ने वाला है, उस पुल पर पहुंच गया। उपर पुल पर पहुंचने पर वह भयंकर दर्द से कराह रहा था। उसके हाथ पैर के जोड़ खुल गये थे। दायाँ पैर और बायाँ हाथ बिल्कुल ढीला पड़ चुके था। उसने वहाँ पुल के उपर साईडर पर कुछ समय रुक कर आराम करना चाहा। जिस कारण से वह वहीं पर नीचे ही लेट गया। कुछ ही पल वहाँ पर लेटा हुआ था। कि उसको बहुत अधिक ठंडी लगने लगी, जिसके कारण वह वहाँ से एक बार फिर खड़ा हुआ और पैदल चलते हुए, किसी तरह से बड़ी मुश्किल से चलते हुए, अजमेरी गेट कि तरफ नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन के सामने, जहाँ पर एक साधु अखाड़ा है। उसके पास से होते हुए, आगे एक मोड़ था वहाँ पहुंचा। जहाँ एक रिक्शे वाला एक कुछ कागज इत्यादि जला कर आग ताप रहा था। वहाँ पर जा कर वह आग के पास अपनी सर्दी को दूर करने के लिये बैठ गया। रिक्शे वाला जो आग जला रहा था उसके पास लकड़ी भी नहीं थी, कुछ कागज था। जो थोड़ी समय में जल कर राख हो गयी। वह रिक्शा वाला पगले की शक्ल देखकर बुरी तरह से भयभीत हो गया, और बोला यहाँ से चले जाओ नहीं तो पुलिस आ जायेगी, और मुझे परेशान करेगी। पगले ने कहा डरो मत मेरे पास बैग में कपड़े भरें हैं। वह सब मेरे हैं इसमें से एकाक ले लो और मुझे थोड़ी देर आग के पास बैठ कर आराम करने दो और पगला ने अपना एक जीन्स का पैन्ट वैग से निकाल कर उस रिक्शे वाले को दे दिया। और कुछ कापी किताब जो उसके बैग में थे। उन को निकाला और आग में जलाने के लिये डाल दिया। जिससे आग फिर से धधक ने

लगी जिससे पगला को थोड़ा सुकून मिला, लेकिन उस समय उसको भयानक दर्द के कारण मूर्छा आ रही थी। क्योंकि उसने कई दिन से खाना भी नहीं खाया था, और उसे भी अन्दर से भय लग रहा था कि कहीं पुलिस ना आ जायें, और वह भी उसको मारने पीटने लगे। उस रिक्शे वाले ने कहा कि थोड़ा पीछे साधु के आश्रम के बगल में मंडी और ट्रान्सपोर्ट है। वहाँ जा कर बैठ जा, वहाँ रात भर काम चलता है। कोई पुलिस वाला परेशान भी नहीं करेगा। पगले ने वैसा ही किया और वहाँ से अर्ध मूर्छा अवस्था में उस ट्रान्सपोर्ट नगर में पहुंच गया। जहाँ पर एक किनारा देख कर बैठ गया, और लग भग मैं मूर्छित हो चुका था। उसे कुछ भी ज्ञान नहीं था कि वह कहाँ है और कैसी हालत में है? लेकिन वह रिक्शा वाला बरा-बर उस पर नजर रख रहा था। जिसने पगले को अर्ध मूर्छा कि हालत में ही उठाया और एक दो बार चाय भी पिलाया। उसके बाद रात्रि के समय वहाँ के दुकान मालिक से उसने पगले के बारे में कह कर, पगले की हालत पर तरस खा उसको खाना भी खीलाया। खाने के बाद उसके शरीर में कुछ जान आई, और तब उन लोगों ने पगले से कहा अब तुम यहाँ से जाओ, इस समय रात्रि के एक बज रहे हैं। अभी यहाँ पुलिस आ सकती है। जो तुम्हें परेशान कर सकती है। फिर वह वहाँ से धीरे-धीरे खड़ा हुआ, और नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन के सामने पहुंच गया। जहाँ एक तरफ किनारे में दाहिने हाथ पुल के नीचे कुछ हाथ ठेले पड़े थे। जिन पर वह पहुंच कर सोने का प्रयास करने लगा। लेकिन उसको नींद नहीं आ रही थी। क्योंकि उस समय उसे सर्दी बहुत अधिक लग रही थी। फिर उसने अपने बैग को एक बार फिर खोला और उसमें से कई सारे सर्ट और पैंट निकाल कर, बड़ी कठिनाई से किसी तरह सबके एक उपर एक पहन लिया। जिससे उसके उपर सर्दी का प्रभाव कुछ कम हो गया, और वह वहाँ पर कुछ समय के लिये सो गया। रात के चार बजे ही उसकी निंद खुल गई उसे वहां भी पुलिस का डर सता रहा था। कि कभी भी पुलिस यहाँ आ सकती है। जो उसके लिये समस्या खड़ी कर सकती है। क्योंकि इसके पहले वह एक बार बहुत पहले इसी रेल्वे स्टेसन के प्लेटफार्म पर बिना टिकट का पकड़ा गया था। कई एक साल पहले जब उसको पुलिस ने पकड़ लिया था और उसको सैकड़ों कैदियों के साथ लोकप में बन्द कर दिया था। जहाँ पेशाब करने और निबटने का स्थान भी नहीं था। और बहुत मारा था उस समय उस समय उसकी ज्यादा नहीं थी, इस लिये स्टेशन से चालान नहीं किया था। मार पीट कर ही छोड़ दिया था। लेकिन अब समय काफी बदल चुका था।

सुबह के करीब चार बजे वह निकला नई दिल्ली रेल्वे स्टेसन से और आगे दिल्ली गेट की तरफ चलने लगा, कुछ दूर जाने के बाद जहाँ पर दिल्ली स्टाक एक्सचेन्ज है। उस के सामन पहुंच ही वह थक गया। क्योंकि शरीर में भयानक दर्द और पीड़ा हो रही थी। इसलिए ठंड में वही पर बैठ गया और एका क घंटे तक आराम किया। उसके बाद वहाँ से निकला और दिल्ली गेट को पार कर के सड़क के दूसरे तरफ सीधा बाहरी रिंग रोड के लिये आगे चल पड़ा तभी उसकी निगाह बाई तरफ पार्क के खुले दरवाजे पर पड़ी, जो उस समय खाली था चारों तरफ बड़ी - बड़ी घास थी। पगला उस पार्क में घुस गया, और वहीं गिर पड़ा और उसको निंद आ गई। उसकी निंद से शाम को करीब 5 बजे उठा और सीधा रिंग रोड को

पकड़ कर पैदल ही चल पड़ा। क्योंकि उसके पास जो पैसे वगैरह थे। सब निकाल लिया था उसके शत्रुओं ने, वह आगे बढ़ता रहा उसे रात बिताने के लिये एक ऐसी जगह की तलाश थी, जहाँ पर वह अपनी रात्रि को बिना किसी विघ्न के बीता सके। वह रास्ते में कई जगह प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली, हर जगह से उसको आगे बढ़ जाने का ही संकेत मिला। वह निरंतर आगे ही बढ़ता रहा पुरी तरह से थक के चुर हो रहा था। उसके कदम जवाब दे रहे थे। फिर भी वह जबरदस्ती दर्द को पीकर आगे ही आगे बढ़ रहा था। इस तरह से वह वजीरा बाद पुल के पास पहुंच गया, रात के उस समय करीब बारह बज चुके थे। वजिरा बाद पुल को रात में ना जा कर, वह उससे थोड़ा पहले ही एक रास्ता जो दिल्ली शहर में जाता था, मोती बाग का उस रास्ते से आगे निकल पड़ा। कुछ दूर उसके चलने पर उसको एक कुत्तों को रहने का एक झोपड़ा पार्क में बना दिखाई दिया। जिसमें वह चुपके से घुस गया। जिसमें बहुत गंदगी थी और उसको बहुत भय भी लग रहा था, महानगर में सबसे भय पुलिस का उसको था, कहीं किसी की निगाह उस पर ना पड़ जाये। जिससे लोग उसको चोर समझ कर उसकी पिटाई ना करने लगे। क्योंकि लोग उस पार्क रास्ते से उस समय गुजर रहें थे। कभी किसी के बोलने कि आवाज आती तो कभी गाड़ी और मोटर साइकिल कि आवाज भी आती थी रुक-रुक कर, जिससे वह अन्दर से पुरी तरह से टूट चुका था, उसकी बहुत बड़ी मजबूरी थी। वहाँ रात्रि बिताना बहुत कठिन था, किसी तरह से उसने वहां पर एक या दो घंटे बिताया। फिर वहाँ से भी रात्रि के करीब दो तीन बजे निकल पड़ा, और वजीरा बाद पुल पर चल पड़ा चलते-चलते थक चुका था। फिर वही एक बस स्टाप पर बैठ गया, और सुबह होने का इंतजार करने लगा। रात जो बीतने का नाम नहीं ले रही थी। फिर उसको रात्रि की अजान सुनाई दी, जो सुबह भोर में बोलते है। जिससे वह समझ गया कि सुबह होने वाली है, और फिर वह वहाँ बस स्टाप से आगे कि तरफ चल पड़ा रास्ते में उसने एक दो जगह आराम किया। सूर्य का प्रकाश हुआ तब तक वह लोनी बार्डर पर पहुंच गया था। जहाँ पर उसको बहुत थकान और दर्द के साथ भूख भी लग रही थी। जिसके लिए उसने एक सड़क किनारे होटल में गया, और अपनी मजबूरी को बताया और कहा कि मैं कई दिन से भूखा हूं। मुझे कुछ खाना दे दो, मैं आप के यहाँ काम कर लुंगा। इस तरह से उस होटल के मालिक ने उसको अपने होटल में बर्तन धोने के लिये रख लिया, और बदले में भोजन देने लगा। जहाँ पर केवल शराब पीने के लिये ही अधिक लोग आते थे। इस तरह से वह वहाँ पर करीब चालीस दिन रहा, और एक दिन वहाँ से वह फिर पैदल ही पुरानी दिल्ली रेल्वे स्टेशन आया और बिना टीकट के ही ट्रेन में सवार हो कर मिर्जापुर के लिये चल पड़ा।

ठीक इसी प्रकार कि घटना दुबारा उसके साथ उसके पिता के द्वारा घटने वाली थी। इन दिल्ली वाले लोगों के साथ मिल कर दोहाराने का प्रयास किया गया। जिसका आभास उसको पहले ही हो गया जैसे हवा में वह दुबारा दर्द उसके मरने के अथाह पीड़ा का मातम भर गया हो। चारों तरफ बहुत बुरी तरह से कुत्ते रोने लगे, जैसे पुरी की प्रकृति ही पगले को मारने के लिये उतावली हो गयी हो। उसके हाथ पैर काम करना बंद करने लगे। जब वह अपने गांव के घर के बाहर बैठ कर खाना खा रहा था। क्योंकि यह दिल्ली

वाले उसके घर पर पहुंच कर उसके पिता को अपने साथ मिला लिया था, और उन्होंने आपस में सौदा किया मेरी हत्या करने का, जिसके साथ स्वामी जी का भी साथ था। जिसने उसको पुरी तरह से पागल सिद्ध करने में कोई कसर नहीं छोड़ा था। लेकिन पगले ने अपने उपर आने वाले भयंकर संकट का आभास उसको पहले ही हो गया। जिसके कारण वह वहाँ से सीधा नदी किनारे भागा अपनी जान बचाने के लिये, वह सब लोगों ने उसका पीछा किया। जब उसे लगा कि यह लोग उसको मार ही देंगे, और रात्रि के समय ही सर्दी में वह गंगा नदी में कूद पड़ा और अंधेरे में खो गया। जिससे सारे उसके हत्यारे पीछे लौट गये।

लेकिन पगले कि स्थिति में सुधार नहीं हुआ, यद्यपि वह एक भयानक बीमारी का शिकार हो गया, ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि उसको भयंकर रूप से शारीरिक और मानसिक परेशानी को झेलना पड़ रहा था, जिसके साथ उसको बहुत भयानक आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा था।

अध्याय 8.

जब उसको यह पूर्ण विश्वास हो गया। कि अब उसकी जान नहीं बचेगी। तो वह नदी किनारे के एक टूटे फूटें आश्रम में कुछ समय रहा, जहां से एक दो दिन में ही साम को छोड़ कर चल दिया। और भारत की राजधानी दिल्ली में फिर चला गया। दिल्ली से थोड़ीसी ही दूरी पर एक बड़ा आश्रम था। वहां पहुंच कर उस आश्रम के आचार्य से उसने प्रार्थना की कि उसको पढ़ाने के लिए रख लिया जाये। क्योंकि पगला अपना इलाज करना चाहता है। उस आश्रम के आचार्य ने कहा तुम तो पागल हो, तुम्हारा क्या भरोसा है, कब तक रहोगे? पगले ने कहा की मुझे एक बार मौका दीजिए। मुझे अपनी बीमारी का इलाज करना है। बहुत अधिक प्रार्थना करने पर। उस आश्रम के आचार्य को पगले पर दया आ गई। यद्यपि वह जानता था, की यह आदमी ठीक नहीं है। इसके बिचार बहुत ही उत्तेजक क्रांतिकारी और आक्रामक है। फिर भी उसने पगले को आश्रम में बच्चों को पढ़ाने के लिए रख लिया। जहां पर पगला रहकर पढ़ाने का कार्य करने लगा। और करीब दो साल तक वहाँ पर पगला रह कर पढ़ाने का कार्य करता रहा। और अपने इलाज कराने के लिए जैसे - जैसे धन मिलता रहा। वैसे – वैसे चिकित्सकों की शरण में जाता रहा। बहुत अधिक मुश्किल से किसी तरह से अपना इलाज कराने में सफल हो गया।

जब वह अपना इलाज कराने के लिए, एक बड़े सरकारी अस्पताल में जाया करता था। वहां पर एक अमीर लड़की अपने पिता की इलाज कराने के लिए आया करती थी। जो युवा और काफी पढ़ी लिखी थी। धीरे - धीरे पगले से उसकी मित्रता हो गई। पगले ने अपनी विश्व विद्यालय बनाने की योजना को

उसके साथ शेयर किया। पहले तो वह भी कहने लगी, की यह तो बहुत बड़ा कार्य है। ऐसा तुम कैसे कर सकते हो? पगले ने कहा इसके लिए तुम अपने समाज के लोगों से कहो। कि लोग इसके लिए दान करें। उस लड़की ने कहा मैं अपने पिता जी से कहूंगी।

ऐसा ही चल रहा था, एक दिन आश्रम में जहां पर पगला पढ़ाने का कार्य करता था। वहां भी उसके बहुत विरोधी बन गये थे। वह एक बार फिर से अपना फन फुफकारना शुरु कर दिया। इसी बिच एक दिन पगले की आश्रम एक लड़के से मार पीट हो गई। जो पगले के विरोधी अध्यापक का शिष्य था। जिसके कारण पगला का मन बहुत अधिक उदास और निराश हो गया। जिसके परिणाम स्वरूप उसने आश्रम की सेवा को बंद कर दिया। जैसा कि उसके शत्रु उसके लिए योजना कर रहे थे उसने वहीं किया।

इसके बाद वह उस लड़की के घर गया। जिससे वह अस्पताल में मिला करता था। जिसका नाम दिव्या था। और उससे अपने बारे में बताया, कि मैंने अपनी आश्रम की पढ़ाने की नौकरी को छोड़ दिया है।

दिव्या ने कहा मेरा एक मकान खाली पड़ा है। तुम वहां पर रहो, मैं अपने मैनेजर से बात करके तुम्हारे लिए किसी नौकरी की व्यवस्था कराती हूं।

वह मकान मुम्बई के एक बहुत बड़े सेठ का था, इस मकान को खाली करने या छोड़ने के पीछे भी एक अजीबो गरीब कहानी है। सेठ दिनदयाल एक बहुत बड़ा व्यापारी है, सेठ दिनदयाल के बारे में जानते हैं। वह यहां मुम्बई के पुराने रईस के घर से आते है, जो दक्षिण भारत से अँग्रेज़ों के समय आये थे, अर्थात जब भारत में अंग्रेज राज्य करते थे। उनकी अपनी आज सैकड़ों फ़ैक्टरियां, होटल, जुआ घर, शराब खाना, क्लब, रीयलस्टेट और कितने और प्रकार का कारोबार है, जिस को उन्होंने अपने पुरुषार्थ से अर्जित किया है, ऐसा वह कहता है। वास्तव में उसने यह सारा पैसा दो नंबर के काम से कमाता है, एक नंबर से ऐसा कहां कोई कर सकता है। आप इसी बात से अंदाज़ लगा सकते हैं, की जहां वह ऑफिस में बैठता वहां पर एक आदम कद की तस्वीर टंगी है, जिसमें वह भी है, उस तस्वीर में भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री की तस्वीर हैं। अर्थात भारत के प्रधान मंत्री उसके मित्र है, वह हर प्रांत के मुख्य मंत्रियों के साथ बैठक करता है। क्योंकि उसका व्यापार भारत ही नहीं पूरे विश्व में चलता है। जिस को चलाने के लिए हर प्रकार के बुद्धिमान आदमी जिसमें हर क्षेत्र के विद्वानों के साथ चोर, डकैत, बदमाश, हत्यारे, अर्थात हर वह पेशे के आदमी जिसकी मदद से वह अपने कारोबार को सुचारु रूप से आज भी चला रहा है। जो सब मिल कर उसको एक अरब पति आदमी बनाते आदमी हैं। उनका अपना एक बहुत बड़ा महल जैसा मकान है, जिसमें हज़ारों कमरे है। जो कई ब्लाक में बंटा है। अर्थात उसमें सैकड़ों आलीशान घर हैं, जहां पर उनकी कई पुस्त के लोग अर्थात खानदानी लोग रहते है। जो मुम्बई के सबसे महंगी स्थानों नंबर एक पर गिना

जाता है। वहां अकसर ऐसे ही खतरनाक रईस जो भेड़िया किस्म के स्वभाव वाले है वहीं रहते हैं। जिन को अँग्रेज़ों ने अपने जाने के पीछे यह सब संपत्ति दे कर चले गये हैं। यह सब आज भी अँग्रेज़ों के नक़्शे क़दमों पर ही चल रहे हैं। कहने को यह भारतीय है, वास्तव में यह सब अँग्रेज़ों से भी एक कदम आगे है। काले अँग्रेज़ है जिनकी बात लार्ड मैकाले, कार्ल मार्क्स, मैक्समुलर इत्यादि करते हैं। लार्ड मैकाले वह व्यक्ति है जिसने भारतीयों को अंग्रेज बनाने की विधि अर्थात अँग्रेज़ी शिक्षा पद्धति को भारत में चलाया था।

क्योंकि दिव्या बहुत अधिक अमीर औरत थी। उसका अपना बहुत बड़ा व्यापार था। और उसके पास कई कंपनी थी। पगला दिव्या के मकान में रहने लगा। और कुछ ही दिनों में उसको एक कंपनी में काम भी मिल गया। जिससे उसका कार्य आसानी से चलने लगा। लेकिन उसके मन में शांति नहीं थी। जिसके कारण वह हर किसी से खुल कर अपने विश्व विद्यालय बनाने की बात करता था। दिव्या के पिता को जब दिव्या के द्वारा इसके बारे में पता चला, तो उसने कहा यह बहुत सुंदर कार्य है। इस कार्य में हम अवश्य पगले का साथ देंगे। इस तरह से दिव्या के पिता ने अपने कुछ बड़े धनी मित्रों से चर्चा की, और उन को अपने साथ इस विश्व विद्यालय बनाने के लिए तैयार कर लिया।

एक दिन साम को अपने घर पर दिव्या के पिता सेठ दिन दयाल ने पगले को बुलाया। और पगले को अपनी इच्छा बारे में बताया। की मैं तुम्हारे स्वप्न विश्व विद्यालय को अवश्य बना कर पूर्ण करुंगा। क्योंकि पगले ने उनसे बताया की उसके पास लाखों एकड़ जमीन है। पगला यह सुन कर बहुत खुश हुआ उसको अपना स्वप्न अब पूर्ण होने की संभावना दिखाई देने लगी।

कुछ समय के बाद पगला अपने गांव में सेठ दिन दयाल के साथ आया। और विश्व विद्यालय की जमीन के लिए जमीन लेने के लिए, लोगों से बात चित की। लेकिन गांव के लोग तो पहले से ही पगले का विरोध करते थे। वह सब तो समझते थे, की पगला मर गया होगा। जब उसको जिंदा देखते हैं। तो सब को आश्चर्य होता है। दिन दयाल ने कहा यह कार्य बहुत बड़ा है। इसमें जिनकी जमीन हैं। वह सब तैयार नहीं है। इसको तुम हमारे जिम्मे कर दो। मैं इसके बारें में इस प्रदेश के मुख्यमंत्री से बात करुंगा। पगले ने कहा ठीक है। पगले ने अपने खानदान की जमीन को दिन दयाल के सुपुर्द कर दिया।

इस प्रकार मुख्य मंत्री के कार्यालय में बात की गई। और मुख्य मंत्री दिन दयाल से मिलने के लिए तैयार हो गया। क्योंकि मुख्यमंत्री को चुनाव जितने के लिए दिन दयाल और उसके मित्रों ने कई करोड़ रुपये दान में दिया था। मुख्यमंत्री ने विश्व विद्यालय बनाने के लिए जमीन का अधिग्रहण करने की लिखित आदेश पारित कर दिया।

थोड़े ही समय में जमीन का अधिग्रहण होना शुरु हो गया। और करीब एक हजार एकड़ जमीन को खरीद लिया गया। सभी गांव वालों ने पैसा लेकर मुख्य मंत्री और प्रशासन के भय के कारण जमीन को दे दिया। इसके अतिरिक्त पगले के खानदान की बहुत सी जमीन को विश्व विद्यालय बनाने के लिया गया। जिसके लिए किसी प्रकार का धन किसी को नहीं दिया गया। क्योंकि पगले के खानदान के लोगों को भरोसा दिया गया। कि आप सब का हिस्सा होगा विश्व विद्यालय में, और आप लोगों को उसमें सेवा का भी अवसर दिया जायेगा। जिसके बाद कुछ एक को छोड़ कर लग-भग सभी तैयार हो गए। इसके कुछ समय के बाद ही कुछ बड़े विदेशी अभियंता को बुलाया गया। और विश्व विद्यालय के कीले का नक्शा तैयार कराया गया। जो जमीन के अंदर बनने वाला था। और विदेशी कंपनी को ही विश्व विद्यालय बनाने का ठीका दे दिया गया।

इस प्रकार से विश्व विद्यालय बनने का कार्य शुरु हो गया। जिस को पाँच सालों में तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है। जमीन में एक किलोमीटर अंदर एक बड़ा श्री यंत्र के आकार में नींव रखी गई। जिसके उद्घाटन के लिए देश के प्रधान मंत्री को भी बुलाया गया।

पगला दिव्या के घर में रहता था। जिसके कारण धीरे- धीरे दिव्या से उसको प्रेम हो गया। और उसने दिव्या से विवाह कर लिया। क्योंकि यहीं दिव्या के माता पिता की इच्छा थी। पगले ने समय की नजाकत को समझते हुए, ऐसा ही किया। और बड़े आराम उनके साथ रहने लगा। पगले के स्वभाव में अब बड़ा बदलाव आ चुका था। वह बड़े - बड़े होटलों में पार्टियों में जाना और शराब पीने का आनंद लेने लगा था। साथ में दिव्या के कारोबार में भी हाथ बढ़ाने लगा।

यह संसार एक यातना गृह है। यहां पर रोज एक नया जख्म मिलता है। लोग कहते हैं कि यह आपको अपने कर्मों का फल मिलता है। जब की मैं ऐसा नहीं समझता हू। यहां हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग विद्यमान है। जो हमेशा केवल अपने फ़ायदे की सोचते हैं। वह किसी ना किसी प्रकार से लोग अपने सामने वाले को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। जब तक आप उनके मन की बात करते हैं। और उनकी स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं। या फिर उनका आप सहयोग करते हैं, तो वह खुश रहते हैं। यदि आपने उनके मन का कार्य नहीं किया। तो वह नाराज हो जाते है। ऐसा ही कुछ पगले के साथ भी हुआ।

उसके साथ एक बार दिव्या के पिता और उनके सहयोगियों ने कुछ ऐसा खतरनाक खेल खेला, जिससे पगले का भरोसा दिव्या और दिन दयाल के उपर से उठ गया । हुआ यूं की कुछ लोग ऐसे थे, पगले के गांव के जो खुल कर उनके विरोध में खड़े हो गये। वह विश्व विद्यालय, के कार्य को करने वाले कर्मचारियों पर एक रात को बहुत ही खतरनाक हमला कर दिया। जिसका नेता यशवंत सिंह था। जिसने कई गांव के

लोगों को अपने साथ लेकर एक रात्रि को वहां पहुंचा। और सुरंग में काम करने वाले करीब 200 लोगों के उपर पेट्रोल डाल कर जिंदा जला दिया। जिसके कारण विश्व विद्यालय का कार्य कुछ समय के लिए रोक दिया गया। जब इसकी सूचना दिन दयाल और उसके सथियों को हुई तो वह बहुत अधिक क्रोधित हुआ। क्योंकि उनका बहुत अधिक धन इस कार्य में लग चुका था। जिसके लिए वह आग बबूला हो गया। और उसने अपने बहुत सारे खतरनाक हत्यारों को उन सभी यशवंत और उसके सथियों की तलाश कर मारने के लिए भेज दिया। जिसमें प्रशासन का भी खुल कर उसको सहयोग मिला था।

इसके बाद एक खूनी जंग शुरु हो गई। वह सभी हत्यारे दिल्ली से आकर, पहले सभी गाँवों में जमीन खरीद कर, अपना मकान बना कर रहने लगे। और सभी को तलाश – तलाश कर हत्या करने लगे। और सभी हत्या इस प्रकार से की जाती थी। जिसका कोई प्रमाण कभी किसी प्रशासन के अधिकारी को नहीं मिलता था। क्योंकि सारी हत्या दुर्घटना के रूप में होती थी। किसी की कार दुर्घटना हो गई। तो किसी को जहर दे दिया। एक बार तो सारी हद को पार कर दिया। एक दिन गांव एक अमीर आदमी के घर में लड़की की शादी थी। रात्रि का समय जिसमें करीब एक हजार से अधिक लोग, एक बड़े मकान के चार दीवारी के अंदर एकत्रित हुए थे। जिसमें अधिकतर लोग पगले के खानदान के ही थे। उन सब को घेर कर चारों तरफ से दरवाजे को बाहर निकलने से रोक कर, आतिश बाजी के नाम पर नकली पटाका के स्थान पर असली बमों का उपयोग किया गया। जिससे सारे पंडाल में अफरा तफरी मच गई। और लोग आग से बचने के लिए इधर उधर भागने लगे। बाहर निकलने के दरवाजे को पहले से बंद कर दिया गया था। जितने भी बड़े – बड़े फुहारें लगे थे। उनमें से पेट्रोल निकलने लगा, जिससे पास में ही रखे बारूद के बड़े ढेर आग लग गई। बारूद के ढेर को पहले से ही वहां रखा गया था। जिसके विस्फोट से दहशत फैल गई, सारी पृथ्वी ही कांपने लगी। इस पर विशेष ध्यान रखा गया, कि उसमें से एक भी आदमी बचने ना पाये। उस बारात में बहुत सी औरतें और छोटे बच्चे थे जिन को जिंदा जला दिए गया।

यशवंत सिंह उस समय कही बाहर गया था, किसी जरूरी काम से, जब वह गांव में वापिस आया, तो उसने इस पर बात करने के लिए और इसका बदला लेने के लिए एक बार फिर से सभी दूसरे बचे हुए लोगों को अपने साथ एकत्रित किया। और अब अपने लोगों के लिए राजनीतिक सहायता प्राप्त करने के लिए, अपनी एक समिति बनाकर, वह दिल्ली के जंतर मंतर पर जा कर धरना देने के लिए। वहां जा कर बैठ गया। और वह किसी भी कीमत पर विश्व विद्यालय के कार्य को रुकवाना चाहते था। पहले यह कार्य अपने अस्तर पर किया। जहां पर कार्य नहीं हुआ, तो उसने लोगों से सहयोग लेने लगा। पत्रकार सोशल मिडीया आदी का सहारा लेने लगा, जिससे वह जल्दी ही सुखियों में आ गया। इस विश्व विद्यालय के खिलाफ उसने एक क्रांति का शंखनाद कर दिया, जो बहुत समय तक नहीं चल सका, जिसका बहुत बुरी तरह से दमन कर दिया गया। दिन दयाल और प्रशासन के अधिकारियों की मिली भगत के कारण।

कुछ ही समय के बाद पगले को, इस बात का पता चला, की विश्व विद्यालय को बनाने के लिए यशवंत भयंकर रूप से हत्या करा रहा है। उस समय पगला भारत में नहीं था। वह अपनी पत्नी दिव्या के साथ देश से बाहर स्वीजरलैंड गया था। जब उसको पता चला, उसके खानदान के लग-भग सभी लोगों की हत्या हो चुकी है। तब उसने इस बारे में अपनी पत्नी से बात की, तो उसने कहा ऐसा कुछ भी नहीं है। वहां विश्व विद्यालय का कार्य बहुत अच्छा चल रहा है। लेकिन पगले को अपनी पत्नी के उपर शंका होने लगी। कि यह भी अपने पिता के साथ मिल कर उसके साथ धोखा कर रही है। क्योंकि उसने अपने गांव में भयंकर नरसंहार की घटना का एक टि. बी. चैनल पर उसने स्वयं देखा था। जिसमें यशवंत को दिल्ली के जंतर मंतर पर धरने पर बैठा हुआ भी दिखाया गया था।

पगले ने अपने कुछ परिचित जो उसको पसंद नहीं करते थे। उनसे बात की जिसमें उसका एक चचेरा भाई था, जो अमरीका में रहता था। तो उसने कहा की यह समाचार को सत्य है। इसलिए पगले ने तुरंत फैसला किया, की वह वापिस अपने गांव जा कर देखेगा। कि वहां क्या हो रहा है?

इसके बारे में बात जब उसने दिव्या से किया, तो दिव्या ने कहा की तुम सच में पागल ही हो। जब मैं कह रही हूं, कि वहां कुछ भी नहीं हुआ है। सब कुछ ठीक चल रहा है। तो फिर भारत जाने की क्या जरूरत है? अभी तो हमने अपना व्यवसाय यहां पर नया - नया शुरु किया है। जिसके लिए हमें यहीं रहना है। मैंने अपने पिताजी से बात की है। उन्होंने कहा है कि हम वहां पर जब तक किसी और की व्यवस्था नहीं कर देते, तुम लोग वहीं रहो। पगले ने कहा मुझे तुम और तुम्हारे पिता पर अब भरोसा नहीं है। हम विश्व विद्यालय इसलिए बनाना चाहते हैं। कि लोगों को ज्ञान प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध हो। और लोग ज्ञान को प्राप्त करके, सुख पूर्वक अपनी जिंदगी को व्यतीत कर सके। लेकिन अब वहां तो हत्या हो रही है। हज़ारों आदमी को एक साथ मार दिया गया। यह कोई सामान्य घटना नहीं है। इस पर दिव्या ने कहा की वह एक दुर्घटना मात्र थी । उसका विश्व विद्यालय से कोई लेना देना नहीं है। पगले ने दिव्या से कहा की मैं स्वयं जा कर पता करुंगा की सत्य क्या है? मेरा मन बहुत बेचैन और उदास हो रहा है। जब से मैंने इस खबर के बारे में सुना है। दिव्या ने पगले पर अपना प्रेम दिखाते हुए, उसको अपने गले से लगा कर कहा ठीक है। मैं तुम्हारे भारत जाने की व्यवस्था करती हूं।

कुछ समय के बाद दिव्या ने अपने पिता दिन दयाल से बात की, तो दिन दयाल ने कहा वह पागल आदमी है। उसको जो समझ में आये, उसे करने दो वह भारत आना चाहता है, तो ठीक है। मैं उसकी सारी व्यवस्था कर दुगा। दिव्या ने अपने एक व्यक्तिगत छोटे जहाज से पगले को भारत आने की तैयारी कर दी। और इसकी सूचना मोबाइल पर अपने पिता दिन दयाल को दे दी। दिन दयाल ने उस हवाई जहाज पर

पगले को मारने के लिए टाईम बम लगवा दिया। जिसकी सूचना उस हवाई जहाज के पाइलट को थी। जिसके कारण जब हवाई जहाज स्विजरलैंड से कुछ घंटे की यात्रा कर ली, तो उस जहाज के चालक ने पगले से कहा की आप आराम करें खाना खा कर। (पगले के खाने में भी पहले से नींद की दवा मिलाई जा चुकी थी)। आगे चालक ने कहा क्योंकि हमें अभी लबी यात्रा करनी है। पगले ने कहा ठीक है और उसने खाना खाया। जिसके साथ उसकी आँखों में नींद आने लगी। तभी उसको कुछ शंका हुई। उसने अपने आप को सोने से रोकन के लिए, ध्यान में चला गया। और उसने बहाना किया की वह सो रहा है। इसके बाद दूसरी तरफ हवाई जहाज के चालक ने जहाज को स्वचालित मुड में कर दिया। और स्वयं पैरा सूँट ले कर जहाज से नीचे कूद गया। उससे पहले उसने जहाज में लगे टाइम बम 15 मिनट के बाद फटने के लिए सेट कर दिया था। तंद्रा की स्थिती में जब पगले ने स्वयं को जहाज में अकेला पाया। और साथ में उसने जहाज के चालक की सीट से बंधा टाईम बम को देखा। जो टीक - टीक की आवाज कर रहा था। पगले के पास मात्र 10 मिनट और कुछ पल थे। वह समझ गया, की उसका आखिरी समय आ गया है। लेकिन उसे स्वयं पर विश्वास था। की वह नहीं मर सकता। क्योंकि अभी उसको अपने शत्रु का अंत करना है। क्योंकि वह कोई साधारण आदमी नहीं था। वह था तो हाड़ मांस का पुतला, लेकिन जीवन के खतरा की स्थिती में उसमें एक दिव्य शक्ति का जागरण हो जाती थी। जिसने उसको आज तक जिंदा रखा था। क्योंकि जब उसका इस पृथ्वी पर जन्म हुआ है। उसके लिए इस पृथ्वी बहुत प्रकार के संकट उपस्थित हो चुके थे। अब उसके अंतःकरण से आवाज आई, की प्लेन को फटने से पहले उसे अपने आप को बचाना होगा। जब उसने प्लेन के बाहर देखा। तो प्लेन उस समय बादलों के उपर उड़ रहा था। यह सब विचार करने में उसके पांच मिनट समय गुजर चुके थे। उसने अपने चारों तरफ सर सरी नजर से देखा, तो उसको प्लेन में आपात कालीन कुछ वस्त्र मिले। इसके अतिरिक्त कुछ और आवश्यक सामान थे। जिस को पगले ने जल्दी अपने साथ ले लिया। और एक विशेष कपड़े को उसने अपने शरीर पर धारण कर लिया। जो स्पैश सुट के समान था। जब बम को फटने में मात्र 10 पल ही बाकी रह गये, तो पगले ने पनी आँखें बंद कर के प्लेन से बिना किसी पैरासुट के ही भगवान भरोसे जहाज से छलांग लगा दिया। और इस प्रकार से वह आकाश में हवा में गोते खाने लगा, और करीब कुछ एक मिनट में ही वह सागर के पानी के अंदर था, बिजली की गति से गिरने के कारण वह बेहोश हो चुका था।

अध्याय 9.

इधर दिव्या अपने पिता दिन दयाल के पास कुछ समय के बाद वापिस आ गई। और विश्व विद्यालय के कार्य को देखने लगी। क्योंकि उसको पता चल चुका था, की पगला मर चुका है। और उसके जितने

जानने वाले थे, वह सब भी मर चुके हैं। दिन दयाल का हीरे का व्यापार अपने चरम पर था। जिसकी आड़ में वह बहुत सारे काले बाज़ारी वाले काम दो नम्बर का भी काम करता था। जिसमें ड्रग्स, कोकिन, हथियार, खतरनाक ज़हरीले दवाई, होटल, रीयलस्टेट, संचार, रसायन, औरतों के जिस्म फरोसी का धंधा, के अलावा जुआ घर, नकली दारु के ठीके इत्यादि । इन सब स्रोतों से उसके पास अपार धन आता था। जिसने उसने सभी बड़े अधिकारियों को अपने धन से खरीद लिया था। इसी कारण से वह विश्व विद्यालय के कार्य को तीव्र गति से पुरा करवाने लगा। यशवंत जो उसकी आँखों में कांटे की तरह से खटक रहा था, दिन दयाल ने उसका भी एक कार दुर्घटना में हत्या करा दिया। जिससे यशवंत का आंदोलन ठप पड़ गया।

क्योंकि दिन दयाल के स्वभाव से लगभग सभी लोग परिचित हो चुके थे, कोई भी अपनी और अपने परिवार की जान को संकट में डालना नहीं चाहता था। दिन दयाल कोई साधारण आदमी नहीं था उसने अपने धन के बल पर पूरे भारत सरकार और सभी मिडीया को खरीद लिया था। जिससे उसका विरोध किसी को करने ताकत नहीं थी।

अब दिन दयाल समुह का विरोध करने वाला कोई नहीं बचा था। वह सुकून की जिंदगी काट रहा था। तब उसको ख्याल आया की उसे अपनी बेटी दिव्या की फिर से शादी करनी चाहिए। इसके बारे में उसने दिव्या से कहा- दिव्या तो इसके लिए अपने आपको पहले से तैयार कर लिया था। दिन दयाल ने अपने एक सहयोगी मित्र के पुत्र रतन लाल से दिव्या का विवाह कराने के योजना बना डाली। जो एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक था, जो कई बड़े कार्य क्रम पर शोध कर रहा था जिसमें एक क्लोनिंग थी दूसरी जीव प्रिंटिंग क्रायक्रम था। दिन दयाल ने उसको दहेज के रूप में बनने वाले विश्व विद्यालय को देने का वादा किया। जो पगले का स्वप्न था। क्योंकि रतन लाल के पिता का भी काफी अधिक धन इस कार्य में खर्च हो चुका था। और जिन दूसरे लोगों को भी उसमें सहयोगी बनाया गया था वह भी रतन लाल एण्ड समुह के ही थे जिसमें लग-भग 45 % शेयर उनका हो चुका था। जिस को दिन दयाल अच्छी तरह से जानता था।

पूर्ण विश्व विद्यालय अगले कुछ एक महीने में बन कर तैयार होने वाला है। दिव्या और रतन लाल अब दोनों एक साथ रहने लगे थे। शादी के जलसे का आयोजन विश्व विद्यालय में रखा गया था।

समंदर से सीधा विश्व विद्यालय तक पहुंचने की व्यवस्था की गई थी। बंगाल की खाड़ी से गंगा नदी के द्वारा अंदर ही अंदर पन डुब्बी की सहायता से सुरंग के द्वारा विश्व विद्यालय के कीले के अंदर पहुंचा जा सकता था। इसी रास्ते का प्रयोग अकसर दिव्या और रतन लाल किया करते था।

यह सब कुछ जमीन के नीचे था। किसी को कभी पता भी नहीं चलता था। की वहां कीले में अंदर क्या हो रहा है? दिन दयाल ने अपना भयंकर अवैध वस्तु का गोदाम बना रखा था। और उसमें कितनी सारी कंपनी लगा रखी थी। उसके अंदर लाखों लोग रहते की व्यवस्था थी। कीले के अंदर का सारा कार्य सौर्य ऊर्जा से किया जाता था।

कीले की बाहरी सबसे बड़ी इमारत शानदार लाल पत्थरों से बनाई गई। जिसकी ऊँचाई जमीन के उपर मात्र 500 मीटर थी जो बाहर से जल अवरोधी है। जिसके उपर मोटे रंगीन कांच को लगाया गया है। जिससे सूर्य का प्रकाश अंदर एक किलोमीटर जमीन में उपस्थित किला में पहुंचता है। कीले के अंदर का क्षेत्र करीब पांच वर्ग किलोमीटर है।

पुरा कीला पिरामीड के आकार का है, इसके अंदर की बहुत सारी इमारतें और आधुनिक सुख सुविधा से सुसज्जित बहुरंगी पत्थरों से निर्मित किया गयी हैं। जिसके अंदर जाने के लिए पाँच दरवाजे बनाये गये हैं। एक दरवाजा प्लेन के द्वारा सीधा आकाश मार्ग के लिए है। जिससे दिन दयाल आता है। बाकी चार दरवाजे में से तीन दरवाजे से गाड़ी मोटर आदि के लिए हैं, जो सुरंग के द्वारा विश्व विद्यालय के कीले में प्रवेश कर सकते हैं। एक दरवाजा विशेष रूप से जलमार्ग के लिए बनाया गया है। जिसका प्रयोग सब से अधिक होता है। क्योंकि यहां कीले में किसी लोकल आदमी का प्रवेश निषेध है। इसके अंदर सीधा ट्रेन का मार्ग बनाया गया है। एक रेल्वेस्टेशन है। जिससे कीले के अंदर दिन दयाल का माल आता और जाता है। दस हजार स्वचालित रीबोट रक्षक शस्त्र धारी लगाए गये हैं। कीले की रक्षा के लिए । आकाश मार्ग से किसी हमले को रोकने के लिए कीले के टावर पर कई मिशाइलों को लगाया गया है। इसके अलावा पूरे विश्व से सर्वश्रेष्ठ दश हजार गुरूओं को आमंत्रित किया गया है। अपनी शिक्षा की सेवा देने के लिए। जिसमें बहुत सारे लोग आकर कीले में रहने भी लगे हैं। और अपने अध्ययन अध्यापन का कार्य शुरू कर दिया है। जिसके अंदर 25 हजार लड़के लड़कियों को शिक्षा देने की पुरी व्यवस्था की गई है।

और यह सब पूरे विश्व से आ रहें हैं। ऐसा कहा जाता है की यहां से पढ़ कर जाने वाले लोग, पृथ्वी पर अपनी सेवा नहीं देंगे। वह मंगल ग्रह या चंद्रमा पर बसने वाली दुनिया का प्रतिनिधित्व करेंगे।

कीले के अंदर ही कई होटल, जुआ घर, स्विमींग पुल, कई वैज्ञानिक प्रयोगशाला, है। जिसमें शातिर दिमाग वाला रतन लाल अपने वैज्ञानिक प्रयोग करता है। कीले के अंदर वह सब व्यवस्था है। जो दुनिया के किसी आधुनिक विश्व विद्यालय में सुविधा होगी। यहां सब कुछ कम्प्युटर से स्वचालित है। जिसके लिए विशेष रूप से कई सुपर कम्प्युटर का निर्वाण कराया गया है। जिनके सहायता से एक आदमी दिव्या

या रतन लाल अपनी केबिन में से पूरे परिसर की खबर ले सकते हैं। जिसका जायजा लेकर रतन लाल बहुत खुश हुआ।

इस प्रकार से विश्व विद्यालय का काम पुरा हो गया। और 21 जुलाई को उसके उद्घाटन की तारीख को तय कर दिया गया।

और उसी दिन रतन लाल और दिव्या के विवाह की तारीख को भी तय कर दिया गया। जिसके लिए दूर - दूर तक पूरे पृथ्वी पर आमंत्रण पत्र को भेजा गया। जिस कार्ड में आमंत्रण भेजा गया वह हीरे से जड़ित था। जिस को विशेष रूप से बनवाना गया था। जिसमें बड़े – बड़े उद्योगपति अभिनेता, नेता मंत्री और दुनिया तस्कर लोगों को शामिल किया गया था।

इस प्रकार से कीले को दुल्हन की तरह से सजाया गया। कई अरब रुपया खर्च किया गया। इस रंगा रंग कार्यक्रम में, जो लगा लगातार कई दिनों तक चलता रहा। जितने भी मेहमान आये थे, सब ने एक शूर में कीले की प्रशंसा में दिन दयाल दिव्या और रतन लाल की खूब वाह वाही की। जिस को सुन कर यह सब बहुत गद - गद हुए।

जैसा की पहले तय किया गया था। इसी अवसर बड़े धूम धाम से रतन लाल और दिव्या का विवाह भी संपन्न हो गया। इस विश्व विद्यालय के उद्घाटन के कार्यक्रम में किसी भी ग्रामिण या पगले के खानदान के व्यक्तियों को नहीं आमंत्रित नहीं किया गया। क्योंकि दिन दयाल यह समझता था। कि पगले के खानदान के सभी लोग मारे जा चुके हैं।

लेकिन इसके बारे में उसे पता नहीं था। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो विवाह में शामिल नहीं हुए थे। (जिसमें उसने लग-भग सब को मरवा दिया था।) वह सब बच गये हैं। जो यहां भारत में नहीं रहते हैं, जो कही और दूसरे देश में रहते हैं, जिन में से कुछ एक अमरीका, इंगलैण्ड इत्यादि देश में रहते हैं। वह दिन दयाल के विश्व विद्यालय के कार्य को गलत सिद्ध कर रहें हैं।

जिन में से ही एक था जिसने इस हत्या की सूचना पगले को दी थी। जो यशवंत का छोटा भाई ,है जिसका नाम भगवंत है। जो दिन दयाल को सड़यंत्र का पर्दा फांस करने के लिए अमरीका से अपने कुछ सहयोगियों के साथ आंदोलन चला रहा है।

पगला विश्व विद्यालय अपने लोगों और समाज के लोगों के कल्याण के लिए बनाना चाहता था। लेकिन दिन दयाल अपने सभी सहयोगी के साथ मिल कर विश्व विद्यालय के कीले को अपना दुष्कर्म करने का अड्डा बना लिया। और उसको अपने समाज के अर्थात पश्चिमी संस्कृति सभ्यता के नंगे नाच और विलास के साथ अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए। इसके अतिरिक्त भारत की शिक्षा का संस्कार सभ्यता का वह विश्व विद्यालय की आड़ में बहुत अधिक दुर प्रयोग करने लगा। वह मानव समाज कल्याण के लिए कुछ भी नहीं करना चाहता है। क्योंकि उसके पास ऐसी कोई भावना नहीं है। जबकि पगला मानवता की रक्षा के लिए कार्य करना चाहता था। वह चाहता था की उसके इस विश्व विद्यालय के निर्वाण से लोगों को एक बार अपने जीवन और उचा उठाने का अवसर मिलेगा। लेकिन दिन दयाल ने तो सिर्फ अपने अहंकार की तृप्ति और अपने कुकर्मों को विस्तारित करने के लिए सबसे बड़े साधन के रूप में विश्व विद्यालय कीले का उपयोग कर रहा है।

इसमें दो बातें हैं, पगला एक मध्यम लोगों के श्रेणी वाले समाज का रहने वाले था। जब यहां के लोग उसका साथ नहीं दिया। तो वह इन सब लोगों को छोड़ कर, इस समाज से बाहर चला जाता है। और जो सबसे श्रेष्ठ ऐश्वर्यशाली मानव माने जाते हैं। जो बड़े - बड़े महानगरों में रहते हैं। जो आधुनिक राजा किस्म के हैं, उनसे मित्रता कर लेता हैं। गांव के लोगों के पास अपनी जमीन की समस्या थी। गांव के लोगों ने पगले के परिवार के साथ मिल कर उसकी जमीन को अपने कब्जे में कर लिया था। वह किसी प्रकार की सहायता पगले की नहीं करते थे। जिसके कारण उसको आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता था। जिससे पगले ने स्वयं को बचाने के लिए। वह इनसे दूर हो गया।

दूसरी तरफ जो दिन दयाल और दिव्या जैसे धनाढ्य मानव हैं। वह पहले तो उसके खानदान और गांव के लोगों को यातना दे कर जमीन कब्जे में कर लेते हैं। और फिर उन सब की हत्या करा देते हैं। जिसमें स्वयं पगले को भी नहीं छोड़ते हैं। यह दो प्रकार के समाज हैं, लेकिन दोनों में एक ही बीमारी है। यह दोनों समाज के लोग मानवता के रक्षक नहीं है मानवता के भक्षक सिद्ध होते हैं।

इसके अतिरिक्त रतन लाल की एक बड़ी बहन कोनीका भी हैं, जो अपने पति लाखन के साथ विश्व विद्यालय के कीले में ही रहती है, वह बहुत बड़ी चिकित्सक है, जो अपने भाई से भी ज्यादा खतरनाक है। वह दिव्या को अपनी आँखों की किरकिरी मानती थी। क्योंकि वह दिव्या के स्वभाव को पसंद नहीं करती थी। वह अपने भाई रतन लाल से एक दिन कहती है। क्या तुम जानते हो? कि इसने अपने फ़ायदे के लिए पगले से विवाह किया था। और उसकी हत्या करा दिया। तुम जानते हो ना। इस पर रतन लाल ने तिरस्कार पूर्ण हँसते हुए कहा- की मेरी प्यारी बहना तुम चिंता मत करो। मैं उससे इस पूरे विश्व विद्यालय पर अपना अधिकार कर लूगा। और समय आने पर उसको अपने रास्ते से हटा दूंगा। कोनिका ने कहा यहीं तुम्हारे

लिए ठीक भी होगा। आगे उसने कहा इसके लिए मैंने ने एक प्रकार की योजना बनाई है। तो रतन लाल ने कहा की वह क्या है? तब कोनीका ने कहा मैंने उसके लिए एक विशेष औषधि बनवाई है। अपने चिकित्सक से जिसकी थोड़ीसी मात्रा उसको धीरे – धीरे समाप्त कर देगी। यदि वह जिंदा भी रहेंगी तो हमारे एक गुलाम से अधिक नहीं होगी। क्योंकि यह दवा जो उसके भोजन में दी जायेगी। जिससे उसके दिमाग में सोचने समझने की शक्ति का धीरे – धीरे क्षरण हो जाएगा। रतन लाल ने कहा बहुत सुन्दर तुम अपने काम में लग जाओ। लेकिन ध्यान रखना की उसको जान से नहीं मारना है उसे मुर्दे के समान जिंदा रखना है। और हां इस बात के बारे में किसी प्रकार से किसी को खबर ना होने पाये। नहीं तो हम सब के लिए बहुत बड़ा खतरा खड़ा हो उपस्थित हो जायेगा। क्योंकि तुम जानती हो की दिन दयाल कितना बड़ा कमीना आदमी है। वह हम दोनों को जिंदा जला देगा। क्योंकि उसने इस कीले को बनवाने में पगले के खानदान के हज़ारों आदमी, औरत, बच्चों का जिंदा जला दिया है। कोनिका ने कहा भाई तुम एक दम निश्चिंत रहों किसी को कुछ भी नहीं पता चलेगा। यह सब कार्यक्रम हम सीधे नहीं करेंगे। अप्रत्यक्ष रूप से करेंगे। एक दिन दयाल और उसकी बेटी दिव्या दोनों को बारी – बारी खत्म कर देंगे। इन को हम भरोसे के खंजर धीरे- धीरे लंबे समय तक तड़पा - तड़पा कर मारेंगे।

पगला जब होश में आया, तो वह समंदर के किनारे पर था। क्योंकि समंदर के पानी में कूदने से वह मरा नहीं था। उसका भाग्य प्रबल था, वह बेहोश हो गया था। जब उसको होश आया, तो वह अपने आपको एक अनजाने द्वीप पर पाया। वह किसी तरह से खड़ा हुआ, लड़खड़ाते हुए। उस वीरान द्वीप पर अपने जीवन को बचाने के लिए निकल पड़ा । वह जानता था की वह जिंदा बच गया था, इसमें अवश्य ईश्वर की इच्छा है। वह अवश्य मेरी रक्षा करेगा। और जो कार्य अभी तक बाकी है, उसके जीवन का, उसको उसे पूर्ण करना होगा। धीरे - धीरे चलता हुआ वहाँ समंदर के किनारे दुर जंगल की तर तरफ चल पड़ा। जंगल में कुछ घंटे की यात्रा करने बाद, वह जंगल में एक तालाब के किनारे पहुंचा। और एक छाया दार वृक्ष के नीचे बैठ कर आराम करने लगा। वह भूख और प्यास से व्याकुल हो रहा था। जिसके कारण उसने वहां जंगल में एक छोटे से तालाब को तलाश लिया, और उस तालाब में से उसने से थोड़ा सा पानी पी कर अपनी प्यास को कुछ समय के शांत कर लिया। फिर उसका दिमाग थोड़ा - थोड़ा काम करने लगा, उसकी मूर्छा धीरे - धीरे खत्म हुई। उसे वह सब कुछ याद आया, जो उसके साथ पहले हुआ था, कि कैसे वह यहां पर पहुंचा होगा? जिस को सोच कर उसको बहुत अधिक दुःख हुआ। क्योंकि उसको अब भरोसा हो चुका था, की उसके साथ बहुत बड़ा धोखा और विश्वासघात किया गया है। उसका उपयोग किया गया है, विश्व विद्यालय की जमीन को हड़पने के लिए। वहां पीने योग्य पानी पा कर उसको कुछ राहत मिली, उस समय दोपहर का समय था। सूर्य बहुत तेजी से चमक रहा था। यह मई का महीना था। धूप थी यद्यपि हवा भी चल रही थी। जिसके कारण वह वहीं वृक्ष के नीचे कुछ समय के लिए वे सुध होकर सो गया। यह

सोच कर की वह कुछ समय बाद उठने के भोजन की तलाश करेगा। क्योंकि उसके शरीर में बहुत अधिक कमजोरी थी।

नींद में वह स्वप्न देखता है, की वह दिव्या अपनी पत्नी के साथ नौका बिहार कर रहा है स्विजरलैंड की झील में, जहां पर दिव्या कह रही है, की वह गर्भवती है, और उसके बच्चे की मां बनने वाली है। जिस को सुन कर पगला बहुत खुश हुआ। और उसने कहा की मैंने अपने बच्चे का नाम भी सोच लिया है। दिव्या ने कहा क्या नाम सोचा है? तो पगले ने कहा सत्या, इस पर दिव्या ने कहा यदि हमारी संतान लड़की हुई तो मैं उसका नाम रानी रखूंगी। इस पर पगले ने कहा क्यों नहीं अवश्य। लेकिन मैं जानता हूं, तुम मेरे लिए एक पुत्र को जन्म दोगी। जिस को मैं अपने विश्व विद्यालय में शिक्षा दूंगा। क्योंकि मेरे बाद विश्व विद्यालय का कार्य आगे चल कर मेरा बेटा ही चलाएगा। तभी दिन दयाल एक तेज धार चमकती हुई तलवार लेकर आता है। और वह पगले पर हमला कर देता है, जिससे पगला स्वयं को बचाते हुए नदी के पानी में गीर जाता है। और अपनी जान बचाने के लिए छट - पटाने लगता है। तभी उसकी नींद खुल जाती है। और वह अपने आप को उस अंजान वीरान द्वीप के जंगल में पाता है। अब साम होने वाली थी। दूर जंगल में जंगली कुत्तों की आवाज भी आ रही थी, वह तुरंत जल्दी से खड़ा हुआ। और अपने लिए औजार की तलाश करने लगा। उसके चारों तरफ पत्थर के टुकड़े और पेड़ की टूटी कुछ टहनी दिखाई दी। उसने एक नुकीला पत्थर लिया, और अपने कमर के पट्टी को निकाल कर एक मजबूत लकड़ी में बाँध लिया। और उसको हथियार के रूप में लेकर चल दिया। क्योंकि उसको पता था की यहां जंगल में जानवर भी मिल सकते हैं। उसके उपर किसी प्रकार के हमले से बचाने के लिए यह हथियार ही उसकी रक्षा कर सकता है। वह जंगल में खाने के अतिरिक्त रात्रि को बिताने के लिए किसी एक सुरक्षित स्थान की भी तलाश में था। क्योंकि कुछ समय में रात्रि होने वाली थी। यहीं सोच कर वह जंगल में और अंदर चलता रहा। कुछ समय पर उसको कुछ जंगली छोटे वृक्ष दिखाई दिया। जिसमें कुछ छोटे – छोटे फल लगे थे। जो जंगली बैर के समान लग रहें थे। पगले ने सोचा इसको खा कर देखते हैं। और उसने एक फल को तोड़ लिया। और उस फल में थोड़ा सा काट कर, अपने मुंह में रख लिया। खाने में कुछ ज्यादा बुरा नहीं था, कुछ कड़वा लग रहा था। उसने सोचा अब तो इस जंगल में इसी प्रकार के फलों को खा कर जिंदा रहना होगा। जब तक यहां से निकलने को रास्ता नहीं तलाश लिया जाता है, उसके द्वारा। उसने कुछ एक फलों को खाया, और कुछ फलों को तोड़ कर अपने जेब में अपने पास रख लिया। और फिर जंगल में आगे नहीं गया। वहीं से वापिस चल दिया। क्योंकि पानी उसको उसी तालाब में ही पीने को मिलेगा। क्योंकि प्यास लगने पर रात्रि में उसको दिक्कत होगी। जिस को उसने पीछे छोड़ दिया था। खाने के लिए कुछ उसको मिल चुका था। यहीं सोचते हुए, उसे रात्रि निवास करने के लिए, उस तालाब के आस पास ही, उसको किसी स्थान को तलाशना होगा। यही विचार करते हुए, वह आगे बढ़ता जा रहा था। अब धीरे – धीरे सूर्यास्त होने लगा था। तभी उसको एक छोटा सा पहाड़ दिखाई देता है। उसने सोचा शायद इसमें कोई गुफा मिल जाये।

लेकिन उसके मन में यह भी शंका हो रही थी, की कोई जानवर भी मिल सकता है। फिर भी वह उस पहाड़ की तरफ जल्दी – जल्दी अपने पैरों को बढ़ता हुआ, उसके पास जाने लगा। कुछ ही समय में वह वहां पहुंच गया। वहां उसे जंगली जानवरों की आवाज आ रही थी। जिससे उसके मन में एक भय और सिहरन पैदा हो रही थी। जल्दी ही उसने अपने रात्रि बिताने के लिए एक छोटी गुफा को तलाश लिया। जिसमें अंदर जाने का छोटा सा दरवाजा जैसा सूराख था। और अंदर पर्याप्त स्थान रहने लायक था। वह पहले अपने हाथ में लिए हुए खुद के बनाये गये, औजार से इधर उधर ठोक कर देखा। यदि कोई जानवर सांप आदी हो तो निकल जाये। लेकिन उसमें सांप तो नहीं मिला। लेकिन एक खरगोश जरूर मिल गया। जिस को उसने पकड़ने का प्रयास किया। लेकिन वह काफी खरगोश फुर्तीला था। उसके पकड़ में नहीं आया। उस गुफा से निकल वह लंबी छलांग के साथ जंगल में दुर भाग गया। पगले ने सोचा जाने दो, अब मैं यहां रात्रि को व्यतीत कर सकता हूं। सुबह होने पर इसकी तलाश करुंगा। इसके बाद वह स्वयं उस गुफे के अंदर जमीन पर दीवाल के सहारे अपने शिर को टिकाकर बैठ गया। और आकाश में देखने लगा। जिसमें तारे टीम –टिमा रहे थे। जैसे वह उससे बात कर रहें हो। वह उन्हीं के साथ अपने विश्व विद्यालय के साथ दिन दयाल और दिव्या के बारे विचार करने लगा। उसने सोचा ऐसा क्यों उसके साथ किया, उसका ऐसा कौन कर्म था? जिसके कारण उसको यह धोखा और विश्वासघात जैसा दुःख सहना पड़ रहा है। फिर उसने समझा की इसमें अवश्य परमेश्वर की कोई सदिच्छा होगी।

धीरे – धीरे रात्रि ने अपनी चादर को जंगल के उपर फैलाना शुरु कर दिया। हां यह अवश्य था की आसमान में तारों के साथ चाँद दिखाई दे रहा था। जिसके कारण जंगल के उस गुफे के बाहर थोड़ा – थोड़ा दिखता था। जैसे- जैसे रात्रि बढ़ने लगी, जंगली जानवर की आवाज और तेज होने लगी शांय – शांय आवाज आ रही थी। जिससे वातावरण बहुत ही भयानक लग रहा था। उस रात्रि में निंद कहा आ रही थी, पगले को, उसने सोने का प्रयास किया लेकिन आंखों में नींद आने से मना कर दिया था। जिसके कारण पगला जागता ही रहा। और उसने जाग कर ही रात बिताने का निर्णय किया। उसने सोचा जब सोना नहीं है तो फिर परमेश्वर का ही ध्यान क्यों नहीं करते हैं? यह सोच कर पगले ने, वहीं अपना आसन लगा लिया और ध्यान में प्रभु चिंतन करने लगा। उसका मन बहुत अधिक अशांत था, जिसके कारण मन में बहुत प्रकार के विचार चल रहें थे। उसने सोचा की इस जंगल और इस द्वीप पर वह कैसे निकल सकता है? क्योंकि इस द्वीप के चारों तरफ विशाल समंदर है, जिस को तैर कर पार करना उसके लिए असंभव है। फिर उसको क्या कर चाहिए? इसी विचार की गुत्थी में वह रात्रि को व्यतीत करने लगा। उसने विचार किया की यहां पर इस समय केवल परमेश्वर के और कोई उसकी सहायता नहीं कर सकता है। इसलिए उसको परमेश्वर से ही मदद माँगनी चाहिए। फिर उसने सोचा की परमेश्वर उसके लिए यहां पर क्या कर सकता है? वह किसी साधन को उसको लिए यहां पर भेज सकता है। जैसे की जहाज यहां समंदर किनारे

आ जाये, जिससे वह उससे इस समंदर को पार कर के अपने देश और अपने गांव ब्रह्मपुरा पहुंच जायेगा। और वहां पहुंच कर वह दिन दयाल से उसके गलत कर्मों का हिसाब करेगा।

ऐसा करते - करते कई घंटे बीत गए। और उसको उस रात्रि के अंत की आहट मिलने लगी। क्योंकि पक्षियों के चह- चहाने की आवाज उसके कानों में पड़ी। उसने अपनी आँख को खोला तो देखता है रात्रि समाप्त होने वाली थी। प्रातः काल की लालिमा आकाश छा रही थी। उसने कुछ देर और ध्यान में परमेश्वर के साथ रहने का निर्णय किया। उसको कुछ वेद के मंत्र जिस को उसने अपने आश्रम में रह कंठस्थ किये थे। उन को मन ही मन में स्मरण करने लगा। उन मंत्रों के जाप से उसके मन काफी शांति मिलने लगी, जिससे उसने उन मंत्रों को अपना मानसिक हथियार बनाने का निर्णय किया। और उसने संकल्प किया की वह अब इन मंत्रों को सिद्ध करेगा। जिससे उसका मन नियंत्रित हो जायेगा। और वह अपने मन को दिव्य शक्ति को प्राप्त करने में लगा के रखेगा। उसने अपने जेब में हाथ डाला कुछ समय के बाद जब वह ध्यान से बाहर निकला, तो उसकी जेब में कुछ हजार रुपये और उसका मोबाइल था। जो लगभग डिस्चार्ज हो चुका था, अभी उसमें कुछ एक % बैटरी थी। उसका मोबाईल जल अवरोधी था, जिसके कारण खराब नहीं हो सका था। उसने देखा उसके मोबाईल में किसी प्रकार का कोई नेटवर्क नहीं आ रहा था। फिर उसने मोबाइल को स्विच आफ कर के अपने जेब में वापिस डाल लिया। और उस समय उसका मोबाइल समय बता रहा था। की सुबह के 5 बज रहे थे। यह अंतिम बार था इसके बाद पगले ने कभी उसका उपयोग नहीं किया।

इधर दिन दयाल अपना दिल्ली का सारा कारोबार समेट कर अपनी बेटी दिव्या और दामाद रतन लाल के साथ रहने के लिए विश्व विद्यालय के कीले में आ गया। क्योंकि उसको अकेले दिल्ली में रहना अच्छा नहीं लग रहा था। उसने एक दिन दिव्या से कहा की हम अब अपना सारा कार्य यहीं से करेंगे। क्योंकि तुम मेरी अकेली संतान हो तूम्हारी मां के मरने के बाद मैं तुम्हारे साथ ही रहता था। दिव्या ने कहा पाप यह सब आपका ही तो है। आप यहीं रहें, रतन लाल भी तब तक आ गया, दिन दयाल के पास और कहां बहुत सुंदर बात आप हमारे साथ ही रहें, इससे हमें आपकी सेवा करने का भी अवसर मिलेगा। यह सब वह उपर – उपर से ही कह रहा था, अंदर - अंदर से वह कुढ़ रहा था, की यह बुढ़्ढा कहां से कबाब में हड्डी बनने के लिए आगया? रतन लाल ने कहा तो फिर दिल्ली के व्यापार को आप क्या कर रहें हैं? दिन दयाल ने कहा उसको हम यहीं से चलायेगें। वैसे तुम्हारे पिता जी तो वहां पर है ही। वह हमारे ना रहने पर देखेगें। रतन लाल ने कहा क्यों नहीं। दिन दयाल ने कहा रतन बेटा यह सब संपत्ती तो तुम दोनों की ही है। हमने अपने पुरखों से पाया था उसको बहुत अधिक बढ़ा दिया है, अब तुम्हारी और दिव्या की है, अब जो तुम्हारी संतान होगी, उसके लिए इसकी रक्षा और देख भाल करना तुम्हारा कर्तव्य है। इस पर रतन लाल

ने कहा जरूर, लेकिन अभी हम किसी संतान की योजना नहीं बनाया है। क्यों दिव्या मैं ठीक कह रहा हूं न, दिव्या ने हां में अपनी सहमती देते हुए अपने सर को हिला दिया।

रतन लाल ने आगे कहा अभी तो हमें थोड़ मौज मस्ती करना है। और बहुत अधिक कार्य करना है, हमारा कार्यक्रम है। कि हम अगले 5 सालों के अंदर मंगल ग्रह पर अपनी बस्ती बसायेगें। हमारी कंपनी इसके बारें में स्पैश क्राफ्ट मेकर एलन मस्क से बात चित कर रही है। इस साल हमारा समझौता हो जायेगा। और हम मंगलग्रह पर रहने वालों की बुकिंग शुरु कर देगें। इसको सुन कर दिन दयाल ने यह तो बहुत सुंदर बात है। तुम मंगल पर रहना चाहते हों, मैं इस पृथ्वी पर जितने विश्व विद्यालय हैं। उन सभी बड़े विश्व विद्यालय को अपने विश्व विद्यालय के साथ सुरंग के द्वारा जोड़ने के लिये। एक योजना पर कार्य कर रहा हूं। हमारी बात इस समय भारत के प्रधान मंत्री और सभी प्रदेश के मुख्य मंत्रीयों से चल रही है। पहले हम भारत के सभी बड़े जो सरकारी विश्व विद्यालय हैं। उन को लीज पर लेकर जमीन के अंदर - अंदर सुरंग के रास्ते से जोड़ देंगे। जिससे हमें पूरे भारत को अपने अधिकार में करने में सहायता मिलेगी। और हम भारत के जो मुख्य ज्ञान का श्रोत है, उसको अपने अंतर्गत करके उसका दोहन कर सकेगें। साथ में अपनी मन माफिक परिवर्तन भी कर सकेंगे। हम नई शिक्षा निति लागू करेंगे। जिसके माध्यम से भारत की जनता को और अधिक मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा कर लेंगे। जिस प्रकार से अँग्रेज़ों ने किया था हम उसकी ही दोंगली संतान और काले अंग्रेज ही है। और सभी आने वाली मानव जाती को नशे की लत में करके उनका जम कर शोषण करेंगे। इन सभी को आर्थिक और मानसिक गुलाम बना लेगें। जब तुम्हारा काम मंगल ग्रह पर व्यवस्थित हो जायेगा। तो हम इस देश को एक बार फिर से विदेशी यों को बेंच कर मोटी रकम वसूल लेंगे। जरूरत होगी तो इस देश को जड़ को खत्म भी कर देंगे। यहां इस देश में ज्यादा तर लोग जाहिल गंवार और मूर्ख हैं। इनका दोहन पहले मुसलमान ने किया फिर अंग्रेज ने किया। अब हम लोग कर रहे हैं। अब तुम खुद देख सकते हों कि किस तरह से हमने पगले को अपना दामाद बना कर उसकी खानदानी सभी जमीन के साथ इस बहुत बड़े भू भाग पर अपना एकाधिपत्य अधिकार कर लिया। वह भारत की प्राचीन जड़ों फिर से लगा रहा था। उसको उखाड़ने और समाप्त करने के लिए हमें बहुत बड़ा धन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, और धार्मिक मांयताओं के शत्रु संघटन के द्वारा मिला है। और अब यहां उनका नामों निशान नहीं है, हमारे पास विदेशीयों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। हमने एक लाख आदमी को रहने के लिए इस कीले में को बनाया था। लेकिन अब लगता है यह जगह छोटी पड़ने वाली है। इस लिए हम भारत के सभी विश्व विद्यालय जो अकसर खाली रहते हैं। उन सब को आवासीय विश्व विद्यालय बना कर, अपने सभी दूसरे विदेशी को घुसपैठों को वहां का निवासी बना देंगे। जिससे हमारा समर्थन करने वाले बढ़ते रहेंगे। यह हमारा कार्य भी अगले कुछ सालों में पुरा हो जायेगा।

रतन लाल ने कहा आप बहुत अधिक बुद्धिमान हैं, आप के दिमाग को कोई समझ नहीं सकता है। बात को बदलते हुए, उसने कहा अभी मुझे एक समारोह में जाना है, जो हमारे एक मित्र के विवाह के सालगिरह पर रखा है। इस लिए आप से इजाजत चाहता हूं। दिव्या की तरफ देखते हुए कहा मैं दिव्या को लेने आया था, आपसे भी मुलाकात हो गई। दिव्या तुम अभी तक तैयार नहीं हुई। इस पर दिव्या ने कहा मैं थोडी ही देर में आती हूं, तुम तब तक काफी पीयों । और दिव्या ने अपने एक सेवक को काफी बना कर रतन लाल को पिलाने का आदेश देकर, अपने कमरे में तैयार होने के लिए चली गई। दिन दयाल ने कहा तुम दोनों हो जिंदगी के मजे लो। जब मैं तुम्हारे उम्र का था, ऐसे ही मजे किया करता था। मुझे भी किसी काम से बाहर जाना है।

दिन दयाल अपने स्थान से उठा और अपने प्यारे तेंदुआ को सहलाते हुए, उसका पट्टा अपने हाथ पकड़ कर वह बाहर कीले के मुख्य गलियारे से होते लिफ्ट के द्वारा विश्व विद्यालय के कीले के उपर हवाई जहाज अड्डे पर पहुंचा। जहां पर उसका विशेष प्लेन चालक के साथ उसका इंतजार कर रहा था। क्योंकि आज साम को उसको भारत के सभी प्रांतों के मुख्य मंत्रियों से बात करके विश्व विद्यालय एकीकरण संपर्क विषय समझौता को पूर्ण करना था। आज यह समझौता होने के बाद भारत के सभी सरकारी और व्यक्तिगत विश्व विद्यालय दिन दयाल के अंतर्गत हो जायेगा। जिससे दिन दयाल की सहयोगी कंपनी अपनी सुरंग की जाल फैलाने का काम शुरु कर सकेंगे। जिसमें जापान और चाइना द्वारा बुलट ट्रेन को चलायी जायेगी। जिसके लिए भारत सरकार के विश्व विद्यालय मंत्रालय ने प्रधान मंत्री के आग्रह पर अनुमति दे दिया है। इसके पीछे कारण है, क्योंकि दिन दयाल ने प्रधान मंत्री के चुनाव में बहुत बड़ा सहयोग किया था।

मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन का आयोजन, दिन दयाल के अपने एक गोवा होटल के होटल में किया जा रहा है, जिसमें भारत के सभी प्रांत के मुख्य मंत्रियों का आमंत्रण किया गया है। जिसमें लग –भग सभी प्रांत के मुख्य मंत्री आ ठहरें हैं। जिनका स्वागत सत्कार बहुत अच्छी तरह किया जाये, इसके लिए पहले से निर्देश दिन दयाल ने अपने आदमियों को दे दिया है। किसी प्रकार की कमी ना हो, इसलिए उसने अपनी सेक्रेट्रिएट से अपने मोबाइल से दिन दयाल ने बात किया, और उसको सख्त आदेश दिया कि किसी प्रकार की लापरवाही नहीं किरना चाहिए। नहीं तो मैं तुम को अपने खूंखार भूखे तेंदुआ के सामने डाल दूंगा। दिन दयाल अपने किसी कर्म चारी को गलत पाने पर या उसके किसी कार्य को श्रेष्ठ तरीके से नहीं किये जाने पर या फिर किसी प्रकार का धोखा देने पर, उन को अपने तेंदुआ को जिंदा खिला देता है। इस तेंदुआ को उसने आदमियों के मांस खाने की आदत डाल दी है। इस लिए उसके लिए सिर्फ मानव के ही मांस खाने के ले दिया जाता है। क्योंकि उसके पास बहुत बड़ा कारोबार है। जिनके बीमार होने पर विशेष रूप से दिन दयाल के अस्पताल में आते हैं, जिसमें अकसर लोग मरते हैं। जहां पर लोगों के शरीर

के काम के अंगों को उनके शरीर से निकाल कर बाकी शरीर के मांस को पका कर तेंदुआ के लिए रख दिया जाता है।

थोड़े समय में दिन दयाल अपने होटल में पहुंच गया। और तत्काल मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में गया, जहां पर सभी ने खड़े हो कर उसका स्वागत किया। दिन दयाल ने कहा आप सब को पता ही होगा, यहां हम सभी उपस्थित होने का कारण, जैसा की हमने अपने योजना की फाईल पहले ही आप सब को भेज दिया था। मैं समझ चुका, जो भी मुख्य मंत्री यहां पर उपस्थित नहीं हैं, इसका मतलब यह हुआ की उनसे हमें फिर स बात करनी होगी। आप सब को यदि कोई समस्या या कोई शंका हो, तो हम उस विषय पर बात कर सकते हैं, इस पर सभी ने एक साथ एक आवाज में कहां हम सब आपकी योजना सहमत हैं। आप अपने कार्य को शुरू करें। दिन दयाल ने कहा हमें आप सब से यहीं उम्मीद थी। आप सब आये और हमारे इस योजना में अपना अमूल्य सहयोग दिया। इसके लिए धन्यवाद, आप सब को आप सब के शेयर का रुपया आप सब के खाते में जमा करा दिया जायेगा। इसके साथ वह अपने स्थान से उठा, और अपने कमरे में आराम करने के लिए चला गया।

दूसरी तरफ रतन लाल और दिव्या अपने मित्र के विवाह के सालगिरह के उत्सव का आनंद ले रहें थे। जहां पर पहली बार दिव्या को कुछ चक्कर आया। और वह गीर गई, जिससे वहां पर अचानक उत्सव में विघ्न पड़ गया। इसके बारे में सिर्फ रतन लाल और उसकी बहन जानती थी। क्योंकि उन को पता था की उसके द्वार दिये जाने वाले धीमें जहर के कारण ऐसा दिव्या के साथ हो रहा है। लेकिन दिव्या और दूसरे लोग समझ रहे थे की दिव्या किस बड़ी बीमारी की शिकार हो गई है। जिसके कारण उसको तुरंत अस्पताल में भरती किया गया। जहां पर चिकित्सक ने काफी जांच पड़ताल किया। और जब दिन दयाल को अपनी बेटी के बारे में पता चला, की वह बीमार हो गई है। और वह अस्पताल में है, तो वह तुरंत विश्व विद्यालय के लिए गोवा से रवाना हो गया। आने के बाद पहले दिव्या से मिलने के लिए गया। जहां पर चिकित्सक ने बताया की इनके दिमाग की नसों में सुजन आ गया है। जिसके लिए इन को कुछ दिन अस्पताल में रहना होगा। अभी वह बिल्कुल ठीक हैं। यदि दवा से ठीक हो जाता है, तो ठीक है। नहीं तो हमें इनके दिमाग का आपरेशन करना होगा। अभी इसका चांस 25 % हैं। दिन दयाल ने कहा क्या मैं? दिव्या से मिल सकता हूं, तब चिकित्सक ने कहां अभी वह बेहोश हैं। जब तक होश में ना आ जायें, तब तक आपको इंतजार करना होगा। कमरे के बाहर रतन लाल अपने पूरे परिवार के साथ उपस्थित था। उसको देख कर लगता था। कि वह बहुत दुःखी है। यह सब केवल दिन दयाल को दिखाने के लिए था। क्योंकि रतन लाल ने सभी चिकित्सक को भी अपने पक्ष में कर लिया था। वह चाहता था की अब कभी भी दिव्या ठीक ना हो।

अध्याय 10.

जैसे ही सूर्य की किरणें जमीन पर पड़ी पगला अपने स्थान अर्थात अपनी गुफा से निकल कर बाहर उस द्वीप का निरीक्षण करने के लिए निकल पड़ा, सबसे पहले वह समंदर के किनारे गया जहां पर वह पहली बार होश आने पर पाया था। वहां पर खड़ा हो कर, उसने समंदर की उठते और गिरते लहरों को देख रहा था, जिस को देख कर उसको अपने अंदर आशा का संचार हो रहा था, जिससे उसने महसूस किया। वह एक बार इन लहरों के साथ अवश्य अपने देश को पहुंच जायेगा। समंदर में लहरों के साथ कुछ मछली भी कभी- कभी दिखाई दे जाती थी। जिससे एक बार उसने सोचा की कुछ मछली का ही शिकार किया जाये, और किसी तरह आग जला को जला कर, इन को भुज कर खा लेना चाहिए। तभी उसके मन में बिचार आया, की उसको परमेश्वर की साधना करनी है। इस प्रकार से वह जीव हिंसा करके परमेश्वर को उपलब्ध नहीं कर पायेगा। इसलिए वह वहां से आगे निकल पड़ा। काफी दूर चलने के बाद उसको कुछ घास फुस दिखाई दिया, जिस को वह उखाड़ने लगा। क्योंकि वह चाहता था की इससे वह अपने लिए एक कुटिया को बनायेगा। काफी समय तक यह कार्य करने के बाद, उन को वहां सूखने के लिए छोड़ कर, आगे जंगल से कुछ बड़ी और मजबूत लकड़ी के टुकड़े की व्यवस्था करने लगा। कुछ वहां पहले से टूटी हुई मिल गई। और कुछ एक को उसने अपने नुकीले पत्थर के हथियार से काटने लगा, जिसमें उसका लग –भग दिन बित गया। काफी अधिक परिश्रम इस कार्य में लगा, यह सब करते हुए कब शाम हो गई, उसको पता ही नहीं चला। उसको भी वहीं छोड़कर वापिस अपने उस गुफे की तरफ निकल पड़ा। रास्ते में अपने खाने के लिए कुछ मिल जाये, इसकी तलाश में ही था, रास्ते में ही उसको कुछ जंगली छोटे केले के पेड़ मिल गये। जिस को देख कर वह खुश हो गया। और जल्दी - जल्दी कुछ पके हुए केलों को खाया, और एक केले का गुच्छा अपने साथ अपनी गुफा की तरफ कर चला पड़ा। कुछ एक घंटे के बाद वह अपनी गुफा के पास पहुंच गया। लेकिन उसने देखा उस गुफे के बाहर किसी जानवर के मांस के टुकड़े पड़े थे। जिस को देख कर उसको यह समझने में देर नहीं लगी, की वह किसी खरगोश की पूंछ थी। क्योंकि कल उसने इस गुफे में से एक खरगोश को निकाला था। उसने विचार किया हो सकता की खरगोश उसके ना रहने पर यहां वापिस आया हो। और उसके पीछे कोई और खतरनाक जानवर आया हो, और उसने उस खरगोश का शिकार कर लिया हो। फिर भी उसको सावधान रहना चाहिए। इसलिए उसने अपने कंधे से केले के बड़े गुच्छे को उतार कर एक तरफ रख दिया। और अपने पत्थर के नुकीले हथियार को मजबूती के साथ हाथ में पकड़ कर बहुत धीरे - धीरे गुफे की तरफ बढ़ने लगा। पहले वह बाहर दूर से ही देखना चाहता था। लेकिन बाहर से कुछ नहीं दिखता था। तो उसने अपने नुकीले पत्थर के औजार को जो भाले के समान था। गुफे के मुंह के अंदर डाला, जिससे उसको अंदर किसी जानवर के होने की आशंका हुई, और वह जानवर भी समझ गया। कि कोई उसका शत्रु बाहर है, उसने तुरंत हुंकारते हुए गुफे से बाहर निकलने के लिए छलांग लगाई। लेकिन वह सफल नहीं हो सका, क्योंकि गुफे का दरवाजा बहुत संकरा

था। जिसमें अंदर जाना तो आसान था, लेकिन बाहर निकलने के लिए उसका दरवाजा पुरी तरह से खुला होना चाहिए था। जबकि उस गुफे के मुंह पर अपने औजार के साथ पगला उपस्थित था। उस समय अँधेरा था जिसके कारण साफ- साफ वह एक दूसरे को दोनों देख नहीं पाये, यद्यपि पगला समझ गया कि कोई खतरनाक जानवर ही है। उसके आवाज से ऐसा ही लगता था। जब पगले ने देखा की वह जानवर गुफे के दरवाजे से निकल नहीं पा रहा है, तो उसने अपने भाले को गुफे के मुंह पर फंसा कर एक बड़ा पत्थर का टुकड़ा जो पास में ही पड़ा था। उसको उठा लिया और गुफे के दरवाजे से उस प्राणी पर दे मारा। जिसकी खतरनाक आँखें अंधेरे में चमक रही थी। जिसकी चोट से वह और क्रोधित हो गया, और दुगना ताकत से बाहर निकलने के लिए प्रयास करने लगा। जिस पत्थर से पगले ने जानवर पर हमला किया था, वह पत्थर भी उस जानवर को गुफे से बाहर निकलने में दिक्कत खड़ा करने लगा। जिसके कारण पगले ने अपने लंबे और नुकीले भाले से उस पर ताबंड़ तोड़ हमला करने लगा। जिसके कारण वह जानवर अधमरा हो गया। और उसकी आवाज धीरे –धीरे कम होने लगी, फिर भी पगले ने उसको मारने बंद नहीं किया। क्योंकि अब वह जानवर बुरी तरह से गुफे के अंदर फंस चुका था। जिसके कारण उसका बाहर निकलना लगभग मुश्किल था। तो पगले ने सोचा अब इसको खत्म ही कर देना, उसके लिए ठीक होगा। जब वह पुरी तरह से आश्वस्त हो गया। की वह जानवर मर चुका है, तो वह शांत हो कर बैठ गया। कुछ देर आराम करने के बाद, उसने फिर गुफे के एक झरोखे से जो दरवाजे के रूप में था। उसमें से आहट लेने का प्रयास किया। उसमें से बिल्कुल आवाज नहीं आर ही थी। इसके बाद उसने दरवाजे में फँसते पत्थर को किसी तरह से पलट कर बाहर निकाला। और वह पहले अपने पैर को अंदर डाला, फिर वह स्वयं गुफे में घुस गया, उसे चाँद की धीमी रोशनी में देखकर आश्चर्य हुआ, कि वह जानवर किसी बड़े बाघ के समान था। लेकिन वह बाघ नहीं था बाघ के ही प्रजाति का कोई जानवर था। जो शायद केवल इसी द्वीप पर पाया जाता होगा। ऐसा पगले ने सोचा और वह फिर वह उसको बाहर निकालने के लिए प्रयास करने लगा। लेकिन उस जानवर की लाश काफी भारी थी। इसलिए पगले ने उसको गुफे में अंदर एक तरफ घसीट कर छोड़ दिया। और वह स्वयं दूसरी तरफ बैठ गया। उसका दिल बैठा जा रहा था कि शायद कोई दूसरा जानवर रात में यहां फिर आ सकता है, इसलिए वह एक बार फिर गुफे से बाहर आया। और उस पत्थर को जिस को गुफे से बाहर निकला था। उसको एक बार फिर से दरवाजा पर फंसा दिया। और स्वयं बाहर ही आराम करने लगा। खुले आकाश के नीचे। खून से लत पथ अपने भाले के साथ, थोड़े ही देर में आकाश में पूर्ण चंद्रमा का प्रकाश फैल रहा था। और नीचे जंगल में जानवरों की आवाज के साथ शांय - शांय कर समंदर किनारे से हवा बह रही थी। वह समंदर किनारे से ज्यादा दूर नहीं था। यहां रहने का मुख्य कारण था, की यहीं पास में मीठे पानी का एक तालाब था। जो वारिस के भरता होगा। यहीं सोच कर आज पगले ने घास फुस और लकड़ी को काटा है। वह उसको यहां लाकर अपने लिए एक कुटिया बनायेगा। यह सब सोचते हुए वह अपने स्थान से उठा और केले के गुच्छे को अपने पास ला कर रख लिया। क्योंकि इसके सहारे ही अब उसको जिंदा रहना है। फिर उसने विचार किया की मुझे रोज मंत्र जाप की संख्या को बढ़ाना चाहिए, जैसे

बीती रात को उसने 11000 मंत्रों का जाप किया था। आज वह 21 हजार मंत्रों का जाप करेगा। इस संकल्प के साथ उसने अपना आसन लगा लिया, और मंत्र जाप करने लगा। क्योंकि उसके इस जाप करने से उसको आकाश में अपने स्वेच्छा से कही जाने आने में स्वतंत्रता मिल जायेगी। मंत्रों के जाप की संख्या को निरंतर बढाते रहना है। यहीं एक रास्ता इस वीरान द्वीप से निकलने का है। यह जाप वह बहुत धीरे – धीरे बोल कर रहा था, मंत्रों के जाप में गलती ना हों, इस लिए उसने पहले अपने हाथ में छोटे –छोटे 101 कंकड़ों के ले रखा। जिस को वह अपने जेब में रखता था। जितना अधिक वह मंत्रों का जाप करेगा उतना ही अधिक संभावना है। उसको आकाश मार्ग में उड़ने कि सिद्धि प्राप्त हो जाएगी।

ओ३म् पृथिव्याऽअहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम्।
दिवो नाकस्य पृष्टात् स्वर्ज्योतिरामहम्।।

यह मंत्र जाप करते हुए उसको काफी समय गुजर गये। जिसके बाद पगले ने कुछ समय के लिए निद्रा करने के लिए, वहीं पर लेट गया।

जब उसकी आँख खुली तो सूर्य का प्रकाश हो चुका था, वह जल्दी से उठ कर पहले अपने नित्य क्रिया से निवृत्त हुआ। फिर उसको ख्याल आया की उस जानवर को देखे। जिस को रात्रि में उसने मारा था वह तत्काल गुफे के दरवाजे पर गया। और उसके मुंह से पत्थर के टुकड़े हटाया। और अंदर जा कर देखा वहां उस जानवर की लाश गुफे में पड़ी थी। जो बाघ जैसा दिखाता था लेकिन बाघ नहीं था क्योंकि उसका मुंह चौड़ा कम लंबा अधिक था। और शरीर से भी काफी तगड़ा था। उस जानवर की लाश को देख कर पगले को विचार आया, यह उससे अकेले बाहर तो निकल नहीं सकता है। क्योंकि वह गुफा किसी कुंए के समान थी, जिसके कारण उसको उठा कर बाहर निकलना संभव नहीं था। इसलिए उसने गुफे के अंदर ही उस जानवर की पहले खाल को निकालने का निर्णय किया। यह कार्य उसने अपने जीवन में कभी नहीं किया था। लेकिन यदि सर्दी का मौसम आया, तो उसको इसकी खाल उसको सर्दी से बचाने में सहायक सिद्ध होगी। इसलिए उसने कुछ एक औजार पत्थर के बनाये, जिससे उसकी मोटी खाल को फाड़ना आसान हो सके। इसलिए उसने कठोर पत्थरों के चूना जो लोहे से किसी प्रकार से कम नहीं थे। क्योंकि वह किसी ज्वालामुखी से निकले प्रतीत हो रहे थे। जिनकी सहायता से उसने बड़ी मशक्कत के बाद वह उस जानवर की खाल को निकालने में सफल हुआ। जिसके बाद उस जानवर के शरीर को कुछ छोटे टुकड़ों में काट दिया। जिससे उसने आसानी से उस बाघ की लाश को गुफा से बाहर निकाल सका। इसके बाद उस सब को वहां से बहुत दूर ले जा कर फेंक दिया। क्योंकि उसको शक था, की यदि उसको अपनी गुफे के पास कहीं फेकेगा, तो उसके पास जानवर आ सकते हैं। वह चाहता था कि खतरनाक जानवर उसकी गुफा

से दूर ही रहें। इस सब कार्य में उसको काफी समय बित गया। फिर उसने अपने रखे हुए केले में से कुछ केले को खा कर अपनी भूख को शांत किया। फिर अपने सामान को गुफे के अंदर रख कर बाहर से पत्थर रख दिया। सामान के रूप में उसके पास कई सारे पत्थर के औजार थे, खाने के लिए केले थे, और वह खाल थी जिस को सूखने के लिए गुफे में रख दिया। अब तक दोपहर हो चुकी थी, उसने सोचा की चल कर उस लकड़ी और घास –फुस को लाना चाहिए। क्योंकि उसको अपनी गुफे के उपर एक कुटिया बनाना है। नहीं तो वारिस के समय सारा पानी गुफे में ही जाएगा। क्योंकि उस गुफे का मुँह उपर कि तरफ खुलता था। यहीं सोच कर वह उस तरफ चल पड़ा। जहां पर कल उसने लकड़ी और घास – फुस को काटा था। अपने हाथ में अपने भाले को लेकर उसको इस गुफे पर एक हफ़्ते से अधिक समय गुजर चुका था। और ना समंदर में कोई जहाज दिखाई दिया ना ही आकाश में ही किसी प्रकार का कोई जहाज दिखाई दिया। वह समझ गया की यह द्वीप अवश्य ही किसी एकांत में होगा। जिसके कारण यहां के आकाश में कोई जहाज दिखाई नहीं देता है। यहीं सोचते हुए वह उस स्थान पर पहुंच गया। जहां पर उसने घास –फुस और लकड़ी को छोड़ कर गया था। उसने सब घास फुस को एक स्थान पर एकत्रित किया। लेकिन वह सब एक साथ अपने साथ नहीं ला सकता था। इसलिए उसने आज केवल घास – फुस ही लाने का निर्णय किया। जिसके कारण उसने घास एक बड़ा गट्ठर बनाया, और उसको किसी तरह से अपने भाले से सहायता लेकर अपने सर पर रख लिया। और अपनी गुफा की तरफ चल पड़ा। थोड़े समय में अपने स्थान पर पहुंच गया। अभी सूर्य का प्रकाश काफी था। इसलिए उसने फिर एक चक्कर लगा कर और कुछ मजबूत लकड़ी को ले आया। इस बार जब वह अपनी गुफा के पास पहुंचा तो सूर्य अस्त होने वाला था। इसलिए उसने कुछ एक मिनट आराम किया, और फिर कुछ खाने के लिए तलाश में चल दिया। क्योंकि वह जानता था। केले खाने से ज्यादा ताकत उसकी शरीर को नहीं मिलती है। उसको कुछ और भी खाने के लिए चाहिए। क्योंकि वह स्वयं को काफी कमजोर महसूस कर रहा था। केले भी ज्यादा नहीं थे, आस पास की सारी बैर जो उसको मिली थी, वह उन सब को खा चुका था, वह मांस तो खा नहीं सकता क्योंकि उसको साधना करनी थी। इसलिए वह आज उस तरफ गया, जिस तरफ इससे पहले वह कभी नहीं गया था। कुछ दूर जाने पर उसको कुछ हरे और विचित्र पेड़ दिखे, जिन पर बहुत सारे फल लगे थे। और वहां उस प्रकार के बहुत पेड़ थे, वह फल कुछ बेल के समान लगता था। उसने कुछ एक फल तोड़ लिया, अपने भाले कि सहायता से। जिसमें से एक फल को उसने तोड़ कर देखा, वह बेल जैसा था, लेकिन अभी वह कच्चा था। इसलिए उसको कच्चा नहीं खाया जा सकता था। उसने सोचा की यह तो उसके लिए बेकार है, फिर उसके मन ने कहा, उसको वहां पर जिंदा रहना है। तो उसको इस बेल जैसे फल को खा कर अपनी तपस्या करनी होगी। क्योंकि उस फल की मात्रा उस द्वीप पर बहुत अधिक थी। जिस को खा कर वह कई सालों तक इस द्वीप अपने आप को जिंदा रख सकता है। फिर उसको एक विचार आया, की इसको पकने में अभी काफी समय लगेगा। कच्चा इसको खा नहीं सकता है। फिर उसने सोचा की कुछ फल अपने साथ लेकर उसको अपने गुफा पर वापिस लौटना चाहिए। क्योंकि अंधेरा होने लगा था। जिससे वह रास्ता भटक सकता था।

यह सोच कर पगले ने आठ दश फल जो अब तक वह पेड़ से तोड़ चुका था। जो बहुत अधिक नहीं थे, क्योंकि वह फल अपनी डाली से काफी मजबूती से जुड़े थे, जो आसानी से नहीं टूटते थे। उन को एकत्रित किया, और अपने जाकेट के बड़ी जेब में घुसेड़ता है। और वहां जल्दी -जल्दी कदम बढ़ाया। उसने विचार किया, कि उसको एक अपने लिए थैला बनाना चाहिए। या कुछ ऐसा टोकरी जैसा जिससे उसमें कुछ सामना रखा जा सके। उसने अपने मन में कहा मैं कुछ लकड़ी और पत्तों की टोकरी बनाउंगा। यहीं सोचते – सोचते वह अपनी गुफा के पास पहुंच गया। और उसने उन बेल जैसे फलों को अपनी जेब से बाहर निकाल कर एक तरफ रख दिया। और वहीं अपनी गुफा के पास बैठ गया, कुछ एक पत्थर के टुकड़े लेकर अपने हाथों में वह सोचने लगा, की यहां पर पत्थर, लकड़ी, फल, घास – फुस और जानवरों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उपर आसमान है, नीचे समंदर, जंगल, पहाड़ है। उसने कुछ सुखी घास को एकत्रित किया। और दो पत्थर को दोनों हाथ में ले कर उसने उन पत्थर टुकड़ों को आपस में रगड़ना शुरु कर दिया, यह सोच कर कि शायद इससे आग की चिंगारी निकल सकती है, जिससे वह यहां आग तैयार कर सकता है। उसने विचार किया यदि आग तैयार हो जाती है, तो इन कच्चे बेलों को वह भुज सकता कर खा सकता है. और आग के सहारे वह अपनी जानवरों से भी रक्षा सकता है। इसलिए उसने उन पत्थरों को काफी समय तक आपस में रगड़ता रहा। जिससे वह गरम होने लगे, और उनसे छोटी – छोटी जुगनूँ की तरह से चिनगारी निकलने लगी। और वह नीचे रखे सुखी घास पर गिरने लगी। जिससे सुखी घास में कुछ देर में ही धुआं निकलने लगा। जब धुआं निकलने लगा तो पगले ने धीर धीरे अपने मुंह से फूँक मार उस घास को जला दिया। जिससे पगले को बहुत खुशी हुई, सारा जंगल का अँधेरा प्रकाश से प्रकाशित हो गया। जिस को देख कर वृक्षों पर बैठे पक्षी उड़ने लगे। पगले ने तुरंत आग में कुछ एक मोटी लकड़ी को जलने के लिए डाल दिया। जिससे थोड़ीसी ही देर में उसके पास कोयलें की आग तैयार हो गई। जिसमें उसने कच्चे बेलों को भू जने के लिए डाल दिया। उसने निर्णय किया की वह अब इस आग को कभी बुझने नहीं देगा। वह जब तक रहेगा तब तक यहां इस अग्नि देव की पूजा करेगा। और इसी आग को साक्षी मान कर वह अपनी साधना को पुरा करने के लिए पुरुषार्थ करेगा। या तो उसको सिद्धि मिलेगी, नहीं तो वह स्वयं को इसी आग में भस्म कर के अपने प्राण को त्याग देगा। वह तब तक प्रयास करेगा। जब तक उसका सामर्थ्य काम करेगा। यहीं सोचते हुए उसने उस आग को एक धुनी का रूप दे दिया। थोड़े ही समय में बेल भुज चुके थे। जो उसके खाने के लिए तैयार हो चुका था। पगले ने एक बेल को तोड़ा जो अंदर से गुज्झा दार था। जिस को खाने बाद पगले को एक विशेष प्रकार की आत्मिक तृप्ति हुई। फिर उसने कुछ एक बेल को छोड़ कर सभी को खा गया। आज उसको पहली बार लगा की उसका पेट पुरी से भूख से शांत हुआ। खाने के बाद पहले से लाया हुआ, पानी जिस को उसने कुछ एक लौकी जैसे फल के सूखे खोखे में रख रखा था उसको पी लिया। फिर उसने कुछ समय आराम किया। और उसके बाद उठ कर मंत्र जाप करने लगा, आज उसने निर्णय किया की वह 51 हजार मंत्रों का जाप करेगा। इसलिए उसने वहीं अपनी धुनी के पास आसन जमा लिया। और मंत्र जाप करने लगा। आग जलने के कारण आज उसने

पहली बार अनुभव किया। कि जंगल में जानवरों की आवाज आज बहुत कम हो रही थी। आज साफ - साफ वह समंदर की लहरों की आवाज को सुन सकता था। उस स्थान से समंदर करीब 3 से चार किलोमीटर दूर था, फिर भी समंदर की लहरों की आवाज उसके कानों में सुनाई दे रही थी। जैसे की उसके पास ही हो। इसका मतलब था, की आज उसको वह द्वीप पहली बार जैसे उसके लिए पुरी तरह से शांत हो चुका था। पगले को ध्यान में मंत्रों की ध्वनि के साथ समंदर की लहर की भी आवाज आ रही थी। जैसे उसके अंदर ही समंदर की लहरे उठ रहीं हो। आज उसने अनुभव किया, की वह द्वीप पर नहीं है यद्यपि उसके अंदर एक द्वीप है, एक जंगल, एक पहाड़, और एक गुफा है। वह स्वयं उन सब वस्तुओं से अलग उन सब के उपर है। वह आकाश के समान है। जिसमें एक पृथ्वी विद्यमान है जिस पर बहुत प्रकार के जीवन रहते हैं। जिसमें कुछ बहुत ही खतरनाक हैं, तो कुछ बहुत ही सरल हैं। धीरे – धीरे उसके अंदर से सभी विचार समाप्त होने लगे। शिवाय मंत्रों कुछ नहीं था। जैसे खाली उसके अंतःकरण के आकाश में अपने आप मंत्रो उच्चारण हो रहा हो। और वह स्वयं उनका मात्र साक्षी है। उसके हाथ कंकण के माध्यम से मंत्रो के जाप की गिनती कर रहें थे। जब कुछ एक घंटे में उसके संकल्पित 51 हजार मंत्रों का पाठ हो गया।

थोड़े समय में सुबह होने वाली थी जिसका आभास पगले हो गया। जिसके कारण वह विश्राम करने के लिए वहीं लेट जाये ऐसा उसने विचार किया। पहले कुछ एक दिन तक उसको यहां बहुत भयानक भय लगता था। लेकिन अब उसका भय धीरे – धीरे जाता रहा, अब वह कहीं भी आराम से सो सकता था। क्योंकि अब उसको हर तरफ परमेश्वर का अनुभव हो रहा था। और उन को ही उसने अपना रक्षक मान रखा है। सोने से पहले कुछ सुखी और कुछ गीले लकड़ी को आग में धीरे – धीरे जलने के लिए डाल दिया। जिससे आग बुझने नहीं पाये।

यहां उसके पास सोने के लिए अधिक समय नहीं था, क्योंकि उसके पास काम बहुत था, जैसे अभी उसको अपनी कुटिया बनाना है, इसी के साथ कुछ एक घटों की निद्रा के बाद वह उठ जाता है, अपनी नित्य क्रिया करके निवृत्त होता है। फिर वह अपनी कुटिया बनाने में लग जाता है, पहले वह मजबूत लकड़ी के खंभों को खड़ा करता है, और चारों तरफ से उस गुफा को घेर लेता है, फिर एक छप्पर बना कर उन खंभों के उपर रख देता है। एक छोटा सा दरवाजा अपनी कुटिया में जाने के लिए छोड़ कर बाकी चारों तरफ से घास फुस की टटरी बना देता है। जिसके अंदर गुफा आ जाती है। बाहर से देखने में उसकी कुटिया एक छोटी झोंपड़ी की तरह से दिखती थी। जिसकी अंदर वह गुफा एक तह खाने के की तरह से थी। उसको अपनी झोंपड़ी बनाने में कई एक दिन लग गये। एक दिन उसने देखा की उसके द्वारा रखी गई, बाघ की खाल सुख चुकी थी। जिस को उसने अपने साथ बाहर कुटिया के लाया। और एक मोटे लकड़ी के टुकड़े से पीट - पीट मुलायम बना लिया। और उसको उसने अपने आसन के रूप में उपयोग करने लगा।

जिस पर बैठ कर वह मंत्र जाप और ध्यान किया करता था। अब वह रोज रात्रि में कम से कम एक लाख मंत्रों का जाप करता है। एक लाख बार मंत्र पूरे होने पर वह उसकी गिनती करना बंद कर देता है। अब उसने अपनी आग की धुनी गुफे के अंदर जला लिया है। वह अकसर गुफे में ही रहता है, जब उसको लकड़ी, पानी, भोजन के लिए बेल की जरूरत होती है। तभी वह बाहर जाता है, कभी जब उसको पहनने के लिए ओढ़ने के कपड़े की जरूरत पड़ती है। तो वह बड़े वृक्ष की खाल का उपयोग करता है, या फिर किसी जानवर का शिकार करके उसकी खाल को निकाल लेता है। अब वह अपना अधिक तर समय अपनी ध्यान साधना में ही लगाता है। अब पगले ने अपने लिए कई टोकरी और कुछ एक अच्छे धनुष और बहुत सारे बाण बना लिया है, जिससे वह जानवरों को दूर से मार सकता है। पगले ने अपने समय कि गड़ना के लिए भी कुछ कंकड़ों का उपयोग करता है। उसने अपनी गुफा में कुछ एक छोटे - छोटे सूराख बना रखे है। हर रोज एक सूराख में एक कंकड़ डालता है, महीने के लिए दूसरे सूराख में एक कंकड़ डालता है जब तीस दिन पूरे हो जाते हैं। और तीसरे सूराख में साल के लिए कंकड़ डाल देता है। आज उसको एक साल यहां द्वीप पर हो गये। जिसके लिए उसने पहली बार तीसरे सूराख में जो साल वाला है उसमें एक बड़ा कंकड़ का टुकड़ डाल दिया। अब तक वह इस द्वीप पर बहुत लंबी यात्रा पैदल कर चुका है, उसको इस द्वीप पर जानवर, पक्षी, कुत्ते लोमड़ी, सूअर, भेड़, भैस आदि कई प्रकार के जानवर देखे। लेकिन अभी तक कोई आदमी नहीं मिला। हां एक दिन एक जहाज आकाश में बहुत उपर आकाश में दिखा था। लेकिन वह पाय लट पगले की आवाज नहीं सुन सका। पगले ने बहुत जोर - जोर से बुलाया। समंदर में आज तक उसको कोई भी पानी का जहाज नहीं दिखा। उसके मन में यह भी आया, की वह अपने लिए एक छोटी नाव बनायेगा। इस समंदर को पार करने के लिए।

जिसके लिए पगले ने एक बड़े मोटे पेड़ के तने को काफी समय में काट लिया है। जिसमें वह दिन में काम करता है, उसकी यह नाव कुछ एक महीने में तैयार हो जाएगी। इससे वह समंदर नहीं पार कर सकता है। लेकिन वह समंदर में कुछ दूर तक जा कर जहाज को अवश्य देख सकता है। अब उसकी दाढ़ी मूँछ के बाल काफी बड़े हो चुके थे, और उसके पुराने कपड़े घिस कर फट चुके थे। कपड़े स्थान पर वह अब पेड़ की छाल और जानवरों की खाल का उपयोग करता था। उसके हाथ और पैर अब बहुत सध चुके थे, औजार चलाने में पेड़ों पर चढ़ने में, और अब वह जंगल पहाड़ पर वह जानवरों की तरह से दौड़ सकता था। वह अब पुरी तरह से जंगली मानव में तबदील हो चुका था। वह अब समंदर में भी काफी दूर तक तैर कर जा सकता था। उसके हाथों में और उसकी शरीर में बहुत अधिक ताकत आ चुकी है, एक दिन यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ, जब वह यहां पहली बार अपनी गुफा में बाघ को किसी तरह मारने के बाद उसकी लाश को उठा नहीं पा रहा था लेकिन अब वह अपने संकल्प बल से उससे बड़े से बड़े बाघ को अपने कंधे पर उठा कर दश बिस किलोमीटर दौड़ सकता है, उसने जिस पेड़ को काटा है अपनी नाव को बनाने के लिए वह बहुत मोटा और तगड़ा है, उसको वह बड़ी आसानी से उठा और हिला सकता है, एक

स्थान से दूसरे स्थान पर करने में उसको कोई दिक्कत नहीं होती है। जिससे उसको यह समझने में कोई मुश्किल नहीं होती है, की उसका मंत्र जाप कार्य कर रहा है, उसके शरीर और उसकी इंद्रियों में कुछ अद्भुत शक्ति का संचार हो रहा है। उसके पास किसी हाथी से कम ताकत नहीं है, वह किसी सामान्य पेड़ को अपनी हाथों की ताकत से पेड़ जड़ से उखाड़ सकता है। उसको विश्वास है कि वह कुछ एक साल में अपने कल्याण के लिए कुछ सिद्धि को अवश्य प्राप्त कर लेगा । जैसे पानी पर चलना, अपनी शरीर को अदृश्य कर लेना आकाश मार्ग चलना, पानी में कितने भी गहराई में कई घंटों तक अपनी सांस को रोक के रहना। अभी तो उसके साधना के प्रारंभिक समय ही है। काम तो केवल पगला इस लिए करता है जिससे उसके अपने अंदर होने वाले परिवर्तन का आभास होता रहे।

उसको कभी - कभी अपने गांव की दिव्या और उसके पिता दिन दयाल की याद आती है तो वह उदास हो जाता है, वह अपने विश्व विद्यालय के बारे में विचार करता है। अब वह अपने मुंह का उपयोग केवल खाने के और पानी पीने के लिए करता है। वह किसी से बात चित तो करता नहीं है, अपने आप से कभी –कभी बात कर लेता है, पक्षी और जानवर अब उसके मित्र बन चुके हैं। वहाँ जंगल में उसकी सहायता के लिए सिवाय मनुष्य के सब कुछ है। मनुष्य की खोज के लिए ही उसने अपनी नाव बना कर तैयार कर ली है, आज लग-भग दो साल बाद वह अपनी नाव से सागर की यात्रा के लिए जायेगा। उसने अपनी नाव को लकड़ी के सहारे घसीट कर समंदर के किनारे लेकर आया। और उसमें बैठ कर सागर की यात्रा के लिए निकल पड़ा ,अपनी कुटिया को अग्नि के देव के सहारे छोड़ कर, वह काफी दूर तक समंदर में अपने नाव को खै कर गया, दूर - दूर तक केवल पानी के कुछ नहीं दिख रहा था। इसलिए उसने अब निर्णय किया, की जब उसको कोई मानव दिखता ही नहीं है तो वह किसी मानव को देखने का प्रयास ही क्यों कर रहा है? उसको अपनी साधना पर जोर देना चाहिए, यहीं सोच कर उसने वह रात्रि में कुटिया में साधना करने लगा, और दिन के समय में अपनी इस नाव में समंदर के मध्य में करने लगा। नाव कितनी भी दूर चली जाये, उसको वह अपने संकल्प बल से रोज शाम को अपने कुटिया के पास वाले किनारे पर ही पाता था। वह पहले नाव को अपने हाथ से खेवता था, लेकिन वह अब अपनी नाव पर जानवरों के पतली खाल की क पाल बना कर लगा लिया है। जिसके कारण उसकी नाव हवा के सहारे चलती है। अब उसने सब कुछ परमात्मा के हाथ में छोड़ दिया है, और अब उसके लिए किसी प्रकार का कोई खतरा नहीं रहा ना समंदर में ना जंगल में ना पहाड़ पर। अब कार्य उसके मात्र संकल्प से ही होना शुरू हो चुका है। अभी वह बड़े संकल्प नहीं कर रहा, जितना भी कर रहा है, वह उसका पूर्ण हो रहा है। अब खाने का सेवन महीने में केवल एक बार करता है पानी का प्रयोग हफ़्ते में केवल एक बार करता है। वह अब एक हफ़्ते में 11 लाख मंत्रों का जाप में करता है।

इसी प्रकार से उसका जीवन चक्र चल रहा था, कि एक दिन पगला समंदर में अपनी नाव पर ध्यान में मग्न मंत्रों का जाप कर रहा था। उसके मंत्र जाप की प्रतिध्वनि को सुन कर समंदर की मछलीयां उससे संमोहित हो गई, और उसकी छोटी नाव के चारों तरफ वह मंडराना शुरु कर दिया। जिनकी संख्या हजारों में थी, जिन में कुछ बहुत बड़ी ह्वेल मछली थी। पहले से ही समंदर की लहर काफी तेज थी, उस पर मछलियों का तांडव जिससे उसकी नाव बहुत तेज हिचकोले समंदर के पानी में खाने लेने लगी। जिस को पगले ने अपने ध्यान में अनुभव किया, और उसने अपनी आँख को खोला, तो देख कर उसको आश्चर्य हुआ। उसने पहले कभी इतने बड़े मछली के समुह को नहीं देखा था, अपने जीवन में, उसकी नाव ने अपने संतुलन को खो दिया, और वह पलट गई। जिससे पगला समंदर के पानी में गीर गया। और उसकी नाव समंदर के पानी में जल समाधि ले ली। पगले ने मछलीयों में जो सबसे बड़ी मछली थी उसकी आँखों में बड़े ध्यान से देखा जिससे वह ह्वेल मछली तत्काल पगले के पास आ गई। जिस को पगले ने अपनी शक्ति से अपने वश में कर लिया, और उसके उपर वह सवार हो गया। और वह मछली उसको लेकर समंदर के गहरे पानी में गोते लगाने लगी। पगले ने उस मछली को आदेश दिया, कि वह उसको लेकर समंदर के किनारे पर चले। मछली तत्काल सभी मछलियों से बचते हुए तुरंत सागर के पानी के सतह पर आ गई। और वह पगले को अपने पीठ पर लेकर किनारे की तरफ चल पड़ी, कुछ एक घंटे में वह किनारे पर पहुंच गई। पगले ने उस मछली से कहा अब तुम मेरी सवारी का काम करोगी। आज तुम जाओ क तुम मुझको फिर लेने के लिए किनारे पर आना। मछली ने अपनी पूंछ को हिलाते हुए, वापिस सागर की गहराई में वापिस चली गई।

जंगल और पहाड़ की सैर के लिए पगले ने कुछ बाघों को संमोहित कर रखा था, जिस को वह अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयोग करता था। सागर के किनारे पर उसका एक बाघ इंतजार कर रहा था जिस पर वह बैठ गया, और वह उसको लेकर उसके गुफा के पास छोड़ दिया। पगले ने वहां पहुंच कर अपनी कुटिया के अंदर जा कर एक बार फिर से ध्यान मग्न हो गया। और उसने अपने मस्तिष्क के दिव्या से संपर्क करने के लिए उसको बारे में विचार करने लगा। जिससे उसका मन थोड़े ही समय में दिव्या के मन से संपर्क स्थापित कर लिया। जिसके माध्यम से वह दिव्या के बारे में, सब कुछ जान गया की वह इस समय स्वस्थ नहीं है। पगले ने दिव्या से उसके मन में कहा की मैं जल्दी ही तुम्हारे पास आने वाले हूं।

इसकी खबर दिव्या को भी हो गई, वह समझ गई, की कोई उसके मन पर अधिकार कर लिया है। जिस को वह रतन लाल और अपने पिता को बताना चाहती थी। यद्यपि वह इस अपने शरीर को अपने दिमाग से संचालित नहीं कर पा रही थी। क्योंकि वह कृतीम कोमा जैसी स्थिती में थी। दिव्या ने अपने मन से पगले से कहा इस समय स्वस्थ नहीं हूं, और मैंने जब यह सुना की तुम्हारी जहाज दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है। तो मैंने अपने पिता के कहने पर रतन लाल से विवाह कर लिया है। और इस समय विश्व

विद्यालय के कील में ही हूं। पगले ने कहा कीला बन चुका है, यह अच्छी खबर है, लेकिन मुझे तुम को यह बताते हुए बड़ा कष्ट हो रहा है, कि तुम अपने पिता दिन दयाल के साथ मिल कर मेरे साथ बहुत बड़ा विश्वाश घात किया है। और मेरी हत्या करने का प्रयास किया है, जिसका परिणाम तुम को दोनों को भोगना होगा। और जिसने भी तुम सब का इस काम में साथ दिया है, उसके भी अपने पाप और अन्याय का परिणाम भोगना होगा। इसको सुनते ही दिव्या की जैसे रूह कांप गई हो। जिसके कारण उसने अपनी आँखों खोला। जिसके कारण उसका पगले से मन का संपर्क टूट गया। उसकी आँखों में अचानक बहुत भय व्याप्त हो गया। जिससे उससे वह अपनी आँखों को बंद करने के में डरने लगी।

इसकी सूचना जब उसके चिकित्सक को हुई, की कई दिनों स दिव्या अपनी आँख बंद नहीं कर रही है, तो उसको शंका हुई। कि इस तरह से तो दिव्या पागल हो सकती है। इसके बारे में उस चिकित्सक ने तुरंत रतन लाल और उसकी बहन को सूचना दिया। जिससे वह तो बहुत खुश हुए। क्योंकि वह तो चाहते ही थे, की वह जिंदा लाश से अधिक ना हो, जिसके कारण ही वह दिन दयाल की संपत्ती पर पूर्ण रूप से अपना अधिकार कर लेंगे। लेकिन जब दिन दयाल को इसके बारे में पता चला तो, वह तुरंत दिव्या से मिलने के लिए उसके पास आया। दिन दयाल ने जैसे ही दिव्या की खुली आँखों में देखा तो उसको दिव्या की आँखों में बहुत बड़ा मृत्यु का भय दिखा। उसने चिकित्सक से कहा- क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है? जिससे इसके मन में चलने वाले विचार को किसी यंत्र के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। या उसको पेपर पर किसी तरह से लीख दिया जाये। क्योंकि मैं किसी भी प्रकार से अपनी पुत्री को स्वस्थ करना चाहता हूं। और मैं वह सब कुछ करुंगा, जो मेरे लिए यहां पर संभव होगा। चिकित्सक ने कहा एक माध्यम जिसके द्वारा इसकी आँखों से इसके मन के विचार को पढ़ा जा सकता है। दिन दयाल ने चिकित्सक से कहा तो फिर तुम जल्दी से पता करके बताओ। इसके मन में क्या चल रहा है?

चिकित्सक ने दिव्या को एक विशेष कक्ष में ले गया, और उसको एक बड़ी मशीन के अंदर डाल दिया। और एक सूक्ष्म सेंसर से उसकी आँखों में लगा दिया जिससे वह मशीन दिव्या के मन के विचार को पढ़ने लगी, और उसको वह एक कागज पर प्रिंट करने लगी। कुछ एक घंटे में ही दिव्या के मन में जितने भी विचार पिछले दो दिन के अंदर चले थे। जिसमें से वह वार्तालाप भी था, जो दिव्या ने पगले से किया था। जब उस चिकित्सक ने दिव्या के अंदर चलने वाले विचार को पढ़ा, तो उसको पता चल गया की किसी ने उसके साथ टैलीपैथी (अर्थात मन से मन की बात) के माध्यम से उससे बात की है, जिसके बाद से ही दिव्या की तबीयत और अधिक खराब है। जब रतन लाला को इसके बारे में पता चला तो उसने कहा यह तो असंभव है। क्योंकि जो इसका पहला पति था वह तो आज से कई साल पहले ही मर चुका है। फिर वह इससे बात कैसे कर सकता है? इस पर चिकित्सक ने कहा वह आदमी मरा नहीं है वह जिंदा है और दुनिया के किसी कोने में विद्यमान है। और वह बहुत अधिक शक्ति शाली है, जिसके कारण उसने

दिव्या के मन पर पूर्ण अधिकार कर लिया है। वह कहीं से भी दिव्या के मन को संदेश भेज सकता है, और वह इतना अधिक दिव्या के मन को प्रताड़ित कर सकता है की जिससे दिव्या मर भी सकती है। इसके अतिरिक्त दिव्या कभी भी स्वस्थ नहीं हो पायेगी। क्योंकि दिव्या का मनोबल एक दम खत्म हो जायेगा। पहले से इसका दिमाग पुरी तरह से कार्य करने में सक्षम नहीं है। जिसके कारण इसकी शरीर की कुछ सूक्ष्म तंत्रिका ही काम कर रही हैं। वह काम करना बंद कर देगी। यह सब सुन कर दिन दयाल बहुत अधिक चिंतित हो गया। तब तक रतन लाल अपनी बहन कोनिका के साथ दिन दयाल के पास आ गया। और उसने सब कुछ चिकित्सक से सुना, तो उसको भी पहले विश्वास नहीं हुआ, कि पगला जिंदा है। लेकिन जब चिकित्सक ने वह कागज दिया, जिस पर वह सब कुछ अंकित था जिससे उसको भी भरोसा हो गया। कि पगला मरा नहीं है वह जिंदा है, और वह किसी से संपर्क करने के लिए टेलीपैथी का उपयोग करता है, जब उसने उस दिव्या के विचार को पढ़ा तो, उसे पता चला की पगला दिन दयाल दिव्या और उससे प्रतिशोध लेना चाहता है, जिसके लिए वह दैवीय शक्ति का उपयोग कर रहा है। उसने दिन दयाल को ढाढ़स बँधाते हुए कहा पिता जी आप निश्चित रहें वह दुनिया में वह कहीं भी हो उसको तलाश कर लेंगे। और फिर उसको एक बार मार देंगे, अब उसको किसी प्रकार से बचने का मौका नहीं देंगे। फिर उसने चिकित्सक से कहा दिव्या के मन को पगला किसी प्रकार से कोई संदेश भेज कर फिर से भय भीत ना कर सके, इसका समाधान क्या है? यह बताओ। चिकित्सक ने कहा इसके बारे में मैं कुछ ज्यादा तो नहीं बता सकता लेकिन मैं इतना कह सकता हूं, की किसी प्रकार से दिव्या के मन को पगले के चंगुल से छुड़ाना होगा। इस प्रकार से यह जिंदा नहीं बच सकती है। क्योंकि इसका मन स्वतः उसके भय के कारण सो नहीं पा रहा है। और जब तक यह सोयेगी नहीं तब तक इसका दिमाग ठीक नहीं हो सकता है। अभी तो हमने बहुत गहरा नींद का डोज दे दिया है। जिससे यह एक प्रकार से बेहोश हो चुकी है। इसको हम अधिक समय तक बेहोश नहीं रख सकते हैं। पगले को कैसे आप लोग दिव्या के मन से दूर रख सकते है? इसके बारे में तो आप सब को ही रास्ता निकालना होगा। यह कह कर चिकित्सक वहां कमरे से बाहर चला गया।

दिन दयाल ने रतन लाला से कहा की दिव्या को किसी भी प्रकार से हम मरने नहीं देंगे। इस पर कोनिका ने कहा जो अभी तक काफी समय से शांत थी, उसने कहा इसको कैसे बचा सकते हैं? पहले से यह कोमा में चल रही है, दूसरी तरफ से यह होश में भी रहने में समर्थ नहीं है, यह मामला तो बहुत गंभीर हो चुका है। जैसा की रतन कह रहा है की पगले को तलाश कर मार दिया जायेगा। इससे समस्या का समाधान हो सकता है। दिन दयाल ने कहा पगले को तलाश कर मारना आसान कार्य नहीं है। क्योंकि वह दुनिया के किस कोने में है, इसके बारे में हमें कुछ भी पता नहीं है। इस पर रतन लाल ने कहा की मेरे आदमी पूरे दुनिया में रहते हैं, हम सभी को आज ही सूचित करते है, जो भी पगले को तलाश कर जिंदा मुर्दा तलाश कर लायेगा। उसको हम दश करोड़ रुपये का इनाम देंगे। दिन दयाल ने कहा हां तुम यह काम

करो उसके बारे में किसी प्रकार की सूचना मिलने पर सबसे पहले मुझको सुचित करना। क्योंकि मैं उसको अपने हाथों से मारुगां। अपनी आँखों के सामने उसने मुझे और मेरे सभी सहयोगियों को मारने की बात की है। इसके अतिरिक्त मैं चाहता हूं, की तुम दिव्या को ले कर यहां पृथ्वी पर से मंगल ग्रह पर चले जाओ।

क्योंकि अब तो तुम्हारे यान मंगल ग्रह पर पर्यटक ले कर जा रहें है। और वहां पर कालोनियां भी बन चुकी हैं। और मैं यहां पर सब कुछ देखता हूं। रतन लाला ने कहा हां कार्य तो लग-भग हो चुका है, लेकिन अभी हम मंगल ग्रह पर केवल माल ही भेज सकते हैं, अपने यान से अमरीका की सरकार ने हमारी मानव प्रिंटिंग पर रोक लगा दी है। उसको पास कराने में हमें कुछ समय लगेगा। दिन दयाल ने कहां यह मानव प्रिंटिंग क्या है? इस पर कोनिका ने कहा की हम वहां मंगल पर बहुत बड़ी प्रयोग शाला बना रहे हैं, जहां पर हम किसी मानव की शरीर को यहां अपनी प्रयोग शाला में स्कैन करके वहां पर हूबहू उसको प्रिन्ट कर सकेगे। हमारा यह प्रयोग पुरी तरह से सफल हो चुका है। अभी हम केवल माल को ही यहां पृथ्वी पर स्कैन करते हैं, और वहां मंगल ग्रह पर वह प्रिंट हो जाता है। जिससे हमारी लागत बहुत कम आती है। इस पर दिन दयाल ने कहा की तुम लागत की चिंता मत करो, तुम वहां जाने के लिए तैयारी करो, हम तुम्हारे लिये सारी व्यवस्था कर देंगे। हमारा पूरे भारत के विश्व विद्यालय पर अधिकार हो चुका है। आज हमारे पास किसी वस्तु की कमी नहीं है। इस पर रतन लाल ने कहा अवश्य जैसा आप कह रहें हैं। वैसा ही होगा। उससे पहले हम इस पगले को तलाश के उसको ठिकाने लगा देते है। दिन दयाल ने कहा हां उसको तलाशने के लिये। पूरे पृथ्वी पर अपने आदमियों को सुचित करो। रतन लाल ने कहा ठीक है वह इसके बाद वहां से बाहर चला गया।

दिन दयाल ने रतन लाल के जाने बाद बेहोश दिव्या की तरफ देख कर कहा बेटी तुम बिल्कुल चिंता मत करो, मैं सब कुछ ठीक कर दुंगा। तुम्हें मैं किसी भी शर्त पर जिंदा रहना है।

रतन लाल कोनिका के साथ जब बाहर आ गया, तो कोनिका से कहा हमें पगले को तलाश कर मारना होगा। नहीं तो वह हमारे लिए, दिन दयाल से भी बड़ी समस्या खड़ी कर सकता है। कोनिका ने कहा मेरे बहुत सारे मित्र हैं, और हमारी बहुत अच्छी एजेन्सी से संपर्क हैं। मैं अभी सब को सुचित करके पगले की तलाश करने के लिए कहती हूं। और तुम भी अपने आदमियों को पगले को तलाश ने के लिए भेज दो। रतन लाल ने कहा पगले को इस पृथ्वी पर तलाशना उसी प्रकार से है। जैसे किसी रेगिस्तान में गीरी किसी सुई को तलाशना हो। इस प्रकार से हाथ धो कर सभी लोग पगले की तलाश में जुट गये, और यह घोषणा भी सभी जगह करा दी गई जो भी पगले को तलाश कर लाएगा। उसको दश करोण रुपया दिया जायेगा। रुपए की वजह से जंगल में आग जैसे फैलती है इसी प्रकार से यह बात हर तरफ फैल गई। और लाखों

लोग पगले की तलाश करने लगे। कुछ जो अपने आप को विशेषज्ञ मानते थे वह सब शातिर तरीके से पगले से संबंधित जानकारी जुटाने लगे।

अध्याय 11.

रतन लाल और उसकी बहन कोनिका ने मिल कर, अपने कुछ सहयोगियों के साथ मानव को चाँद और मंगल ग्रह पर पहुंचाने की योजना पर काम करना शुरु कर दिया। जब उन को पता चला, कि विश्व के सभी देश की सरकार उसके कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग दे रही हैं। उनकी योजना है की वह एक लाख लोगों को अपनी जीव शरीर प्रींट की विधि के द्वारा, यहां पृथ्वी पर उपस्थित अपनी प्रयोगशाला में जाने वाले की मानव की शरीर का स्कैन कर के, उसको चाँद अथवा मंगल ग्रह की प्रयोगशाला में भेजेगें, जिससे यहां से वहां दूसरे ग्रह पर आदमी को आसानी से पहुंचा दिया जायेगा, और इसमें खर्च भीबहुत कम ही आने वाला है। क्योंकि पहले वह सिर्फ सामनों को ही प्रिंट की विधि के माध्यम से भेजते थे, जो वहां मंगल और चाँद की सतह पर मुल भूत जरूरी वस्तु पहुंचाने का कार्य करते थे। लेकिन जब मंगल ग्रह पर और चाँद पर जब उन को बहुत अधिक मात्रा में पानी का भंडार मिल गया। तो उन्होंने पानी से आक्सिजन और हाइड्रोजन को अलग करके, हाइड्रोजन से ऊर्जा की अपनी सारी जरूरत को पुरा करने लगे, जिससे उनकी सभी मशीन अच्छी तरह से काम करने लगी, बिना किसी ऊर्जा की किल्लत के, मानव के लिए भोजन बनाने के लिए वहां प्रयोगशाला में, फल सब्जी, अनाज, और पशुओं के लिए घास को पैदा करना शुरु कर दिया, उन्होंने चाँद पर और मंगलग्रह पर प्रयोग के तौर पर कई जीवों को प्रिट जीवन शरीर की विधि से भेज दिया है। जैसे कुछ कुत्ते, बिल्ली, बंदर, खरगोश, और दिन दयाल का प्रिय तेदुंआ भी, वह सब वहां चाँद और मंगल ग्रह पर बहुत खुश और मजे में हैं, उन सब की देख भाल के लिए प्रशिक्षित रीबोट को लगया गया है, उनकी आडीयो विडीयों बराबर आती यहां पृथ्वी की प्रयोगशाला में आती है, जिसको देखते हुए अब मानव को वहां पहुंचाना का समय आ गया है। क्योंकि अब वहां पर मानव के रहने योग्य लग-भग सभी कार्य को पूरण किया जा चुका है। अभी वहां केवल आधुनिक ज्ञानवान रीबोट मशीन ही कार्य करते हैं। सैर के साथ वहां रहने वालो को और इस मिसन में एक साथ एक लाख लोगों को वहां पर भेजा जायेगा। क्योंकि दिन दयाल ने अपने उन सभी सहयोगियों देशों से अनुरोध किया, कि वह विश्व के सभी बड़े देश की सरकारों सूचना दे दें, कि यह मिसन शुरु हो रहा है, जो भी व्यक्ति वहां जा कर रहना चाहता है, उसको पहली बार मुफ्त में भेजा जायेगा, जैसे अमरीका, इंगलैण्ड, जापान, चीन, रूश, युरोप, के कई देश जर्मनी इत्यादि के भारी मात्रा में नागरिक को चाँद पर और मंगल ग्रह पर अपने लिए वस्ति बनाने के लिए पहले से ही इंतजार कर रहें हैं। इसके अतिरिक्त इस

विषय की शिक्षा के अध्ययन के लिए भारतीय विश्व विद्यालय में अपने छात्रों को प्रवेश दिला रखा था। जो दिन दयाल के समुह के द्वारा संचालित किया जा रहा है। और उन को स्थाई रूप से भारतीय नागरिक बना कर भारत के विभिन्न विश्व विद्यालय के आवासों में स्थापित कर दिया गया है। वह उन छात्र और छात्राओं में से, एक साथ काफी छात्र छात्राओं को चाँद और मंगल ग्रह की जमीन का शोध करने और वहां पर गृहस्थी बन कर वहां हमेशा के लिए, रहने के लिए रवाना करने वाला हैं। यह सब पहले चाँद पर जायेंगे, वहां पर 2 हजार छात्र के रहने के लिए पुरी व्यवस्था की जा चुकी है, और आठ छात्र छात्रओं को मंगलग्रह पर जायेंगे, यह सीट आरक्षित होगी इसमें सिर्फ भारतीय विश्व विद्यालय समुह के ही क्षात्र होगें, इसके अतिरिक्त पूरे विश्व से कोई भी मानव जा सकता है, इसके लिए वह सभी देश अपने – अपने देश में बुकिंग शुरु करें, उनका परीक्षण किया जायगा, जो भी स्वस्थ पाये जायेगें, उन सभी में 90 हजार लोंग होंगे, जो अपने जाने के लिए अपना आरक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

जैसे ही यह जानकारी आनलाइन और प्रिंट मिडीया, सोसल मिडीया आदि मिडीया पर प्रकाशित हुई लाखों करोड़ों लोगों का भारतीय विश्व विद्यालय में आना और अपना नामांकन कराना शुरु कर दिया गया। ऐसी भीड़ लगने लगी जैसा की प्रयागराज के कुंभ मेला में लगता है, जिसके कारण विश्व विद्यालय की व्यवस्था चरमराने लगी, जिस को नियंत्रित करने के लिए दिन दयाल के विश्व विद्यालय समुह को भारत सहायता माँगना पड़ा, और भारत सरकार ने भारतीय प्रत्येक विश्व विद्यालय के सुरक्षा लिए, अपनी सेना को उतार दिया। जिसमें गोली चली और हज़ारों नागरिक की मृत्यु हो गई। जिस को देखते हुए दिन दयाल ने कुछ दिनों के लिए चाँद और मंगलग्रह पर जाने वाले यात्रियों की बुकिंग को केवल आनलाईन करना पड़ा।

क्योंकि भारत के अब सभी विश्व विद्यालय अब अलग –अलग नहीं थे, वह सब जमीन के अंदर से सुरंग द्वारा जुड़ चुके थे, और उस सुरंग में बुलट ट्रेन चलती है, जिससे कोई भी आदमी किराया देकर भारत के किसी एक कोने के विश्व विद्यालय से भारत के दूसरे कोने के विश्व विद्यालय में आसानी से पहुंच सकता है। और इन सभी विश्व विद्यालयों का मुख्य केन्द्र ब्रह्मपुरा में है। जहां पर दिन दयाल बैठता है। अब विश्व विद्यालयों में पहले की तरह से पढ़ाई नहीं होती है, उसका तरीका बदल चुका है, वह विदेशियों का आवास बन चुका है, और भारत के प्रत्येक बड़े विश्व विद्यालय में बड़ी प्रयोगशाला बन चुकी है, जहां पर लोगों को भौतिक सुख के चरमोत्कर्ष को प्राप्त कराने में सहायता की जाती है, और यह रासायनिक, प्रक्रिया के माध्यम से होता है। वृद्ध आदमी को युवा बनाया जाता है, और लोगों को अपने अतीत और भविष्य में जाने के लिए सेवा दी जाती है।

विश्व विद्यालय के अंदर किसी भी लड़के या लड़की को किसी प्रकार की किताब द्वारा कोई अध्यापक नहीं पढ़ाता है, क्योंकि संपूर्ण विश्व में आज तक जो भी ज्ञान संचित किया है। उसको कई पैकेज के रूप में बना दिया गया है। अर्थात जो छात्र या छात्रा जितना अधिक धन विश्व विद्यालय को देने में समर्थ है, उसको उतना बड़ा पैकेज दिया जायेगा, अर्थात उसके छात्र या छात्रा के मस्तिष्क में उस पैकेज को एक सूक्ष्म चिप के रूप में स्थापित किया जाता है। जिसमें मुख्य तीन श्रेणीयां है, पहला वैश्विक स्तर की जानकारी, दूसरा राष्ट्रीय स्तर की जानकारी, तीसरी प्रांतीय स्तर की जानकारी मिलती है। आपके पास जिस स्तर की जानकारी होगी। आपको उसी क्षेत्र में विश्व के सभी देश की सरकारें आपको कार्य करने के लिए कुछ समय के लिए किराये पर रखती हैं, आप एक साथ कई कार्य को कर सकते हैं, इसका मौका आप को दिया जाता है। उदाहरण के लिये, यदि आप वैश्विक स्तर की जानकारीयों की चीप को अपने मस्तिष्क में स्थापित करवाना चाहते हैं, तो आपको सबसे अधिक धन देना होगा। अर्थात आपका मस्तिष्क हर पल नई नई जानकारी से अपडेट होता रहेगा। जो कुछ विश्व में हो रहा है, वह आपको ज्ञात हो जायेगा। सुपर कंप्युटर से आप को जोड़ दिया जायेगा। आपके कान के पास एक छोटा सा पिन प्वांट होगा, जिससे आपको कोई भी आडियो विडीयो देखना या सुनना है, कि नहीं, उसको चालू या बंद कर सकते हैं। इसी प्रकार से राष्ट्रीय स्तर की जानकारी के लिए थोड़ा कम धन विश्व विद्यालय को देना होगा, और यदि आप प्रांतीय स्तर की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको उससे भी थोड़ा कम धन देना होगा। आपकी भी जानकारी को निरंतर अपडेट किया जायेगा। इसके अतिरिक्त जो जानकारी किसी प्रकार से आज तक डिजीटल रूप विश्व में से संरक्षित की गई हैं, वह सब आपकी अपनी भाषा में या आप दुनिया कि जिस भाषा में चाहें, उस भाषा आपके मस्तिष्क में सुरक्षित कर दि जायेगी। और यह कार्य कुछ ही घंटों में ही कर दिया जाता है। जिसके लिए आपको कई साल विश्व विद्यालय में रहने की जरूरत नहीं है। आप अपने घर पर रह कर अपना कार्य फ्रिलांसर के रूप में कम्प्युटर की सहायता का कार्य कर सकते हैं।

पगला अब कोई सामान्य व्यक्ति नहीं था जिस को दुनीया कोई साधारण आदमी तलाश पाये, क्योंकि अब पगला एक बिल्कुल नये आदमी में बदल चुका था। क्योंकि उसने भगवान शिव को प्रसन्न कर लिया। और उनसे उसने वह सब सिद्धीयाँ प्राप्त कर ली थी। अब वह आकाश मार्ग से गमन, पानी पर चलना, अदृश्य होने की कला में स्वयं को समर्थ कर चुका था। इसके अतिरिक्त वह बहुत शक्ति शाली हो चुका था वह अकेले ही एक सेना के समान हो चुका था।

पगले ने जब अपना कार्य सिद्ध कर लिया तो, परमेश्वर का स्मरण करके अपनी गुफा से अचानक एक रात्रि को जब जाप कर रहा था तभी, उसने संकल्प किया की वह अदृश्य होकर आकाश मार्ग से होते हुए। अपने गांव ब्रह्म पुरा के उस पुराने आश्रम में पहुंच जाये। ऐसा उसके अपने मन में कहते ही। एक दिव्य

आवरण ने उसको चारों तरफ ढक लिया, और वहां से तत्काल आकाश में बादलों के उपर लेकर चला गया। इसके बाद विद्युत की गति से वह दिव्य शक्ति पूर्ण आवरण युक्त जिस को केवल पगला ही अनुभव कर सकता था, अपनी आत्मा से क्योंकि वह अपने शरीर के भार स्वयं को पूर्णतः मुक्त महसूस कर रहा था। यह बहुत कम पल के लिए ही था, लेकिन जब उस को अपने शरीर के होने का ज्ञान हुआ। तो उसने अपनी आंखों को खोला। तो उसने अपने आप को अपने पुराने जीर्ण शीर्ण ब्रह्म पुरा के आश्रम के पास पहुंच चुका था। उस समय रात्रि का समय था। फिर भी उसने उस जगह को पहचान गया। रात्रि का सन्नाटा चारों तरफ व्याप्त हो रहा था। उस समय उस आश्रम की जमीन को एक मुसलमान आदमी अपने खेत में पानी दे रहा था। पगला उसके पास आदमी के पास गया। और उससे पूछा भाई समय क्या हुआ? उस आदमी ने जब पगले को देखा तो वह भय से कांपने लगा, क्योंकि उसने सोचा की शायद उसके सामने को भूत आ गया है, क्योंकि पगला देखने में बहुत ही खतरनाक दीख रहा था। क्योंकि उसने बाघ की खाल को कटी वस्त्र की तरह पहना था, और एक मोटी बाघ की खाल से अपनी शरीर को ढक रखा था। इसके अतिरिक्त उसके शरीर पर बहुत अधिक बाल हो चुके थे। खाना का लंबे समय से सेवन ना करने के कारण और तपस्या के कारण उसकी आँखें बहुत खतरनाक रुप से चमक रही थी। उसकी आँख से कोई सामान्य आदमी आँख नहीं मिला सकता था। ऐसा ही उस आदमी के साथ हुआ जिसके कारण वह खेत में पानी देने वाला आदमी बेहोश हो गया। लेकिन पगला उस आदमी को पहचान गया था। जिसका नाम भी पगले को याद हो चुका था। उस आदमी का नाम पाखंडी था, जो पगले की आश्रम की जमीन में खेती करता था।

पगले ने इस प्रकार से यहां आश्रम में रहना, उसके लिये ठीक नहीं होगा। उसने सोचा चल कर देखना चाहिए की विश्व विद्यालय कैसा बना है? इस लिए उसने पैदल ही गांव के बाहरी रास्ते से होते हुए विंध्य पर्वत की घाटी की तरफ चल पड़ा। क्योंकि पगला नहीं चाहता था कि कोई उसको पहचाने। जब उसको पता चला की उसको अब कोई पहचान नहीं सकता है, उसने सोचा यह उसके लिए अच्छा ही है, इससे उसको दिन दयाल से निबटने में सरलता ही होगी। इसी विचार में वह धीरे - धीरे गांव से बाहर चला गया, उसने अपने सामने करीब 4 किलोमीटर आगे एक बड़े टावर को देखा। जिसके आस –पास बहुत अधिक प्रकाश हो रहा था। पगला समझ गया की यहीं विश्व विद्यालय के कीले की इमारत है। वह उसके पास नहीं जाना नहीं चाहता था, क्योंकि वहां पर दिन दयाल के द्वारा कीले की सुरक्षा की भी व्यवस्था की गई होगी। पगला यह जानता था। उसने एकांत में छोटी कुटिया में आराम करने के लिए रुक गया। उसने सोचा थोड़ा आराम करना चाहिए सुबह होने पर इसके बारे में विचार किया जायेगा। क्योंकि अभी उसको किसी प्रकार की जानकारी नहीं है, की दिन दयाल की क्या योजना है? उसके बारे में यहां के लोगों को जरूर कुछ पता होगा। इस लिए यहां के लोगों से पहले जानकारी लेना होगा। फिर कुछ उसके द्वारा किया जायेगा। यहीं

विचार कर वह उस एकांत में बनी खाली कुटिया में कुछ समय के लिये लोट गया। और थोड़े ही समय में उसको निंद आ गई।

सुबह होते ही उसके पास कई आदमी आने लगे, जिसमें से अकसर चेहरा पहचाना हुआ था, जिसमें से अकसर ऐसे लोग थे जो केवल इसलिए आये थे, कि एकांत में बैठ कर कुछ नशापत्ती को कर सके, जहां पर पगले ने रात्रि में विश्राम किया था। उस स्थान के पास ही ग्राम सभा की एक इमारत थी जो पगले के जाने के बाद बनी थी जिसके बारे में पगले को पता नहीं था। वह सोचता था की यह स्थान बहुत एकांत है, क्योंकि अपने पहले के गांव के बारे में समझता थी वहीं गाँव है, लेकिन गांव बहुत अधिक बदल चुका था। सभी वृद्ध आदमी मर चुके थे, एक नई पीढ़ी ने गांव की बाग़ डोर को अपने हाथ में ले चुका था। जिसमें अधिकतर लोग नशे के शिकार थे, जो गाँजा, भाँग, दारु, मांस के आदी हो चुके थे। पहले भी लोग नशा करते थे, लेकिन तब लोगों की संख्या बहुत कम थी, तब लोग छीप कर नशा करते थे। अब तो लोग खुल कर सभी काम करते थे। जिन को पगला पहचानता था उनमें बोधमान, शिवराम, कनवर, अंकुर, सूरज, हरीदास, चंदगी, कन्नेशेठ, डाङ्गरु, पानलाल, आमोद, इन सब का एक नया नेता बन चुका था जिसका नाम दामोदर बाबा था जिसके साथ त्रीलोक आदी थे। पगला उनसे दूर एक दूसरी जगह पर था, जो उजाड़ हो चुका था। जहां पर लोग अकसर नहीं आते थे। यह सुबह का समुह था, इसमें बहुत ऐसे लोग थे जिन को पगला नहीं पहचानता था। जब काफी धूप निकल चुकी तो वहां ग्राम समाज पंचायत की इमारत पर बहुत सारे जुआरी आ चुके थे, जिन में लवलेश, कमल, राधारमण, छोटेलाल, मुन्सिलाल, गुड्डन, अमरनाथ इत्यादि लोग थे, जो साम के करीब लग-भग 5 बजे तक खूब हु हल्ला के साथ ताश के पत्ते खेलते रहें, इनके अतिरिक्त खेल को देखने वाले भी बहुत लोग आये थे। कुछ लोग ऐसे भी थे, जो केवल उस स्थान पर अपना समय बिताने के लिए आते थे। कुल मिला कर सैकड़ों आदमी का चेहरा पगले ने देखा, लेकिन पगले को किसी नहीं देखा। क्योंकि पगला उस उजाड़ इमारत में अकेला पड़ा था, अंदर खिड़की से सब कुछ देख रहा था। वह स्वयं किसी के सामने नहीं आना चाहता था, पगला समझ गया था, की यह सब लोग बेकार हैं, इनके पास कोई काम नहीं है। इन को किसी से कुछ लेना देना नहीं था। वह सब अपने ही कार्य में मस्त थे। उन को देख कर नहीं लगता था कि इस गांव में हज़ारों लोगों की हत्या करके इन के समाज के समुह जमीन को छिन कर विश्व विद्यालय बन चुका है।

यह सब सोच रहा था, तभी पगले की निगाह एक औरत पर पड़ी जो अपने हाथ में एक खुरपी ले कर और सिर पर एक बांस की टोकरी ले कर, उस उजाड़ स्थान घर की तरफ चली आ रही थी। शायद घास छीलना चाहती थी। क्योंकि जिस उजड़े स्थान पर पगला था वहां चारों तरफ बहुत घास थी जिसकी लालच में वह औरत चली आ रही थी। तभी किसी दूसरी औरत ने पीछे से आवाज दिया, वहां मत जाओ वहां पर भूत रहता है। इधर आ जाओ, यहीं पर हम घास को छील लेंगे। लेकिन उसके आगे की औरत

अपने पीछे वाले औरत की बात पर लापरवाही से अपने शिर को हिलाते हुए, ठीक उस उजड़े घर के सामने आकर खड़ी हो गई, कुछ देर इधर –उधर उसने देखा, जैसे किसी को देख रही हो, यह इमारत पंचायत भवन से करीब पाँच सौ मीटर की दूरी पर थी। पगला वहां से चारों तरफ देख सकता था, लेकिन अभी तक उसको किसी ने नहीं देखा था। लेकिन यह औरत उसको देख सकती है, उसको ऐसा शक हुआ। लेकिन पगला उस औरत के सामने नहीं आना चाहता था, इसलिए वहीं पर स्वयं को अदृश्य कर लिया। और सीधा उस घर बाहर निकलने लगा। वह दिखाई तो नहीं देता था, लेकिन उसके चलने से उसके पैरों के नीसान घास पर पड़ते थे, और सरसराहट की आवाज होने लगी। जिससे वह और बहुत अधिक भयभीत हो गई। इसकी बिल्कुल आशा पगले ने नहीं की थी। यहीं नहीं उस घास छीलने वाली औरत ने बहुत तेज अपनी जान लगा के चिल्लाने लगी। भूत- भूत............ जिसकी आवाज को सुन कर दूसरी औरत भाग कर उसके पास आने लगी, उनकी भाग दौड़ की आवाज को सुन कर ग्राम पंचायत के अंदर रहने वाले लोग भी, दौड़ कर उस तरफ आने लगे देखते - देखते ही वहां भीड़ लग गई। वह सब बोलने लगे की, वह भूत कहां है? इस पर उस औरत ने जिसने पगले को अदृश्य हो कर चलते देखा था, उसने एक पेड़ की तरफ इशारा करके के कहा इधर गया है, लोग उस इमली के पेड़ पर देखने लगे। लेकिन वहां तो कुछ भी नहीं दिख रहा था। लोगों की भीड़ में से किसी ने कहा की वहां पेड़ पर तो कुछ नहीं है। इस पर उस औरत ने कहा की जब वह जमीन पर चल रहा था तो उसके पैर के निशान घास पड़ रहा था और घास में किसी के चलने की आवाज हो रही थी। इसके बाद कुछ लोगों ने कहा की इसको यहां से लो जाओ। उस दूसरी औरतों ने कहा हमने तुम को पहले कहा था, यहां भूत रहता है। इसको सुनते ही उस औरत को मूर्छा आने लगी। जिससे वह उसी स्थान पर गीर गई। कुछ लोगों ने उस औरत को उठा कर लेकर गये। गांव में यह समाचार किसी जंगल में आग की तरह से फैल गई।

पगला यह सब उस इमली के पेड़ पर चढ़ कर देख रहा था। फिर जब सभी लोग सदमे में आ गये। और वहां से चले गये। तो वह इमली के पेंड़ से नीचे उतर कर गांव में पहुंचा। अदृश्य अवस्था में ही जिससे गांव में उसको आने की किसी को जानकारी नहीं मिली, क्योंकि गांव क सारे मार्ग अब पक्का बन चुके था। दूसरी बात रात्रि भी होने लगी थी। जब पगला उस औरत के घर पहुंचा, तो क्या देखता है, की उस औरत के उपर से भूत को भगाने के लिए कुछ लोग झाड़ फूँक कर रहें थे। यह सब देख कर पगले को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके मन में आया की वह सब के सामने आ जाये, लेकिन उसको भय था की इससे उसके लिए संकट आ सकता है। क्योंकि वह जानता था कि उस औरत ने किसी भूत को नहीं देखा था, यह तो मात्र उसके मन का भ्रम था। वह जानता था की औरत वह ठीक हो जायेगी। पगला वहां से सीधा जमीनदारों की बस्ती में गया, क्योंकि वह अपने खानदान के लोगों को देखना चाहता था। कुछ समय में जब वह अपने खानदानी मकान के पास पहुँचा, तो वह क्या देखता है? की वह मकान तो बिल्कुल खाली था, उसके दरवाजे सब टूट चुके थे। उसके अगल बगल की छोटे- छोटे मकान बन चुके थे। जहां पर कुछ

छोटे बच्चे और औरतें दिख रही थी। कोई बड़ा आदमी नहीं दिख रहा था। जिससे वह समझ गया की सभी बड़े लोगों को मारा जा चुका है। उसको जो सूचना जो मिली थी वह बिल्कुल ठीक थी। जिसके कारण उसका खून खौलने लगा। वह तुरंत दिन दयाल को इसके लिए सज़ा देना चाहता था। जिस लिया वह अदृश्य अवस्था में ही वहां से उड़ा और सीधा कीले की छत पर जा कर उतरा। जिस को देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि विश्व विद्यालय के कीले की इमारत बहुत अधिक शानदार और आकर्षक थी। उसने अपने चारों तरफ देखा जहां पानी भरा हुआ था। जिसके बीच में जैसे कोई कृत्रिम पर्वत की चोटी की तरह वह कीला दिख रहा था। दूर – दूर तक केवल पानी ही पानी दिख रहा था। और बाहर से कीले में प्रवेश का कोई मार्ग नहीं था। चारों तरफ दूर – दूर तक देखने के लिए प्रकाश की अच्छी व्यवस्था की गई थी। कीले की छत उसकी कल्पना से भी बड़ी थी, क्योंकि कीले की छत पर हवाई अड्डा भी थी, इसके अतिरिक्त क चारों तरफ बड़ा बड़ी मिशाइल को लांच करने वाले यंत्र लगा था। इसके अतिरिक्त बहुत तगड़ी सुरक्षा की गई थी। वह कीले के अंदर प्रवेश के लिए दरवाजा की तलाश में था, लेकिन उसको कोई दरवाजा नहीं दिखा। पगले को पता नहीं था, की कीले में प्रवेश के लिए दरवाजा गुप्त रूप से बन थे, जिन को बाहर से देखा नहीं जा सकता था। वहां सारी व्यवस्था कम्प्युटर से संचालित होती थी। वही एक स्थान पर पगला बैठ गया। और वह विचार करने लगा, की इसके अंदर जाने का रास्ता कहां से है? उसको तो कोई दरवाजा नहीं दिख नहीं रहा है। फिर उसने विचार किया की यहां के किसी आदमी को पकड़ कर इसके अंदर जाने के मार्ग के बारे में जानकारी प्राप्त करेगा। लेकिन उसका दुर्भाग्य था की वहां पर सभी केवल निर्जीव वस्तु ही थी, कोई जीवित व्यक्ति नहीं था। उसने सोचा इंतजार करना चाहिए, कोई इसके अंदर जाये, या फिर कोई इसके अंदर से बाहर निकले, तो कुछ रास्ता इस कीले के अंदर जाने का मिल सकता है। जिसके लिए उसको इंतजार करना होगा। फिर उसको बिचार आया की किसी ऐसे आदमी को पकड़ना होगा, जिस को इस कीले के बारे में पुरी जानकारी हो, की इस कीले के अंदर कैसे प्रवेश करते हैं? पगला कीले में प्रवेश कर करना चाहता था। क्योंकि वह जानना चाहता था की इस कीले के अंदर क्या हो रहा है? और उसको दिन दयाल और दिव्या से मिलना था। लेकिन अभी यह संभव नहीं लग रहा था। इस लिए उसने कीले से गांव में आना ही उचित समझा। इसलिए वह कीले के उपर से अपने गांव के आश्रम के लिए वायु मार्ग से चल पड़ा। और कुछ ही समय में वह अपने पुराने आश्रम पर पहुंच चुका था।

दिन दयाल के आदमी कुत्ते के तरह से पगले को खोज रहें थे, लेकिन किसी को यह भरोसा नहीं था की पगला उनके आस पास ही है, यद्यपि पगले की खोज विदेश में हो रही थी। कई देशों की एजेंसी पगले की खोज कर रही थी। लेकिन हर तरफ से केवल एक ही खबर आ रही थी की पगले की कोई खबर नहीं मिल रही है। इस पर झल्ला कर दिन दयाल ने कहा जब वह जिंदा है तो कहां चला गया, क्या उसको जमीन खा गई, या आकाश निगल गया? उसके आदमी ने कहा हम तलाश कर रहें है, वह कही भी होगा,

उसको हमारे आदमी तलाश लेंगे। जिसके लिए हमने एक समिति बनाई जिसका मुखिया रोहन को बनाया है, इस पर दिन दयाल ने कहा रोहन कहां है उससे मेरी मुलाकात कराओ, तत्काल अमरीका से आनलाइन दिन दयाल का विडीयो कानफ्रेन्सिंग कराया गया। दिन दयाल ने कहा क्या जानकारी है तुम्हारे पास पगले के बारे में, इस पर रोहन ने कहा की हमारी खोज सही दिशा में आगे बढ़ रही है, हमने उस जहाज के मलबे को उसकी काकपिट की सहायता प्राप्त कर ली है, हमारे आदमी उस स्थान से कुछ सौ किलो मीटर कि दूरी पर एक एकांत मानव विहीन द्वीप को प्राप्त किया है, जहां पर हमें किसी आदमी के रहने के भी कुछ प्रमाण मिले हैं, जैसे वहां पर एक घास फुस की झोंपड़ी बनाई गई है, और वहां पर आग भी जल रहीं है, जिससे हम आशा करते है कि वह कहीं इसी द्वीप पर होगा। इस पर दिन दयाल ने कहा की तुम आशा मत कर उस वीरान द्वीप का कोना - कोना डालो और उसकी सूचना मुझे दो, और तुम स्वयं वहां जा कर उसकी खोज करो जल्दी से जल्दी क्योंकि हम कुछ ही दिनों में पृथ्वी को छोड़ रहें हैं, हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। रोहन ने कहा आज उस वीरान मानव रहित द्वीप के लिए प्रस्थान करता हूं, और जैसी भी सूचना मिलती है, आपको सूचित करता हूं।

इसके बाद रोहन अपने कुछ आदमीयों के साथ अपने कुछ आधुनिक यंत्रों और कुछ खतरनाक हथियार के लेकर उस वीरान द्वीप के लिए, अपने एक व्यक्तिगत जहाज से निकल पड़ा। और कुछ एक घंटों के बाद उस वीरान मानव रहित द्वीप पर पहुंच के समुद्र के किनारे अपने जहाज को उतारा, जहां पर पहले से उसके कुछ आदमी उसका इंतजार कर रहे थे, वह उनसे मिला। और उनके साथ उस स्थान पर पहुंचा, जहां पर कभी पगला रहता था, उन को वहां पगले के द्वारा उपयोग किये गये, कुछ सामान के साथ जिस जहाज का दुर्घटना हुआ था जिसमें पगला था, उसके कुछ पुराने सामान जो पगला के द्वारा लाया गया था वह मिला, जैसे कुछ कपड़ा और उसका पुराना मोबाईल जिस को पगला उस गुफे में छोड़ कर गया था। रोहन ने उस स्थान का काफी बारीकी से जांच पड़ताल कराया। लेकिन पगला उन को कहीं नहीं मिला। इसके अतिरिक्त उन को वहां कुछ पत्थर के औजारौं, और मिले हुए मोबाईल पर, जो उंगलियों के नीसान मिले जिसका उसने मिलान कराया, जिसमें यह पाया गया, की जिस आदमी के उँगली के नीसान मोबाईल पर हैं, उसी आदमी के उँगली के नीसान और भी कई वस्तु पर मिले हैं। जिससे वह इस नतीजे पर पहुंचा की पगला यहां कुछ समय पहले तक रहता था, क्योंकि अभी तक आग के अवशेष उस गुफा में थे जो लंबे से जलाई गई थी। इसकी सूचना उन्होंने दिन दयाल को दिया, की यहां पर पगला रहता था, लेकिन अब वह इस द्वीप पर कहीं भी नहीं है। इस पर दिन दयाल ने कहा फिर वह कहां गया? उसकी खोज करो, यदि वहां नहीं है। तो किसी तरह से वह उस द्वीप कहीं और चला गया होगा। इस पर रोहन ने कहा इस द्वीप पर किसी भी देश में जाने के लिए, केवल दो मार्ग हैं, एक हवा का मार्ग है, दूसरा पानी मार्ग है, और इन दोनों मार्गों से यात्रा करने के लिए जहाज चाहिए, चाहे वह पानी की हो या फिर हवा की हो, और उसके पास यह दोनों नहीं थे। क्योंकि हमने पता किया है कि इस द्वीप पर हाल के दिनों में, कोई ना

पानी का ही जहाज आया है, और ना ही हवा में चलने वाली कोई जहाज यहां आई है। फिर दिन दयाल ने कहा तो वह वहां से कैसे निकला? क्योंकि कुछ ही दिन पहले उसने टेलीपैथी के द्वारा मेरी बीमार बेटी को मारने की कोशिश की थी।

रोहन ने कहा वह कहीं भी हो, आपसे जरूर संपर्क करेगा, पहली बात, दूसरी बात वह अपने जानने वालों से मिलेगा, यदि आप उसके जानने वालों, को पकड़ ले तो संभव है, कि वह आपकी पकड़ में आ जाये। दिन दयाल ने कहा तुम अपना काम करो, और तलाश करो, कौन ऐसा आदमी है? जो उसका जानने वाला है।

इस प्रकार से पगले के खानदान पुरी जानकारी को दिन दयाल ने प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति को लगाया। और उससे कहा कि पता करो अभी तक उसके खानदान में कौन – कौन आदमी है और वह कहां रहता है?

जैसा कि हमने पगले के खानदान की लगभग सभी जानकारी को पहले बता दिया है, इसी जानकारी को उन्होंने पता किया, जैसा कि मैंने बताया था की मानस के दे पुत्र थे मानव और दानव जिसमें लगभग सभी लोग मर चुके थे किसी ना किसी कारण से या फिर अपनी स्वयं की मृत्यु से जो बहुत से लोग उनकी अगली पीढ़ी के थे, उन को दिन दयाल ने विश्व विद्यालय बनवाने से पहले ही जमीन हड़पने के लिए मरवाया था, अभी जो लो बचे हैं, जिनकी उसको तलाश है, वह मानव के चौथे पुत्र के अर्थात जो इन्जिनीयर थे, उनके पाँच लड़के हैं, जो अपने पिता के साथ बहुत पहले ही गांव को छोड़ कर बाहर जा चुके थे, हालांकि वह सब भारत में नहीं रहते हैं, वह सभी दूसरे देशों में रहते हैं, जिन से मानव भी काफी लंबे समय से नहीं मिला है, इस लिए उनसे किसी प्रकार की जानकारी पगले के बारे में दिन दयाल के आदमी को नहीं मिली। जिससे दिन दयाल निरास हो कर अपनी पुत्री दिव्या के साथ इस पृथ्वी से बहुत दूर मंगल ग्रह पर जाने को तैयार हो गया। उसने कहा की मैं और मेरी पुत्री दिव्या अपने विशेष अंतरिक्षयान से पहले चाँद पर जायेगे, वहां पर कुछ एक साल रहेंगे, उसके बाद हम मंगल ग्रह पर हमेशा के लिए जा कर वश जायेंगे। जिसके लिए उसका दामाद रतन लाल तैयार हो गया, और उसने दिन दयाल से कहा की मैं यहां पृथ्वी पर अपने विश्व विद्यालय की सारी व्यवस्था को देखता हूं, और पगले की खोज करके उसका काम करने के बाद मैं भी आपके पास जल्द ही आ जाउंगा। और यहां की भी सारी व्यवस्था दूसरे ग्रह से ही संचालित करेगे। हमारे बहुत से आदमी यहां पर तो है ही।

पगला अपने आश्रम पर आ गया, लेकिन उसको चैन नहीं मिल रहा था, उसके अंदर क्रोधाग्नि बहुत तीव्र प्रज्वलित हो चुकी थी। उसको उसने अपने योग से शांत करने के लिए ध्यान मुद्रा में आसन जमा कर

बैठ गया, और ईश्वर चिंतन करने लगा, कुछ समय तक ध्यान में बैठने के बाद जब उसका मन बिल्कुल शांत हो गया तो वह अपने स्थान से उठ कर खड़ा हो गया। क्योंकि सुबह होने वाली थी, यह प्रातःकाल का समय था। उसने अपने मन विचार किया कि नदी के किनारे चल कर वहां पर बैठना चाहिए, क्योंकि यह गर्मी का समय था और बहुत सुन्दर हवा नदी के किनारे से आ रही थी, जैसे वह उसको अपने पास बुला रही हो, इसलिए वह वहां से नदी के तरफ चल पड़ा कुछ देर तक रेत में चलने के बाद वह नदी के किनारे लगभग पहुंच गया था, तभी उसकी निगाह किनारे पर उपस्थित मरघट पर पड़ी जहां पर बहुत सारे लोग एकत्रित थे, और आपस में बात कर रहे थे, और कुछ लोग लाश को खड़े हो कर जला रहे थे उसके प्रकाश काफी दूर से उसने देख लिया कि वहां काफी अधिक आदमी थे, जिससे वह समझ गया कोई बड़ा आदमी शायद गांव का मरा है जिसके कारण इतने अधिक लोग एक साथ एकत्रित हुए हैं। इसके साथ ही उसके मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई की चल कर देखना चाहिए कि कौन आदमी मरा है? शायद वहां पर उसको कुछ अपने पहचान के मिल जाये, फिर वह कुछ सोच कर अपने स्थान पर ठिठक कर खड़ा हो गया। यहां पर उसको कुछ लोग पहचान सकते है, जिससे उसके लिए समस्या खड़ी हो सकती है। जिससे बचने के लिए उसने कुछ मंत्रों को अपने मन पढ़ा जिसके साथ वह अदृश्य हो गया। जिसके बाद वह उन मुर्दा फूँकते लोगों के मध्य उन सबसे कुछ दूरी पर बैठ कर उनकी बांते सुनने लगा, जहां पर उसको पता चला की यह सब लोग पुलिस की गोली से मारे गये हैं, क्योंकि बहुत बड़ी भगदड़ हो गई, थी विश्वविद्याय के अंदर दर्शक जो विश्व विद्यालय को देखने के लिए आये थे, तभी एक दूसरे ने कहा नहीं भाई, इन की मृत्यु का कारण कुछ और है। तब एक तीसरे आदमी ने कहा यह सब मुफ्त में चाँद पर जा कर रहना चाहते थे। मरने वालों की संख्या तो बहुत अधिक थी लेकिन सब को कहां कोई जलाता है। उन सब बदनसीबों को तो मरने के बाद ऐसे ही बोरी में बाँध कर गाड़ी से कही दूर यहां से ले जा कर जमीन गाड़ दिया होगा। इस पर एक और चौथा आदमी जो काफी देर से उनकी बात को सुन रहा था उसने कहां कि विश्व विद्यालय के कीले अंदर मैंने उड़ती हुई खबर सुनी है कि एक विद्युत से चलने वाला शव गृह भी है, जहां कितने लोगों को जलाया जाता है, जिनकी राख भी नहीं मिलती वहां पर ही बहुत लोगों को जलाया गया हो। तब एक दूसरे ने कहा हम लोगों से क्या लेना देना है। हमें तो रोज कुआं खोदना है, और रोज पानी पीना है, यह तो लास बड़ी मुश्किल से मिली है, क्योंकि कि इसका आदमी की पकड़ बहुत उपर तक थी, और यह अमीर और बड़े लोग ही वहां विश्व विद्यालय में जा कर रहते है, और वह क्या - क्या करते हैं? हमें इसकी कहां सूचना ही मिलती है? तभी एक और आदमी आकर उनके बीच में बैठते हुए कहा कि क्या बात हो रही है? भाईयों इस पर वह सब लोग शक पका कर शांत हो गये। लेकिन पगला उस नये आगंतुक को पहचान गया। उसे याद नहीं आ रहा था कि वह कौन है? लेकिन उसके चेहरा को उसने बहुत पहले देखा था, फिर उसने अपने दिमाग पर जब थोड़ा जोर दिया उस आदमी को वह पहचान गया। उस आदमी के साथ उसको सारी कहानी पता चल गई, जब उसने कहा कि कानून के लंबे भाग दौड़ के बाद हम को हमारे पिता कि लाश मिली है, यदि कानून की कोई अड़चन नहीं होती तो हमें कल दिन में

ही लास मिल जाती। फिर पगला समझ गया कि यह उस आदमी का बेटा है जिस को उसने बहुत समय पहले मिला था। इनका उस जमीन से बहुत बड़ा संबंध है जिस जमीन पर आज विश्व विद्यालय का कीला बना है। इस प्रकार से पगला अपने जीवन के प्रारंभिक काल में चला गया, जो सब वह भूल चुका था वह सब उसके एक- एक करके याद आने लगा।

बहुत समय पहले की बात है, जब पगला मात्र 17 या 18 साल का था और कालेज में पढ़ता था, उसके पीता राम नाथ ने अपने खानदानी मकान से अलग अपना नया मकान गांव के एक किनारे में बनाया था। जहां पर वह अपने भाई, बहन, और माता पिता के साथ रहता था। उसके पिता अपने कार्य के अकसर घर से बाहर रहते थे वह कभी- कभी एक दो हफ़्ते में घर पर आते थे उसकी मां एक ग्रामिण औरत थी, जो अपने कार्य को घर अंदर ही रह कर किया करती थी। और पगला ही अपने घर सबसे बड़ लड़का था जो घर के बाहर के जरूरी कार्य करता था। इसके अतिरिक्त वह अपने पढ़ाई लिखाई का कार्य करता था। वह जिस कमरे में रह कर अपनी पढ़ाई करता था, उस खिड़की के सामने रास्ते के दूसरे तरफ एक पुराना मकान एक बड़े बाग़ीचे के बिच में था जिसमें एक वृद्ध आदमी अपनी दो पत्नी के साथ रहता था जिसकी अपनी कोई संतान नहीं थी। पगला और उस वृद्ध आदमी के घर के बिच से जो रास्ता गुजरता था वह गांव में जाता था, जिसमें आगे चल कर बहुत लोगों के घर थे। जो दक्षिण दिशा में दूर तक जाता था, विंध्य पहाड़ के पास तक लोग इस मार्ग से जाया करते थे, और यहीं मार्ग उत्तर में नदी किनारे तक जाता था। नदी के ठीक उपर से बहुत से गांव थे, जिसमें बहुत सारे लोग रहते थे। पूरब में पगला का घर था, उसके बाद वह रास्ता था जो उत्तर नदी किनारे से दक्षिण में गांव से होते हुए दूर विंध्य पहाड़ तक जाता था। और ठीक पगला के मकान पश्चिम में उस वृद्ध दंपति का मकान था। हालांकि अब वह मकान नहीं है। क्योंकि उस मकान के वृद्ध मालिक को उसके पुराने रिश्तेदारों ने उसकी जमीन के लोभ में आकर उसकी हत्या कर दी थी।

जिन लोगों ने यह हत्या की थी उन्हीं लोगों में से मुख्य हत्यारा था वह आज नदी किनारे चिता में जल रहा था, हुआ यूं कि जो आदमी आज मर चुका था जिसकी लाश चिता पर दहक रही थी यह पहले भारत एक बड़े महानगर में मूंबई में रहता था, जिसका नाम कमल नाथ था वह वहां पर एक बड़े व्यापारी के यहां अपनी सेवा देता था। साथ में उत्तर भारती लोगों में अपने गायन के माध्यम से बहुत प्रसिद्ध था क्योंकि यह राम चरित मानस का पाठ बहुत सुन्दर तरह से करता था। जिसके कारण लोग इसको लोग बहुत पसंद करते थे। और अपने यहां पाठ करने के लिए अकसर बुलाया करते थे, जिससे यह बहुत अच्छा धन भी प्राप्त करता था। यह पाँच भाई था, जिसमें से तीन भाई इसके साथ ही रहते थे। और वह सब भी इसी प्रकार के कार्यों को करते थे। कमल नाथ के तीन लड़के भी थे, जिसमें से एक बड़ा लड़का इसके साथ रहता बाकी दो अपनी मां के साथ गांव में रहते थे। जहां पर कमल नाथ एक अपना बड़ा

पक्का मकान बना रखा था, जिसके सामने एक कुआं, बनाया, और एक पत्थर की मंदिर बनवाया था। जिसके कारण गांव में भी धर्मात्मा के रूप में प्रसिद्ध चुका था। यह कमल नाथ उपर से तो धर्मात्मा था लेकिन यह अंदर से अधर्मात्मा था। इसके मन किसी व्यक्ति के लिए दया धर्म नाम मात्र का नहीं था। जैसा कि इसके आगे के कार्यों के द्वारा प्रकट हुआ। जैसा कि यह जानता था की जो वृद्ध दंपति पगले के घर के बगल में रहते थे जिनके पास काफी जमीन थी अपना बहुत बड़ा मकान बग़ीचा के साथ दो पत्नी थी लेकिन उनकी कोई अपनी संतान नहीं हुई, जिसके कारण वृद्धावस्था में वह काफी चिढ़ –चिढ़े होगये था। उनके बगीचे का फल कोई भी बच्चा कभी नहीं तोड़ सकता था, जिसमें आम, अमरूद, केले, अनार इत्यादि के पेड़ थे, यदि कोई बच्चा किसी प्रकार से किसी फल को तोड़ लेता था, और यह बात उस वृद्ध और की बड़ी पत्नी को पता चल जाता था, तो वह सुबह से साम तक उसको गाली और श्राप दिया करती थी। वह वृद्ध पुरुष कुछ खास नहीं बोलता था, इसी प्रकार से उसकी दूसरी पत्नी भी काफी शांत प्रकृति की थी। ऐसा पगले के साथ भी कई बार हुआ था। वह जान बूझ कर कभी केवल उस वृद्ध औरत को परेशान करने के लिए उसके बाग़ीचे से कुछ एक अमरूद तोड़ लेता था, जब वह औरत नहीं देखती थी, तो सब कुछ ठीक होता था, लेकिन जब वह देख जाती थी, तो वह अपने शिर पर आसमान उठा लेती थी। जिसके कारण किसी की हिम्मत नहीं होती थी, कोई उनके बाग़ीचे का कोई फल तोड़ सके, भले ही वह सड़ जाये, लेकिन उसको कोई तोड़ नहीं सकता था।

कमल नाथ ने अपने मन में एक बार उनकी जमीन को हड़पने की योजना बनाई, जिनके बाग़ीचे का कोई फल कभी तोड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता था, उनकी बहुत बड़ी संपत्ती को उनसे दिमाग लगा कर छिनना चाहता था, इस लिए उसने अपने एक बड़े मित्र कि सहायता से वकील को अपनी तरफ करके मुंबई में ही सारे संपत्ती का जाली कागज बनवा लिया, और गांव में आकर इस वृद्ध दंपति को अपने विश्वास में लेकर उस वृद्ध दंपति से कहा कि आप लोग हमारे साथ एक बार चार धाम की यात्रा करने के लिए चले, इस यात्रा में सब कुछ मेरी तरफ से खर्च किया जायेगा। वृद्ध पुरुष ने पहले ना नुकूर किया, फिर उसकी पहली पत्नी ने कहा एक बार चार धाम की यात्रा तो कर ले, अपने जीवन में, इस तरह से वह आदमी कमल नाथ के साथ चार धाम की यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो गया। क्यंकि वह अपनी दूसरी पत्नी को बहुत अधिक चाहता था, उसकी बात को वह कभी भी मना नहीं करता था। इस प्रकार से उसने अपनी पहली पत्नी को घर पर छोड़ कर, घर और बाग़ीचे को देखने के लिए। वह अपनी दूसरी पत्नी को अपने साथ लेकर कमलनाथ के साथ चार धाम की यात्रा पर चल दिया। कुछ एक महीने में चार धाम की यात्रा के बाद कमल नाथ उन को अपने साथ लेकर अपने मुंबई के रहने वाले स्थान पर पहुंचा, वहां पर उसने यात्रा संबंधि कागज बता कर उस वृद्ध पुरुष के अंगूठे का निशान लगवा लिया, वृद्ध पुरुष और उसकी पत्नी पढ़ा लिखा नहीं था। जिसके कारण वह यह नहीं समझ सका कि वह किसी प्रकार का कागज है। जिस पर कमलनाथ ने अंगूठा का निशान लगवाया है, उसने वहीं समझा की वह कागज वहीं है जैसा

कमल नाथ ने उन को बताया था। सच में वह उनकी संपत्ती का जाली कागज था। जिसमें यह लिखा था यह वृद्ध दंपति अपनी सारी संपत्ती को कमल नाथ और उसके पुत्रों के नाम अपनी स्वेच्छा से कर रहे है। यह सब कुछ होने के बाद कमल नाथ उस वृद्ध दंपति को उनके घर पर लाकर छोड़ दिया। और वह स्वयं उस कागज जिला कार्यालय बहीखाता कार्यालय में जमा करा दिया। और स्वयं अपने काम पर वापिस मुंबई चला गया।

कमल नाथ के पास किसी प्रकार से धन की कमी नहीं थी उसके पास लगभग सभी वस्तु थी अपने गाड़ी भी थी, जमीन भी काफी मात्रा में थी लेकिन इसके मन में उस वृद्ध की जमीन को मुफ्त में लेने का लालच बैठ गया था जिस को इसने अमली जामा पहना दिया था। क्योंकि वह जानता था कि यह वृद्ध दंपति कुछ एक साल में मर जाएगे। तब हम जमीन को कब्जे में ले लेगें। अब जमीन तो उसके नाम हो ही चुकी है।

इसके अतिरिक्त होनी को तो कुछ और था, जिसके कारण एक दिन उस वृद्ध दंपति के पास लेखपाल आया जिसने उसे बताया कि आप ने पुरी संपत्ति को अपने पुराने रिश्तेदार कमल नाथ और उनके पुत्रों के नाम कर हैं, पहले तो उस वृद्ध दंपति ने कोई विश्वास नहीं किया क्योंकि उसने सोचा कि शायद वह उसके साथ मजाक कर रहा है, लेकिन जब लेखपाल ने अपने कागज में कुछ कागज को निकाल कर के उस वृद्ध पुरुष को दिखाया और पढ़ के सूनाया तो उनके पैर से जैसे जमीन ही खिसक गई हो, और उस वृद्ध पुरुष ने कहा उसके साथ धोखा और छल किया गया है। जिसके कुछ समय के बाद जब लेखपाल चला गया तो, उसने अपनी दोनों पत्नी को यह बुरा समाचार बताया, जिससे वह भी बहुत क्रोधित हुई, और तुरंत अपने मायके में अपने संबंधि भाई, भतीजा, पिता को अपने पास बुलाया और उनके साथ विचार विमर्श किया जिसके बाद वह सब एक होकर कमलनाथ के खिलाफ कोर्ट में जालसाजी, धोखेबाजी और छल का मुकदमा दर्ज करा दिया, जिससे जिला की पुलिस कमलनाथ और उसके पुत्रों के खिलाफ सक्रिय हो गई, इसी बीच उस वृद्ध पुरुष अपनी जमीन को अपने दोनों पत्नी के रिश्तेदार के नाम लिख दिया। जिसके कारण कमल नाथ भी बहुत आग बबूला हो गया, और उसने अपने पुत्रों के सात मिल कर उस वृद्ध दंपति को डराना धमकाना शुरु कर दिया और उसकी हत्या करने कि धमकी के साथ कहा जिसके नाम वह जमीन कर दिया है, उन सब के वह जिंदा नहीं रहने देगे, लेकिन इस सब के बावजूद वह वृद्ध दंपति कमल नाथ और उसके पुत्रों से नहीं डरा, क्योंकि उसके पत्नी के संबंधि उसका हर प्रकार से साथ देने का वादा किया और कुछ लोग उस वृद्ध दंपति के घर में उसके साथ उसकी रक्षा करने के लिए अकसर रहने लगे, जिससे उन सब को भी कमल नाथ अपने पुत्रों से हत्या करने की धमकी देने लगा, जिसके कारण वह वृद्ध दंपति एक बार भयभीत हो गया, क्योंकि आये दिन मार पीट होने लगी। कमल नाथ अपने पुत्रों साथ हर प्रकार से वृद्ध दंपति को यातना देकर उनकी जमीन को प्राप्त करने के लिए हर प्रकार से तैयार हो चुका था।

जिसके कारण वृद्ध दंपति के रिश्तेदारों ने उनसे कहा की आप इस अपने मकान को बेंच दीजिए, और आप हमारे साथ हमारे घर पर चल कर रहें फिर हम इन की गुंडागर्दी को देखते हैं। इस पर वृद्ध दंपति की पत्नी ने भी कहां यहीं हमारे लिए अच्छा होगा।

जिसके बाद वृद्ध दंपति अपनी पत्नीयों की बात को मान कर अपनी जमीन को पहले उनके सगे संबंधियों को लिख चुका था, जिसका मुकदमा कोट में चल रहा था, अपने घर को बाग़ीचा समेत गांव एक बड़े शक्तिशाली आदमी को सस्ते में लिख कर वह अपनी बड़ी पत्नी को उसके भाईयों के घर पर भेज दिया और स्वयं अपनी छोटी पत्नी के साथ अपनी पत्नी के धर पर जा कर उसके भाइयों के साथ रहने लगा। जिसके बाद जमीन पर कब्जा के लिए दोनों पार्टियों में संघर्ष चलने लगा, एक तो कमल नाथ और उसके पुत्र किसी सर्त पर अपना कब्जा उस जमीन पर नहीं छोड़ना चाहते थे, जिसके लिए वह उसमें बुवाई करना शुरु कर दिया, क्योंकि यह कहते थे की सारी जमीन मेरे नाम है, दूसरी तरफ वृद्ध दंपति के शाले कहते कि हमारे नाम है इसलिए उस जमीन पर हमारा कब्जा होगा, वह भी उसी जमीन पर बुवाई करते रहे, इस प्रकार से यह दोनो लोगो जमीन पर बोते और जिस को मौका मिलता वहीं फसल को कटवा लेता था। जिसके कारण बहुत भयानक स्थिती उत्पन्न हो गई दोनों तरफ से अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया जाता था।

इस प्रकार से कुछ साल तक चलता रहा, जिसके कारण दोनों पार्टी को हर प्रकार का आर्थिक, सामाजिक, मानसिक समस्या को घोर सामना करना पड़ता था। एक बार ऐसा हुआ की जब वृद्ध दंपति के ससुराल वाले जमीन पर बुआई करने के लिए जिसकी सूचना पहले से ही कमल नाथ उसके पुत्रों को हो चुकी थी जिसके कारण यह अपने साथ कुछ एक आदमी को लेकर वृद्ध दंपति के साले और उसके पुत्र की हत्या करने की योजना बना कर अपने साथ हथियार इत्यादि ले कर खेत के पास गये, जहां पर इन दोनों पार्टियों की जबरदस्त लड़ाई हुई, वह लोग जो कमल नाथ के विरोधी थे वह ट्रैक्टर के साथ थे, अपने साथ गोली और बंदूक भी लिया था, उस समय खेत में ज्यादा लोग नहीं थे, क्योंकि खेत गांव से काफी दूरी पर था। जहां पर पहले दोनों तरफ से गोली चली, कमल नाथ और उसके पुत्र के साथ करीब एक दर्जन आदमी थे। और यह सारी तैयारी के साथ उन दोनों की हत्या करने के उद्देश्य से गये थे। यद्यपि जो वृद्ध दंपति का साला और उसका लड़का था वह केवल अपने साथ अपना बचाव के लिए एक बंदूक के साथ कुछ गोली लेकर गये थे उनके पास ट्रैक्टर था। जब उनकी गोली लगभग खत्म हो गई तो वह दोनों बाप और बेटा ट्रैक्टर पर बैठ कर वहां से भागने का प्रयास किया। लेकिन कमल नाथ का गैंग बहुत बड़ा था उनकी तुलना में जिसके कारण उनके ट्रैक्टर को चारों तरफ से घेर कर पेड़ों का सहारा लेकर भागने वालों को पकड़ लिया और बहुत बुरी तरह से तड़पा- तड़पा कर उनके एक –एक अंग को बारी -बारी से कुल्हाड़ी से काट कर हत्या कर दिया। जिसके बाद कमलनाथ और उसके पुत्रों पर कत्ल का मुकदमा दर्ज

हो गया, पुलिस ने उन को पकड़ कर जेल में डाल दिया। जहां पर जांच पड़ताल के बाद उन को हत्या का दोषी पाया गया जिसमें सभी लोगों को उम्रकैद की सज़ा हो गई, जिसमें कमनाथके साथ उसके तीन पुत्र भी थे। और जमीन को किसी को भी शत्रु समुह को खेती करने से सख्त मना कर दिया। जिसके कारण वृद्ध दंपति की सारी जमीन सरकार की शक्ति के कारण खाली कर दिया गया। उस पर किसी का अधिकार सिद्ध नहीं हुआ।

इसके बाद लंबे समय तक कानूनी लड़ाई दोनों तरफ तक चलती रही, कमल नाथ अपने पुत्रों के साथ कई वर्षों तक जेल में रहा, और इस बीच में उसके घर की कई बार कूड़की हुई, अर्थात पुलिस बल उसके घर में आकर उसके सभी सामना को उठा कर अपने साथ ले कर चली गई। इसके बाद कमल नाथ के घर की औरतें अपने बेटे से अर्थात कमलनाथ के नाती के द्वारा मुकदमा की पैरवी कराती रही। और उन्होंने अपने रिश्तेदारों को अपने साथ कर लिया था, जिसमें बदमाश किस्म का एक विधायक भी था, जिसने यहां से दिल्ली तक अपना जोर लगा कर में सुप्रिम कोर्ट में दुबारा कमलनाथ और उसके पुत्रों के केश पर पुनः विचार करने की अपिल की, और उन सब की जमानत के लिए दरख्वास्त की जहां से कमलनाथ और उसके पुत्रों को उसके धन की शक्ति और ऊंची पहुंच के कारण जमानत मिल गई। कहानी यहीं खत्म नहीं हुई, इसके बाद इन लोगों ने उस वृद्ध दंपति के ससुराल में जा कर उस वृद्ध दंपति को अपने ट्रैक्टर के नीचे कुचल कर मार दिया।

जिसके बाद एक बार फिर से यह सब जेल में गये, और इन को हत्या का दोषी पाया गया, लेकिन फिर सुप्रिम में बड़े वकीलों की सहायता से, विधायक ने अपने सरकारी पद का उपयोग कर के, इसके साथ विधायक ने दिन दयाल से संबंध बनाने में सफल हो गया, क्योंकि उसी बीच दिन दयाल भी विधायक, सांसदों, और मंत्री से मिल रहा था। जिसने कमल नाथ और उसके पुत्रों हत्या की सज़ा से मुक्त कराने के बदले में उनसे अपना सहयोग कराया। जिससे वह उस बड़े जमीन के भू भाग पर कब्जा किया जिस पर आगे चल कर विश्व विद्यालय बन कर खड़ा हुआ, यह सब जानकार थे, कमल नाथ ने पगले के खानदान की बहुत बड़े जमीन के भू भाग को कब्जा कराने में दिन दयाल का जमीनी स्तर पर बहुत बड़ा सहयोगी था। और तभी से वह दिन दयाल की सेवा में अप्रत्यक्ष रूप से उसके साथ आ गया था। जिसकी कुछ दिन पहले मृत्यु हो गई थी। जिसकी लाश को जलते हुए पगले ने अपनी आँखों से देखा। लेकिन उसको किसी ने नहीं देखा था। वह समझ गया कि कमल नाथ के पुत्रों की सहायता से दिन दयाल के पास पहुंच सकता है। इसलिए वह कमल नाथ के पुत्रों पर वह नजर रखने लगा। जिससे आगे चल कर उसको बड़ी जानकारी मिली।

अध्याय 12.

जैसा कि हमने पहले बताया था कि पगला अब अदृश्य रह कर कमल नाथ के पुत्रों का पीछा कर रहा था, क्योंकि केवल कमल नाथ के पुत्र ही उसको दिन दयाल तक जाने के अंतिम सूत्र थे, रास्ते तो बहुत थे, मगर उन रास्तों का पगला को जानकारी नहीं थी। जैसा की मैंने बताया पगला अदृश्य अवस्था में नदी के किनारे पर कमल नाथ के पुत्र को देखा था, वह वहां पर अपने पिता का अंतिम संस्कार करने के लिए आया था, जहां पगला उसको पहचान जाता है, और उसे शक होता है कि वह सब दिन दयाल से किसी ना किसी प्रकार से जुड़े हैं। उसका शक सही निकलता है, जब कमल नाथ का पुत्र अपने कुछ साथियों के साथ नदी के मार्ग से कहीं जाने के लिए एक विचित्र नाव पर सवार हुआ, पगला भी उनके पीछे- पीछे जा कर उस नाव में एक तरफ बैठ गया, वह अदृश्य अवस्था में था वह सब को देख सकता था लेकिन उसको कोई भी देखने में समर्थ नहीं था। इसलिए उसके लिए किसी प्रकार की व्यवधान की शंका ही नहीं कि जा सकती है, कमल नाथ के पुत्र ने अपने एक काले आदमी से कहा काली घाट पर चलो, इस प्रकार नाव वहां से जाने को तैयार हुई, और कुछ ही समय में वह नदी की बीच धारा में चल रहीं थी, जबकि कमल नाथ का पुत्र अपने साथियों के साथ खाने पीने में व्यस्त हो गया। पगला को समझ में नहीं आया कि यह काली घाट क्या है, क्योंकि इससे पहले वह इसके बारें में नहीं सुना था, फिर उसने विचार किया की शायद यह कलकत्ता के काली देवी बात कर रहें है, फिर उसने सोचा की यह सब कलकत्ता क्यों जा रहें है,? इन प्रश्नों का उसके पास कोई उत्तर नहीं था इसलिए वह वहीं नाव के एक किनारे पर उन सब से दूर बैठ कर, आगे जो भी होने वाला था उसका इंतजार करने लगा। क्योंकि वह नाव काफी बड़ी नाव थी और साधारण नाव से अलग थी।

सब कुछ ठीक चल रहा था, तभी अचानक उस नाव ने अपना रूप बदलना शुरु कर दिया जो पानी के उपर चल रही थी, और नाव के उपर खुला आकाश दिखता था, अचानक नाव चारों तरफ से बंद हो गई, और किसी पनडूब्बी के समान हो गई, और उसने नदी के सतह से नदी के अंदर तैरना शुरु कर दिया। कुछ एक मिनट में नदी की धारा से निकल कर किसी कृत्रिम कैनाल में प्रवेश कर लिया, पगला यह सब देख पाया, क्योंकि वह उस पनडुब्बी के एक खिड़की के पास ही था। जब तक यह पनडुब्बी एक नाव के समान थी, तब तक उसमें कोई खिड़की नहीं थी, लेकिन जब से उस नाव ने अपने रूप को बदला, नाव से एक पनडुब्बी के रूप में, तब से उसमें कई खिड़कियाँ पनडुब्बी से बाहर देखने के लिए खुल चुकी थी, यद्यपि सभी खिड़की पर मजबूत कांच जैसा को मुलायम पदार्थ का पर्दा लगा था, जो पारदर्शी था। जिसके कारण उसके बाहर पानी में देखा जा सकता था। ऐसे ही एक खिड़की के पास पगला भी उपस्थित था। पगले ने जल्दी ही देखा की वह पनडुब्बी कैनाल से बाहर निकल एक बड़ा भूमिगत तालाब में पहुंच चुकी थी, जहां पर उसके ही समान कुछ उससे भी बड़ी -बड़ी पनडुब्बियां थी। पगला ने वहां के दृश्य को दूर से

देख कर ही यह समझ गया की यह कोई गुप्त स्थान जमीन के अंदर ही है, क्योंकि वहां कोई जमीन या घर मकान, या सड़क वृक्ष आदि नहीं था, और वह कोई समंदर भी नहीं था। पगला का दिमाग चकराने लगा कि ऐसा कौन सा स्थान उसके आस पास में बन गया जहां पर जमीन के अंदर कैनाल के मार्ग से पनडुब्बीयां चलती है, और समुद्र भी आस पास में नहीं है, तभी उसके कानों में एक आवाज सुनाई दी कि आप सब का विश्व विद्यालय की धरती पर स्वागत है, जिस को सुनते पगला समझ गया कि वह विश्व विद्यालय के अंदर जमीन के अंदर के मार्ग से पहुंच चुका है। वह सब जो पनडब्बी में सवार थे उसमें से निकल कर बड़े तालाब के किनारे बने एक लिफ्ट पर सवार होकर पर एक बड़े प्लेट फार्म पर पहुँचे, लिफ्ट में पगला उनके साथ नहीं गया नहीं तो उन को उसके होने का शक हो सकता क्योंकि लीफ्ट में कोई भी उसके देखनहीं सकता था यद्यपि उसको छु कर पता कर सकता था। इस कारण से पगला उनके साथ लिफ्ट में नहीं गया। वह दूसरी बार भी नहीं गया लिफ्ट से क्योंकि उसको शक था की कोई खाली लिफ्ट को उपर जाते हुए देख कर संदेह कर सकता था, क्योंकि चारों तरफ कैमरे लगे थे, इसके अतिरिक्त बहुत से रीबोटीक सुरक्षा व्यवस्था वहां पर की गई थी। जैसा कि पगला ने कीले की छत पर देखा था वहां कीले की छत पर बहुत से हवा में चलने वाले जहाज दिखा थे उपर आकाश था और कीला के चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई दिया था। यहां पर उसके बिल्कुल विपरीत वह देख रहा था, यहां पर बहुत सी छोटी बड़ी पनडुब्बीयां दिखाई दे रही थी, और यह सब जमीन के अंदर था, जहां से दो मार्ग था एक लिफ्ट से उपर जाने का जिससे कमलनाथ का पुत्र अपने साथियों के साथ कुछ देर पहले गया था। और एक दूसरा मार्ग कैनाल के रूप में था जिसमें से वह पनडुब्बी अभी आई थी जिसमें स्वयं पगला भी सवार था।

पगला ने कुछ देर तक चारों तरफ नजर दौड़ा कर देखा लेकिन कोई भी जब आदमी नहीं दिखा, तो उसको शक हुआ कि कोई आदमी क्यों नहीं दिखाई दे रहा, इतनी बड़ी व्यवस्था यहां पर की गई है, क्या यहां सब कुछ मशीनों के द्वारा ही किया जाता है, तभी उसकी निगाह कुछ दूरी एक दूसरी पनडुब्बी पर पड़ी, जिसमें से माल निकाल कर लिफ्ट पर रखा जा रहा था, और यह कार्य मशीन ही कर रहीं थी, जिससे पगला समझ गया, कि को कई आदमी कहीं और स्थान पर बैठ कर यहां के सारे कार्य मशीन से करा रहा है, उसने विचार किया यह उसके लिए अच्छा है कि वह उस दूसरी लिफ्ट से जिसमें सामान जा रहा है, उसमें बैठ कर उपर प्लेट फार्म पर जा सकता है। पगले ने ऐसा कर करने के लिए दूसरी लिफ्ट के पास गया, वह तालाब एक प्रकार से शिप यार्ड के रूप में था, जो जमीन के अंदर था और यहां पर पानी कैनाल के द्वारा नदी से आया और जाया करता था जिसमें से यह पनडुब्बीयां आती और जाती थी। जैसे ही पगला दूसरी सामान ले जाने वाली लिफ्ट के पास पहुंचा, उसने दूर से कमल नाथ के पुत्र को अपने आदमीयों के साथ आते हुए देखा। जिससे वह समझ गया कि शायद यह सब वापिस जाने वाले हैं। लेकिन पगले का काम अब तक हो चुका था वह विश्व विद्यालय के अंदर पहुंच चुका था, और उसको अभी विश्व विद्यालय के बारे में पुरी जानकारी प्राप्त करनी थी जिसके साथ दिव्या और दिन दयाल से भी मिलना था। इसलिए

वह सामान उठाने वाली लिफ्ट में सवार हो गया, लिफ्ट उसको भी सामना के साथ एक गाड़ी में ले जा कर छोड़ दिया, जैसे कि वह भी कोई सामान हो, यद्यपि इसको केवल पगला समझता था। पगला जिस गांड़ी में सामान के गिरा था उस गाड़ी में भी कोई चालक नहीं था, जिस को देख कर पगले को आश्चर्य हुआ, वह उस गाड़ी के उपर उसके छतरी पर जा कर बैठ गया यह देखने के लिए कि यह गाड़ी माल भरने के बाद कहां जाती है और इसको कौन ले कर जाता है? जैसा कि पगला गाड़ी की छत पर बैठा था, तभी उसने देखा कि जिस पनडुब्बी से वह कमल नाथ के पुत्र के साथ आया था वह पानी में चलना शुरु कर दिया और कुछ ही समय में वह जिस कैनाल से आई थी उसी में वापिस चली गई, जिसके बाद कैनाल का दरवाजा बंद हो गया। उसके कुछ देर बाद ही वह तालाब और सारी जो पनडुब्बीयां जो दिखाई दे रही थी वह सब उसकी आँखों के सामने से अदृश्य हो चुके थे, जिस को देख कर पगला का दिमाग एक बार फिर से चकरा गया। जहां पर तालाब था वहां पर अब उसको बहुत सारे वृक्ष दिखाई दे रहे थे, और जिसके चारों तरफ बहुत से सुन्दर – सुन्दर बंगलें बने थे उसको लग रहा था जैसे वह किसी महानगर की सड़क पर किसी गाड़ी की छत पर बैठ कर यात्रा कर रहा हो, यद्यपि जिस गाड़ी पर वह बैठा था वह बिना किसी चक्के की थी? सामने की इमारतों और वृक्षों को देख वह समझ रहा था, की वह गाड़ी पर बैठा है और चल रही है, लेकिन जब उसने नीचे देखा तो गाड़ी में कोई चक्का ही नहीं था, यद्यपि सारे मकान और सामने के सारे वृक्ष ही चल रहे थे, इसके साथ उसने अपने उपर देखा तो एक साथ कई सूर्य दिखाई दिए, पगला यह सब देख कर अत्यधिक भ्रमित हो गया की वह किसी दूसरी दुनीया या किसी परी लोक में आ गया है।

पगला जिस गाड़ी में बैठा था वह वास्तव में एक छोटी ट्रेन थी जो बिना चक्के के चुम्बक पर लती थी, और यह विश्व विद्यालय के निचले सतह से उपरी शिखर तक जाती थी, उस कीला की बनावट किसी स्प्रिंग के छल्ले के समान था, जिसमे यह ट्रेन चलती थी इसके द्वारा कीला में हर जगह सामान को पहुंचाया जाता था, कीला को इस प्रकार से बनाया गया था जिससे सूर्य का प्रकाश किला के सबसे नीचले सतह तक आसानी से पहुंच सके उसके लिए उसके लिए बहुत सारे ग्लास का उपयोग किया गया था, जिस प्रकार से नाई कि दूकान में एक आदमी कुर्सी पर बैठता है, लेकिन वह आदमी स्वयं को कई जगह बैठा हुआ देखता है। इसी प्रकार से आकाश में तो सूर्य एक है लेकिन कीला के अन्दर से देखना पर पता चलता है की बहुत सारे सूर्य आकाश में उपस्थित है। यह सब केवल प्रकाश को कीले के अंदर सब जगह पहुंचाने के लिए ही बनाया गया है।

पगला भी यह बात समझ गया जब वह कुछ सौ मीटर उपर कीले की सतह से पहुंचा, अर्थात जब वह लगभग कीला के पचासवें महलें पर पहुंचा ता उसने देखा की अब उसको दुकान बाजार गाड़ी, आदमी की बहुत भीड़ दिखी जैसे वह सब किसी बाजार में खरीददारी कर रहें हो, जैसा कि कोई माल हो, पगला

ने समझा की वह किसी बड़े शहर के मध्य में घूम रहा था। जहां गाड़ी के शायरन की आवाज था ट्रैफिक था और वह स्वयं जैसे कलकत्ता के किसी ट्राम पर बैठा हो, जो सड़क के मध्य में चलती है, उसमें और इस ट्राम में यहीं अंतर था कि कलकत्ता में बहुत अधिक भीड़ भाड़ होती है, लेकिन यहां उतना अधिक भीड़ भाड़ नहीं था, और दूसरी बात यहां पगला यहां कीले के अंदर पगला को अकसर जितने स्त्री पुरुष और बच्चे दिखे वह सब विदेशी थे।

कीले का जमीन से जुड़े ज्यादा महले अभी बहुत अधिक उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिए वह खाली है, वह बहुत जरूरी काम होने पर ही किसी को जाने की इजाजत है। कीले का पचास महले के उपर का हिस्सा ही अधिक उपयोग किया जाता है, दिन दयाल के गुप्त कारखाने नीचे चलाये जाते हैं, जहां पर किसी प्रकार के आदमीयों का उपयोग नहीं किया जाता है। माल लगभग खाली हो चुका था, और गाड़ी खड़ी ही थी, इसलिए पगला गाड़ी से नीचे जब जमीन पर उतर गया तब उसने समझा की वह जिस गाड़ी पर बैठा वह फिसलनें वाली ट्रेन थी, क्योंकि उस गाड़ी ने उसके भी छोड़ कर वहां से गायब हो चुकी थी। कीले की एक और खुबी थी वह एक समान दिखाई देता था, अर्थात आप उसके कीले के भी महले पर भी हो, हर महला आप को एक ही समान दिखाई देगा। कीले को दो भागों में बांटा जा सकता है, एक नीचे के पचास महले खाली है, जहां आदमी आपको नहीं दिखेगे, उपर के दूसरे पचास जहां सब कुछ भरा – भरा किसी शहर के समान दिखाई देगा। जहां पर हर प्रकार की सेवा दी जाती है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि पगला अदृश्य हो कर कीले में पहुंच चुका था, जहां पर उसका दिमाग चकरा जाता है, किसी तरह से वह स्वयं को संहालता है, और वह कीले को किसी शहर के समान पाता है, वह समझता है कि वह किसी बड़े महानगर में आ चुका है,

इधर दूसरी तरफ दिन दयाल अपनी पुत्री दिव्या के साथ अपने, चाँद पर जाने के लिए तैयार हो चुका है, जिसके लिए उसका अपना अंतरिक्षयान भी तैयार हो चुका है, जो अगले दिन सुबह के 1.15 मिनट पर रवाना होगा। दिन दयाल इस समय अपनी पुत्री से मिलने के लिए उसके कमरा में जाता है और उसकी सेविका को दिशा निर्देश देता है, कि तुम सभी भी दिव्या के साथ अपने सभी सामान को बाँध लो, हम सब यहां कुछ ही घंटों में चाँद के लिए प्रस्थान करेंगे। चाँद पर जाने से पहले दिन दयाल ने अपने शरीर का कायाकल्प करा लिया जिससे अब वह पहले के समान वृद्ध नहीं रहा यद्यपि वह एक 35 साल का युवा बन चुका है, जो अपनी पुत्री दिव्या से कुछ साल का बड़ा है, जबकि दिव्या अब पहले से कही अधिक ठीक है वह अब बिना दवा के सो सकती है, यद्यपि अभी वह होश में नहीं है, उसकी कोमा वाली स्थिति ही है।

रतनलाल और उसकी बहन जिसके लिए चिंतित है, क्योंकि यदि दिन दयाल अपनी पुत्री दिव्या के साथ यहां से चाँद पर चला गया तो, उनका दिव्या को मारने का सपना खटाई में पड़ सकता है, इसलिए वह सब यह चाहते हैं कि दिव्या और दिन दयाल यहीं पर रहें, लेकिन दिन दयाल इसके लिए तैयार नहीं है, यह बात जान कर रतनलाल और उसकी बहन कोनिका ने एक योजना बनाई है कि दिव्या को यहां से चाँद पर जाने से पहले ही उसको एक बड़ा जहर का डोज दे दिया जाये, जिससे वह रास्ते में ही अंतरिक्षयान में मर जायें, जिससे हम भी बच जायेगे, और हमारे उपर किसी का शक भी नहीं होगा, जिसके बाद दिन दयाल को भी मार देंगे, जिसके लिए उन्होंने अपने सहयोगी चिकित्सक से बात की और चिकित्सक भी इसके लिए उनके साथ तैयार था, लेकिन चिकित्सक कोई साधारण आदमी नहीं था उसने रतनलाल और उसकी बहन से कहा मुझको भी आप लोग बराबर की शेयर देगें तभी हम आगे आपकी योजना साथ देंगे। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो मैं दिन दयाल से आप सब को बारे में बता दुंगा, कि आप भाई बहन आपस में मिल कर दिन दयाल और दिव्या को मारने की योजना पर काम कर रहें हैं। इस पर रतन लाला तुरंत उस चिकित्सक की कालर पकड़ ली और उसके मुंह में अपने रिवाल्वर के मुंह को डालते हुए कहा मैं तुम को इस लायक नहीं छोड़ुगां, इस पर चिकित्सक ने कहा मैं जानता था कि तुम लोग मेरे साथ ऐसा ही करोगे, जिससे बचने के लिए मैंने योजना पहले से बना लिया है। इस के सुन कर रतन लाल अपने रिवाल्वर को उसको मुंह से बाहर निकाल लिया और कहा क्या योजना बनाई है? जल्दी बता नहीं तो मैं तुरंत टपका दूंगा साले, चिकित्सक ने कहा आप जो भी कर रहें है, वह सब कुछ रीकार्ड करके मैंने अपने व्यक्तिगत लाकर में सुरक्षित रखा है, और मैं यदि जल्दी ही दिन दयाल के पास नहीं गया, तो वह सारी जानकारी स्वयं प्राप्त कर लेगें। इसको सुन कर पास में खड़ी हुई कोनिका ने कहा ठीक है तू, तुरंत यहां से जा और उस जानकारी को लेकर हमारे पास आ, हम तुम को तुम्हारा हिस्सा अवश्य देंगे, उससे पहले तुम को दिव्या को मारने के लिए इस डोज पुरा दिव्या को देना होगा, जिस को उसने बैग में से निकाल कर चिकित्सक के हाथ में रख दिया। चिकित्सक ने कहा आप सच कह रही है, इस पर कोनिका ने कहा क्या मैं तुम्हारे साथ कभी झूठा वादा किया है। इस चिकित्सक ने कहा मुझे आपसे यहीं उम्मीद थी। इसके साथ वह कमरे से बाहर चला गया, जिस को जाता हुआ देख कर रतनलाल ने अपनी बहन से यह तुमने क्या कर दिया वह हमारे साथ धोखा कर सकता है, इस पर कोनिका ने कहा तुम चिंता मत करो कुत्ते की पूंछ कितना भी तेल लगा कर मालिश की जाए वह कभी भी सीधा नहीं होता है, इसलिए यह हमारे साथ वह कभी नहीं ऐसा कर सकता है, क्योंकि वह हमारा वफादार कुत्ता है, यद्यपि हम ही उसके साथ धोखा करेगें। मैं अभी अपने दूसरे सहयोगी चिकित्सक से बात करके, इसका काम दिव्या के डोज देने बाद ही करा दूंगी, इस तरह से सांप भी मर जायेगा और हमारी लाठी भी नहीं टूटेगी।

चिकित्सक जैसे ही रतनालाल और कोनिका से मिलकर बाहर निकला उसका चेहरा रतनलाला के उपर तमतमाया हुआ, जिससे वह बड़बड़ा हुआ, चला जा रहा था कि इन को मैं देख लुंगा, जैसे ही

चिकित्सक यह कहता हुआ गलियारे से गुजर रहा था, तभी उसके पास से पगला गुजरा और उसके कानों में चिकित्सक की बात पहुंची सौभाग्य से वह सही समय पर कीले के उसकी महले पर भ्रमण कर रहा था जिस पर रतनलाल और कोनिका का दफ्तर था। पगला तत्काल उस चिकित्सक के पीछे पड़ गया यह देखने के लिए क्या गड़बड़ है, जिसके लिए वह चिकित्सक परेशान क्योंकि वह उसके मन के बात को समझ चुका था, चिकित्सक ने अपनी गाड़ी में बैठ गया पगला लपक कर उसकी गाड़ी के उपर बैठ गया, जिससे चिकित्सक को शक हुआ कि उसकी गाड़ी की छत पर कुछ बहुत तेज से गिरा है, लेकिन उसने जब अपना शिर निकाल कर देखा तो कार की छत बिल्कुल खाली थी, उसने आश्चर्य के साथ देखा, फिर उसने सोचा की वह उसके म की भ्रम होगा। वह अपने घर की तरफ चल पड़ा, पगले ने देखा कि चिकित्सक की गाड़ी भी बिना किसी चक्के की थी। कुछ समय के बाद ही वह चिकित्सक कार से बाहर निकला और अपनी कार को एक बार पीछे मुड़ कर देखा उसको किसी प्रकार का कोई बदलाव नहीं दिखाई दिया। वह वहां से सीधा अपने मकान के अंदर जाने के लिए एक अपने जेब से एक छोटा से रिमोट जैसा यंत्र निकाला, पगला उसको देख समझ गया, कि जरूर चिकित्सक कुछ करने वाला है, वह तुरंत लगभग उसके पास आकर खड़ा हो गया, जैसे ही चिकित्सक ने अपने हाथ का रीमोट बटन दबाया एक दरवाजा उनके पास ही दिवाला में खुल गया और चिकित्सक उसमें अंदर घुस ने लगा, तत्काल पगला भी उसी के साथ अंदर चला गया, जिससे पगले ने चिकित्सक को हल्का छु लिया चिकित्सक भी समझ गया की उसके साथ कोई है, क्योंकि वह दिव्या का इलाज कर रहा था और बहुत बुद्धिमान था, इसलिए तुरंत उसने अपने पास की अलमारी में से अपनी पिस्टल को निकाल कर अचानक पीछे मुड़ कर कहा कौन है? जो मेरा पीछा कर रहा है मेरे सामने आवों नहीं तो मैं तुम को गोली मारा दूंगा क्योंकि मैं तुम को उसी समय पहचान गया था जब तुम मेरी गाड़ी पर बैठे थे, पगला ने समझा क्या यह मुझे देख गया फिर उसने विचार किया वह तो अदृश्य है तो उसको यह चिकित्सक कैसे देख सकता है? फिर भी वह सावधानी से चिकित्सक के पीछे आ कर उसको दबोच कर पकड़ लिया और उसके हाथ से उसकी पिस्टल को मरोड़ कर छिन लिया और पिस्टल की नाल को उसके मुख के सामने कर के बोला, क्या तू सच में मुझे पहचानता है, चिकित्सक तो लग-भग मूर्छित हो गया, पगला उसको घसीट कर स्नानागार में ले गया और उसको वहां एक कुर्सी से बाँध दिया और उसके चेहरे के उपर उसने पानी को डाला जिससे वह चिकित्सक होश में आ गया लेकिन उसने अपने आपको कुर्सी में बंधा हुआ पाया, उसने चिल्लाते हुए कहा तुम कौन हो? मुझको क्यों बांधा है? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मुझे देर हो रही है, मुझे जाकर दिव्या मेमसाहब को डोज देना है, वह अपने मन में बडबड़ाने लगा। जब पगले ने दिव्या का नाम चिकित्सक के मुंह से सुना तो उसको जैसे उसका कोई अपना भूला हुआ या आ गया, उसने तुरंत पूछा तुम दिव्या को जानते हो वह कहां? चिकित्सक ने कहा वह बीमार है और कोमा में है, इस पर पगला अपने अदृश्य शरीर से दृश्य मय में आ गया शरीर में आ गया, जिस को देख चिकित्सक की आँखें खुली की खुली रह गई, क्योंकि वह इतना अधिक जंगली आदमी, अपने जीवन में कभी नहीं देखा था, उसने

सोचा की उसके सामने कोई हैवान आकर खड़ा हो गया हो, जिसके कारण वह पगले की तरफ देख नहीं सका, क्योंकि पगले की आँखों से उस समय अंगारे निकल रहे थे, जिसने पिस्टल को चिकित्सक के सर पर रखते हुए कहा, उसको क्या हुआ, कैसे हुआ सब कुछ सच - सच बता नहीं तो मैं तुम को तत्काल मार दुंगा। जिससे चिकित्सक ने बिना किसी देरी के वह सब कुछ पगले के सामने उगल दिया, जो षड्यंत्र रतनलाल, कोनिका के साथ वह स्वयं कर रहा था और उस डोज का क्या मतलब था? जो कोनिका ने चिकित्सक को दिया था, इसको सुनते ही पगला आपा से बाहर हो गया उसने पिस्टल के अपने हाथ से दूर फेकते हुए, अपने एक हाथ से चिकित्सक का गला पकड़ लिया इस प्रकार से जैसे किसी ने कुत्ते बच्चे का गला पकड़ा हो और हवा में उठा लिया कुछ ही देर में चिकित्सक की जान निकल गई और उसकी लास पगले के हाथ में लटक रही थी। पगला ने जब देखा की चिकित्सक मर चुका है, उसने उसे कमरे की जमीन पर लोटा दिया, और वह स्वयं उससे कुछ दूरी पर बैठ कर ध्यान में चला गया तभी, अचानक चिकित्सक के जेब में से उसके मोबाईल के बजने की आवाज आई, जिससे पगले का ध्यान टूटा उसने तुरंत विचार किया, कि अब वह अपनी शरीर को कुछ समय के लिए त्याग कर के अर्थात अपनी परकाया प्रवेश कि सिद्ध का उपयोग करके, वह चिकित्सक के शरीर में प्रवेश करेगा। चिकित्सक बन कर वह दिव्या का इलाज करने के लिए उसके पास जायेगा। इसलिए उसने अपने शरीरी पर पहले मोम को पिघला कर मालिश किया फिर पानी के टब में लेट गया और अपने शरीर को धीरे –धीरे छोड़ कर अपने शरीर से बाहर आ गया, और कुछ ही समय में वह चिकित्सक के शरीर में प्रवेश कर लिया। जिसके बाद वह चिकित्सक के रूप उठ कर बैठ गया, और उसने अपने कपड़े अर्थात पगला तो अब चिकित्सक की शरीर को धारण करके चिकित्सक के कपड़े में था, जो अब वह स्वयं था, इसलिए उसने मोबाईल निकाला और देखा उसके एक सहकर्मी का फोन आया था वह तत्काल वहां से निकल कर उससे मिलने के लिए चल पड़ा।

पगला जो अब चिकित्सक के रूप में हो चुका था, वह उस जगह पहुंचा जहां पर दिव्या रहती थी, पहली बार जब उसने देखा तो उसको विश्वास नहीं हुआ की वह बीमार हो चुकी है, चिकित्सक के सहायक तत्काल पगला को अपना सहयोगी समझ कर उन्होंने कहा कि कोनिका मैडम बार – बार काल कर रहीं हैं, उन्होंने कहा हैं कि आप वह डोज दो दिव्या को देने के लिए आपको दिया वह जल्दी से दिव्या को दे दिया जाये, पगला जो चिकित्सक की शरीर में था, उसने कहा अभी रुक जाओ, इसके बार में पहले मुझको कुछ जरूरी इसके पिता दिन दयाल से बात करनी है, इसको सुन कर उसका सहयोगी कुछ सीट पिटा गया, और कहा आपको क्या पता नहीं है कि कोनिका मैडम का सख्त निर्देश है कि जल्दी से जल्दी दिव्या को डोज दिया जाए उसके बाद आप किसी से मिल सकते हैं, इस पर पगला जो चिकित्सक के रूप में था, उसने अपने सहयोगी को डाटते हुए कहा मैं सब जानता हूं, पहले मुझको दिन दयाल से मिलना है, उसके बाद दिव्या को डोज दिया जायेगा। यह कह पगला दिन दयाल से मिलने लिए उसके पास चला गया, दिन दयाल उस समय व्यायामशाला में व्यायाम कर रहा था, पगला ने देखते ही दिन दयाल ने अपने

पसीने को अपने रुमाल से पोछते हुए कहा क्यों चिकित्सक दिव्या को डोज दे दिया? मेरे पास अभी कोनिका का फोन आया था उसने कहा कि तुम दिव्या को आज आखिरी डोज लगाने वाले हो, पगला ने जब दिन दयाल को पहले से युवा देखा, तो वह एक बार पहचान नहीं सका लेकिन दिन दयाल पहले से ही उसको एक चिकित्सक के रूप में पहचानता था, पगला जब समझ गया कि यहीं दिन दयाल है, तो एक बार उसकी वहीं हत्या कर देने मन किया, लेकिन उसने कुछ सोच कर अपने क्रोध को छिपाते हुए कहा मुझे आप से कुछ जरूरी बात करना है, दिन दयाल ने कहा दिव्या ठीक तो हैं ना, इस पर पगला जो चिकित्सक के रूप में था उसने कहा की मुझे उसके बारे में ही आपसे बात करनी है, इस पर पगला ने कहा मुझे आप से अकेले में बात करनी है, इस पर दिन दयाल ने कहा यहां सब अपने विश्वस्त आदमी है, तुम कुछ बोल सकते हो, इस पर चिकित्सक ने कहा मुझे किसी पर भरोसा नहीं है, इस पर कुछ संदेहास्पद दृष्टि से पगले की आँख में झाँकते हुए दिन दयाल ने अपने आदमीयों को अपने हाथों से इशारा करके सभी को बाहर जाने के लिए कहा, जिसके बाद वह पगला की तरफ देखते हुए इशारा किया कि बोलों, पगले ने कहा कि मुझे संदेह है कि दिव्या को लंबे समय से धीमा जहर दिया जा रहा है, और जिस डोज को कोनिका ने दिव्या ने मुझको देने के लिए दिया है इससे उसकी मृत्यु कुछ घंटों में हो सकती है। इस पर दिन दयाल लपक कर पगला का गला पकड़ लिया, चिल्लाते हुए कहा क्या तुम पागल हो चुका है, तुमको पता है कि मैं इसके लिए मार भी सकता हूं, पगला ने कहा इसका मरे पास पक्का सबूत है, यदि आपको मुझ पर भरोषा नहीं है तो इस डोज का एक बार कहीं बाहर गुप्त रूप से जांच करा कर आप पता करा सकते हैं, यदि मैं गलत पाया गया तो आप जो भी सज़ा देगें मैं उसको स्वीकार कर लुंगा। दिन दयाल को अपने कान पर भरोशा नहीं था जो भी पगला ने कहा था, क्योंकि उसके साथ धोखा कौन कर सकता है, उसने पगले के हाथ में से उस दवा का डोज ले लिया। और कहा ऐसी बात है तो मैं इसकी जांच कराउंगा, पगला ने कहा यहां पर मतकराइये क्योंकि यहां पर दिव्या और आपको मारने के लिए षड्यंत्र चलाया जा रहा है, दूसरी बात खाना में भी जहर दिया जा रहा है, इसको मैं अपनी जान को जोखिम में डाल कर आपको बता रहा हूं, हो सकता है कि किसी प्रकार से यह सूचना यदि लीक हो गई तो मुझे भी मार सकते हैं। दिन दयाल ने कहा तुम निश्चिंत रहो, तुम्हें कुछ भी नहीं रहेगा तुम्हारे चारों तरफ मेरे आदमी रहेगे, और मैं सत्य का पता बहुत जल्द ही लगा लूंगा, जो भी गलत है होंगे उन को उचित दण्ड दिया जायेगा।

पगला दिन दयाल से अनुमति लेकर उसके पास से सीधा अपनी पुरानी शरीर को धारण करने के लिए तत्काल चिकित्सक के कमरे में विद्युत की गति से पहुंचा, और अपनी शरीर को धारण कर लिया चिकित्सक की शरीर को वहीं उसके कमरे के विस्तर पर लीटा दिया जैसे की वह सो रहा हो। और वहां से निकल कर बाहर फिर से वह अदृश्य होकर कीला में घूमने लगा, लेकिन दिनदयाल के नीचे से जमीन ही जैसे गायब हो चुकी हो, उसे पगले की बातों पर भरोसा नहीं था, फिर भी उसने अपने आदमीयों को पगले के पीछे लगा दिया, और उन को सख्त आदेश दिया इस पर ध्यान रखो, यहां विश्व विद्यालय के कीला से

बाहर नहीं निकलना चाहिए, और अपने एक विशेष भरोसेमंद आदमी लालु जो उसका व्यक्तिगत सहायक था, सात फिटा जवान जो आधा स्टील और आधा मानव था। क्योंकि दिन दयाल के पास ऐसे बहुत से आदमी थे, जिनकी शरीर को विशेष रूप से निर्मित किया गया था, उसी में से एक लालु भी था, उसको अपने पास बुला कर कहा कि तुम तत्काल जा कर दिव्या की निगरानी करना, और उसको किसी प्रकार का भोजन बिना अपने आदमी के दिये मत देना। यदि उसके खाने में धीमा जहर होगा तो उसकी जानकारी हमें कुछ ही समय में मिल जायेगा। लालु वहां से तुरंत दिव्या के पास पहुंच गया और अब बिना उसकी आज्ञा के कोई भी दिव्या के कक्ष में प्रवेशनहीं कर सकता था। यह सूचना जैसे ही कोनिका और रतनलाल को हुआ, जिसके साथ यह भी कि चिकित्सक ने डोज दिव्या को नहीं दिया है, और वह चिकित्सक दिन दयाल से मिल चुका है, उनका दिमाग खराब हो गया। रतन लाल ने अपनी बहन के उपर चिल्लाते हुए कहा तुमने देख लिया, की उस चिकित्सक ने क्या किया? कोनिका ने कहा ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है, मैं अपने आदमी को चिकित्सक को ठिकाने लगाने के लिए भेज रखा है।

कोनिका के आदमी जैसे ही चिकित्सक के कमरे को अपने मास्टर चाभी से खोला तो उन्होंने देखाकी वह चिकित्सक अपने विस्तर पर आराम से लेटा हुआ था, कोनिका के द्वारा भेजे गये आदमी ने जैसे ही चिकित्सक को मारने का प्रयास करने लिए झुक कर चिकित्सक को जगाने के लिए उसके शरीर को पकड़ कर झकझोरा चिकित्सक की लाश लुढ़क कर बिस्तर से कमरे की जमीन पर गीर गई, जिस को देख कर उन आदमीयों के मध्य में से एक से एक ने कहा की यह तो मर चुका है, इस पर दूसरे ने अपने हाथ में उपस्थित मोबाईल से तत्काल कोनिका से संपर्क करके उसको सूचना दी की चिकित्सक हमारे आने से पहले से ही मर चुका है। कोनिका ने कहा मर चुका है, इसका क्या मतलब है? इस पर उस आदमी ने तत्काल चिकित्सक की लास की एक छोटी किल्प बना कर कोनिका के पास भेज दिया, जिस को देख कर वह भी सदमे में आ गई, उसने तुरंत अपने आदमी को कहा वहां से तुम लोग सफाई से बाहर किसी प्रकार का कई नीसान तुम्हारा वहां नहीं होना चाहे। कोनिका ने अपने मन में विचार किया कि चिकित्सक ने आत्महत्या कर लिया फिर उसको किसी ने मार दिया है। इसके बारे में अवश्य पता करेगी, उसने इसके बारे में रतन लाला से बताया कि चिकित्सक को तो हमारे आदमी के उसके पास पहुंचने से पहले ही मर चुका था। इस पर रतन लाला ने कहा उसके आत्महत्या कर ली होगी, कोनिका ने कहा मुझे शक है कि उसको मारा गया है, इस पर आश्चर्य के साथ रतनलाल ने कहा मारा गया है, तो प्रश्न उठता है किसने उसको मारा? इसके जवाब में कोनिका ने कहा यहीं तो मेरी समझमें नहीं आ रहा है, दिव्या को किसी से भी दिनदयाल नेमना कर दिया है, और वह उसकी निगरानी के लिए लालू को लगा रखा है।

कोनिका के आदमी जैसे ही चिकित्सक के कमरे से बाहर निकले, दिन दयाल के आदमी ने उन को उसके कमरे से निकलते हुए देख लिया और उन्होंने तत्काल दिन दयाल को इसकी सूचना दी, दिन दयाल

ने कहा कि जा कर तुरंत पता करो कि उन्होंने उसके साथ क्या किया है, इसके कुछ ही समय बाद दिन दयाल के आदमी भी चिकित्सक के कमरे में गुप्त दरवाजे से प्रवेश किया और उन्होंने देखा कि वह तो मर चुका है, जिसकी सूचना दिन दयाल को दिया की चिकित्सक को किसी ने मार दिया है। दिन दयाल को कोनिका के आदमी पर तुरंत शक हो गया की चिकित्सक ने जो कहा था वह सच है, इसके बाद उसने अपने मन में विचार किया की दिव्या को वह मारना चाहते हैं। उसने उस डोज का भी जांच करा लिया था जिससे उसको यह ज्ञात हो चुका था कि उसमें बहुत खतरनाक जहर को मिलाया गया था जिस को देने के कुछदेर बाद ही कोई भी आदमी मर सकता था। इस तरह दिव्या के भोजन की भी जांच जब हुई तो उसने में धीमा जहर जो किसी आदमी के दिमाग को पुरी तरह से खत्म करने के लिए दिया जाता था वह पाया गया था। यह सब जानकारी जब दिन दयाल को मिल गई तो उसको अब पुरी तरह से रतनलाल और कोनिका पर इसको लिए दोषी पाया, लेकिन उसने उनके उपर किसी प्रकार का आरोप नहीं लगाया, क्योंकि पहली बात वह उसका दमाद था, फिर उसने अपने मन विचार किया की जरूर इसमें उसके दामाद रतन लाल और उसकी बहन को फंसा रहा है, इसके लिए उसको शक हुआ कि कोई ऐसा है जो उसको बर्बाद करना चाहते है। उसने तत्काल इसके बारे में पता करने के लिए रतन लाल और उसकी बहन से बात की जिस पर रतना लाल और कोनिका ने कहा की इसके बारे में उन को कोई भी जानकारी नहीं मिली है। दिन दयाल ने कहा वह कौन है जो ऐसा कार्य कर रहा है क्या कोई विदेशी ताकत है जो उसको नुकसान पहुंचाना चाहती है इसके बारे में पता करो मैं जानता हूं कि तुम दोनों यह कार्य नहीं कर सकते हो। चिकित्सक की भी हत्या की जा चुकी है, उसकी लाश की पोस्टमार्टम की रीपोर्ट अभी कुछ समय में हमारे पास आ जायेगी।

जैसा कि दिव्या के खाने और डोज में जहर का प्रमाण दिन दयाल को मिल चुका था, इस लिए उसने अपने खाने का भी जांच कराने के बाद ही खाने का निर्णय किया और साथ में रतनलाल और कोनिका को भी उसने सख्त निर्देश दिया की तुम लोग भी अब सावधान रहो, हो सकता तुम को भी कोई नुकसान पहुंचाना चाहता है। इसके साथ उसने अपने आदमीयों को उसने सख्त निर्देश दिया और कहा की जांच करो हर आदमी की जो भी संदिग्ध आदमी विश्व विद्यालय के उनके आस पास दिखाई देता है, और पुरी तरह से उन हर आदमीयों कि जांच किया जाये, जो भी पिछले एक साल में उसके और रतन लाला कोनिका के संपर्क में आये हैं।

कुछ समय के बाद चिकित्सक की लास की पोस्टमार्टम रीपोर्ट आ गई, जिसमें यह बताया गया कि की चिकित्सक की मृत्यु उसके गला को दाबने से हुई है, उसके गले पर भी किसी के उंगली के नीसान पाया गया है। और वह उँगली के नीसान का जब मैंच किया गया तो पाया गया कि वह सब पगला के उंगली के साथ मिलता था। इस तरह से उसको अब पक्का भरोसा हो गया कि यह सब पगला के द्वारा

किया जा रहा है। जिस पर रतन लाल ने कहा कि पगला का इस विश्व विद्यालय में किसी तरह से आ चुका है, और उसका साथ देने वाले भी कुछ लोग यहां पर है, लेकिन वह कौन है? दिन दयाल ने कहा, जिस पर कोनिका ने कहा यहां पर पूरे भारत को सभी विश्व विद्यालय से लोग आते जाते हैं, इसके अतिरिक्त विदेशी भी आते हैं, इस पर रतन लाला ने कहा की सब कि जांच किया जाये। और हर प्रवेश द्वार पर पहले से अधिक चौकसी को बढ़ा दिया जाये।

दिन दयाल यह कह कर वहां से चला गया, रतन लाल ने कोनिका से कहा की दिन दयाल को हम पर शक हो चुका है, लेकिन पगला पर भी शक है, वह इस विश्व विद्यालय में आ चुका है, और उससे हमें भी खतरा है, इस लिए हमें यहां से जल्दी से जल्दी निकल जाना चाहिए, कोनिका ने कहा इससे तो दिन दयाल का शक और अधिक हम पर हो जायेगा, यदि हम दोनों इस बीच में यहां से कही जाते हैं। इस पर रतन लाल ने कहा यहां पर हम दोनों के उपर दो तरफा खतरा है, पहला दिन दयाल का दूसरा पगले से भी है। कोनिका ने कहा तुम बात तो सही कर रहे हो, हो सकता पगला को हमारी योजना का पता हो कि हम लोग दिव्या को मारने की योजना में लिप्त हैं। क्योंकि उसने चिकित्सक से यह सब जानने बाद ही उसके मारा होगा। और वह हमारी तलाश में हमारे पास कभी भी पहुंच सकता है, रतन लाल को पगले से भय लगने लगा, इसलिए उसने कहा की मैं अपने पिता से बात करता हूं, जो दिल्ली में रहते हैं, और उनसे कहते हैं, कि दिन दयाल पगला के साथ मिल कर हमारी हत्या की योजना बना रहा है, इसलिए हमारा यहां रहना खतरा से खाली नहीं है। और उसने अपने पिता से इसके बारे में बताया, जिस पर उसके पिता ने कहा की तुम बिल्कुल चिंता मत करो मैं दिन दयाल से बात करता हूं। इस पर रतन लाल ने कहा कि आप केवल यह बात करें की हम यहां पर अब नहीं रह सकते हैं, जब तक पगला को पकड़ नहीं लिया जाता है। इस पर रतनलाल के पिता ने कहा तुम लोग गलत नहीं हो ना, रतन लाल ने कहा हम गलत नहीं है, लेकिन हम दिन दयाल के साथ हैं इसलिए पगला हमारी हत्या भी कर सकता है, क्योंकि उसने पहले दिव्या के माध्यम से कुछ समय पहले उसको टेली पैथी के माध्यम से सूचना दिया था की जितने भी दिन दयाल के सहयोगी है सब को वह मारेगा। और उसने हमारे एक बहुत भरोसेमंद चिकित्सक ही हत्या कर दी है। लेकिन वह अभी तक पकड़ा नहीं जा सका है, हमें शक है कि उसके साथ किसी ना किसी तरह से दिन दयाल भी है। इस पर उसके पिता ने कहा की फिर तुम दोनों ने क्या योजना बनाई है। रतनलाल ने कहा हम पृथ्वी को छोड़ कर आज ही जिस अंतरिक्षयान से दिनदयाल दिव्या के साथ चाँद पर जाने वाला था उसके स्थान पर हम दोनों चले जाएगे, इसके लिए आपको दिन दयाल को तैयार करना है, यदि हमने उससे ऐसा करने के लिए कहा तो वह हमें जाने से रोक सकता है। क्योंकि उसके बिना आज्ञा के अंतरिक्षयान यहां से अपनी उड़ान नहीं भर सकता है। इस पर रतनलाल के पिता ने कहा मैं दिनदयाल से बात करता हूं।

जिसके कुछ देर के बाद उसने दिनदयाल से विडीयों कान्सफ्रेसिंग से जुड़ गया और कहा की मुझे खबर मिली है, कि पगला किसी तरह से विश्व विद्यालय में पहुंच चुका है, और वह वहां पर हत्या कर रहा है, मुझे शक है कि मेरे पुत्र रतन, और पुत्री को वहां पर जान का खतरा है, जिसके लिए मैं चाहत हूं कि रतन और कोनिका को तब तक के लिए यहां पृथ्वी से चाँद पर भेज दिया जाये उनका यहां रहना ठीक नहीं है, दिनदयाल ने कहा की मैं पगला और उसके साथीयों की खोज करा रहा हूं, तुम्हें बिल्कुल उससे भयभीत होने की जरूरत नहीं है, इस पर उसके मित्र और रतन के पिता ने कहा इसमें जोखिम है, और मैं किसी प्रकार की जोखिम को उनके लिए नहीं ले सकता हूं, इस मामले को तुम देखो जब तक इसका कोई समाधान नहीं कर लेते तब तक रतनलान और कोनिका को वहां से चांद पर भेजना होगा। क्योंकि अब विश्व विद्यालय के कीले में तुम्हारा शत्रु आ चुका इससे मेरा कोई मतलब नहीं है, मेरा और तुम्हारा व्यापारिक लेन देन है, जिस को हम बाद में निपटाना चाहते हैं। अभी तुम जिस अंतरिक्षयान से दिव्या के साथ चाँद पर जाने वाले थे उससे रतन और कोनिका को भेजना होगा। मैं भी तुम्हारे सहायता के लिए वहां पर कुछ समय में पहुंचता हूं, दिन दयाल ने अपने मन में कुछ देर तक विचार करने के बाद कहा ठीक है जैसा तुम कहते हो वहीं होगा।

इस तरह से रतनलान और कोनिका ने चाँद पर अंतरिक्षयान से जाने की अपनी तैयारी कर ली, और दिन दयाल ना चाहते हुए भी, उन को ऐसा करने की इजाजत दे देता है, क्योंकि इस कार्य में वह सब भी उसके बराबर के हिस्सेदार थे। जैसा कि अंतरिक्षयान पहले से ही तैयार था रतनलाल अपनी बहन कोनिका उसके पति लाखन और अपने कुछ भरोसेमंद आदमीयों के साथ अंतरिक्षयान में सवार हो गया, लाखन भी एक वैज्ञानिक था, जिसने दुनिया के लगभग सभी श्रेष्ठ मनुष्यों और प्राणीयों के साथ वनस्पतियों का नमूना भी लिया था। इसके कुछ ही समय बाद उड़ान के लिए अंतरिक्षयान उलटी गिनती शुरु हो चुकी थी, 0987654321 और अंतरिक्षयान अपने स्थान से एक जोरदार विस्फोट के साथ अंतरिक्ष में चाँद की तरफ यात्रा पर तीव्रता के साथ अपनी उड़ान पर चल पड़ा।

अध्याय 13.

यह जीवन एक संग्राम उनके लिए है, जो जीवन को समझते तो हैं, यद्यपि जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए जो आवश्यक वस्तु है, वह उस वस्तु को प्राप्त नहीं कर पाते है, एक तरफ कुछ ऐसे लोग हैं, जो अपने धन को और अधिक बढ़ाने के लिए उसको कई एकमार्गों में उपयोग करते हैं, दूसरी तरफ ऐसे भी लोग हैं, जो अपनी रोजी रोटी के लिए परेशान हैं, पगले जब यह देखा की एक तरफ धन का अंबार

लगा है। दूसरी तरफ ऐसी जनता रहती है जो अपने रोटी के लिए ही परेशान है, ऐसे लोगों की बहुत बड़ी संख्या है, और ऐसे ही लोगों को पकड़ कर दिनदयाल जैसे लोग पृथ्वी पर अपने साम्राज्य का भरपूर बिस्तार करने के बाद चाँद और मंगल ग्रह पर मानव वस्ति बसाना शुरु कर दिया है। जिस कार्य को ही पूर्ण करने के लिए रतनलाल और उसकी बहन कोनिका, के साथ अपने पति लाखन चाँद की सतह पर अपना निवास बना लिया है। वहाँ पर वह सब अपने प्रयोगशाला में रहते हैं।

पगला विश्व विद्यालय के कीले में एक तहखाना में पहुंचा जहां पर उसने देखा की बहुत सारा माला बड़ी जहाज से लद कर बाहर जाने के लिए तैयार किया जा रहा था, पगला जो कि अदृश्य हो कर वहां पर सब कुछ देख रहा था उसने पता करना चाहा, तो उसको कुछ कागज ऐसे मिले जिससे उसको ज्ञात हुआ कि यह सारा माल यहां से बाहर किसी दूसरे देश में जाने के लिए तैयार किया जा रहा है। क्योंकि उसने देखा की मानव अंगों को बाकायदा पैक करके उन को जानवर के मांस के रूप में बाहर बेचने के लिए जा रहा था।